ॐ

# श्री विविधपूजा संग्रह

## भाग प्रथम.

---

श्रीदेवचंद्रजी, वीरविजयजी आदि

महापुरुषोए रचेली पूजाओनोसंग्रह.

अध्यापन विधि साथे सुधारी-वधारीछपाव्यो.

प्रसिद्धकर्त्ता

शा. भीमसिंहमाणेक

मुंबई

निर्णयसागरमां मुद्रांकित कर्यो.

---

संवत् १९५९, सन १९०३.

॥ अथ पंमितश्रीवीरविजयजीकृत ॥

॥ स्नात्रपूजा प्रारंभः ॥

---

॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितवृत्तम् ॥

सरसशांतिसुधारससागरं ॥
शुचितरं गुणरत्नमहागरं ॥
भविकपंकजबोधदिवाकरं ॥
प्रतिदिनं प्रणमामि जिनेश्वरं ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

कुसुमाभरण उतारिने, पमिमा धरिय विवेक ॥
मज्जनपीठें थापिने, करियें जल अभिषेक ॥ २ ॥

॥ गाथा आर्या गीति ॥

जिण जम्म समय मेरु ॥
सिहरं रयण कणय कलसेहिं ॥
देवा सुरहि एहविउ ॥
ते धन्ना जेहिं दिछोसि ॥ ३ ॥

॥ कुसुमांजलि ॥ ढाल ॥

॥ निर्मलजल कलशेन्हवरावे ॥ वस्त्र अमूलक अंगधरा

## ॥ अथ पंमितश्रीवीरविजयजीकृत ॥

## ॥ स्नात्रपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितवृत्तम् ॥

सरसशांतिसुधारससागरं ॥
शुचितरं गुणरत्नमहागरं ॥
भविकपंकजबोधदिवाकरं ॥
प्रतिदिनं प्रणमामि जिनेश्वरं ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

कुसुमाभरण उतारिने, पमिमा धरिय विवेक ॥
मज्जनपीठें थापिने, करियें जल अभिषेक ॥ २ ॥

॥ गाथा आर्या गीति ॥

जिण जम्म समय मेरु ॥
सिहरं रयण कणय कलसेहिं ॥
देवा सुरहि एहविउ ॥
ते धन्ना जेहिं दिठोसि ॥ ३ ॥

॥ कुसुमांजलि ॥ ढाल ॥

॥ निर्मलजल कलशेन्हवरावे ॥ वस्त्र अमूलक अंगधरा

वे ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा ॥ सिद्धस्वरूपी अंग पखाली, आतम निर्मल हुइ सुकुमाली ॥कु०॥४॥

॥ गाथा आर्या गीति ॥

मचकुंद चंप मालइ ॥
कमलाइं पुप्फ पंच वन्नाइं ॥
जगनाह न्हवणसमये ॥
देवा कुसुमांजली दिंती ॥ ५ ॥

॥ नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

॥ कुसुमांजलि ॥ ढाल ॥

॥ रयण सिंहासन जिन थापीजें ॥ कुसुमांजलि प्रभु चरणे दीजें ॥ कुसुमांजलि मेलो शांति जिणंदा ॥६॥

॥ दोहा ॥

॥ जिण तिहुंकालय सिद्धनी, पडिमा गुणभंडार ॥
तसु चरणे कुसुमांजलि, भविक दुरित हरनार ॥६॥
नमोर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

॥ कुसुमांजलि ॥ ढाल ॥

॥ कृष्णागरु वर धूप धरीजें ॥ सुगंध कर कुसुमांजलि दीजें ॥ कुसुमांजलि मेलो नेमि जिणंदा ॥ ७ ॥

॥ गाथा ॥ आर्या गीति ॥
जसु परिमल बल दहदिसिं ॥
महुकर झंकार सहसंगीया ॥
जिण चलणोवरि मुक्का ॥
सुर नर कुसुमांजलि सिद्धा ॥ ए ॥

॥ नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

॥ कुसुमांजलि ॥ ढाल ॥

॥ पास जिणेसर जग जयकारी ॥ जल थल फूल उदक कर धारी ॥ कुसुमांजलि मेलो पार्श्व जिणंदा ॥१०॥

॥ दोहा ॥

॥ मूके कुसुमांजलि सुरा, वीरचरण सुकुमाल ॥
ते कुसुमांजलि भविकनां, पाप हरे त्रण काल ॥ ११ ॥

॥ नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

॥ कुसुमांजलि ॥ ढाल ॥

॥ विविध कुसुम वरजाति गहेवी ॥ जिनचरणे पणमंत ठवेवी॥कुसुमांजलि मेलो वीर जिणंदा ॥१२॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ एहवणकालें एहवणकालें ॥ देवदाणव समुच्चिय ॥

कुसुमांजलि तहिं संठविय ॥ पसरंत दिसि परिमलसु गंधिय ॥ जिणपयकमले निवडेइ ॥ विग्घहर जस नाम मंतो ॥ अनंत चउवीस जिन ॥ वासव मलिय अ सेस ॥ सा कुसुमांजलि सुहकरो ॥ चउविह संघ विसेस॥ कुसुमांजलि मेलो चउवीश जिणंदा ॥ १३ ॥

॥ नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

## ॥ कुसुमांजलि ॥ ढाल ॥

॥ अनंत चउवीसी जिनजीजुहारुं, वर्त्तमान चउवीसी संभारुं ॥ कुसुमांजलि मेलो चोवीश जिणंदा ॥१४॥

## ॥ दोहा ॥

महाविदेहें संप्रति, विरहमान जिन वीश ॥
भक्तिभरें ते पूजिया, करो संघ सुजगीश ॥ १५ ॥

॥ नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

## ॥ कुसुमांजलि ॥ ढाल ॥

॥ अपछरमंडलि गीत उच्चारा ॥ श्री शुभवीर विजय जयकारा ॥ कुसुमांजलि मेलो सर्व जिणंदा ॥ १६ ॥

इति श्रीकुसुमांजलयः ॥

## ॥ अथ कलश ॥ दोहा ॥

॥ सयल जिणेसर पाय नमि, कल्याणकविधिता

स ॥ वर्णवतां सुणतां थकां, संघनी पूगे आश ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ एकदिन अचिरा हुल-
॥ रावती ॥ ए देशी ॥

॥ समकितगुणठाणे परिणम्या ॥ वली व्रतधर संयमसुख रम्या ॥ वीश थानक विधियें तप करी ॥ एसी ज्ञाव दया दिलमां धरी ॥ १ ॥ जो होवे मुज शक्ति इसी, सवि जीव करुं शासन रसी ॥ शुचिरस ढलते तिहां बांधतां, तीर्थंकरनाम निकाचता ॥ २ ॥ सरागथी संयम आचरी, वचमां एक देवनो ज्ञव करी ॥ चवि पन्नर क्षेत्रें अवतरे, मध्यखंडे पण राजवी कुलें ॥ ३ ॥ पटराणी कूखें गुणनिलो, जेम मान सरोवर हंसलो ॥ सुखशय्यायें रजनी शेषें, उतरतां चउद सुपन देखे ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ स्वप्ननी ॥

॥ पेहेले गजवर दीठो, बीजे वृषभ पइठो ॥ त्रीजे केशरी सिंह, चोथे लक्ष्मी अबीह ॥ १ ॥ पांचमे फूलनी माला, छठे चंद्र विशाला ॥ रवि रातो ध्वज मोहोटो, पूरणकलश नहिं छोटो ॥ २ ॥ दशमे पद्म सरोवर, अगियारमे रत्नाकर ॥ ज्ञुवन

विमान रत्नगंजी, अग्निशिखा धूमवर्जी ॥ ३ ॥ स्वप्न लहि जइ रायने भासे, राजा अर्थ प्रकाशे ॥ पुत्र तीर्थंकर त्रिभुवन नमशे, सकल मनोरथ फलशे ॥ ४ ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ अवधि नाणे अवधि नाणे, उपना जिनराज ॥ जगत जसपरमाणुआ ॥ विस्तर्या विश्व जंतु सुखकार ॥ मिथ्यात्व तारा निर्बला, धर्मउदय परभातसुंदर ॥ माता पण आणंदियां, जागती धर्म विधान ॥ जाणंती जगतिलक समो, होशे पुत्र प्रधान ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

शुभलग्ने जिन जनमिया, नारकीमां सुख ज्योत ॥
सुख पाम्या त्रिभुवन जना, हुउं जगत उद्योत॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ कडखानी देशी ॥

॥ सांभलो कलश जन, महोत्सवनोइहां ॥ छप्पन कुमरी दिशि,विदिशि आवे तिहां ॥ माय सुत नमिय,आणंद अधिको धरे, अष्टसंवर्त्त वायुथी कचरो हरे॥ १॥ वृष्टि गंधोदकें, अष्ट कुमरी करे॥ अष्टकलशा भराअष्ट दर्पण धरे ॥ अष्ट चामर धरे, अष्ट पंखा लही ॥ चार रक्षा करी,चार दीपक ग्रही ॥२॥ घर करी केलनां, माय

सुत लावती ॥ करण शुचि कर्म जल, कलशें न्हवरावती॥कुसुम पूजी अलं, कार पेहेरावती॥ राखडी बांधी जइ, शयन पधरावती ॥ ३ ॥ नमिय कहे माय तुज, बाल लीलावती ॥ मेरु रवि चंद्र लगें, जीवजो जगपती॥ स्वामिगुण गावती, निज घर जावती ॥ तेणे समे इंद्र, सिंहासन कंपती ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ एकवीशानी देशी ॥

॥ जिन जन्म्याजी, जिण वेला जननी घरे ॥ तिण वेलाजी, इंद्रसिंहासन थरहरे ॥ दाहिणोत्तरजी, जेता जिन जनमे यदा ॥ दिशिनायकजी, सोहम ईशान बेहु तदा ॥ १ ॥

॥ त्रुटक ॥

॥ तदा चिंते इंद्र मनमां, कोण अवसर ए बन्यो ॥ जिनजन्म अवधि नाणे जाणी, हर्ष आनंद उपन्यो ॥ सुघोष आदें घंटनादें, घोषणा सुरमें करे ॥ सवि देवी देवा जन्ममहोत्सवें, आवजो सुरगिरिवरें ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ पूर्वली ॥

॥ एम सांभलीजी, सुरवरकोडि आवि मले ॥ जन्म महोत्सवजी, करवा मेरु उपर चले ॥ सोहमप

रनी दश इंद्राणी नागनी, वार करे कल्लोल ॥आ०॥ ॥ ३ ॥ ज्योतिष व्यंतर इंद्रनी चउ चउ, पर्षदा त्रणनो एको ॥ कटकपति अंगरक्षक केरो, एक एक सुविवेको ॥ परचूरण सुरनो एक ठेल्लो, ए अढीशें अनिषेको॥ईशानइंद्र कहे मुज आपो, प्रजुने क्षण अतिरेको ॥ आ० ॥ ४ ॥ तव तस खोले ठवि अरि हाने, सोहमपति मनरंगें ॥ वृषजरूप करि शृंग जलें जरी, न्हवण करे प्रजु अंगें ॥ पुष्पादिक पूजी ने ठांटे, करि केसर रंग रोले ॥ मंगलदीवो आरती करतां, सुरवर जय जय बोले ॥ आ० ॥ ५ ॥ जेरी जूंगल ताल बजावत, वलिया जिन कर धारी ॥ जननीघर माताने सोंपी, एणि परें वचन उच्चारी ॥ पुत्र तमारो स्वामी हमारो, अम सेवक आधार ॥ पंच धावी रंजादिक थापि, प्रजु खेलावण हार ॥ आ० ॥ ६ ॥ बत्रीश कोमि कनक मणि माणिक, वस्त्रनी वृष्टि करावे ॥ पूरण हर्ष करेवा कारण, द्वीप नंदीसर जावे ॥ करिय अठाई उत्सव देवा, निज निज कल्प सधावे ॥ दीक्षा केवलनें अनिलाषें, नित नित जिन गुण गावे ॥ आ० ॥७॥ तप गछ ईसर सिंह सूरीसर, केरा शिष्य वडेरा ॥ सत्यविजय पन्या

स तणे पद, कपूरविजय गंभीरा॥ खिमाविजयतस सुजयविजयना, श्री शुभविजय सवाया ॥ पंमित वीरविजय शिष्यें जिन, जन्ममहोत्सव गाया ॥आ० ॥७॥ उत्कृष्टा एकशोने सित्तेर, संप्रति विचरे वीश ॥ अतीत अनागत कालें अनंता, तीर्थंकर जगदीश॥ साधारण ए कलश जे गावे, श्री शुभवीर सवाई ॥ मंगललीला सुख भर पावे, घर घर हर्ष वधाई ॥ आतम० ॥ए॥ इति पंमित श्रीवीरविजयजीकृत स्नात्रपूजा समाप्ता ॥

---

## ॥ अथ पंमित श्रीदेवचंद्रजीकृत- ॥

## स्नात्रपूजाप्रारंभः ॥

### ( पांखडी गाथा ) ॥ ढाल पहेली ॥

॥ चउत्तिसे अतिसय जुर्ड, वचनातिसय जुत्त, सो परमेसर देखि भवि, सिंहासण संपत्त ॥ १ ॥

### ॥ ढाल ॥

॥ सिंहासन बेठा जग भाण, देखि भविक जन गुण मणि खाण ॥ जे दीठे तुज निर्मल नाण, लहियें परम महोदय ठाण ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जि

तिजी, बहु परिवारें आविया ॥ माय जिननेंजी, वांदी प्रजुने वधाविया ॥ ३ ॥

॥ त्रुटक ॥

॥ वधावी बोले हे रतनकूख, धारिणी तुज सुत तणो॥ हुं शक्र सोहम नामें करशुं, जन्म उत्सव अति घणो॥ एम कही जिन प्रतिबिंब थापी, पंच रूपें प्रजु ग्रही॥ देव देवी नाचे हर्ष साथें, सुरगिरि आव्या वही॥४॥

॥ ढाल पूर्वली ॥

॥मेरु उपरजी, पांमुकवनमें चिहुं दिशें॥शिला उपरजी, सिंहासन मन उलसे॥ तिहां बेसीजी, शक्रें जिन खोले धस्या॥ हरि त्रेशठजी, बीजा तिहां आवी मल्या ॥५॥

॥ त्रुटक ॥

॥ मल्या चोसठ सुरपति तिहां, करे कलश अड जातिना ॥ मागधादि जल तीर्थ औषधि, धूप वलि बहु जातिना ॥ अच्युतपतियें हुकम कीनो, सांजलो देवा सवे ॥ खीरजलधि गंगानीर लावो, जटिती जीन महोत्सवें ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥ विवाहलानी देशी ॥

॥ सुर सांजलीने संचरीया, मागध वरदामें चलीया ॥

णंदा, तोरां चरणकमल सेवे चोसठ इंदा ॥ कु० ॥१॥ चोवीश वैरागी, चोवीश सोभागी, चोवीश जिणंदा ॥ कु० ॥ एम कही प्रभुना चरणे पूजा करीयें ॥

॥ गाथा ॥

॥ जो नियगुण पज्जव रम्यो, तसु अनुभव एगंत ॥
सुह पुग्गल आरोपतां, जो तसु रंग निरत्त ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ जो निज आतमगुण आणंदी, पुग्गल संगें जेह अफंदी ॥ जे परमेसरनिज पदलीन, पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥ कुसुमांजलि मेलो शांति जिणंदा ॥तो०॥कु०॥२॥एम कही प्रभुना जानुयें पूजा करीयें ॥

॥ गाथा ॥

॥ निम्मल नाण पयासकर, निम्मल गुण संपन्न ॥
निम्मल धम्मोवएस कर, सो परमप्पा धन्न ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

॥ लोकालोक प्रकाशक नाणी, भविजन तारण जेहनी वाणी॥परमानंद तणी नीशाणी, तसु भगतें मुज मति ठहराणी ॥ कुसुमांजलि मेलो नेम जिणंदा तो०॥कु०॥३॥एम कही प्रभुना बे हाथें पूजा करीयें ॥

॥ गाथा ॥

॥ जे सिद्धा सिद्धंति जे, सिद्धंसंति अणंत ॥ जसु आलंबन ठविय मण, सो सेवो अरिहंत ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

॥ शिव सुख कारण जेह त्रिकालें, समपरिणामें जगत निहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग देखाडे, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ कुसुमांजलि मेलो पास जिणंदा ॥ तो० ॥ कु० ॥४॥ एम कही प्रभुना खंधायें पूजा करीयें ॥

॥ गाथा ॥

॥ समद्दिठ्ठी देस जय, साहु साहुणी सार ॥ आचारिज उवझाय मुणि, जो निम्मल आधार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ चउविह संघें जे मन धार्युं, मोक्षतणुं कारण निरधार्युं ॥ विविह कुसुम वर जाति गहेवी, तसु चरणे पणमंत ठवेवी ॥ कुसुमांजलि मेलो वीर जिणंदा ॥ तो० ॥ कु० ॥ ५ ॥ एम कही प्रभुने मस्तकें पूजा करीयें ॥ इति पांचमी गाथा ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ सयल जिनवर सयलजिनवर, नमिय मनरंग, क

॥ गाथा ॥

॥ जे सिद्धा सिद्धंति जे, सिद्धंसंति अणंत ॥ जसु आलंबन ठविय मण, सो सेवो अरिहंत ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

॥ शिव सुख कारण जेह त्रिकालें, समपरिणामें जगत निहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग देखाडे, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ कुसुमांजलि मेलो पास जिणंदा ॥ तो० ॥ कु० ॥ ४ ॥ एम कही प्रभुना खंभायें पूजा करीयें ॥

॥ गाथा ॥

॥ समदिठ्ठी देस जय, साहु साहुणी सार ॥ आचारिज उवज्झाय मुणि, जो निम्मल आधार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ चउविह संघें जे मन धार्‍युं, मोक्षतणुं कारण निरधार्‍युं ॥ विविह कुसुम वर जाति गहेवी, तसु चरणे पणमंत ठवेवी ॥ कुसुमांजलि मेलो वीर जिणंदा ॥ तो० ॥ कु० ॥ ५ ॥ एम कही प्रभुने मस्तकें पूजा करीयें ॥ इति पांचमी गाथा ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ सयल जिनवर सयलजिनवर, नमिय मनरंग, क

ह्वाणकविहि संघविय, करिस धम्म सुपवित्त ॥ सुंदर सय इगसत्तरि तिबंकर, एक समय विहरंति मही यल, चवण समय इगवीस जिण, जम्म समय इग वीस ॥ नत्तिय नावें पूजीया, करो संघ सुजगीस ॥१॥

॥ ढाल बीजी ॥

एक दिन अचिरा हुलरामती ॥ ए देशी ॥

॥ नव त्रीजे समकित गुण रम्या, जिन नक्ति प्रमु ख गुण परिणम्या, तजि इंद्रिय सुख आशंसना, करी स्थानक वीशनी सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्र नावता मन नावना एहवी नावता, सवि जीव करुं शासन रसी, इसी नाव दया मन उल्लसी ॥ २ ॥ ल ही परिणाम एहवुं नलुं, निपजावी जिनपद निर्मलुं ॥ आयुवंध वचें एक नव करी, श्रद्धा संवेग ते थिर धरी ॥ ३ ॥ त्यांथी चविय लहे नरनव उदार, नरतें तेम ऐरवतेंज सार, महाविदेहें विजयें वर प्रधान, मध्य खंडें अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥

॥ अथ सुपनानी ॥ ढाल ॥ त्रीजी ॥

॥ पुण्यें सुपनह देखे, मनमांहे हर्ष विशेषे, गजव र उज्वल सुंदर, निर्मल वृषन मनोहर ॥ १ ॥ निर्न

य केशरी सिंह, लक्ष्मी अतिहीअबीह ॥ अनुपम फूल नी माल, निर्मल शशी सुकुमाल ॥ २ ॥ तेजेंतरणी अति दीपे, इंद्रध्वजा जग जींपे, पूरण कलश पंडूर, पद्म सरोवर पूर ॥ ३ ॥ अग्यारमे रयणायर, देखे माता गुण सायर ॥ बारमे नुवन विमान, तेरमे अनुपम रत्न निधान ॥ ४ ॥ अग्निशिखा निरधूम. देखे माताजी अनुपम ॥ हर्षी रायने नासे राजा अरथ प्रकाशे ॥ ५ ॥ जगपति जिनवर सुखकर, होशे पुत्र मनोहर ॥ इंद्रादिक जसु नमशे, सकल मनोरथ फलशे ॥ ६ ॥

॥ वस्तुछंद ॥

॥ पुण्यउदय पुण्यउदय उपना जिननाह, माता तव रयणी समे, देखी सुपन हरखंती जागीय ॥ सुपन कही निज कंतने, सुपन अरथ सांजलो सोनागीय ॥ त्रिजुवन तिलक महागुणी, होशे पुत्र निधान ॥ इंद्रादिक जसु पाय नमी, करशे सिद्धि विधान ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ चोथी ॥ चंज्ञावलानी देशीमां ॥

॥ सोहमपति आसन कंपियो, देइ अवधि मन आणंदियो ॥ निज आतम निर्मल करण काज, नव-

जलतारण प्रगट्यो जहाज ॥ १ ॥ भवअडवी पारग सछवाह,केवल नाणाइय गुण अगाह ॥ शिव साधन गुण अंकुरो जेह, कारण उलट्यो आसाढि मेह ॥ २ ॥ हरखें विकसी तव रोमराय, वलयादिकमां निज तनु नमाय ॥ सिंहासनथी उठ्यो सुरिंद, प्रणमंतो जिन आनंदकंद ॥ ३ ॥ सग अडपय सामो आवि तछ, करि अंजलीय प्रणमीय मछ ॥ मुखें भाखे ए क्षण आज सार, तिय लोय पहु दीठो उदार॥४॥ रेरे निसुणो सुर लोय देव, विषयानल तापित तुम सवेव ॥ तसु शांति करण जलधर समान, मिथ्या विष चूरण गरुडवान ॥ ५ ॥ ते देव सकल तारण समछ, प्रगट्यो तस प्रणमी हुवो सनाथ ॥ एम जंपी शक्रस्तव करेवि, तव देव देवी हरखें सुणेवि ॥ ६ ॥ गावे तव रंभा गीत गान, सुरलोक हुवो मंगल निधान ॥ नरक्षेत्रें आरज वंश ठाम, जिनराज वधे सुर हर्ष धाम ॥ ७ ॥ पिता माता घरें उत्सव अशेष, जिन शासन मंगल अति विशेष ॥ सुरपति देवादिक हर्ष संग, संयमअर्थिजनने उमंग ॥ ८ ॥ शुभवेला लगनें तीर्थनाथ, जनम्या इंद्रादिक हर्ष साथ ॥ सुख पाम्या त्रिभुवन सर्व जीव, वधाई वधाई थइ अतीव ॥ ए ॥

## ॥ ढाल ॥ पांचमी ॥

॥ श्रीशांति जिननो कलश कहिशुं
प्रेम सागर पूर ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीतीर्थपतिनुं कलशमज्जन, गाइयें सुखकार ॥ नरखित्त मंमण दुह विहंडण, नविक मन आधार ॥ तिहां राव राणा हर्ष उत्सव, थयो जग जयकार ॥ दिशिकुमरी अवधि विशेष जाणी, लह्यो हर्ष अपार॥१॥ नियअमर अमरी संग कुमरी, गावती गुणछंद ॥ जिन जननी पासें आवि पोहोती, गह गहती आणंद ॥ हे माय ! तें जिनराज जायो, शुचि वधायो रम्म॥अम जम्म निम्मल करण कारण, करीश सूईकम्म॥२॥ तिहां नूमि शोधन दीप दर्पण, वाय वींजण धार ॥ तिहां करीय कदली गेह जिनवर, जननि मज्जनकार॥वरराखमी जिनपाणी बांधि, दीये एम आशीष ॥ जुग कोडा कोडि चिरंजीवो, धर्मदायक ईश ॥ ३ ॥

## ॥ ढाल ॥ छही ॥ एकवीशानी ॥

॥ जग नायकजी, त्रिजुवन जन हितकार ए ॥
॥ परमातमजी, चिदानंद घनसार ए॥ ए देशी॥

॥जिनरयणीजी,दश दिशि उज्ज्वलता धरे ॥ शुनलगनें

जी, ज्योतिष चक्रते संचरे॥ जिन जनम्याजी, जेणें अव सर माता घरें ॥ तेणे अवसरजी, इंद्रासन पण थरहरे ॥
॥ त्रुटक ॥
॥ थरहरे आसन इंद्रचिंते, कोण अवसर ए बन्यो ॥ जिन जन्म उत्सव काल जाणी, अतिही आनंद उपन्यो ॥ निज सिद्धि संपत्ति हेतु जिनवर, जाणी भक्तें उमह्यो॥ विकसित वदन प्रमोद वधते, देव नायक गहगह्यो ॥१
॥ ढाल ॥
॥ तव सुरपतिजी, घंटानाद करावए ॥ सुरलोकें जी, घोषण एह देवराव ए ॥ नरक्षेत्रें जी, जिनवर जन्म हुउ अछे ॥ तसु भगतें जी,सुरपति मंदर गिरि गछे ॥
॥ त्रुटक ॥
॥गछेति मंदर शिखर उपर, भवन जीवन जिन त णो ॥ जिन जन्म उत्सव करण कारण, आवजो स वि सुरगणो॥ तुम शुद्ध समकित थाशे निर्मल, देवा धिदेव निहालतां॥ आपणां पातिक सर्व जाशे, नाथ चरण पखालतां ॥ २ ॥
॥ ढाल ॥
॥ एम सांभली जी, सुरवर कोडी बहु मली ॥ जिनवं दनजी, मंदरगिरि सामां चली ॥ सोहमपतिजी, जि

न जननी घर आविया ॥ जिन माताजी, वंदी स्वा मी वधाविया ॥

॥ त्रुटक ॥

॥ वधाविया जिन हर्षे बहुले, धन्य हुं कृतपुण्य ए ॥
त्रैलोक्य नायक देव दीठो,मुज समो कोण अन्य ए॥
हे जगत जननी, पुत्र तुमचो,मेरु मज्जन वर करी ॥
उत्संग तुमचे वलिय थापिश, आतमा पुण्यें नरी॥३॥

॥ ढाल ॥

॥ सुर नायकजी, जिन निज कर कमलें ठव्या ॥ पं च रूपेंजी, अतिशें महिमायें स्तव्या ॥ नाटक विधि जी, तव बत्रीश आगल वहे ॥ सुर कोडीजी, जिन दर्शनने उम्महे ॥

॥ त्रुटक ॥

॥ सुरकोडा कोडी नाचती वली, नाथ शुचि गुण गा वती ॥ अप्सरा कोडी हाथ जोडी, हाव नाव देखा वती ॥ जयो जयो तुं जिनराज जगगुरु, एम दे. आशीष ए ॥ अम्ह त्राण शरण आधार जीवन, एक तुं जगदीश ए ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

॥ सुरगिरिवर जी, पांकुक वनमें चिहुं दि ॥ गिरि

शिल परजी, सिंहासन सासय वसे ॥ तिहां आणी जी, शक्रें जिन खोले ग्रह्या ॥ चौसठेजी, तिहां सुर पति आवी रह्या ॥

॥ त्रुटक ॥

॥ आविया सुरपति सर्व नक्तें, कलश श्रेणी बनाव ए ॥ सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषधि, सर्व वस्तु अणाव ए ॥ अच्चुअपति तिहां हुकम कीनो, देव कोडाकोडिने ॥ जिन मज्जनारथ नीर लावो, सवे सुर कर जोडीने ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ सातमी ॥

॥ शांतिने कारणे इंद्र कलशा जरे ॥ ए देशी ॥

॥ आत्मसाधन रसी देवकोमी हसी, उलसीने धसी कीरसागरदिशि ॥ पउमदह आदि दह गंगपमुहा नई, तीर्थजल अमल लेवा जणी ते गई ॥ १ ॥ जाति अड कलश करि सहस अठोतरा, छत्र चामर सिंहासण शुजतरा॥उपगरण पुष्फ चंगेरी पमुहा सवे, आगमें जासिया तेम आणी ठवे ॥ २ ॥ तीर्थजल जरिय करकलश करि देवता, गावता जावता धर्म उन्नतिरता॥ तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम

शक्ति शुचि ज्ञक्ति एम ज्ञावता ॥३॥ समकित बीज निज आत्म आरोपता, कलश पाणीमशें ज्ञक्तिजल सींचता ॥ मेरु सिहरोवरें सर्व आव्या वही, शक्र उत्संग जिन देखी मन गह गही ॥ ४ ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ हंहो देवा हंहो देवा अणाइ कालो, अदिठ पुव्वो तिलोयतारणो तिलोय बंधु, मिछत्त मोहविद्धंसणो अणाइ तिएहा विणासणो, देवाहिदेवो दिठ बोहिय कामेहिं ॥ ५

॥ ढाल तेहीज ॥

॥ एम पन्नणंत वण ज्ञवण जोईसरा, देव वेमाणिया ज्ञत्ति धम्मायरा ॥ केवि कप्पठिया केवि मित्ताणुगा, केवि वर रमणि वयणेण अइ उछगा ॥ ६ ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ तब अच्चुय तब, अच्चुय इंद आदेस ॥ कर जोडि सवि देवगण, लेय कलस आदेस पामिय ॥ अद्भुत रूप सरूप जुअ, कवण एह उत्संगें सामिय ॥ इंद्र कहे जग तारणो, पारग अम परमेस ॥ नायक दाय क धम्म निहि, करियें तसु अन्निसेस ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ आठमी ॥

॥ तीर्थकमलदल उदक भरीने पुष्कर ॥

॥ सागर आवे ॥ ए देशी ॥

॥ पूरणकलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगें नामे ॥ आतम निर्मल भाव करंता, वधते शुभ परिणामें ॥ अच्युतादिक सुरपति मज्जन,लोकपाल लोकांत ॥ सामानिक इंद्राणी पमुहा, एम अभिषेक करंत ॥१॥

॥ गाहा ॥

॥ तव ईसाण सुरिंदो, सक्कं पभणेइ, करइ सुपसाउं॥ तुम अंके मह नाहो, पणमित्तं अम्ह अप्पेह ॥ २॥ ता सिकिंदो पभणेइ, साहमी वछलंमि बहु लाहो ॥ आणा एवं तेणं, गिण्हि हवो उक्कयभावो ॥ ३ ॥

एम कही सर्व स्नात्रिया कलश ढाले, अने मुखथी नीचें प्रमाणे पाठ कहे ॥ ॥ ढाल ॥ तेहीज ॥

॥ सोहम सुरपति वृषभ रूप करी, न्हवण करे प्रभु अंग ॥ करिय विलेपण पुष्पमाल ठवि, वर आभरण अभंग ॥ तव सुरवर बहु जय जयरव करि, नाचे धरी आणंद ॥ मोक्षमार्ग सारथपति पाम्यो, भांजशुं हवे भव फंद ॥ ४ ॥ कोडि बत्रीश सोवन उवारी, वाजंतेवर नादें॥सुरपति संघ अमरश्री प्रभुने, जननीने सुप्रसादें॥

आणी थापी एम पयंपे, अमें निस्तरिया आज॥ पुत्र तुमारो धणी हमारो, तारण तरण जहाज ॥ ५ ॥ मात जतन करि राखजो एहने, तुम सुत अम आधार ॥ सुरपति भक्ति सहित नंदीश्वर, करे जिनभक्ति उदार ॥ निय निय कप्प गया सवि निर्जर, कहेतां प्रभु गुणसार ॥ दीक्षा केवल ज्ञान कल्याणक, इच्छा चित्त मझार ॥ ६ ॥ खरतरगछ जिन आणारंगी, राजसागर उवझाय ॥ ज्ञान धर्म दीपचंद सुपाठक, सुगुरुतणे सुपसाय ॥ देवचंद्र जिनभक्तें गायो, जन्म महोत्सव छंद ॥ बोध बीज अंकूरो उलस्यो, संघ सकल आनंद ॥ ७ ॥

॥ कलश ॥ राग वेलावल ॥

॥ एम पूजा भक्तें करो, आतमहितकाज ॥ तजिय विभाव निज भावमें, रमता शिवराज ॥ एम० ॥ १ ॥ काल अनंतें जे हुआ, होशे जेह जिणंद ॥ संपय सीमंधर प्रभु, केवलनाण दिणंद ॥ एम० ॥ २ ॥ जन्ममहोत्सव एणी पवें, श्रावक रुचिवंत ॥ विरचे जिन प्रतिमा तणो, अनुमोदन खंत ॥ एम० ॥ ३ ॥ देवचंद्र जिन पूजना, करतां भवपार ॥ जिनपडिमा जिनसारखी, कही सूत्र मझार ॥ एम० ॥ ४ ॥

## ॥ श्री सकलचंदजी उपाध्यायकृत सत्तरभेदीपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अरिहंत मुखकंज वासिनी, भगवति भारति देवी॥
समरिय पूजाविधि भणुं, तुं मुज मुखपद सेवि ॥१॥

॥ आर्या, गाथा ॥

॥ न्हवण विलेवण अंगें, चखु जुअलं च वास पू आ ए, पुप्फा रोहण माला, रोहणं तह वण्णयारोह णं ॥१॥ चुन्नारोहण जिणपुं, गवाण ( झयारोहणं ) आहरणारोहणं चेव ॥ पुप्फगिह पुप्फपगरं, आरत्ती मंगल पईवो ॥ २ ॥ दीवो धूवक्खेवो, नेवज्ज सुह फलाण ढोवणयं, गीयं नटं वज्जं, पूया भेया इ मे सतर ॥ ३ ॥

### ॥ प्रथम न्हवणपूजा प्रारंभः ॥

॥ ढाल रत्नमालानी ॥ देशाखरागेण गीयते ॥

॥ प्रथमपूरव दिशे, कृत शुचि स्नानको, दंतमुख शुद्धको, धोति राजी ॥ कनक मणि मंडित, विशद गंधोदकें, भरिय मणि कनकनी, कलशराजी ॥ १ ॥ जिनपभवनं गतो, भगवदालोकिने, नमति तं प्रथम

तो, मार्जतीशं ॥ दिवि यथेंद्रादिकस्तीर्थगंधोदकैं, स्नापयति श्रावको तेम जिनेशं ॥ २ ॥

॥ गीत ॥ राग अमाणो, मल्हार ॥ केदारमिश्रित ॥

॥ भवि तुम देखो, अब तुम देखो, सत्तरभेद जिन भक्ति ॥ अंग उपंग कही जिन गणधर, कुगति हरी दे मुक्ति ॥ भवि तुम० ॥ १ ॥ शुचितनु धोति धरी गंगोदक, भरि मणि (कनक) नी कलशालि ॥ जिन दीठे नमी पूजी पखाली, दे नीज पातक गाली ॥ भवि तुम ॥ २ ॥ समकित शुद्ध करी दुःखहरणी; विरताविरति करणी ॥ योगीसर पण ध्यानें समरी, भवसमुद्रकी तरणी ॥ भवि तुम० ॥ ३ ॥ देखावती नहीं कबहुं वैतरणी, कुमतीकुं रविभरणी ॥ सकल मुनीसरकुं शुभ लहरी, शिवमंदिर नीसरणी ॥ भवि तुम० ॥ ४ ॥ इति प्रथमन्हवणपूजा समाप्ता ॥ १ ॥

## ॥ द्वितीयचंदनविलेपनपूजा प्रारंभः ॥

॥ ढाल जयमलानी ॥ रामग्रीरागेण गीयते ॥

॥ बावना चंदना, सरस गोसीसमा, घसिय घनसार शुं कुंकुमा ए ॥ कनकमणि भाजनां, सुरभिरस पूरियां, तिलक नव प्रभु करो अंगमां ए ॥ १ ॥ चरण

जानू करे, अंस शिर भाल गलें, कंठ हृदि उदर जिन, दीजीयें ए ॥ देवना देवनुं, गात्र विलेपतां, हर प्रभु दुरित, कहि लीजीयें ए ॥ २ ॥

॥ गीत ॥ राग टोमी, अथवा वैरामी ॥

॥ तिलक करो प्रभु नव अंगें, कुंकुम चंदन घसी शुचि घनसार ॥ प्रभुपगें जानु कर अंस शिर भाल गल-कंठीहृदि उदरें चार ॥ अहो भाल गल कंठ हृदि उदरें चार, स्वयं पूजाकार ॥ तिल० ॥१॥ करिय यक्ष कर्दम अगरचुर्ण मर्द्दन, लेपो मेरे जगगुरु गात ॥ हरि जिम मेरुपर ऋषभकी पूजा करी, देखावती कौतुक भेर भेर भाति ॥ तिल० ॥ २ ॥ हमें तुम तन लींप्यो, तोभी भाव नांही छीप्यो, देखो प्रभुविलेपनकी वात ॥ हरियो हम ताप, ए दूजी पूजा विलेपनकी हरो दुरितकुं शुचि कीनो गात ॥ तिल० ॥ ३ ॥ इति द्वितीयचंदनविलेपनपूजा समाप्ता ॥ २ ॥

## ॥ तृतीयचक्षुयुगलपूजा प्रारंभः ॥

॥ रामग्रीरागेण गीयते ॥

॥ तिमिर संकोचनां, रयणनां लोचनां, एम कही जिन मुखें, भविक थापो॥केवल ज्ञाननें केवलदर्शन, लोचन

दोय हम, देव आपो ॥१॥ अवह पाठंतरें त्रीजीय पूजामां, भुवन वैरोचन, जिनप आगें ॥ देव चीवर समुं वस्त्र युग पूजतां, सकल सुख स्वामिनी, लील मागे ॥२॥

॥ गीत ॥ राग अधरस ॥

॥ रयण नयण करी दोय ले कें, मेरे प्रभुमुख दीजें ॥ केवल ज्ञाननें केवल दर्शन, हम पर कृपा कर प्रसाद कीजें ॥ रयण० ॥ १ ॥ देवदुष्यसम वस्त्र जोरु अहवा, त्रीजी पूजा कीजें ॥ उपशम रस भरी नयण कटोरडे, देखी देखी प्रभुमुख दीजें ॥रयण०॥ ॥ २ ॥ इति तृतीय चक्षुयुगलपूजा, तथा वस्त्रयुगल देवदुष्य वस्त्र, अंगलूहणां बे पूजा समाप्ता ॥

## ॥ चतुर्थ वासपूजा प्रारंभः ॥

॥ रामग्रीरागेण गीयते ॥

॥ नंदन वनतणां, बावना चंदनां, वासविधि चूरण, विरचियां ए ॥ जाइ मंदारशुं, शुद्ध घनसारशुं, सुरभि सम कुसूमशुं चरचियां ए ॥१॥ चउथीय पूजमां, सूगंध वासें करी, जे जिन सुरपतें अरचियां ए ॥ प्रभुतणें अंग, मनरंग भरि पूजतां, आज उच्चाट सवि खरचिया ए ॥ २ ॥

## ॥ सप्तमकुसुमआंगीरचनारूप पूजा प्रारंजः ॥

॥ गोडीरागेण गीयते ॥

॥ सातमीपूजामां वरणक फूलशुं जविकरे ए ॥ चंपक दमणलो मरुउ जासुलशुं चित्तरे ए ॥ आंगीय केतकी विच विच शोजती देखीयें ए॥ आंगीय मिश शिवनारीने कागल लेखीयें ए ॥ १ ॥

॥ गीत ॥ राग मालवी । गोडी ॥

॥ कुसुम जाति आंगी मनखंतें, पंचवर्णनी जातें रे॥ सांहे विविध कथीपा जाते रे॥ सूरियाजादि करे जिन पूजा, सकल सुरासुर गातें रे ॥ कुसु० ॥ १ ॥ चंप कशुं दमणो मनरमणो, संजाराग ज्युं श्यामा रे ॥ पंच वर्ण आंगी प्रजु अंगें, रचयति ज्युं सुररामा रे॥ रुषज कूट चक्की नामा रे ॥ कुसु० ॥ २ ॥ इति पंच वर्ण कुसुमजाति आंगीरचनारूप सप्तमपूजा समाप्ता ॥ ७ ॥ हमणां पण ते संप्रदायें विविध जातिनां फूलनी आंगी करता देखाय ठे ॥

## ॥ अष्टमचूर्णपूजा प्रारंजः ॥

॥ केदार, कमोद, कल्याणरागेण गीयते ॥ दोहा ॥

॥ वनसारादिक चूरणं, मनहर पावन गंध ॥ जिनप

ति अंग सुपूजतां जिनपद नवि करे बंध ॥ १ ॥
अगर चूर्ण अति मर्दियो, हिमवालुका समेत ॥ द
श दिशि गंधें वासतां, पूजो जिनपद हेत ॥ २ ॥

॥ गीत ॥ राग कानडो ॥

॥ चूरोरी माई जिनवर अंग सार कपूरें ॥ सब सुख
पूरण चूरण चर्चित, तनु नरी आणंद पूरे ॥ चूरोरी०
॥ १ ॥ पावन गंधित चूरण नरशुं, मुंचति अंग उ
वंगें, आठमी पूज करत तिम नवि जन, मिलाव
तीया सुख संगें ॥ चूरोरी० ॥ २ ॥ इति अष्टमचूर्ण
पूजा समाप्ता ॥७॥ यद्यपि वासपूजा पहेली पण छे,
परंतु ते वास चंदननोज जाणवो,अने आ चूर्णपूजा
ते वासविना बीजा सुगंधद्रव्य कर्पूरादिकनी छे ॥

## ॥ नवमध्वजपूजा प्रारंनः ॥

॥ गोडी राग, वस्तु छंद, जाफरतालेन गीयते ॥
देवनिर्मित देवनिर्मित, गगनें अति उत्तुंग ॥ धर्मध्व
जा जन मनहरण, कनकदंडगत सहस्स जोयण, रण
झणंत किंकिणीनिकर ॥ लघुपताकयुत, नयननूषण,
जेम जिन आगल सुर वहे॥तेम निज धन अनुसार,न
वमी पूजा ध्वज तणी, कहे प्रनु तुं हमतार ॥ १ ॥

॥ गीत ॥ राग रामग्री ॥

॥ सूनो जिनराज, तव महनं॥ए आंकणी छे॥इन्द्रादिक परें किम हम होवत, तोजी तुम सव सहनं ॥ सूनो० ॥ १ ॥ सत्तरजेदें डुपदरायकी, कुमरी पूजति अंगें ॥ जेम सूरियान्न सुरादिक प्रज्जुनें, पूजति नवि मन रंगें ॥ सुनो० ॥ २ ॥ विविध सुगंधित चूरणवासं, मुंचति अंग उवंगें ॥ चउथीय पूज करत मन जानत, मिलाव तिया सुख संगें ॥ सूनो० ॥ ३ ॥ इति चतुर्थ सुगंधवासपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥

## ॥ पंचमपुष्पपूजा प्रारंन्नः ॥

॥ आशावरीरागेण गीयते ॥

॥ मोगर लाल गुलाब मालती, चंपक केतकी वेली॥ कुंद प्रियंगु नागवर जाति, बोलसिरी शुचि मेली ॥ मो० ॥ १ ॥ नूमंडल जल मोकले फूलें, ते पण शुद्ध अखंडें ॥ जिनपद पंकज जेम हरि पूजे, तेणी परें नवि तुं मंडे ॥ मो० ॥ २ ॥

॥ गीत ॥ राग नृत्यकी, आशावरी नट, तथा श्रीराग

॥ पारग तेरे पदपंकज पर, विविध कुसुम सोहे हां रे विविध कुसुम सोहे॥उर देवनकुं आक धतुरे, तुज समो

॥ गीत ॥ राग गोडी नट ॥

॥माई सहस्स जोयण दंम ऊंचो,जिनको ध्वज राजे॥ लघुपताक किंकिणीजुत, पवन प्रेरित वाजे ॥ माई०॥ १॥ सुरनर मनमोहन सोहन, जेम सुरध्वज कीनो॥ तेम भवि ध्वजपूजा करतां, नरभवफल लीनो ॥ माई० ॥ २ ॥ इति नवमध्वजपूजा समाप्ता ॥ ए ॥

॥ दशमआभूषणपूजा प्रारंभः ॥

॥ गोमी धवलरागेण गीयते ॥

॥ लालवर हीरमा, पांच पीरोजडा, विधिजड्या ए॥ मोतीय नीलुआ, लसणिया भूषण, तिहा चड्याए॥ कानें रविमंमल, सम जिन कुंडल, दीजीयें ए॥अंगद रणायनो, मुकुट कंठावलि, कीजीयें ए ॥ १ ॥

॥ गीत ॥ राग गोडी त्रिताल ॥

॥ मुकुट दीयो कनक घड्यो, रयणजड्यो, जिनवरशीश ॥ उरवर हार रचित कहे भूषण, दूषण हर जगदीश ॥ मुकुट० ॥ १ ॥ लालडे खरे हीरे, पांच मोतीन रयणजडे दो कुंमल ॥ अंगद जमित सिंहासन चामर, दिजे पद लियो आखंडल ॥ मुकुट० ॥ ॥ २ ॥ इति दशमआभूषणपूजा समाप्ता ॥ १० ॥

## ॥ एकादशकुसुमगृहपूजा प्रारंभः ॥

॥ केदारगोडीरागेण गीयते ॥

॥ विविधकुसुमें रच्युं, विश्वकर्म्मा सच्युं, कुसुमगेहं ॥ रुचिरसमभागशुं, सुरविमाना जिश्युं, रयणरेहं ॥ १ ॥ तोरणजालशुं, कुसुमनी मालशुं शोभतुं ए ॥ गुछ चंद्रोदय, ऊमखावृंद जे, थोभतूं ए ॥ २ ॥

॥ गीत ॥ राग केदारो। अने बिहाग ॥

॥ मेरो मन रम्यो जिनवर कुसुमघरें, हांरे कुसुमघरें॥ मेरो०॥विविध जुगतिवर कुसुमकी जाति भाति, जेसी अमरघरें ॥ मेरो० ॥ १ ॥ कुसुम ऊमख चंद्रोदय तोरण, जालिक मंरूप भाग ॥ एकादशमी पूजा करतां, अविचल पद भवि माग ॥ मेरो० ॥ २ ॥ इति एकादश कुसुमगृहपूजा समाप्ता ॥

## ॥ द्वादशकुसुममेघपूजाप्रारंभः ॥

मल्लाररागेण गीयते ॥

॥ पंचवरवरणनो, विबुध जेम कुसुमनो, मेघ बरसे ॥ भ्रमर भ्रमरी तणां, युगलरसियां फरे, त्रिजग हरशे ॥ ॥ १ ॥ पगरवर फूलनो, पंचवर्णों करी, सुकृततरशे ॥ बारमी पूजमां, हर्ष तेम जेम मले, कनक परसे ॥ २ ॥

## ॥ एकादशकुसुमगृहपूजा प्रारंभः ॥

॥ केदारगोडीरागेण गीयते ॥

॥ विविधकुसुमें रच्युं, विश्वकर्म्मा सच्युं, कुसुमगेहं ॥ रुचिरसमभागशुं, सुरविमाना जिश्युं, रयणरेहं ॥ १ ॥ तोरणजालशुं, कुसुमनी मालशुं शोभतुं ए ॥ गुच्छ चंद्रोदय, जुमखावृंद जे, थोभतूं ए ॥ २ ॥

॥ गीत ॥ राग केदारो । अने बिहाग ॥

॥ मेरो मन रम्यो जिनवर कुसुमघरें, हांरे कुसुमघरें॥ मेरो०॥विविध जुगतिवर कुसुमकी जाति भाति, जेसी अमरघरें ॥ मेरो० ॥ १ ॥ कुसुम जुमख चंद्रोदय तोरण, जालिक मंरूप भाग ॥ एकादशमी पूजा करतां, अविचल पद भवि माग ॥ मेरो० ॥ २ ॥ इति एकादश कुसुमगृहपूजा समाप्ता ॥

## ॥ द्वादशकुसुममेघपूजाप्रारंभः ॥

मल्लाररागेण गीयते ॥

॥ पंचवरवरणनो, विबुध जेम कुसुमनो, मेघ बरसे ॥ भ्रमर भ्रमरी तणां, युगलरसियां फरे, त्रिजग हरशे ॥ ॥ १ ॥ पगरवर फूलनो, पंचवर्णे करी, सुकृततरशे ॥ बारमी पूजमां, हर्ष तेम जेम मले, कनक परसे ॥ २ ॥

॥ गीत ॥ राग मेघमल्लार ॥

॥ मेहुला ज्युं मली वरसें, करो फूलपगर हर्षे ॥ मेहु० ॥ पंचवर्ण जानुमानें, समवसरण जेम सुर मली, तेम करे श्रावक लोक, द्वादशमी एम जिनपूजतां, जन मन मुद परसे ॥ मेहु० ॥ १ ॥ भमरपें कहावती ऊडते, जानु अधोवृंद पडते, ताण अधोगति नांहिं, जो इम परें प्रभु आगल पडे ॥ इम परें तसनहिं पीडा, कुसुमपुंज कहे सुख लहे, दिन दिन जश चढते ॥ मेहु० ॥ २ ॥ इति द्वादशकुसुममेघपूजा समाप्ता ॥

## ॥ त्रयोदशअष्टमांगलिकपूजाप्रारंभः ॥

॥ वसंतरागेण गीयते ॥

॥ रयणहीरा जिशा, शालिवर तंडुला, वर फल्याए ॥ स्वस्तिक दर्पण, कुंभ भद्रासन, शुं मल्याए ॥ नंदयावर्त्तक, चारु श्रीवत्सक, वर्द्धमानं ॥ मत्स्ययुगलं लिखि, अष्टमंगल अखे, शोभमानं ॥ १ ॥

॥ गीत ॥ राग वसंत ॥

॥ जिनप आगल विरचो भवि लोइ, जसु दर्शन शुभ होइ, ज्युं रे देखत सब कोइ, ॥ जिन० ॥ अतुल तंडुल करी, अष्टमंगलावली, तेम करो जेम तुम घरे फरि

होइ ॥ जिन० १ ॥ स्वस्तिक श्रीवत्स, कुंन्न न्नद्रासन, नंदावर्तक, वर्द्धमानं ॥ मत्स्ययुग दर्प्पण, तेम वर फलगण, तेरमी पूजा सव; कुशलनिधानं ॥ जिन० ॥ ॥ २ ॥ इति त्रयोदश अष्टमांगलिक पूजा समाप्ता ॥

## ॥चतुर्दशधूपदीपकपूजाप्रारंन्नः॥

॥ मालवी गोमीरागेण गीयते ॥

॥ कृष्णागरु तणुं, चूरण करी घणूं, शुद्ध घनसार शुं, न्नेलीयुं ए ॥ कुंदरु कोतुर, क्ला सुकस्तूरिका, अंबर तगरशुं, मेलीयुं ए ॥ १ ॥ रयण, कंचन तणूं, धूपधाणूं घणूं. प्रगटप्रदीपशुं, शोन्नतुं ए॥ दश दिशें महमहे, अगर उखेवतां, चउदमी पूजा रज, क्षोन्नतुं ए ॥ २॥

॥ गीत ॥ राग कल्याण ॥

॥ धूंपी धूमावली, जिनमुख दाहिणावर्त्त करंती, देवगति सूचती चाली ॥ धूंपी० ॥ कृष्णागरु अंब रमृगमदशुं, न्नेली तेम घन सारो ॥ धूप प्रदीप दशां ग करंता, चौदमी पूजा न्नवि तारो ॥ धूपी० ॥ १ ॥

## ॥ पंचदशगीतपूजाप्रारंन्नः ॥

॥ त्रीवेणी, गोमी राग, गाथाबंधेन गीयते ॥

॥ गगननुं नहिं जेम मानं, तेम अनंतफल जिनगुण

गानं ॥ तान मान लयशुं करी गीतं, सुख दीये जेम अमृतपीतं ॥ १ ॥ वीण वंश तल ताल उवंगे, सुरति राखी वरतंति मृदंगें ॥ जयत मान पडतालिक ता लो, आयत धरीनें पातक गालो ॥ २ ॥

॥ गीत ॥श्रीराग ॥

॥ तुंशुभ पार नहीं सुयणो, मानातीतयथा गयणो ॥ तुं० ॥ तान मान लयशुं जिनगीतं, दुरित हरे जेम रज पवणो ॥ तुं० ॥ १ ॥ वंश उपंग ताल सिरिमंडल, चंग मृदंग तंति वीणो ॥ वाजति तान मान करि गीतं; पीतामृत परें कर लीनो ॥ तुं० ॥ १ ॥ गावति सुर गायन जेम मधुरं, तेम जिमगुणगण मणिरयणो ॥ सकलसुरासुर मोहन तूं जिन, गीत कह्यो हम तुम नयणो ॥ तुं० ॥३॥ इति पंचदशगीतपूजा समाप्ता ॥

॥ षोडशनृत्यपूजाप्रारंभः ॥

॥ सोरठ मधुमादन रागेण गीयते ॥

॥ सरस वय वेष सुखरूप कुच शोभती, विविध भू षांगिनी सुरकुमारी ॥ एकशत आठ सुरकुमर कुमरी तिहां, विविध वीणादि वाजित्र धारी ॥ सरस० ॥१॥ अभिनव हस्तकी हाव भावें करी. विविध जुगतें बहु

नाचकारी ॥ देवना देवनें देवराजी यथा, करति नृ
त्यं तथा भूमिचारी ॥ सरस० ॥ २ ॥

॥ गीत ॥ राग शुद्ध नट्ट ॥

॥ एकशत आठ नाचे, देव कुमर कुमरी, दोंदोंदों
मुरज गुंजती, नाचती दई भमरी ॥ एक० ॥ १ ॥ घ
नकुचयुग हारराजि, कशि कंचूकी बंधी ॥ सोलस सिं
गार शोभित, वेणी कुसुमगंधी ॥ एक० ॥२॥ नट क
टिकट ठक्क ठक्क, विच पटि ताल वाजे ॥ देखावती
जिन हस्तकी, नृत्यकी नवि लाजे ॥ एक० ॥ ३ ॥
तिन तिनाति तंति वाजे, रणझुणंति वीणा ॥ तांडव
जेम सुर करंत, तेम करो भवी लीणा ॥ एक० ॥४॥

## ॥ सप्तदशसर्ववाद्यपूजाप्रारंभः ॥

॥ सामेरीरागेण गीयते ॥

॥ समवसरण जेम वाजां वाजें, देव डुंडुभि अंबर
गाजे, ढोल निशान विशाल ॥ भूंगल जल्लरि पण
व नफेरी, कंसाला पुडबडी वर भेरी, शरणाई रण
कार ॥१॥ मुरज वंश सुरती नवि मूके, सत्तरमी भ
वि पूज न चूके, वीणा वंश कहे जिन जीवो, आर
ति तेम मंगल पईवो ॥ २ ॥

॥ गीत ॥ राग गुर्जरी ॥

॥ घणूं जीवतूं जीव जिनराज जीवोघणुं ॥ शंख सरणाई वाजित्रबोले॥मद्दुअरीपरि परि देवकीडुङ्डुजी, हे नहिं जिन तणे कोइ तोले ॥घणूं०॥१॥ ढोल निशान कंसाल तल तालशुं, जल्लरीपणव जेरी नफेरी ॥ वाजतां दे व वाजित्र जाणे कहे, सकल जविकों प्रजो जव न फेरी ॥घणूं०॥२॥ एणी परें जविक वाजित्र पूजा करी, कहे मुखें तुं प्रजु त्रिजग दीवो ॥ इंद्रपरें केम अमें जिनपपूजा करुं, आरती साखि मंगल पईवो ॥घणूं० ३ ॥ इति सप्तदशसर्ववाद्यपूजा समाप्ता ॥

॥ कलश ॥

॥ धन्याश्रीरागेण गीयते ॥

॥ थुणीयो थुणीयो रे प्रजु तुं सुरपति जेम थुणियो ॥ तीन जुवन मनमोहन लोचन, परम हर्ष तब ज णियो रे ॥ प्रजु० ॥१॥ एक शत आठ कवित नित्य अनुपम, गुण मणि गुंथी गुणियो ॥ जविक जीवतुम थय थुई करतां, डुरित मिथ्यायति खणियो रे ॥प्रजु० ॥ २ ॥ तप गह्ल अंबर दिनकर सरिखो, विजयदान गुरु मुणियो ॥ जिन गुण संघ जगति करि पसरी,

कुमति तिमिर सब हणियो रे ॥प्रभु०॥ ३ ॥ एणी प रें सत्तरभेद पूजा विधि,श्रावककुं जिन भणियो ॥ स कल मुनीश्वर काउसग्ग ध्यानें, चिंतवितत्तस फल चु णियो रे ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ इति कलशः ॥

इति श्री सकलचंदजी उपाध्यायकृत
सत्तरभेदी पूजा समाप्ता ॥

## अथ श्रीमेघराजमुनिकृत सत्तर भेदी
## पूजाप्रारंभः ॥

॥ अनुष्टुब्वृत्तम् ॥

सर्वज्ञं जिनमानम्य, नत्वा सद्गुरुमुत्तमं ॥
कुर्वे पूजाविधिं सम्यक्, भव्यानां सुखहेतवे॥१॥

॥ दोहा ॥

॥ वंदी गोयम गणहरु, समरी सरसति एक ॥ कवि यण वर आपे सदा, वारे विघ्न अनेक ॥१॥ पूजा क रतां जिन तणी, श्रावक कहे सुवचन्न ॥ ते हुं भ णिश विधि करी, सांभलजो एक मन्न ॥ २ ॥ न्हव ण विलेपन वस्त्रयुग, वास फूल शुभ माल ॥ वर णह चूरण ध्वज भलो, बहु आभरण विशाल ॥

३ ॥ फूलां केरे घर पगर, मंगल धूप अपार ॥ गीत नृत्य वाजित्र ए, सत्तर हवे विस्तार ॥ ४ ॥

## ॥ अथ प्रथम न्हवणपूजा प्रारंभः ॥

### ॥ ढाल पहेली हेमनी ॥ राग विभास ॥

॥ प्रथम जिननायकं, नौमि सुखदायकं, कृतशुचि पूर्वदिशि, सकलदेहं ॥ धोति तनु आवरी, एकचित्त मन करी, पश्यति दर्शनं, पुण्यगेहं ॥ सिंधुगंगादिभि, स्तीर्थगंधोदके, भरितमणिकनकमय, कलशआली ॥ भविकश्रावक मली, नाहवो परि भली, संशय मन तणा वेग टाली ॥ १ ॥

### ॥ गीत राग नट्ट मल्हार ॥

॥ जिनकी इणवीधि पूजा कीजें ॥ सुंदर धर्म लही भविका जन, मणुअ जनम फल लीजें ॥ मेरे जिन की एणविधि पूजा कीजें ॥१॥ निर्मल अंग करी अति उज्वल, अंबर ते पहरीजें ॥ अतिहि सुगंध सुरभि द्रव्यवासित, कंचन कलश भरीजें ॥ मेरे जिनकी० ॥ २ ॥ करी मुखकोश मोरपिछ पूंजी, पहेली पूजा रचीजें ॥ कहे घन वचन ललित मनोहर नाभि मल्हार न्हवीजें ॥ मेरे ॥ ३ ॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ शचीपतिः सप्तदशप्रकारैः, भृत्यामरैस्संघटितोपहारैः ॥ स्वर्गांगनासु क्रमगाहिनीषु, पूजां प्रभोः पार्श्व जिनस्य चक्रे॥१॥पुरंदरः पूरितहेमकुंभे,रदंभमंभोभिर लं सुगंधैः॥साकंसुरौघैर्मघवा च सम्यक्, पूजां जिनेंदोः प्रथमां चकार ॥ २ ॥ इति न्हवणपूजा प्रथमा ॥ १ ॥

## ॥ अथ द्वितीय विलेपनपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ केसर चंदन घसि घणां, मेलवी मांहे बरास॥
नव अंगें जिन पूजतां, नव निधि आतम पास ॥१॥
जिन प्रतिमाने विलेपतां, शीतल थाये आप ॥
क्रोध दावानल उपशमे, जाये भव संताप ॥ २ ॥

॥ राग रामग्री ॥ तथा आशावरी ॥

॥ कुंकुमसंयुतं, घसीय वरचंदनं, सरसघनसारशुं, मांहे मेली ॥ कंचन मणितणां, भरिय बहु भाजनां अगर रस कुमकुमा,तेह भेली ॥ पूजि नव अंगमां चरण जानू करें, अंस हृदि बाहु वेहु अपार॥ कंठ ललाट शिर, विलेपतां रंगभर, पामीयें भव तणो एम पार॥१॥

॥ गीत राग देशाख ॥

॥ करुं हुं पूजा जिनवर केरी, आगमवचन सुण्यां में तायें, प्रगट नई मति मेरी ॥ करुं हुं पूजा०॥१॥केसर चंदन नरिय कचोली, अरचूं युक्ति घणेरी ॥मणुअज न्मको लाहो लीजें, नक्ति करुं अधिकेरी ॥ करुं हुं पूजा० ॥ २ ॥ अंजलि जोरी मोरि तनु अपनो, वात कहुं जुं नलेरी ॥ देश शाख शासय सुख केरी, मुक्ति मंदिरकी शेरी ॥ करुं हुं पूजा० ॥ ३ ॥

## ॥ काव्यं ॥ उपेंडवज्रावृत्तम् ॥

॥ अंगं प्रमृज्यांगसुगंधगंध, काषायिकेनैषपटेन चेंडः ॥ विलेपनैश्चंदनकेसराद्यैः, पूजां जिनेंदोरकरो द्वितीयां ॥ १ ॥ इति विलेपन पूजा द्वितीया ॥ २ ॥

## ॥ अथ तृतीय वस्त्र युगलपूजा प्रारंन ॥

॥ दोहा ॥

॥ त्रीजी पूजा जिन तणी, वस्त्र युगलनी होय ॥ नयनयुगल पण को कहे, परमार्थें एक जोय ॥ १ ॥ अंशुयुग्म असें ठवी, नावो नावन एम ॥ निश्चय धर्मव्यवहार वृष, आदरशुं बहु प्रेम ॥ २ ॥ अथवा ज्ञानक्रिया करी, अंगीकरशुं धर्म ॥ असंख्यप्रदेशी आ

तमा, निर्मल करवा मर्म ॥ ३ ॥ स्वपर विवेचन दृ-
ष्टिवर, प्रगटे एथी नित्य ॥ अथवा क्षायिक क्षयोप-
शम, सम्यक् दृष्टि मित्त ॥ ४ ॥ वस्त्रयुगलनी
पूजना, सूरियाभ सुरवरें कीध ॥ त्रीजी पूजा क-
रीयने, रत्नत्रय वर लीध ॥ ५ ॥

॥ राग देशाख ॥

॥ सुरभिद्रव्यवासितं, वस्त्रयुगमुज्वलं, प्रभुतणे मस्त
कें मूकीयें ए ॥ भक्ति एणि परें करुं, शुद्धसमकित धरुं,
पूजतां ध्यान नवि चूकीयें ए ॥ भव तणी श्रेणिनां, क
र्मपातक घणां, देखतां पाप सवि त्रुटियें ए ॥ दर्शन
जिनरस, नयणनालें करी, अमृतसम रस घूंटियेंए ॥१॥

॥ गीत ॥ राग भैरव ॥

॥ पूजाकरणं भव्याभरणं, स्यादपि भवभयहरणं ॥
पूजा० ॥ कनकतंतुविराजितममलं, सौरभिगंधमु
दारं ॥ भैरवकर्मविदारणशीलं, सुरनरजगदाधारं ॥
पूजा० ॥ १ ॥ अंबरयुगलं मस्तकधरितं, हे जिन
शोभितदेहं ॥ भासि यथा त्रिदशाधिपधनुषं, रा
जति तव तनुगेहं ॥ पूजा० ॥ २ ॥ निजचेतसि यदि
वांछसि सौख्यं, भवमकराकरपारं ॥ वदति मेघ
मुनिर्जिनपूजां, तृतीयां कुरु भवसारं ॥ पूजा० ॥ ३ ॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ च्युतंशशांकस्य मरीचिभिः किं, दिव्यांशुकंछछम तीवचारु ॥ युक्त्या निवेश्योन्नयपार्श्वमिंद्रः पूजां जिनें-दोरकरोत्तृतीयां ॥ १ ॥ इति वस्त्रयुगलपूजा, तृतीया॥३॥

## ॥ अथ चतुर्थ वासपूजाप्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

सम्यक् ज्ञानादिक गुणें, वासित थाये आप ॥
करतां पूजा वासनी, जाये सर्व संताप ॥ १ ॥
कुमति जवासा शोषवे, टाले मिथ्या पास ॥
शिवपुरमां वासो वसे, जो जिन पूजे वास ॥ २ ॥
शुद्धातमनी वासना, नासन नास्कर ज्योत ॥
अरिहंत वास उपासना, नवजल तारण पोत ॥ ३ ॥
आराधे अनुशासना, वाधे जग यशवास ॥ साधे मारग मोक्षनो, वासें अर्चें पास ॥ ४ ॥

॥ राग केदारो ॥

॥ सुरनि वस्तु सवि मेली, कुंकुम केसर नेली, कुसुमें वासित ए, रंगें राजित ए, वासें पूजो अंग, पामो शिवसुख रंग, जिनवरने नमो ए, जेम जग नवि नमो ए ॥ १ ॥

॥ गीत ॥ राग मालवी गोडी ॥

॥ वीतराग भावेंकरी पूजिला, आपणी आपे पदवी ॥ सेवियें कहा होत है तिनकुं, निज सरखे न करे पुहवी ॥ वीत० ॥ १ ॥ नौतन चारु फूल बहुवासित, पूजा जिनवर वासें ॥ चंदन पन्नग पास नीलकंठ, बोलत हि त्युं करम नासे ॥ वीत० ॥ २ ॥ चोथी पूजा तारक केरी, कीजें मालवी रागे ॥ भवनां अनेक कर्म भूरि संचित, टलत पाप वार न लागे ॥ वी० ॥ ३ ॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ कर्पूरसौरभ्यविलासिवासैः, श्रीखंडवासैः किल वासवोऽथ ॥ विभासुरश्रीजिनभास्करेंदोः, पूजां जिनेंदोरकोच्चतुर्थीम् ॥ १ इति वासपूजा चतुर्थी ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम बूटाफूलनी प्रजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंचमी पूजा फूलनी, बूटां कुसुम समूह ॥ पूजो श्री अरिहंतजी, प्रगटे चित गुणव्यूह ॥ १ ॥ पंचबाण पीडे नहीं, जे करे पंचमी पूज ॥ रत्नत्रयनें ते वरे, मोह विछूटे धूज ॥ २ ॥ काल अनादिनी जीवने, लागी जड दुर्गंधि ॥ ते टाले ए पूजना, धारे ज्ञान

सुगंधि ॥ ३ ॥ वारे मिथ्यावासना, चूरे पुग्गल व्याधि ॥ पूरे वांछित कामना, थाये पूर्ण समाधि ॥ ४ ॥ चेतनता निर्मल हुए, पामे केवल ज्ञान ॥ यश सुवास जग विस्तरे, लहे निर्वाण सुथान ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ शार्दूलविक्रीमितं वृत्तम् ॥

॥ गंधाढ्यैः कुसुमैर्नवैस्तु विरलैः पूजां करोतिप्रज्ञोः, ज्ञक्त्या योऽपिहरि प्रियामिहज्ञवे तस्य प्रसन्नोज्ञवेत् ॥ सौख्यं सर्वज्ञवांतरेषु लज्ञते सान्निध्यमास्थीयते, कुत्रान्यत्र सुधां विहाय गरलं पातुं कश्छेन्नरः ॥ १ ॥

॥ गीत राग वेलावल ॥

॥ मोकले कुसुमें करी, अरच्चा स्वामिनी ॥ मिथ्यात्व शिरसि, डुस्सहदामिनी ॥ मोकले० ॥ १ ॥ जगगुरु तव पूजा ज्ञविकने, मोहन कामिनी ॥ अज्ञिनवा कुमतिने, चकवाकुल यामिनी ॥ मोकले० ॥ २ ॥ नरक दरद प्राचीन बहु, आवत थांज्ञिनी ॥ पूजा पंचमी ज्ञविकने, वेलावल दायिनी ॥ मोकले० ॥ ३ ॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ मंदारकल्पद्रुमपारिजात, जातैरलिव्रातकृतानुपातैः ॥

पुष्पैः प्रभोरग्रथितैर्नवांगं, पूजां वितेने किल पंचमीं सः ॥ १॥ इति बूटां फूलनी पंचमी ॥

## ॥ अथ षष्ठ पुष्पमाल पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ छठी पूजा स्वामिनी, पुष्पमालनी होय ॥ शिव वधू वरमाला ठवे, जेह करे भवि लोय ॥ १ ॥ सुर भियुक्त वर कुसुम लइ, करे मनोहर माल ॥ प्रभुकंठें ठवि भावियें, ज्ञानादिक गुणमाल ॥ २ ॥

॥ राग देशाख ॥

॥ चंपक केतकी, नागवर मालती, मोगराशोक पुन्नाग जाती ॥ कुंद पाडल ग्रही, जाई जूई सही, गुंथियें सुंदर,भक्तिराती ॥ सकलमन रंजती,भ्रमरगुणगुंजती, वासती दहदिशि, अति रसाली ॥ सौरभरस भरी, विविध कुसुमें करी, मस्तक पग लगें, अति विशाली ॥१

॥ गीत ॥ राग गुंड ॥

॥सेवंत्री वरजूई विउल सिरि, मालती सरस गुलाल रे ॥ केतकी चंपक पाडल दमणो, गूंथी तिनकी माल रे ॥१॥ दाम करीने कंठें ठवियें, करीयें मन आणंदरे ॥ परिमल केसर भ्रमर गुंजत हे, मोहे सुरनरवृंद रे ॥

दाम० ॥ २ ॥ छठी पूजा तारक केरी, कीजें रागें गुंडरे ॥ शुद्धभाव धरिपूजत जिनवर, तूटतकर्मप्रचंडरे ॥दा० ॥३

॥ काव्यं उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ तैरेव पुष्पैर्विरचय्य मालां, सौरभ्यलोभभ्रमिभृंग मालां ॥ आरोपयन्नाकपतिर्जिनांगे, पूजां पटिष्टीं कुरु ते स्म षष्टीं ॥ १ ॥ इति पुष्पमालपूजा षष्ठी ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तमपंचवर्णफूल पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंचवर्णना फूलनी, पूजा सातमी एह ॥ पंचम ज्ञान प्रकाशपर, करे प्रमादनो छेह ॥ १ ॥ ए पूजा करतां थकां, भावो भावना एम ॥ वर्णादिक गुण र हित तुं, अलख अवर्णी खेम ॥ २ ॥ वर्णादिक पु ज्ञलदशा, तेशुं तुज नहीं मेल ॥ तुं रत्नत्रयमयी स दा, भिन्न यथा जल तेल ॥ ३ ॥ चिदानंद घन आत मा, पूर्णानंद अरूप ॥ शुद्धातम सत्तारसी, दर्शन ज्ञान स्वरूप ॥ ४ ॥

॥ राग सामेरी ॥

॥ करुं पूजा करुं पूजा, नमो जिनराय, पंचवर्ण आं गी रचो, विविध रंग रंगेहिं भेलो, अति अनुपम चि

त्राम करी उदय, सूरसम कांति मेलो, एणी परें जिनवर पूजतां, आपे शिवपदराज ॥ सातमी पूजा कीजियें, सीके सघलां काज ॥ १ ॥

गीत ॥ राग कल्याण ॥

॥ पूजो मनरंगें पूजो मनरंगें, पंच वर्ण केरी आंगी रचावो, नांखीयें अंगे ॥ पूजो मनरंगें पूजो मनरंगें ॥ १॥ नव नव नाति अति हे मनोहर, रंगें रंग नले ॥ पद्म रागसम कांति धरत तुं, जीवन आज मिले ॥पूजो० ॥२॥ लाल गुलाल फूल बिच शोन्ने, केतकी कुसुम धरे ॥ सातमी पूजा करीने मागुं, जिन कल्याण करे ॥पू० ॥३॥

काव्यं ॥ उपेंडवज्रावृत्तम् ॥

॥ मंदाकिनींदीवरपीवरश्री, रक्तोत्पलैश्चंपकपाटलाद्यैः॥ कुर्वन् विन्नोर्वर्णकवर्ण्यशोन्नां, पूजां प्रतेपे किल ससमीं सः ॥ १ ॥ इति पंचवर्ण फूलनी पूजा सप्तमी ॥७॥

॥ अथाष्टमचूर्णपूजा प्रारंन्नः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अष्टमी पूजा कीजीयें, लेई सुगंध बरास ॥ ए चूरणनी पूजना, करतां पूगे आश ॥ १॥ ए पूजामां नावियें, आतम नावन एम ॥ चूरुं कर्माष्टक प्रतें,

धरि शुद्धातम प्रेम ॥ २ ॥ अष्ट महामद गालवा, टालवा आठे नीति ॥ अष्ट प्रवचन मातनें, पालवा अधिकी प्रीति ॥ ३ ॥ अडदिठी अनुक्रमें वधे, लहे क्षायिक समकित ॥ आठमी पूजा जे करे, नाव ध री नवि नित ॥ ४ ॥ श्रद्धा नासन रमणता, पामे स हजानंद ॥ तत्त्व रमणतादिक वहु, प्रगटे निज गुण वृंद ॥ ५ ॥ नावघटा मेरी उणहई, वरषे जिनपद शृंग ॥ घनसारह धारा करी, पूजो अरि हंत अंग ॥ ६ ॥

॥ गीत ॥ राग सारंग ॥

॥ वरसेजी मेरी नाव घटा, जिनके चरण कमल गि रिजपर, चूर्ण सुगंध छटा ॥ वरसेजी० ॥ घनसारादि क सरस मनोहर, कर ग्रहि सुगंध पुटा ॥ दीनदयाल कृ पालकुं पूजित, पुलकति अलक लटा ॥ वरसेजी० ॥ ॥१॥ मागत हुं हवे अष्टमी पूजा, तोरो मेरी कर्म जटा ॥ मनसा रंगें सेवक जंपे, अक्षर एप्रगटा ॥ वरसेजी०॥२॥

॥ काव्यं ॥ उपेंडवज्रावृत्तम् ॥

॥ दंनोलिपाणिः परिमर्द्य सद्यः, कर्पूरफालीर्बहुनक्ति शाली ॥ चूर्णं मुखे न्यस्य जिनस्य तूर्णं, चक्रेऽष्टमं पू जनमिष्टहेतुं ॥ १ ॥ इति चूर्णपूजाऽष्टमी ॥ ८ ॥

## ॥ अथ नवमी ध्वजपूजा प्रारंभः ॥

॥ नवमी पूंजा ध्वज तणी, करतां शिवसुख होय ॥
जिनचैत्योपरि बांधियें, महाध्वजा भवि लोय ॥ १ ॥

॥ राग वेलावल परदो ॥

॥ धर्म ध्वजा लहके गगन, दंरु सहित उत्तंग ॥
पवन झकोरी, घूघरी, वाजे जिणहर शृंग ॥ १ ॥

॥ गीत ॥

॥ हे मम ईश! तेरो ध्यान धरियें,हे जगदीश ! पूजा नवमी करियें ॥ हे मम ईश! तेरो ध्यान धरियें, हांरे जगदीश! पूजा नवमी करीयें॥एक सहस जोयण दंरु उंचो, देव मोहियें ॥ ध्वजा गगन लेहेके रंग, नाना वर्ण सोहियें ॥ हे मम० ॥ हांरे जग० ॥१॥ घूघरीना घमकार सुनियें, पवनप्रेरी ॥ पंचरंग लागुं हीर घंटा, कनक केरी ॥ हे मम० ॥ हांरे जग० ॥२॥ हम तुम बिच जिणंद अंतर, कर्म परदो ॥ तुं करि कृपा जिनराज! वेगें, तेहमरदो॥ हे मम० हांरे जग० ॥३॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ पुलोमजामौलिनिवेशनेन, प्रदक्षिणीकृत्य जिना

लयं तं ॥ महाध्वजं कीर्तिमिव प्रतत्य, पूजामकार्षीन्न
वमीं विमौजाः ॥ १ ॥ इति ध्वजपूजा नवमी ॥ ए ॥

॥ गीत ॥ राग नट्ट नारायण ॥

॥ हमें प्रजु दीजें हो वरदान, याचक जविक कह
त हे तुमशुं ॥ जेम पामो जगमान ॥ हमें० ॥ १ ॥
पूजत जिनवर दानज देतां, जोवत हो क्युं पूंठि॥नव
यनंद कनकगिरि संचित, ते न गये जर मूठी ॥हमें०
॥२॥ रूप सुवर्ण नाण वर वासण, वांछित फल दीयो
स्वामी ॥ एहि अवसर मत होय अदाता,सेवक कहे
शिर नामी ॥ हमें० ॥ ३ ॥ इति दानं ॥ ए ॥

## ॥ अथ दशम आजरणपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ दशमी पूजा देवनी, बहु आजरणनी होय ॥
अलंकार पहेरावीयें, जावन जावो सोय ॥ १ ॥ अ
नलंकारें सुजग ए, आतमजाव अलंकार ॥ तो पण ज
क्तिउल्लासने, कारणें एह विचार ॥ २ ॥ जूषणें जूषि
त स्वामिने, देखी हरखो जव्य॥जिनमुद्रा शुद्ध तत्त्व
मयी, वीतराग गुण सव्य ॥ ३ ॥ वीतरागना गुण व
धे, देखी श्री जिनबिंब ॥ निजस्वरूप निज जावमां,

वली होये प्रतिबिंब ॥ ४ ॥ पुद्गलनां भूषण तजे, ते परिचित बहु काल ॥ ज्ञानादिक गुणरत्नना, पहेरे ते अलंकार ॥ ५ ॥

॥ आर्या गीति ॥

॥ भूदेवग्रहइंद्रा, आभरणैर्भूषिताविहश्यंते ॥ हे जिन प्रभातसमये, उडुपतिबिंबं यथा भवति ॥ १ ॥

॥ गीत । राग केदारो ॥

॥ सबकुं सोहायोहो, मस्तकें मुकुट भस्यो ॥ जाकी बी ज्योति छिप गए ग्रहगण, उंर विचें हो रयण भस्यो ॥ सबकुं० ॥ १ ॥ तिलक ललाट श्रवण दोय कुंमल, सुघस्यो घाट घस्यो ॥ मोतिनको हार बाहें दोय अंगद, सब भूषण हो तार कस्यो ॥ सबकुं० ॥ २ ॥ दशमी पूजा करी केदारे, तिनको काज सस्यो ॥ बहु आभरण करी जिन दीपे, सेवकको हो डुरित हस्यो ॥ सबकुं० ॥ ३ ॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ मुक्तावलीकुंडलबाहुरक्, कोटीरमुख्याभरणावलीनां ॥ प्रभोर्यथास्थाननिवेशनेन, पूजामकार्षीद्दशमीं बिडौजाः ॥ १ ॥ इति आभरणपूजा दशमी ॥ १० ॥

## ॥ अथैकादशपुष्पगृहपूजा प्रारंभः ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ फूल गेहनी पूजना, एकादशमी होय ॥ कुसुम घरे प्रभु थापिने, हर्षे भवियण लोय ॥ १ ॥ फूलह केरे घर बिचें, सोहे श्री जिनराय ॥ जेम तारामां चंदलो, जोतां हर्ष न माय ॥ २ ॥

### ॥ गीतं ॥

॥ फूलघर बेठे जगत दयाल, जल थल कुसुम तणीरी परिमल, गुंजे मधुकर माल ॥ फूलघर बेठे जगत दयाल ॥ १ ॥ आठे कुसुम बनाये तोरण, तामें भाति घणी ॥ किनही सुजाण निपायो मंरूप, जिनवर भक्ति भणी ॥ फूलघर० ॥२॥कायकुं जाति केदारो गोकी, सुर नर भक्ति भरी ॥ असंख्यगणुं फल अग्यारमी पूजा, करतां एक घरी ॥ फूलघर० ॥ ३ ॥

### ॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥पुष्पावलीभिः दरितो वितत्य, पुरंदरः पुष्पगृहं मनोज्ञं ॥ पुष्पायुधाजेय जयेति जल्प, न्नेकादशीमातनुते स्म पूजां ॥ १ ॥ इति पुष्पगृहपूजा एकादशी ॥११॥

## ॥ अथ द्वादशपुष्पपगरपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ बारमी पूजा प्रभु तणी, फूल पगरनी जाण ॥
फूलवृष्टि जिन आगले, विरचे भव्य सुजाण ॥ १ ॥

॥ राग ॥ श्री ॥

॥ अहो पंच, रगें भवि! कुसुमनो पगर भरीयें, रचि देवता अविरल तेम करीयें ॥ तिहां अलि तणी श्रेणी गुंजे रमंती, मधुरध्वनि रणझणे जेसी वेंणुतंती ॥ इण विधि जिन तणी भक्ति कीजें, अचरिज देखि पुष्पपगर भरियें ॥ १ ॥

॥ गीत । राग पूर्वी ॥

॥ सखी तुम देखन आउरी, मेरे प्रभुकी सकलाई॥ सन्मुख पतंति कुसुम, मिलत नहिं कुमलाई ॥ सखी तुम०॥नाहिं नाहिं ए अचरिज,जे सन्मुख थाई॥तब तव गोचर भक्त जनोके, बंधन अध जाई॥सखी०॥१॥ तव मुख शशी विरह नावे, मिले तन दिलसाई ॥दूर थी चंद कुमुद विकसित, नेरेकी अधिकाई ॥सखी० ॥२॥ सरसवदन वारि सींचे, ते क्युं कुरमाई ॥ पूजा द्वादशमी कही एही, कीजें चित्त लाई ॥सखी०॥३॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ कराग्रमुक्तैः किल पंचवर्णैं, रग्रंथपुष्पैः प्रकरं पुरो ऽस्य ॥ प्रपंचयन् वंचितकामवीरः, सद्वादशीमातनुते स्म पूजां ॥ १ ॥ इति पुष्पपगरपूजा द्वादशी ॥१२॥

॥ दोहा ॥

## ॥ अथ त्रयोदशअष्टमंगलपूजा प्रारंभः ॥

॥ तेरमी पूजा स्वामिनी, रचवा मंगल आठ ॥ अक्षतना आलेखवा, जिन सन्मुख शुभ गठ ॥ १ ॥ स्वस्तिक श्रीवत्स कुंभ वलि, भद्रासन शुभ जाण ॥ नंदावर्त्त ने मीनयुग, दर्पणने वर्द्धमान ॥२॥ मंगल विरची भावियें, शुद्धातम मंगलिक ॥ अष्टसिद्धगुणनें वरूं, सासयसुख निर्भीक ॥ ३ ॥ अक्षय सुखने कारणें, अक्षतना करि थाप, अष्ट कर्मने क्षय करे, गाले सकल संताप ॥ ४ ॥

॥ गाथा आर्याछंद ॥

॥ अठ्य मंगल पूआ, किज्जाई भावेण जिणवराणं ॥ निय गेहे होइ सोहं, जह काले मेहवुठ्ठिय ॥ १ ॥

॥ गीत । राग गुर्जरी ॥

॥ बनी पूजा तेरसमी नीकी, मंगल आठ छबील सो

हाय, ज्युं नयनोमें कीकी ॥ बनी० ॥ १ ॥ स्वस्तिक श्रीवत्स कुंभ भद्रासन, नंदावर्त्त वनाय ॥ वर्द्धमान मकरयुग दर्प्पण, किनहीं भक्ति भराय ॥बनी० ॥२॥ जे जिन आगल मंगल विरचे, मंगल तस घर होई ॥ पूजत जिनवर आशा पूरे, भवियण जन रहे जोई ॥ बनी० ॥ ३ ॥

## ॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ आदर्शभद्रासनवर्द्धमान, मुख्याष्टसन्मांगलिकैर्जिनाग्रे ॥ स राजतप्रोज्ज्वलतंडुलौघैस्त्रयोदशीमातनुते स्म पूजां ॥१॥ इति अष्ट मंगलपूजात्रयोदशी ॥१३॥

## ॥ अथ चतुर्दशधूपपूजा प्रारंभः ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ चौदमी पूजा धूपनी, कीजें अधिके भाव ॥ ए सेवा भवि जीवने, भव जल तारण नाव ॥ १ ॥ कृष्णागरु उखेवतां उखेवो डुष्कर्म ॥ भमतां भूरि भवांतरे, लाधो हवे में मर्म ॥ २ ॥

### ॥ गीत । राग कनडो ॥

॥ जिनकी पूजा अमृत वेली, जिनवर धर्म बहुत भवि पायो ॥ रंगें भविजन खेली ॥ जिनकी० ॥१॥

कृष्णागरु दोई मलय मनोहर, मृगमद मांहे नेली ॥ धूप उखेवी माग तुं जिनपें, नरक तणी गति ठेली ॥ जिनकी० ॥ २ ॥ नविक नरें जिनवर एम पूज्या, सवी सामग्री मेली ॥ चौदमी पूजा एणि परें करतां, आपे शिवपद केली ॥ जिनकी० ॥ ३ ॥

## ॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ कर्पूरकालागरुगंधधूप, मुत्क्षिप्य धूमब्रलङ्कृरितै नाः ॥ घंटानिनादेन समं सुरेंद्र, श्चतुर्दशीमातनुते स्म पूजां ॥ १ ॥ इति धूपपूजा चतुर्दशी ॥ १४ ॥

## ॥ अथ पंचदशगीतपूजा प्रारंनः ॥

॥ पन्नरमि पूजा गीतनी, तास कथा पन्नणेस ॥ नाव पूजानो नाव ए, टाले सकल कलेश ॥ १ ॥ तान मान लय ध्यानथी, आलापे सवि राग ॥ अति अद्भुतगुण कीर्तना, करियें धरि बहुराग ॥ २ ॥

### ॥ राग देशाख ॥

॥ कमलदललोचनी, विरहदुःखमोचनी, सुंदरी जिन तणां गीत गावे ॥ निज मुखें गुण ग्रहे, कोकिलास्वर कहे, श्रवण रस नणी तव, इंद्र आवे ॥ राग सवि आ

लवी, जिनगुण बहु स्तवी, पालवी प्रभु तुम्हें, एक वाचा ॥परभवें दरिसण, देयवुं जिन तुमें, जिन अबो कलियुगें देव साचा ॥ १ ॥

॥ गीतं ॥ श्रीरागेण गीयते ॥

॥ जिनगुण गावत सुरसुंदरी, चंपकवर्ण कमलदल लोयन, शशिवदनी शृंगार भरी ॥ जिन० ॥ वेणु उ पांग वंश सिरिमंरुल, ताल मृदंग सुबंद करी ॥ सवि श्रीराग आलापति रंगें, सुरति धरी सखि अति मधुरी ॥ जिन० ॥ २ ॥ आगें एणी परें सुरनरें कीधी, ते प होता संसार तरी ॥ पन्नरमी पूजा एणी परें करतां, सुणि रावण जिन पदवी वरी ॥ जिन० ॥ ३ ॥

॥ काव्यं उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ अष्टोत्तरं स्तोत्रशतंः पठित्वा, जानुस्थितः पृष्ठधरः सुरेशः ॥ शक्रस्तवं प्रोचि शिरःस्थपाणि, नत्वा जिनं संसदमाबुलोक ॥ १ ॥ इति गीतपूजा पंचदशी ॥१५

॥ अथ षोडशनृत्यपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ शोलमी पूजा नृत्यनी, नाटक बत्रीश बद्ध ॥ सूरियाभसुरनी परें, करियें भाव समृद्धि ॥ १ ॥ भव

नाटक एहथी टले, फले मनोरथ सर्व ॥ सम्यगृद र्शण नाण सुख, पामे शमावे गर्व ॥ २ ॥

॥ राग नट्ट ॥ दोहरो ॥

॥ देव कुमर कुमरी मली, नाचे एकशत आठ ॥ संगतादिक परें करे, आलापे शुरू नाट ॥ १ ॥

॥ गीत ॥

॥ इंद्रादिक एम करे, पूजा तेरी ॥ गिक्कि गिडि डुमकी मुरज घूमे, भक्ति करे अधिकेरी ॥इंद्रादिक० ॥ १ ॥ नख शिख लगें वेष सजी, वहु हस्त करी ॥ कुचघन वचें करयुग धरी, शोभती अति फिरति ॥ इंद्रा० ॥ २ ॥ वेणुवंश उपांगरव, ताल बाजति छंदें ॥ कुंमर कुमरी एकशत आठ, नृत्यति जिन वंदे ॥इंद्रा० ॥ ३ ॥ गगनें जलद नाद सुणी, नाचत सुकलापी ॥ कीजें एम शोलमी पूजा राग नट्ट आलापी ॥इंद्रा० ॥४

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रवृत्तम् ॥

॥ आलोकनाकृतविदस्ततोऽस्य, गंधर्वनाट्याधिपती अमर्त्यौं ॥ तूर्यत्रिकं सज्जयतः स्म तत्र, प्रभोर्निषण्णे पुरतः सुरेंद्रे ॥ १ इति नृत्यपूजा षोमशी ॥ १६ ॥

## ॥अथ॥ सप्तदशवाजित्रपूजा प्रारंभः॥

॥ दोहा ॥

॥ डुंडुही वज्जे महुरसर, त्रिजग सुणावे नाद ॥
वीतराग पूजा करो, अंग तजीने प्रमाद ॥ १ ॥

॥ गीत ॥ राग नट्ट ॥

॥ सुर पंचशब्दें करी विश्व जणावती, मुक्ति तणां सुख आपतीयां ॥ भो भविका ! तुमें जिनवर पूजो, आलस तजी उछंगतीयां ॥ सुर० ॥ १ ॥ अनंत लाभ जाणी वाजित्र बहु आणी, मधुरध्वनि अरचे जिनुआ॥ मनवांछित फल तत्क्षण आपे, स्थिर राखे जो एम नुआ ॥ सुर० ॥ २ ॥ मेघराज मुनि वंदित रंगभर, सत्तरमी पूजायें चित्त धरुं आ ॥ नाम ठाम द्रव्य भावथी ए जिन, सकल संघनें सुखकरु आ सुर० ॥ ३॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

मृदंगभेरीवरवेणुवीणा, षड्भ्रामरीझल्लरिकिंकिणीनां॥भंभादिकानां च तदा निनादैः ॥ क्षणं जगन्नादमयं बभूव ॥ १ ॥ मुदा ततस्तुंबरुनारदाद्याः प्रभोर्गुणाली रूपवीणयंतः ॥ सुधाशनादप्यधिकं वितेरुः, सुधाशनानां हृदये प्रमोदं ॥ २ ॥ ततश्चलत्कुंडलतारहार, श्रृं

गारभारस्फुरदंगयष्टिः ॥ रंभाचिरं भावयति स्म लास्य, लीलां वितीलांग जिनाङ्कविद्युत् ॥३॥ साची कृताद्दीव ततोघृताची, तिलोत्तमा चोत्तमनाट्यशक्तिः ॥ मेने म नोज्ञा किल मेनकापि, कलाकलापस्य फले गृहीत्वा॥४॥

॥ शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥

॥ इत्येवंविधगीतवाद्यनटनैः पूजां विधाय त्रिधा, तां मूलाद्विरचय्य सप्तदशधा प्रीतिस्तदाऽऽखंडलः ॥ अर्च्चेयं धनदत्तउज्ज्वलसरिन्नीरैः पटीरैः पटुः, कर्पूरैः स च मेरुनंदनवनीकल्पद्रुपुष्पैश्चिरं ॥ ५ ॥ इति वाजित्रपूजा सप्तदशी ॥ १७ ॥

॥ गीत ॥ राग धन्याश्री ॥

॥बोली बोली रे बोली पूजानी विधि नीकी, सत्तर भेद आगम जिन भांखी ॥ शिवरमणी शिर टीकीरे ॥ ॥ बोली० ॥ १ ॥ जीवाभिगमें ज्ञाताधर्में, रायपश्रेणी प्रसिद्धि ॥ विजयदेव द्रौपदियें पूज्या, सूरियाभें पण कीधी रे ॥ बोली०॥२॥ अचलगछें दिन दिन दीपे, श्री धर्ममूर्त्ति सूरिराया ॥ तास तणे परव महीयल विचरे, भानुलब्धि उवझाया रे ॥ बोली० ॥ ३ ॥ तास शिष्य मेघराज पयंपे, चिरनंदोजा चंदा ॥ ए पूजो जे भणशे गणशे, तस घर होय आणंदा रे ॥ बोली० ॥ ४ ॥ १७ ॥

## ॥ अथ पंमितश्री वीरविजयजीकृत ॥
## चोशठ प्रकारी पूजा प्रारंभः ॥

---

॥ दोहा ॥

॥ श्री शंखेश्वर साहिबो, समरी सरसति माय ॥ श्रीशुभविजय सुगुरु नमी, कहुं तपफल सुख दाय ॥ १ ॥ ज्ञानथकी सवि जाणता, ते भव मुगति जिणंद ॥ व्रत धरि भूतल तप तप्यां, तपथी प द महानंद ॥ २ ॥ दानशक्ति जो नवि हुवे, तो त नुशक्ति विचार ॥ तप तपियें थइ योग्यता, अल्प क षाय आहार ॥ ३ ॥ परनिंदा छंमी कपट, विधि गीतारथ पास ॥ आचार दिनकरें दाखियो, ते तप कर्मविनाश ॥ ४ ॥ विविध प्रकारें तप कह्यां, आग म रयणनी खाण ॥ तेहमां कर्मसूदन तपें, दिन च उसठि प्रमाण ॥ ५ ॥ ज्ञानावरणी कर्म अठ, पच्च रकाणें छेदाय ॥ उपवासादिक अड कवल, अंतिम तिम अंतराय ॥ ६ ॥ ऊजमणुं तप पूरणें, शक्ति तणे अनुसार ॥ तरुवर रूपानो करो, घातियां शा खा चार ॥ ७ ॥ चार प्रशाखा पातली, कर्मनो भाव विचार ॥ इगसय अरूवन पत्र तस, कापवा कनक कु

ठार ॥७॥ चोशठ मोदक मूकियें, पुस्तक आगल सार ॥ चोशठ कलशा नामियें, जिनपडिमा जयकार ॥ ॥ ए ॥ पूजासामग्री रची, जरी फल नैवेद्य थाल ॥ ज्ञानोपगरण मेलवी, ज्ञानजक्ति मनोहार ॥ १० ॥ जलकलशा चोशठ जरी, धरियें पुरुषने हाथ ॥ तीर्थोदक कलशा जरी, चोशठ कुमरी हाथ ॥ ११ ॥ चोशठ वस्तु मेलवी, मंगल रचियें सार ॥ मंगलदीवो राखीयें, पुस्तकमध्य विचाल ॥ १२ ॥ स्नात्र महोत्सव कीजीयें, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ज्ञानावरण हठाववा, अठ अजिषेक उदार ॥ १३ ॥

## ॥ अथ प्रथम दिवसऽध्यापनीय ज्ञानावरणि ॥ कर्मसूदनार्थं प्रथमपूजाष्टकप्रारंजः ॥

॥ तत्र ॥

### ॥ प्रथम जलपूजा प्रारंजः ॥

राग जोगी आशावरी ॥ मोतीवाला जमरजी ॥एदेशी॥

चरम प्रजुमुख चंद्रमा, सखि ! देखण दीजें ॥ हाथ आरिसा बिंबर, सखि ! मुने देखण दीजें ॥ उप्पन्नदिग् कुमरी कहे ॥ सखि० ॥ विकसित मेघकदं

व रे ॥ सखि० ॥ १ ॥ नवमंडलमें न देखीउं । स खि० ॥ प्रजुजीनो देदार रे ॥ सखि० ॥ कृत्य करी घ र जावती । सखि० ॥ खेलत बाल कुमार रे ॥ सखि० ॥ २ ॥ यौवनवय सुख नोगवे । सखि० ॥ श्रीमहा वीर कुमार रे । सखि० ॥ ज्ञानथी काल गवेषिउं । सखि० ॥ आप हुआ अणगार रे ॥ सखि० ॥ ३ ॥ गुणठाणुं लही बारमुं । सखि० ॥ ज्ञानावरणी हण्युं जेम रे ॥ सखि० ॥ केवल लही मुगतें गया । सखि० ॥ अमें पण करशुं तेम रे ॥ सखि० ॥ ४ ॥ स्वामी से वाथी लहे । सखि० ॥ सेवक स्वामिनाव रे । सखि० ॥ सालंबन निरालंबनें । सखि० ॥ करशुं एहवो ब नाव रे ॥ सखि० ॥ ५ ॥ तीस कोडा कोडी सागरू । सखि० ॥ तिथि अंतर मुहूर्त्त लघीस रे । सखि० ॥ बंध चतुर्विध चेतशुं । सखि० ॥ पगई ठिई रस देस रे ॥ सखि० ॥ ६ ॥ सूक्ष्म बंध उदय वली । सखि० ॥ उदीरण सत्ता खीण रे । सखि० ॥ स्नातक स्नान मिशे हुवे । सखि० ॥ ज्ञान पडल मलहीण रे ॥ स खि० ॥ ७ ॥ सर्वांगें स्नातक थई । सखि० ॥ कर शुं साहेली रंग रे । सखि० ॥ सहजानंद घरें रमो । सखि० ॥ श्रीशुननवीरनें संग रे ॥ सखि० ॥ ८ ॥

॥ काव्यं ॥ उपजातिवृत्तम् ॥

॥ तीर्थोदकैर्मिश्रितचंदनौघैः । संसारतापाहतये सुशीतैः ॥ जराजनिप्रांतरजोभिशांत्यै । तत्कर्मदाहार्थमजं यजेहं ॥ १ ॥

॥ द्रुतविलंबितवृत्तद्वयम् ॥

॥ सुरनदीजलपूर्णघटैर्घनै । घुसृणमिश्रितवारिभृतैः परैः ॥ स्नपय तीर्थकृतं गुणवारिधिं । विमलतां क्रियतां च निजात्मनः ॥२॥ जनमनोमणिभाजनभारया । शमरसैकसुधारसधारया ॥ सकलबोधकलारमणीयकं । सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ ३ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय । परमेश्वराय । जन्मजरामृत्युनिवारणाय । अज्ञानोच्छेदकाय । श्रीमते वीरजिनेंद्राय । जलं यजामहे स्वाहा ॥ इति अज्ञानोच्छेदकार्थं प्रथमजलपूजा समाप्ता ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयचंदनपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

मूलप्रकृतियें एक ए उत्तरप्रकृति पांच ॥ मोह समे पण नवि समे, विण खायकनी आंच ॥ १ ॥

तिणें तेह्निज विधि साधवा, पूजो अरिहा अंग ॥ सिं
द्धस्वरूप हृदय धरी, घोली केसररंग ॥ २ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ कुंबखमानी देशी ॥

॥ बीजी चंदनपूजना रे, केसरनो करी घोल ॥ प्र
भुपद पूजीयें॥बाहिर रंग गवेषीने रे,रंग अभ्यंतर चो
ल ॥ प्र० ॥ पूजीयें जिन पूजीयें रे, आनंदरस क
ल्लोल ॥ प्र० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ धुर पगई धुरो क
र्मनी रे, बंध त्रिलंग प्रकार ॥ प्र० ॥ खय उपशम
गुण नीपजे रे, अडवीश उपर चार ॥ प्र० ॥ २ ॥ त्र
णशे चालीश उत्तरू रे, बहुवादिक पद बार ॥ प्र० ॥
पूज्य विशेषावश्यकें रे, नंदीसूत्र मोझार ॥ प्र० ॥
॥ ३ ॥ बंध हेतु ठते पामीयें रे, मतिआवरण बलेण
॥ प्र० ॥ ध्रुवबंधि प्रकृति टले रे, जब लहे खायक
श्रेण ॥ प्र० ॥ ४ ॥ जिम रोहे नृप रीझव्यो रे, री
झववो एक सांइ ॥ प्र० ॥ श्रीशुभवीरनें आशरे रे,
नासे कर्म बलाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितवृत्तद्वयम् ॥

॥ जिनपतेर्वरगंधसुपूजनं । जनिजरामरणोद्भववत्नी
तिहृत् ॥ सकलरोगवियोगविपद्धरं । कुरु करेण सदा
निजपावनम् ॥ १ ॥ सहजकर्मकलंकविनाशनै । रम

लभावसुवासनचंदनै ॥ रनुपमानगुणावलिदायकं ।
सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ मतिज्ञानावरणनिवारणाय । श्रीमते । वीरजिनेंद्राय । चंदनंय० ॥स्वा०॥ इति मति ज्ञानावरणनिवारणार्थं द्वितीयचंदनपूजा समाप्ता॥१७॥

## ॥ अथ तृतीयपुष्पपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

श्रुतज्ञानावरणी तणो, तुं प्रभु ! टालणहार ॥
क्षणमें श्रुतकेवली कस्या, देइ त्रिपदी गणधार ॥ १॥
सुमनस वृष्टि तेणे समे, समवसरण मोझार ॥ करता सुमनस सुमनसा, प्रभु पूजा दिल धार ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ द्वेष न धरियें लालन द्वेष न धरियें ॥ ए देशी

॥ समवसरणें श्रुतज्ञान प्रकाशे, पूजे सुरवर फूलनी राशें ॥ स्वामी फूलनी राशें ॥ केतकी जायनां फूल मंगावो, भेदत्रिकें करी पूजा रचावो॥स्वा० ॥१॥ प्रभुपद प्रणमी श्री श्रुत मागो॥श्रुतज्ञानावरण ते जेम जाय भागो ॥ स्वा०॥ खय उपशमगुण जिम जिम थावे,

तिम तिम आतम गुण प्रगटावे ॥ स्वा० ॥ २ ॥ मति विण श्रुत न लहे कोइ प्राणी, समकितवंतनी एह निशानी ॥स्वा०॥ कृत्यादिक श्रुत नाण जणावे, खीर नीर जिम हंस बतावे ॥ स्वा०॥३॥ गीतारथ विण उग्र विहारी, तपिया पण मुनि बहुल संसारी ॥ स्वा० ॥ अ ल्पागम तप क्लेश ते जाणो, धर्म दास गणी वचन प्रमाणो ॥ स्वा० ॥४॥ भेद चतुर्दश वीश वखाणो,उेर रीत मति ज्ञान समाणो ॥ स्वा० ॥ मतिश्रुतनाणें चउ शिव जावे, श्रुत केवली शुभ वीर वधावे ॥ स्वा०॥५॥

॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितवृत्तद्वयम् ॥

॥ सुमनसां गतिदायि विधायिनां । सुमनसां निक रैः प्रभुपूजनं ॥ सुमनसा सुमनोगुणसंगिना । जन वि धेहि निधेहि मनोर्च्चने ॥ १ ॥ समयसारसुपुष्पसुमाल या । सहजकर्मकरेण विशोधया ॥ परमयोगबलेन व शीकृतं । सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ श्रुतज्ञानावरणनिवारणाय ॥ कुसुमानि य० ॥ स्वा०॥ इति श्रुतज्ञानावरणनिवा रणार्थं तृतीयपुष्पपूजा समाप्ता ॥ ३ ॥

## ॥ अथ चतुर्थधूपपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अवधिज्ञानावरणना, क्षयथी हुआ चिद्रूप ॥
ते आवरण दहन भणी, ऊर्ध्वगतिरूप धूप ॥ १ ॥
ढाल चोथी ॥ राग जाति फाग ॥ सबावरागिणी ॥
॥ जिनवर जगतदयाल भवियां ! जिनवर
जगतदयाल ॥ ए देशी ॥

॥ ए गुण ज्ञान रसाल, भवियां ! ए गुण ज्ञान
रसाल ॥ धूपघटा करी ज्ञान छटा वरी, अवधि आव
रण प्रजाल ॥ भ० ॥ षट भेदांतर वृद्धिनी रचना,
जाणे खेत्रने काल ॥ भ० ॥ ए० ॥१॥ अंगुल आवली
संखम संखें, पूरणे किंचुण काल ॥ भ० ॥ पूर्णावलि
अंगुल पुहुत्तें, हस्तें मुहूर्त्त विचाल ॥ भ० ॥ ए० ॥
॥ २ ॥ कोश दिनांतर योजन दिन नव, द्रव्यपर्याय
विशाल ॥ भ० ॥ पण वीश योजन पक्ष अधूरे, पक्षें
भरत निहाल ॥ भ० ॥ ए० ॥ ३ ॥ जंबूद्वीप ते मास
अधिकें, वरसें अढीद्वीप भाल ॥ भ० ॥ रुचकद्वीप
ते वर्ष पुहुत्तें, संख्यातें संख्यातो काल ॥ भ० ॥ ए०
॥ ४ ॥ काल असंख द्वीपसंखमसंखा, ज्ञानप्रत्यक्ष

त्रिकाल ॥ज०॥ एकसमे अठअधिक शत सीझे, टाली भवजंजाल ॥ ज० ॥ ए० ॥ ५ ॥ शिवराज ऋषि वि भंगने टाली, वरिया शिव वरमाल ॥ ज० ॥ सायर द्वीप असंख्य दिखावे, श्रीशुभवीर दयाल ॥ज०॥६॥

॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितवृत्तद्वयम् ॥

॥ अगरमुख्यमनोहरवस्तुनः । स्वनिरुपाधिगुणौघविधायिनः॥ प्रभुशरीरसुगंधसुहेतुना। रचय धूपनपूजनमर्हतः॥१॥ निजगुणाक्षयरूपसुधूपनं । स्वगुणघातमलं प्रविकर्षणं ॥ विशदबोधमनंतसुखात्मकं । सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ अवधिआवरणनिवारणाय धूपं य० ॥ स्व० ॥ इति अवधिआवरणनिवारणार्थं चतुर्थ धूपपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥

## ॥ अथ पंचमदीपकपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

मनपज्जवआवरणतम, हरवा दीपक माल ॥
ज्योतसें ज्योत मिलाईयें; ज्ञान विशेष विशाल ॥१॥

॥ ढाल पांचमी ॥ गोपी वीनवे रे ॥ ए देशी ॥

॥ ज्योति जगमगे रे, अढी द्वीप प्रमाण ॥ दो भेदें करी रे, अढी अंगुलनो तरतम जाण ॥ जेह विपुल मति रे, तेहनें ते भव पद निरवाण ॥ मुनिवेषज विना रे, नवि उपजे दो भेदें नाण ॥ ज्योति० ॥१॥ विमलातम दशा रे, जाणे ज्योतिष व्यंतर गाण ॥ तीर्छा लोकमां रे, भांख्युं एह प्रमाण ॥ अधोलोकमां रे योजन शो अधिकेरा जाण ॥ संज्ञी जीवना रे जाणे मनचिंतन मंडाण ॥ ज्यो० ॥ २ ॥ ऋजुमति द्रव्यथी रे, अनंत अनंत प्रदेश विचार ॥ असंखित, भव कहे रे, पलिय असंखम भाग त्रिकाल ॥ सवि परजायनो रे ॥ भाग अनंतो मनथी सार ॥ चारे भावथी रे, अधिका विपुलमति अणगार ॥ ज्यो०॥३॥ मतिश्रुत नाणशुं रे, मनपज्जव पाम्या मुनिराय ॥ खायकभावथी रे, एक समय दश मुक्ति जाय ॥ खय उपशमपदें रे, मुनिवर ते साते गुणठाण, श्रीशुभ वीरथी रे, जंबुस्वामी लगें ए नाण ॥ ज्यो० ॥ ४ ॥

॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितवृत्तद्वयम् ॥

॥ भवति दीपशिखापरिमोचनं । त्रिभुवनेश्वरसद्म

निशोज्ञनं ॥ स्वतनुकांतिकरं तिमिरंहरं । जगतिमंगल कारणमातरं ॥ १ ॥ शुचिमनात्मचिडुज्ज्वलदीपकै । ज्वलितपापपतंगसमूहकैः ॥ स्वकपदं विमलं परिवे ज्ञिरे । सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्र ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ मनःपर्यवावरणोछेदका य दीपं य० स्वा० ॥ इति मनःपर्यवावरणोछेदकार्थं पंचम दीपकपूजा समाप्ता ॥ ५

## ॥ अथ षष्ठाक्षतपूजा प्रारंज्ञः ॥

॥ दोहा ॥

॥ घनघाती घातें करी, जेह थया मुनिज्रूप, बहि रातम उछेदिनें, अंतर आतमरूप ॥ १ ॥

॥ ढाल छठी ॥ साहेलडीयां ॥ ए देशी ॥

॥ अक्षतपद वरवा जणी ॥ सुणो संता जी ॥ अ क्षत पूजा सार ॥ गुणवंता जी ॥ अक्षत उज्ज्वल तंडुला ॥ सु० ॥ उज्ज्वलज्ञान उदार ॥ गुं० ॥ १॥ पंचम पगई टालवा ॥ सु०॥ वरवा पंचम ज्ञान ॥गु०॥ त्रिशलानंद निहालियें । सु० ॥ बार वरस एक ध्यान॥

नसंचितभोजनं॥प्रतिदिनं विधिना जिनमंदिरे । शुभ्र मते बत ढौकय चेतसा ॥ १ ॥ कुमतबोधविरोधनिवेदकै । विंहितजातिजरामरणांतकैः ॥ निरशनं प्रचुरा त्मगुणालयं। सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ अज्ञानोच्छेदकाय नैवेद्यं य० ॥ स्वा० ॥ इति अज्ञानोच्छेदकार्थं सप्तमनैवेद्यपूजा समाप्ता ॥ ७ ॥

## ॥ अथाष्टमफलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ बंधोदयसत्ताधुवा, पांचे पयडी जोय ॥ देश घातिनी चार छे, केवल सर्वथी होय ॥ १ ॥ ज्ञानाभ्यासें वरततां, फल प्रगटे निरधार ॥ तेणें फलपूजा प्रभुतणी, करियें विविधप्रकार ॥ २ ॥

॥ ढाल । आठमी ॥ राग फाग सूरती महिनानी देशी॥

॥ ए पांचे आवरणनो, बंध दशम गुणठाण ॥ उदय उदीरण सत्ता, खीण कहे जगभाण ॥ १ ॥ ज्ञानथी सास उसासमां, कठिन करम क्षय जाय ॥ फलवंचकता तस टले, जोगावंचक थाय ॥ २ ॥

अरिहा पण तप करता, एकाकी रही राण ॥ आण हुंता सुरकोडी, सेवे पूरण नाण ॥ ३ ॥ ज्ञानदिशा विणु तप जप, किरिया करत अनेक ॥ फल नवि पामे रांक ते, रणमां रोयो एक ॥ ४ ॥ तेलीबलद परें कष्ट करे, जीउविणश्रुतल्हेर ॥ निशिदिन नयन मिचाणें, फरतो घेरनो घेर ॥ ५ ॥ ज्ञानप्रथम पढी जयणा, दशवैकालिक वाण ॥ ज्ञानीनें सुरतरु उपमा, ज्ञानथी फलनिर्वाण ॥ ६ ॥ कर्मसूदन तप पूरण, फलपूजा फल सार ॥ श्रीशुजवीरना ज्ञाननें, वंदियें वार हजार ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितवृत्तद्वयम् ॥

॥ शिवतरोः फलदानपरैर्नवै । र्वरफलैः किल पूजय तीर्थपम् ॥ त्रिदशनाथनतक्रमपंकजं । निहतमोहमहीधरमंमलं ॥ १ ॥ शमरसैकसुधारसमाधुरै । रनुजवाख्यफलैरजयप्रदैः ॥ अहितडुःखहरं विजवप्रदं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ प्रथम कर्मोछेदनाय फलं य० ॥ स्वा० ॥ इति प्रथमकर्मोछेदनार्थं अष्टम

गु० ॥ १ ॥ निंद शयन जागर दिशा । सु० ॥ ते सवि दूरें होय ॥ गु० ॥ देखे उजागर दिशा । सु० ॥उज्ज्वल पाया दोय ॥ गु० ॥ ३ ॥ लही गुणठाणुं तेरमुं सु० ॥ धुरसमयें साकार ॥ गु० ॥ भावजिनेश्वर वंदियें ॥ सु० ॥ नाठा दोष अढार ॥ गु० ॥ ठति पर्यायें ज्ञानथी । सु० ॥ जाणे ज्ञेय अनंत ॥ गु० ॥ श्री शुभवीरनी सेवना । सु० ॥ आपे पद अरिहंत ॥गु०॥ ५

॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितवृत्तद्वयम् ॥

॥ क्षितितलेकृतशर्मनिदानकं ॥ गणिवरस्य पुरोऽक्षतमंडलं ॥ कृतविनिर्मितदेहनिवारणं ॥ भवपयोधिससुत्तरणोद्यतं ॥ १ ॥ सहजभावसुनिर्मलतांडुलै विपुलदोषविशोधकमंगलै ॥ रनुपरोधसुबोधविधानकं । सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ केवलज्ञानावरणनिवारणाय अक्षतं य० ॥ स्वा० ॥ इति केवलज्ञानावरणनिवारणार्थं षष्ठाक्षतपूजा समाप्ता ॥ ६ ॥

## ॥ अथ सप्तमनैवेद्यपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ बाह्यरूप आहारें वधे, रूपांतर अणाहार ॥
अणाहारी पद पामवा, ठवो नैवेद्य रसाल ॥ १ ॥

॥ ढाल । सातमी ॥ राग बिलावल ॥

॥ नैवेद्य प्रभु आगल धरी, बहु छंदी वाजे ॥ ज्ञानावरण निवारीयें, रुचकांतर भाजे ॥ हांहांरे तव सांइ निवाजे, हांहांरे जिनशासन राजे ॥ नै० ॥ १ ॥
अज्ञानी पुण्यपापनो, नवि भेद ते जाणे ॥ नयगम भंग परूपणा, हठवादें ताणे ॥ हांहांरे एक आप वखाणे, हांहांरे बंध उदय न जाणे ॥ नै० ॥ २ ॥
आशातना करे ज्ञानंनी, जयणा नवि पाले ॥ सुगुरु वचन नवि सद्दहे, पड्यो मोहनी जालें ॥ हांहांरे ते अनंते कालें, हांहांरे नरभव न निहाले ॥ नै० ॥ ३ ॥
रोहितमत्स्यनी उपमा, सिद्धांतें लगावे ॥ ज्ञानदशा शुभवीरनुं, जो दर्शन पावे ॥ हांहांरे अज्ञान हठावे, हांहांरे ज्योति नयन जगावे ॥ नै० ॥ ४ ॥

॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितवृत्तद्वयम् ॥

॥ अनशनं तु ममास्त्विति बुद्धिना । रुचिरभोज

फलपूजा समाप्ता ॥ ८ ॥ कलश ॥ गायो गायो रे महावीर० ॥

॥ इति प्रथम दिवसेऽध्यापनीयज्ञानावरणि कर्मसूदनार्थं प्रथमपूजाष्टकं संपूर्णम् ॥ १ ॥ सर्वगाथा ( ८४ )

॥ आ प्रमाणे हवे पछी प्रत्येकदिवसें जे जे पूजा भणाय, ते ते पूजानां जे बे काव्यो होय ते बेकाव्य अनुक्रमें ते ते पूजाना अंतमां भणवां तथा मंत्र पण सर्वपूजा दीठ कहेवो. अने छेवटनी चोशठमी पूजाना अंतमां लखेलो कलश जे छे, ते पण प्रत्येक दिवसें ज्यारें आठ पूजा पूरी थाय, त्यारें छेलो भणवो ॥

॥ ढाल पहेली ॥ राग आशावरी ॥

॥ नमोरे नमो श्रीशेत्रुंजा गिरिवर ॥ ए देशी ॥

॥ मागधनें वरदाम प्रभासह, गंगानीर विवेक रे ॥ दर्शनावरण निवारण कारण, अरिहानें अभिषेक रे ॥ नमो रे नमो दर्शनदायकने ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ दर्शनदायक श्रीजिनवर तुं, लायकताने लाग रे, प्रीत पटंतर दोय न छाजे, जो होय साचो राग रे ॥ न० ॥ २ ॥ राग विना नवि रीझे सांइ, नीरागी वीतराग रे ॥ ज्ञाननयन करी दर्शन देखे, ते प्राणी वडभाग रे ॥ न० ॥३॥ चउ दंसण प्रति सूक्ष्मबंधें, उदयादिक खिण अंतरे ॥ ते आवरण कठिन मलखाली, स्नातक संत प्रसंत रे ॥ न० ॥ ४ ॥ ग्रंथि विकट जे पोल पोलीयो, रोके दर्शनभूप रे ॥ श्रीशुभवीर जो नयन निहाले, सेवक साधनरूप रे ॥न०॥५॥ ॥काव्यं॥तीर्थोदकैः०॥१॥सुरनदी० ॥२॥जनमनो० ॥३॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ बंधोदयनिवारणाय जलं य ॥ स्वा० ॥ इति बंधोदयनिवारणार्थं प्रथमजलपूजा समाप्ता ॥ १ ॥

## ॥ अथद्वितीयचंदनपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥उपदेशक नव तत्त्वना, प्रभु नव अंग उदार ॥
नव तिलकें उत्तर नव, पगई टालणहार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ बीजी ॥ राग काफी ॥ नायकी ॥
॥ रसिया दिल दीठडी ज्योति ऊगार ॥ ए देशी ॥

॥ तुज मूरति मोहनगारी, रसिया तुज मूरति मोहनगारी ॥ द्रव्यहगुणपरजायनें मुद्रा, चउगुण पडिमा प्यारी ॥ र० ॥ तु० ॥ नयगम भंग प्रमाणें न निरखी, कुमति कदाग्रह धारी ॥ र० ॥ तु० ॥ ॥ १ ॥ जिनघर तीरथ सुविहित आगमन, दर्शनें नयण निवारी ॥ र० ॥ तु ॥ चक्षुदर्शनावरण कर्म ते, बांधे मूढ गमारी ॥ र० ॥ तु० ॥ २ ॥ कांणा निशिदिन जात्यंधापणुं, दुःखिया दीन अवतारी ॥ र० ॥ तु० ॥ दर्शनावरण प्रथमे उदयेंथी, परभव ए हविचारी ॥ र० ॥ तु० ॥ ३ ॥ अल्पतेज नयनात प देखि, जूए आरुो कर धारी ॥ र० तु० ॥ जाणुं पूरवभव कुमतिनी, हजीय न टेव विसारी ॥ र० ॥ तु० ॥ ४ ॥ जयणायुत गुरु आगम पूजो,

## ॥ अथद्वितीयचंदनपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥उपदेशक नव तत्त्वना, प्रभु नव अंग उदार ॥
नव तिलकें उत्तर नव, पगई टालणहार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ बीजी ॥ राग काफी ॥ नायकी ॥
॥ रसिया दिल दीठडी ज्योति जगार ॥ ए देशी ॥

॥ तुज मूरति मोहनगारी, रसिया तुज मूरति मोहनगारी ॥ द्रव्यहगुणपरजायनें मुद्रा, चउगुण पडिमा प्यारी ॥ र० ॥ तु० ॥ नयगम भंग प्रमाणें न निरखी, कुमति कदाग्रह धारी ॥ र० ॥ तु० ॥ ॥ १ ॥ जिनघर तीरथ सुविहित आगमन, दर्शनें नयण निवारी ॥ र० ॥ तु ॥ चक्षुदर्शनावरण कर्म ते, बांधे मूढ गमारी ॥ र० ॥ तु० ॥ २ ॥ कांणा निशिदिन जात्यंधापणुं, दुःखिया दीन अवतारी ॥ र० ॥ तु० ॥ दर्शनावरण प्रथमे उदयेंथी, परभव एह विचारी ॥ र० ॥ तु० ॥ ३ ॥ अल्पतेज नयनातप देखि, जूए आको कर धारी ॥ र० तु० ॥ जाणुं पूरवभव कुमतिनी, हजीय न टेव विसारी ॥ र० ॥ तु० ॥ ४ ॥ जयणायुत गुरु आगम पूजो,

जिनपडिमा जयकारी ॥ र० ॥ तु० ॥ श्रीशुभवीरनुं शासन वरते, एकवीश वरस हजारी ॥र०॥तु०॥५॥

॥ काव्यं ॥ जिनपतेः० ॥ १ ॥ सहजकर्म० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ चक्षुर्दर्शनावरणनिवारणाय चंदनं य० ॥ स्वा० ॥ इति चक्षुर्दर्शनावरणनिवारणार्थं द्वितीयचंदनपूजा समाप्ता ॥ २ ॥ १० ॥

## ॥ अथ तृतीयपुष्पपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ फूल अमूलक पूजना, त्रिशलानंदन पाय ॥ सुरभि डुरभि नासाप्रमुख, अचक्षु आवरण हठाय ॥१॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ राज ! पधारो मेरे मंदिर ॥ ए देशी ॥

॥ डमणो मरुउ केतकी फूलें, पूजाफल परकाशां जी ॥ भोगीनिवासा संयुतआशा, लक्षणवंती नासा ॥ भव भव ठरियें जी ॥ जिनगुण माल रसाल कंठें धरियें जी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ गुण बहुमान जिनागम वाणी, कानें धरी बहुमानें जी ॥ द्रव्य भाव बहिरा तम टाली, परभव समजे शानें ॥ भ० ॥ २ ॥ प्रभु गुण गावे ध्यान मल्हावे, आगमशुद्ध परूपे जी ॥

मूरख मूंगा न लहे परभव, न पडे वली भवकूपें ॥
॥ भ० ॥ ३ ॥ परमेष्टीने शीश नमावे, फरसे तीरथ
भावें जी ॥ विनयवैयावच्चादिक करतां, भरतेशर सुख
पावे ॥ भ० ॥ ४ ॥ जिम जिम क्षयउपशम आवर
णा, तिम गुण आविरभावें जी ॥ श्रीशुभवीर वचन
रसलब्धें, संभिन्नश्रोत जणावे ॥ भ० ॥ ५ ॥
॥ काव्यं ॥ सुमनसां० ॥ १ ॥ समयसार० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ अचक्षुदर्शनावरणनिवार
णाये पुष्पाणि य० ॥ स्वा० ॥ इति अचक्षुदर्शनावर
णनिवारणार्थं तृतीयपुष्पपूजा समाप्ता ॥ ३ ॥ ११ ॥

## ॥ अथ चतुर्थधूपपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अवधिदर्शनावरण क्षय, उपशम चउगति मांहिं
क्षायकभावें केवली, नमो नमो सिद्ध उछाहिं ॥ १ ॥
॥ ढाल चोथी ॥ चंद्रशेखर राजा थयो ॥ ए देशी ॥
॥ अवधिरूपी ग्राहको, खटभेद विशेषें ॥ अवधि
दर्शन तेहनुं, सामान्यें देखे ॥ १ ॥ ए गुण लेइ उप
न्यो, परभवथी स्वामी ॥ आ भवमां सुखीया अमें

तुम दर्शन पामी ॥ ए आंकणी ॥ देव निरय गतिथी लहे, गुणथी नर तिरिया ॥ काउसग्गमां मुनि हास्य थी, हेग उतरीया ॥ ए गु० ॥२॥ परिणामें चढती द शा, रूपिद्रव्य अनंता ॥ जघन्यथी उत्कृष्टथी, सवि द्रव्य मुणंता ॥ ए गु० ॥ ३ ॥ क्षेत्र असंख्य अंगुल ल घु, गुरुलोक असंखा ॥ भाग असंख्य लघु आवलि, उस्सप्पिणी असंखा ॥ ए गु० ॥ ४ ॥ चार भाव द्रव्य एकमां, लघुभाव विशेषें ॥ असंख्य पर्यव द्रव्यप्रत्यें, गुरुदर्शन देखे ॥ ए गु० ॥५॥ नंदीसूत्रें एणी परें, कह्युं अवधिनाण ॥ निराकार उपयोगथी, दर्शन परिमाण ॥ ए गु० ॥६॥ विभंगें पण दाखियुं, दर्शन सिद्धांतें ॥ तत्त्वारथ टीका कहे, समकीत एकांतें ॥ एगु० ॥ ७ ॥ तस आवरण दहन भणी, धूंप पूजा करीयें ॥ श्रीशु भवीर शरण लही, भवसायर तरीयें ॥ ए गु० ॥ ८ ॥ काव्यं ॥ अगरमुख्य० ॥ १ ॥ निजगुणाक्षय० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ अवधिआवरणनिवारणाय धूपं य० ॥ स्वा० ॥ इति अवधिआवरणनिवारणार्थं चतुर्थधूंपपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥ १२ ॥

## ॥ अथ पंचमदीपकपूजा प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केवलदर्शनावरणनो, तुं प्रभु टालणहार ॥ ज्ञानदीपकथी देखियें, मोटो तुज आधार ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ रागिणी आशावरी॥गरबानी देशी ॥

॥ दीपक दीपतो रें, लोकालोक प्रमाण ॥ दर्शन दीवडो रे, हणि आवरण लहे निर्वाण ॥ दी० ॥१॥ ए आंकणी॥ज्ञायकभावें अनादि चेतन, आठ प्रदेश उघाडा रे॥अवरनुं दर्शन देखण भमियो, पण आवरण ते आडां ॥ दी० ॥२॥ तुम सेवे ते तुम सम होवे, शक्ति अपूरव योगें रे॥क्षपकश्रेणि आरोही अरिहा, ध्यान शुक्ल संयोगें ॥ दी० ॥ ३ ॥ घनघातीना घात करीनें, प्रथम समय साकारें रे ॥ समयांतर दर्शन उपयोगें, दर्शनावरण विदारे ॥ दी० ॥ ४ ॥ मूल एक बंध चार सत्तोदय, उत्तर पण एक बांधे रे ॥ बहेंतालीश उदयें पंचाशी, सत्ता हणी शिव साधे ॥ ॥ दी० ॥ ५ ॥ झगमग झाझा दीपक पूजा, करतां क्रोडि दिवाजा रे ॥ श्रीशुभवीर जिनेश्वर राजा, राज्यें रहियत ताजा ॥ दी० ॥ ६ ॥

॥ काव्यं ॥ भवति दीप० ॥ १ ॥ शुचिमनात्म० ॥२॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ केवलदर्शनावरणनिवारणाय दीपं य० ॥ स्वा० ॥ इति केवलदर्शनावरण निवारणार्थं पंचमदीपकपूजा समाप्ता ॥ ५ ॥ १३ ॥

## ॥ अथ षष्ठाक्षतपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

निद्रा दुगदल भेदवा, करवा निर्मल जात ॥
अक्षत निर्मल पूजना, पूजो श्री जगतात ॥ १ ॥

॥ ढाल ७ठी॥थूलिभद्र कहे सुण बालारे ॥ ए देशी ॥

॥हवे निद्रा पांचनी फेटी रे, मोहराय तणी ए चेटी रे ॥ सर्वघाती पयडी मोटी रे,निद्रा दुग बेन्हो भेटी रे ॥१॥ ए बेन्हो जगत् पितराणी रे, नाना मोहोटा मुंझाव्या प्राणी रे ॥ भानुदत्त पूरवधर पडिया रे, दीपज्योतें जोया नवि जडिया रे ॥ ए आंकणी ॥सुखें जागे आलस मेटी रे, ते निद्रा बालवधूंटीरे ॥भींवे ठगं नयणां घुटीरे ॥ जबलागे वयणनी सोटीरे ॥ ॥ ए० ॥ २ ॥ तव नयणथी निंद वबूटी रे, प्रचला

ह्रण गति खोटी रे ॥ द्वादशांगी गणिरूप पेटी रे, मुनिनयणें निद्रा पलेटी रे ॥ ए० ॥३॥ पूरवधर पण श्रुत मेटी रे, रह्या निगोदमां दुःख वेंटी रे॥ अपूर्व बंधेंथी बूटी रे, सत्ताउदयें बारमे खूटी रे ॥ ए० ॥ ४ ॥ मुनिराज मलीनें लूंटी रे, अप्रमत्तने दंडें कूटी रे ॥ बल जोतीने रोती वखूटी रे, ध्यानलहेर बगाडे बूटी रे ॥ ए० ॥ ५ ॥ शुभवीर समा नहीं माटी रे ॥ निद्रानी वनकटी काटी रे ॥ थइ सादि अनंतनी बेटी रे, शिवसुंदरी सहेजें भेटी रे ॥ ए० ॥ ६ ॥

॥ काव्यं ॥ क्षितितले० ॥ १ ॥ सहजभाव० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ निद्राप्रचलाविछेदनाय अक्षतान् य० ॥ स्वा० ॥ इति निद्राप्रचलाविच्छेदनार्थं षष्ठाक्षतपूजा समाप्ता ॥ ६ ॥ १४ ॥

## ॥ अथ सप्तमनैवेद्यपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ आहारें ऊंघ वधे घणी, निद्रा दुःख भंडार ॥
नैवेद्य धरी प्रभु आगलें, वरियें पद अणाहार ॥१॥

॥ ढाल सातमी ॥ राग गोडी ॥ तोरण आई क्युं ? चले रे ॥ ए देशी ॥

॥ थीणद्धी त्रिकसांभलो रे,निद्रा जे दुःखदाय॥ सलूणा ॥ बंध बीजा गुणठाणसें रे ॥ छठे उदय मुनिराय ॥ सलूणा ॥ जिम जिम जिनवर पूजीयें रे ॥ तिम तिम धूजे कर्म ॥ स० ॥ १ ॥ संप करी सत्ता रहे रे, नव माने एकभागें ॥ स० ॥ निद्रा निद्रा तेहमां रे, कष्टें करी जे जागे ॥ स० ॥ जिम० ॥ २ ॥ प्रचला प्रचला चालतां रे, नयणें निंद तुखार ॥ स० ॥ जागे रणसंग्राममां रे, विजली ज्युं झल कार ॥ स० ॥ जिम० ॥ ३ ॥ दिनचिंता रात्रें करे रे, करणी जे नर नार ॥ स० ॥ बलदेवनुं बल ते समे रे, नरकगति अवतार ॥ स० ॥ जिम० ॥ ४ ॥ एम विशेषावश्यकें रे, वरणवियो अधिकार ॥ स० ॥ साधुमंडलिमां रहे रे, एक लघु अणगार ॥ स० ॥ जिम० ॥ ५ ॥ थीणद्धी निद्रावशें रे, हणियो हस्ती महंत ॥ स० ॥ सूतो भरनिद्रावशें रे, भूतलिए दोय दंत ॥ स० ॥ जिम० ॥ ६ ॥ अंग अशुचि शिष्यनुं रे, संशय भरीया साध ॥ स० ॥ ज्ञानी वयणें काढीयो रे, हंसवनेंथी व्याध ॥ स० ॥ जिम० ॥ ७ ॥ षट्मा

सें निद्रा लहे रे, शेठवधूदृष्टांत ॥ स० ॥ निंदवियोगें केवली रे, श्रीशुभवीर जणंत ॥ स० ॥ जिम० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ अनशनं० ॥ १ ॥ कुमतबोध० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ थीणद्धीत्रिकदहनाय नैवेद्यं य० ॥ स्वा० ॥ इति थीणद्धीत्रिकदहनार्थं सप्तमनैवेद्यपूजा समाप्ता ॥ ७ ॥ १५ ॥

## ॥ अथाष्टमफलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ विविधफलें प्रभु पूजतां, फल प्रगटे निर्वाण ॥
दर्शनावरण विलय हुवे, विघटे बंधनां ठाण ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ आठमी ॥ राग फाग ॥ दीपचंदनी चाल ॥

॥ होरी खेलावत कान्हइया, नेमीसर संगें ले भइया ॥ ए देशी ॥

॥ होरी खेलुं मेरे साहबिया, संगें रंगें सुण हो भइया ॥ होरी० ॥ अबिर गुलाल सुगंध बिखरिया, कनककचोली केसरियां ॥ होरी० ॥ १ ॥ खारेक बी जोरा फल टेटी, पूजे फल थालें भरीयां ॥ फाग गान गुण तान बजैया, दर्शनावरण भयें डरियां ॥

होरी० ॥ २ ॥ ए प्रजुदर्शन विण जव फरीया, कुदेव कुतीर्थ वर्णविया ॥ कुगुरु कुशास्त्र प्रशंसा करिया, मिथ्यात्वधर्म हइये धरिया ॥ होरी० ॥ ३ ॥ वहोत डुःखें बहु शोकें जरियां, समकित दूषण आचरियां ॥ कुव्रत पाले नें चाले अनइया, परमेष्टि गुरु उंलविया ॥ होरी० ॥ ४ ॥ पडणिया गुरु अपच्चखाणिया, जगवइ जांखे गणधरिया ॥ दर्शनावरणीकर्म घेरैया, तीस कोडाकोडि सागरिया ॥ होरी० ॥ ५ ॥ एसे बंधको धंध घटैया, सांयुंकी आणा शिर धरिया ॥ शृंगी लवण मधुरी लहेरियां,श्रीशुजवीर प्रजु मलिया ॥ होरी० ॥ ६ ॥

॥ काव्यं ॥ शिवतरोः० ॥ १ ॥ शमरसै० ॥ २ ॥
॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ द्वितीयकर्मदहनाय फलं

॥ अथ मंत्रः ॥

य० ॥ स्वा० ॥ कलश ॥ गायो गायो० ॥ इति द्वितीयकर्मदहनार्थमष्टमफलपूजा समाप्ता ॥ ७ ॥ १६ ॥

॥ इति द्वितीयदिवसेऽध्यापनीयदर्शनावरणीयकर्मसूदनार्थं द्वितीयपूजाष्टकं संपूर्णम् ॥ २ ॥ सर्वगाथा (६२)

॥ अथ ॥

## ॥ तृतीय दिवसेऽध्यापनीयवेदनीयकर्मनिवारणार्थं तृतीयपूजाष्टकप्रारंभः ॥

॥ तत्र ॥

## ॥ प्रथमजलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा

॥ त्रीजुं अघाती वेदनी, जाव लहे शिवशर्म ॥ संसारें सवि जीवनें, तव लगें एहिज कर्म॥१॥बंधोदय अध्रुव कही, ध्रुवसत्तायें होय ॥ पयडी अघाती जाणीयें, शाता अशाता दोय ॥ २ ॥ कर्म विनाशीने हुवा, सिद्ध बुद्ध भगवान् ॥ ते कारण जिनराजनी, पूजा अष्टविधान ॥ ३ ॥ न्हवण विलेपन कुसुमनी, जिन पुर धूप प्रदीप ॥ अक्षत नैवेद्य फल तणी, करो जिनराज समीप ॥ ४ ॥

॥ ढाल पहेली॥रूडीने रढियाली रे वाल्हा०ए देशी ॥

॥ न्हवणनी पूजा रे, निरमल आतमा रे ॥ तीर्थोदकनां जल मेलाय, मनोहर गंधें ते भेलाय ॥ न्हव० ॥ १ ॥ सुरगिरि देवा रे, सेवा जिन तणी रे॥

करतां न्हवण ते निरमल थाय, कनक रजत मणिकलश ढलाय ॥ न्हव० ॥ २ ॥ सुर वहू नाचे रे, माचे वेगशुं रे ॥ गायन देव ते जिनगुण गाय, वैशालिक मुखदर्शन थाय ॥ न्हव० ॥ ३ ॥ चिहुं गति मांहे रे, चेतन रोलियो रे ॥ सुर नर जे सुखिया संसार, नारक तीरि डुःखनो भंडार ॥ न्हव० ॥ ४ ॥ शे वश सुखमांरे स्वामी न सांभस्या रे ॥ तेणे हुं रझल्यो काल अनंत, मलिन रतन नवि तेज जगंत ॥ न्हव० ॥ ॥५॥ प्रभु नवरावी रे, मेल निवारशुं रे ॥ वेदनी विघटे मणि झलकंत, श्रीशुभवीर मले एकंत ॥ न्हव० ॥६॥ ॥ काव्यं ॥ तीर्थोदकैः० ॥१॥ सुरनदीज० ॥२॥ जनमनो० ३

॥ अथ मंत्रः ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ वेदनीयकर्मनिवारणाय जलं य० ॥ स्वा० ॥ इति वेदनीयकर्मनिवारणार्थं प्रथम जलपूजा समाप्ता ॥ १ ॥ १७ ॥

॥ अथ द्वितीयचंदनपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ वेदनीकर्म तणी कहुं, उत्तरपयडी दोय ॥ जास विवश भवचोकमां, मूंझाणा सहु कोय ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ बीजी ॥ राग आशावरी । साहिब सहस फणा ॥ ए देशी ॥

॥ तन विकसे मन उल्लसे रे, देखी प्रभुनी रीत॥ दायक दिल वसिया ॥ जूरण लागी जीनडि रे, पूरण बांधी प्रीत ॥ दा० ॥ १ ॥ नयनज्योति सम प्रीतमी रे, एक सुरत दोय कान ॥ दा० ॥ वेदनी हरि धनवंतरी रे, करियें आप समान ॥ दा० ॥ २ ॥ वेदनी घर वासो वस्यो रे, नडिया नाथ कुनाथ ॥ दा०॥ पाणी वलोव्युं एकलुं रे, चतुर न चढियो हाथ ॥ दा० ॥ ३ ॥ खड्गधार मधुलेपशुं रे, तेहवो ए संसार ॥ दा० ॥ लक्षण वेदनी कर्मनुं रे, फल किंपाक विचार ॥ दा० ॥ ४ ॥ तुज शासन पामे थके रे, लाधो कर्मनो मर्म ॥ दा० ॥ कोडि कपट कोइ दाखवेरे, पण न तजुं तुज धर्म ॥ दा० ॥ ५ ॥ पूज्य मले पूजा रचूं रें, केसर घोली हाथ ॥ दा० ॥ श्रीशुभवीरविजय प्रभु रें, मलियो अविहड साथ ॥दा०॥६॥ ॥ काव्यं ॥ जिनपतेर्वर० ॥ १ ॥ सहजकर्म० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परम०॥ वेदनीयलक्षणकर्मनिवारणाय

चंदनं य० ॥ स्वा० ॥ इति वेदनीयलक्षणकर्मनिवारणार्थं द्वितीयचंदनपूजा समाप्ता ॥ २ ॥ १८ ॥

## ॥ अथ तृतीयपुष्पपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ बलियो साथ मले थके, चोर तणुं नहीं जोर ॥ जिनपद फूलें पूजतां, नासे कर्म कठोर ॥ १ ॥

॥ढाल त्रीजी ॥ राग सारंग ॥ हो धन्ना ॥ ए देशी ॥

॥ कर्म कठोर दूरें करो रे॥ मित्ता ॥ पामी श्रीजिनराज ॥ फूलपगर पूजा रचो रें मित्ता ॥ पामी नर भव आज रे ॥ रंगीला मित्ता ॥ ए प्रभु सेवोने ॥ ए प्रभु सेवो ज्ञानमां रे॥मीत्ता ॥ पामो जेम शिवराज रे ॥ रंगी० ॥ए०॥१॥ वेदनीवश तुमें कां पमो रे ॥ मि० ॥ जेहनें प्रभुशुं वेर ॥ साहिब वेरी न विसरो रे ॥मि०॥ तो होय साहिब मेहेर रे ॥ रंगी० ॥ ए० ॥ २ ॥ छठा गुणठाणा लगें रे ॥ मि० ॥ बंध अशाता जाण॥ शाता बांधे केवली रे ॥ मि० ॥ तेरमे पण गुणठाण रे ॥ रंगी० ॥ ए० ॥ ३ ॥ शाता अशाता एक पदें रे मि० ॥ चरमगुणें परिहार ॥ सत्ताउदयथी केवली रे ॥ मि० ॥ सहे परिसह अगियार रे॥रंगी०

ए० ॥ ४ ॥ तीस कोडा कोडि सागरु रे ॥ मि० ॥ लघु सातैया त्रिजाग ॥ बंध अशाता वेदनी रे मि० ॥ हवे शाता सुविजाग रे ॥ रंगी० ॥ ए० ॥ ५ ॥ पन्नर कोडा कोड़ि सागरु रे ॥ मि० ॥ लघु दोय समय ते थीर ॥ गोयम संशय टालियो रे ॥ मि० ॥ जगवईमां शुजवीर रे ॥ रंगी० ॥ ए० ॥ ६ ॥

॥ काव्यं ॥ सुमनासां० ॥ १ ॥ समयसार० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ वेदनीयबंधनिवारणाय पुष्पाणि य० ॥ स्वा० ॥ इति वेदनीयबंधनिवारणार्थं तृतीयपुष्पपूजा समाप्ता ॥ ३ ॥ १ए ॥

## ॥ अथ चतुर्थधूपपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ उत्तराध्ययनें थिति लघु, अंतरमुहर्त्त कहाय ॥ पन्नवणामां बार ते, शाताबंध संपराय ॥ १ ॥ शाता वेदनी बंधनुं, ठाण प्रजुपुर धूप ॥ मिछत डुगंध दूरें टले, प्रगटे आतमस्वरूप ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ चोथी ॥ विमलाचल वेगें वधावो ॥ ए देशी ॥

॥ चउमासी पारणुं आवे, करी विनति निज घर

जावे ॥ प्रिया पुत्रनें वात जणावे, पटकूल जरी पथ रावे रे ॥महावीर प्रजु घर आवे ॥ जीरण शेठजी जा वना जावे रे ॥ महा० ॥ १ ॥ उन्नि शेरियें जल ढं टकावे, जाय केतकी फूल बिगावे ॥ निजघर तोर ण बंधावे, मेवा मिठाई थाल जरावे रे ॥ महा० ॥ ॥ २ ॥ अरिहानें दानज दीजें, देतां देखी जे रीजें ॥ षट्मासी रोग हरीजें, सीके दायक जव त्रीजे रे ॥ म हा० ॥ ३ ॥ ते जिनवर सनमुख जावुं, मुज मंदिरिये पधरावुं ॥ पारणुं जलि जक्तें करावुं, युगतें जिनपू जा रचावुं रे ॥ महा० ॥ ४ ॥ पबी प्रजुनें वोलावा ज ईशुं, कर जोमी सामा रहीशुं ॥ नमी वंदी पावन थइ शुं, विरति अतिरंगें वहीशुं रे ॥ महा० ॥ ५ ॥ दया, दान, क्षमा, शील, धरशुं, उपदेश सज्जननें करशुं ॥ स त्य ज्ञानदशा अनुसरशुं, अनुकंपालक्षण वरशुं रें ॥ महा० ॥ ६ ॥ एम जीरण शेठ वदंता, परिणामनी धारें चढंता ॥ श्रावकनी सीमें ठरंता, देवडुंडुजिनाद सुणंता रे ॥ महा० ॥ ७ ॥ करि आयु पूरण शुजजावें, सुरलोक अच्युतें जावे ॥ शातावेदनी सुख पावे, शुजवीर वचनरस गावे रे ॥ महा० ॥ ८ ॥

॥ काव्यं ॥ अगरमुख्य० ॥ १ ॥ निजगुणाक्षय० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ शातावंधापहाय धूपं य० ॥ स्वा० ॥ इति शातावंधापहार्थं चतुर्थधूपपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥ २० ॥

## ॥ अथ पंचमदीपकपूजा प्रारंभः ॥

॥ शाताबंधक प्राणिया, दीपे एणे संसार ॥ तेणें दीपक पूजा करी, हरियें दुःख अंधार ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ चतुरो चेतो चेतवनाली ॥ ए देशी ॥

॥ सांभलजो मुनि संयमरागें, उपशम श्रेणें चडिया रे ॥ शातावेदनी बंध करीनें, श्रेणिथकी ते पडिया रे ॥ सां० ॥ १ ॥ भांखे भगवई छठतप बाकी, सात लवायु उंछे रे ॥ सर्वारथसिद्धें मुनि पोहोता, पूर्णायु नवि छोछे रे ॥ सां० ॥ २ ॥ शय्यामां पोढ्या नित्य रेहेवे, शिवमारग विशामो रे ॥ निर्मल अवधि नाणें जाणे, केवली मनपरिणामो रे ॥ सां० ॥ ॥ ३ ॥ ते शय्याऊपर चंदरुवे, झुंबखडे छे मोती रे ॥ विचलुं मोती चोशठ मणनुं, झगमग जालिमज्योति रे ॥ सां० ॥ ४ ॥ बत्रीश मणना चउ पाखलियें, शो

लमणां अड सुणियां रे ॥ आठ मणां शोडश मुगता फल, तिम बत्रीश चउ मणियां रे ॥ सां० ॥ ५ ॥ दोमण केरां चोशठ मोती, इगशय अमवीश मणियां रे ॥ दोसयने वली त्रेपन मोती, सर्व थइने मलियां रे ॥ सां० ॥ ६ ॥ ए सघलां विचलां मोतीशुं, आफले वायुयोगें रे ॥ राग रागिणी नाटक प्रगटे, लवसत्तम सुर भोगें रे ॥ सां० ॥ ७ ॥ भूख तरस ठीपे सिलीना, सुरसागर तेत्रीश रे ॥ शाता लहेरमां क्षण क्षण समरे, वीरवीजय जगदीश रे ॥ सां० ॥ ८ ॥

॥ काव्यं ॥ भवति दीप० ॥ १ ॥ शुचिमनात्म ॥२॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ शातोत्तरसुखप्रापणाय दीपं य० ॥ स्वा० ॥ इति शातोत्तरसुखप्रापणार्थं पंचमदीपकपूजा समाप्ता ॥ ५ ॥ २१ ॥

## ॥ अथ षष्ठाक्षतपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अक्षतपूजायें करी, पूजो जगत्दयाल ॥ हवे अशातावेदनी, बंधनां ठाण निहाल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ बठी ॥ चटाउनी देशी ॥

॥ प्रभो ! तुज शासन मीठडुं ॥ समतासाधन सार ॥ योगनालिका कथ्यडी, तेता ज्ञानीने घरबार ॥ हुं रख्यो एणे संसार रे, गुण अवगुण सरिखा धार रे, हीरो हाथ खोव्यो अंधार रे, न करी ज्ञानीशुं गोठडी मेरे लाल ॥१॥ शोक कर्यो संसारमां रे, पर ने पीडा दीध ॥ त्रास पमाव्या जीवने, जीव बंधीखाने दीध रे, मुनिराजनी निंदा कीध रे, मुनि संताप्या बहुविध रे, राजा देवसेनानिध रे, एक सरिखि शनक परसिद्ध रे ॥ न० ॥२॥ माणमला बध आचरया रे, छेदन भेदन त्रास ॥ आपण गरबी जलबी, करी चारी पडाव्या त्रास रे, दसिया पर क्रोधनिवास रे, केइ भूकविया गहि पास रे, केइ जीवनी त्रोडी आस रे, यथा कर्पी कपिलादास रे ॥ न० ॥ ३ ॥ एम अशातावेदनी रे, बांधे प्राणी अनंत ॥ सूत्रविपाके सांभलो, मृगापुत्र तणो दृष्टांत रे, मुणि कंप मस क्तिनवंत रे, सुख अक्षय पामे एकांत रे करो अक्षत पूजा संत रे, शुभवीर भजो भगवंत रे, ॥ न० ॥ ४ ॥

॥ काव्यं ॥ जिनिनक्षक्षत० ॥ १ ॥ सहजभाव० ॥२॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री परम० ॥ अशाताबंधस्थाननिवारणाय अक्षतं य० ॥ स्वा० ॥ इति अशाताबंधस्थाननिवारणार्थं षष्ठाक्षतपूजा समाप्ता ॥ ६ ॥ ४२ ॥

## ॥ अथ सप्तमनैवेद्यपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ न करी नैवेद्य पूजना, न धरी गुरुनी शीख ॥
लहे अशाता परभवें, घर घर मागे भीख ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सातमी ॥ इमन रागिणी ॥ म्हारी सहि समाणी ॥ ए देशी ॥

॥ तुज शासनरस अमृत मीठुं, संसारमां नवि दिठुं रे ॥ मनमोहन स्वामी ॥ दीठुंपण नवि लागुं मीठुं. ॥ नारकदुःख तेणें दीठुं रे ॥ म० ॥१॥ दशविध वेदन अतुल ते पावे, दुःखमां काल गमावे रे ॥ म०॥ परमाधामी दुःख उपजावे, भवभावनायें भावे रे ॥ म० ॥२॥ जेम विषभुक्ति तलार अवाजा, एक नगरें एक राजा रे ॥ म० ॥ शत्रुसैन्य समागम पेहेलो, गाम गाम विष भेल्यो रे ॥ म० ॥ ३ ॥ धान्य मिठाई मीठा जलमां, गोल खांड तरु फलमां रे ॥ म० ॥

पडहो वजावी एम उपदेशो, जे मीठां जल पीशे रे ॥ म० ॥ ४ ॥ नक्त जोज्य रस लीना खाशे, ते यममंदिर जाशे रे ॥ म० ॥ दूरदेशांगत जोजन करशे, खारां पाणी पीशे रे ॥ म० ॥ ५ ॥ ते चिरंजीव लहे सुखशाता, कदीय न होय अशाता रे ॥ म० ॥ नृप आणा करी ते रह्या सुखिया, बीजा मरण लहे फुःखिया रे ॥ म० ॥ ६ ॥ विषमिश्रित विषयारस जुत्ता, ब्रह्मदत्त नरक पहुत्ता रे ॥ म० ॥ मेघकुमर धन्नो सुखजाजा, श्रीशुजवीर ते राजा रे ॥ म० ॥ ७ ॥
॥ काव्यं ॥ अनशनं० ॥ १ ॥ कुमतबोध ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ अशातोदयनिवारणाय नैवेद्यं य० ॥ स्वा० ॥ इति अशातोदयनिवारणार्थं सप्तमनैवेद्यपूजा समाप्ता ॥ ७ ॥ २३ ॥

## ॥ अथाष्टमफलपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ आत्मिक फल प्रगटावियुं. टाली शात अशात ॥
त्रिशलानंदन आगलें, फलपूजा परजात ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ आठमी ॥ राग वसंत धमाल ॥ नंदकुमर केमें पड्यो ॥ केम जरिये ॥ ए देशी ॥

॥ वीरकुमरनी वातडी, केने कहियें ॥ केने कहियें रे केने कहियें ॥ नवि मंदिर बेठी रहियें ॥ सुकुमाल शरीर ॥ वी० ॥ एआंकणी ॥ बालपणाथी लाडको नृप जाव्यो, महि चोशठ इंडें मल्याव्यो ॥ इंद्राणी मली हुलराव्यो, गयो रमवा काज ॥ वी० ॥ १ ॥ ठाम ठगांठलां लोकनां, केम रहियें ॥ एनी मावडीनें शुं कहियें ॥ कहियें तो अदेखा थइयें, नाशि आव्यां बाल ॥ वी० ॥ २ ॥ आमलकी क्रीमावशें वींटाणो, मोटो नोरिंग रोष जराणो ॥ हाथें झाली वीरें ताण्यो, काढी नाख्यो दूर ॥ वी० ॥३॥ रूप पिशाचनुं देवता करि चलियो, मुज पुत्रने लेइ उठलियो॥ वीरमुष्टिप्र हारें वलियो, सांजलीयें एम ॥ वी० ॥ ४ ॥ त्रिशला माता मोजमां एम कहेती, सखियोने उलंना देती॥ क्षण क्षण प्रभुनामज लेती, तेडावे बाल ॥ वी० ॥ ५ ॥ वाट जोवंतां वीरजी घेर आव्या, खोले बेसा ा, लराव्या ॥ माता त्रिशलायें नवराव्या, आलिंग ॰मी॰ वी० ॥ ६ ॥ यौवनवय प्रभु पामतां परणावे,

पछी संयमशुं दिल लावे ॥ उपसर्गनी फोज हठावे लीधुं केवल नाण ॥ वी० ॥ ७ ॥ कर्मसूदन तप भांखियुं जिनराजें, त्रण लोकनी ठकुराइ छाजे ॥ फल पूजा कही शिवकाजें, भविने उपगार ॥ वी० ॥८॥ शाता अशाता वेदनी क्षय कीधुं, आपें अक्षयपद लीधुं ॥ शुभवीरनुं कारज सीधुं, भांगे सादि अनंत ॥वी०॥९॥ काव्यं ॥ शिवतरोः० ॥१॥ शमरसै०॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ वेदनीयकर्मदहनाय फलं य० ॥ स्वा० ॥ कलश ॥ गायो गायो० ॥ इति वेदनीयकर्मदहनार्थमष्टमफलपूजा समाप्ता ॥ ८ ॥२४॥

॥ तृतीयदिवसेऽध्यापनीयवेदनीय कर्मनिवारणार्थं तृतीयपूजाष्टकं संपूर्णम् ॥३॥ सर्वगाथा (६६)

॥ अथ ॥

## ॥चतुर्थदिवसेऽध्यापनीय मोहनीयकर्मसूदनार्थं॥

## ॥ चतुर्थपूजाष्टक प्रारंजः ॥

॥ तत्र ॥

### ॥ प्रथमजलपूजा प्रारज्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीशुजविजय सुगुरु नमी, मातपिता सम जेह ॥ बालपणे बतलावियो, आगमनिधि गुणगेह ॥ ॥१॥ गुरु दीवो गुरु देवता, गुरुथी लहियें नाण ॥ नाणथकी जग जाणियें, मोहनीनां अहिठाण ॥ २ ॥ कष्ट ते करवुं सोहिलुं, अज्ञानी पशुखेल ॥ जाणपणुं जग दोहिलुं, ज्ञानी मोहनवेल ॥ ३ ॥ अज्ञानी अवधि करे; तप जप किरिया जेह ॥ विराधक षट्कायनो, आवश्यकमां तेह ॥ ४ ॥ मूरखमुख आगम सुणी, पडिया मोहनी पास ॥ आगम लोपे विहुं जणा, नरय निगोदें वास ॥ ५ ॥ मूरखसंग अति मले, तो वसियें वनवास ॥ पंडितशुं वासो वसी, छेदो मोहनो पास ॥ ६ ॥ कुडा पिछ कषाय सवि,

ज्ञय ध्रुवबंधि एह ॥ शेष अध्रुवबंधि कही, मिथ्र वोदय गेह ॥ ७ ॥ सगवीस अध्रुवोदय कही, हवे अध्रुव सममीस ॥ सत्ताथी दूरे करो, ध्रुवसत्ता ठवीस ॥ ८ ॥ मोहनी दूर थये थके, नासे कर्मसंज्ञार ॥ कारणथी कारज सधे, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ए ॥

॥ ढाल पहेली ॥ उंधव ! माधवने केहेजो ॥ ए देशी॥

॥ जलपूजा युगतें करीयें,मोहनी बंध ठाण हरियें, विनतडी प्रभुने करीयें रे॥ चेतन चतुर थई चूक्यो, निजगुण मोहवशें मूक्यो रे ॥चे०॥१॥ जीव हण्या त्र स जल ज्ञेटी, देइ फांसो मोघर कूटी ॥ मुख दाबी वाधर वेंटी रे ॥ चे० ॥२॥ क्लेश शम्या उदेरणीया, अरिहा अवगुण मुख ज्ञणिया, बहुप्रतिपालकने ह णिया रे ॥ चे० ॥ ३ ॥ धर्मी धर्मथी चूकवीया, सू रि पाठक अवगुण लविया, श्रुतदायक गुरु हेलविया रे ॥ चे० ॥ ४ ॥ निमित्त वशीकरणें ज्ञरियो, तपसी नाम वृथा धरियो, पंडित विनय नवी करियो रे ॥ चे० ॥५॥ गाम देश घर परजाल्यां, पाप करी अन्य शिर ढाल्यां, कपट करी बहु जन वाल्यां रे ॥ चे०॥ ॥ ६ ॥ ब्रह्मचारी थइ गवराणो, परदाराशुं मूंझाणो ॥ परधन देखी डुहवाणो रे ॥ चे० ॥ ७ ॥ परद्रोह

धूंप धाणुं रयणें जड्य रे, घड्य जात्यमयी कनकांग श्रेणि० ॥ अने हांरे ॥ धू० ॥१॥ अ० ॥ मुनिवररूप न दाखवे रे. थितिबंध पूरवनी रीत ॥ श्रेणि० ॥ ॥ अ० ॥ बंधोदय गुणठाणे पांचमे रे, हवे क्षायक श्रेणि वदित्त ॥ श्रेणि० ॥ अ० ॥ धू० ॥ २ ॥ अ० ॥ शोल सामंतने ज्ञोलवी रे, वच्चे घेरी हण्या लइ लाग ॥ श्रेणि० ॥ अ० ॥ नाठा आठे सेनापति रे, नव माने बीजे ज्ञाग ॥ श्रेणि ॥ अ० ॥ धू० ॥ ३ ॥ अ० ॥ चउमास लगें ए रहे रे, मरणें नरनी गति जाण ॥ श्रेणि० ॥ अ० ॥ रजरेखासम क्रोध छे रे, कठथंज्ञ समाणो मान ॥ श्रेणि० ॥ अ० ॥ धू० ॥ ४ ॥ अ० ॥ माया गोमूत्र सारखी रे, छे लोज्ञ ते खंजनरंग ॥ श्रेणि० ॥ अ० ॥ मुनिवर मोहने नासवे रे, रही श्री शुज्ञवीरने संग ॥ श्रेणि० ॥ अ० ॥ धू० ॥ ५ ॥ ॥काव्यं ॥ अगरमुख्य० ॥ १ ॥ निजगुणाक्षय० ॥२ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ प्रत्याख्यानिदहनाय धूपं य० ॥ स्वा० ॥ ॥ इति प्रत्याख्यानिदहनार्थं चतुर्थधूपपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥ २७ ॥

## ॥ अथ पंचमदीपकपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

संज्वलननी चोकडी, जब जाये तव गेह ॥
ज्ञानदीवो परगट हुवे, दीपकपूजा तेह ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ चंद्रप्रभ जिनचंद्रमा रे ॥ ए देशी ॥

॥ जगदीपकनी आगलें रे, दीपकनो उद्योत ॥ संज्वलनो ज्वलते थके रे, भाव दीपकनी ज्योत ॥ हो जिनजी ॥ १ ॥ तेजें तरणिथी वडो रे, दोय शिखानो दीवडो रे, झलके केवल ज्योत ॥ ए आंकणी ॥ बंध स्थिति पूरवपरें संज्वलनो तिम जाण ॥ बंध उदय सत्ता रहे रे, अनियवी गुणठाण ॥ हो जि० ॥ ते० ॥ २ ॥ लोभ दिशा अति आकरी रे, नवमे बंध पलाय ॥ उदयने सत्ता जाणियें रे, जे सूक्ष्म संपराय ॥ हो जि० ॥ ते० ॥ ३ ॥ साहिब श्रेणि संचर्यों रे, लोभनो खंड प्रचंड ॥ गुणठाणां सरिखो करी रे, खरड्योखंडोखंड ॥ हो जि० ॥ ते० ॥ ४ ॥ पद्गलगें गति देवनी रे, जलरेखा सम क्रोध ॥ नेत्रलता सम मानथी रे, चरम चरणनो

चंदनं य० ॥ स्वा० ॥ इति अनंतानुबंधिदहनार्थं द्वितीय चंदनपूजा समाप्ता ॥ २ ॥ २६ ॥

## ॥ अथ तृतीयपुष्पपूजा प्रारंभः ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ अपच्चखाणी चोकडी, टाली अनादिनी भूल॥ परमातम पद पूजीयें, केतकी जायने फूल ॥ १ ॥

॥ढाल त्रीजी॥ राणीयो रुए रंग मेहलमें रे॥ए देशी॥१॥

॥ फूलपूजा जिनराजनी रे, विरतिने घरबार रे॥ सनेहा ॥ ते गुणलोपक अपच्चखाणी, जे क्रोधादिक चार रे ॥ सनेहा ॥ चार चतुर चित्त चोरटा रे, मोह महीपति घेर रे ॥स०॥चा०॥१॥चालीश सागर कोडाकोडी, बंध थिति अनुसार रे ॥ स० ॥ उदय विपाक अबाधाकालें, वर्ष ते चार हजार रे ॥ स० ॥चा० ॥ २ ॥ बंध उदय चोथे गुणे रे, नवमे सत्ता टाल रे ॥ स० ॥ वर्ष लगें ते पाप करी, न खमावे गुरु बाल रे ॥ स० ॥ चार० ॥ ३ ॥ तिर्यंचनी गति एहथी रे, पुढवीरेखा क्रोध रे ॥ स० ॥ अस्थिनमाव्युं वरषें नमे रे, बाहुबली नरयोध रे ॥ स० ॥ चार० ॥ ॥ ४ ॥ माया मिंढासिंग सारीसी , लोभ रे छे

कर्दमरंग रे ॥ स० ॥ अनीतिपुरें व्यवहारियो रे, रणघंटाने संग रे ॥ स० ॥ चार० ॥ ५ ॥ चार धूर्त तारा वाणिया रे, पासेंथी वाल्युं वित्त रे ॥ स० ॥ रत्नचूड परें शुद्धविरतिशुं, लागे चतुरनुं चित्त रे ॥स० ॥ चार० ॥ ६ ॥

॥ काव्यं ॥ सुमनसां० ॥ १ ॥ समयसार० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ अप्रत्याख्यानिनिवारणाय पुष्पाणि य० ॥ स्वा० ॥ इति अप्रत्याख्यानिनिवारणार्थं तृतीयपुष्पपूजा समाप्ता ॥ ३ ॥ २७ ॥

## अथ चतुर्थ धूपपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रत्याख्यानी चोकडी, दहन करेवा धूप ॥ पूजक ऊर्ध्वगति लहे, वलि न पडे भवकूप ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ अने हांरे वाल्होजी वाये छे वांसली रे ॥ ए देशी ॥

॥ अने हांरे धूप धरो जिन आगलें रे, कृष्णागरु धूप दशांग, श्रेणि भली गुणठाणनी रे ॥ अने हांरे

रोध ॥ हो जि० ॥ ते० ॥ ५ ॥ माया अवलेहीसमी रे, लोज हरिद्रारंग ॥ क्षायकजावें केवली रे, श्री शुजवीर प्रसंग ॥ हो जि० ॥ ते० ॥ ६ ॥

॥ काव्यं ॥ जवति दीप० ॥ १ ॥ शुचिमना ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ उँ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ संज्वलनज्वलनाय दीपं य० ॥ स्वा० ॥ इति संज्वलनज्वलनार्थं पंचम दीपकपूजा समाप्ता ॥ ५ ॥ ३ए ॥

॥ अथ षष्ठाक्षतपूजाप्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

नव नोकषायते चरणमां, राग द्वेष परिणाम ॥ कारण जेह कषायनां तिण नोकषाय ते नाम ॥ १ ॥

॥ ढाल ठ्ठी ॥ सहसावन जई वसियें चालोने ॥ ॥ सखि! सहसावन जइ वसियें ॥ ए देशी ॥

॥ वीरकने जइ वसियें, चालोने सखि वीरकने जइ वसियें ॥ अक्षतपूजा जिननी करतां, अक्षय मंदिर वसियें ॥ हास्यादिक षट्ट खटपटकारी, तास वदन नवि फसियें ॥ चा० ॥ १ ॥ हास्यरति दश

कोडाकोडी, सागर बंधन कसियें ॥ अरतिने, भय, शोक, डुगंछा, विश कोडाकोडी खसियें ॥ चा० ॥२॥ भय,रति,हास्य, डुगंछा अपूरव, शेष प्रमत्त बंध धसियें ॥ उदय अपूरव सत्ता नवमे, पंचम भागें नसियें ॥ चा० ॥ ३ ॥ काउव उछरतां मुनि देखे, सोहमपति मोह वसियें ॥ मोहें नडिया नाणथी पडिया, काउस्सग्गमां मुनि हसियें ॥ चा० ॥४॥ मोहनी हास्यविनोदें वसतां, जेम तेम मुखथी भसियें ॥ कोइ दिन रति. कोइ दिन अरतिमां, शोकमति लेइ घसियें ॥ चा० ॥५॥ संसारें सुख लेश न दीठुं, भयमोहनी चिहुं दिशियें ॥ चरण डुगंछाफल चंडालें, जन्म मेतारज रुषियें ॥ चा० ॥ ६ ॥ मोहमहीपति महातोफानें, मुंझाणा अहनिशियें ॥ श्रीशुभवीर हजूरें रहेतां, आनंदलहेर विलसियें ॥ चा० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ क्षितितले० ॥ १ ॥ सहजभाव० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ हास्यषट्कनिवारणाय अक्षतं य० ॥ स्वा० ॥ इति हास्यषट्कनिवारणाय षष्ठाक्षतपूजा समाप्ता ॥ ६ ॥ ३० ॥

रोध ॥ हो जि० ॥ ते० ॥ ५ ॥ माया अवलेही समी रे, लोज हरिद्रारंग ॥ कायकजावें केवली रे, श्री शुजवीर प्रसंग ॥ हो जि० ॥ ते० ॥ ६ ॥

॥ काव्यं ॥ जवति दीप० ॥ १ ॥ शुचिमना ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ संज्वलनज्वलनाय दीपं य० ॥ स्वा० ॥ इति संज्वलनज्वलनार्थं पंचम दीपकपूजा समाप्ता ॥ ५ ॥ २ए ॥

## ॥ अथ षष्ठाक्षतपूजाप्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

नव नोकषाय ते चरणमां, राग द्वेष परिणाम ॥ कारण जेह कषायनां तिण नोकषाय ते नाम ॥ १ ॥

॥ ढाल ठही ॥ सहसावन जई वसियें चालोने ॥ ॥ सखि ! सहसावन जइ वसियें ॥ ए देशी ॥

॥ वीरकने जइ वसियें, चालोने सखि वीरकने जइ वसियें ॥ अक्षतपूजा जिननी करतां, अक्षय मंदिर वसियें ॥ हास्यादिक षट् खटपटकारी, तास वदन नवि फसियें ॥ चा० ॥ १ ॥ हास्यरति दश

कह्या, वेदविवश रह्या ॥ घर छंडि विदेशें जाय रे ॥ म० ॥ ४ ॥ गले फांसो धरे, झंपापात करे ॥ मात पिताशुं न लजाय रे ॥ म० ॥ वेदत्रिहुं उदयाणे, नवमे गुणठाणें, मिथ्यातें नपुं बंधाय रे ॥ म० ॥ ५ ॥ नवम दूजा सुधी, पुरुष प्रिया बंधी ॥ हवे सत्ताथी छेदाय रे ॥ म० ॥ नर नपुंसक नारी, नवमेंथी हारी ॥ षट् त्रण्य चोथानें जाय रे ॥ म० ॥ ६ ॥ नरीछी नपुं जोडी, सागर कोडाकोडी ॥ दश पन्नर विश कहाय रे ॥ म० ॥ वेदें नड्यो जड्यो, संसारी घड्यो ॥ निर्वेदी चढ्यो नहीं ठाय रे ॥ म० ॥ ७ ॥ अब तुं स्वामी मळ्यो, नरभवज फळ्यो ॥ नैवेद्यपूजा फल दाय रे ॥ म० ॥ श्रीशुभवीर हजूरें, रहो आनंद पूरें ॥ भववेदन विसरी जाय रे ॥ म० ॥ ८ ॥

॥ काव्यं ॥ अनशनं ॥ १ ॥ कुमतबोध० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ वेदत्रिकसूदनाय नैवेद्यं य० ॥ स्वा० ॥ इति वेदत्रिकसूदनार्थं सप्तमनैवेद्य पूजा समाप्ता ॥ ७ ॥ ३१ ॥

## ॥ अथाष्टमफलपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोह महाजट केशरी, नामें ते मिथ्यात ॥
फलपूजा प्रजुनी करी, करशुं तेहनो घात ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ राग वसंत, धुमार ॥
अहो मेरे ललना ॥ ए देशी ॥

॥ मोह महीपति मेहेलमें बेठे, देखे आयो वसंत ॥ ललना ॥ वीरजिणंद रहे वनवासें, मोहसें न्यारो जगवंत ॥ चतुरांके चित्त चंद्रमा हो ॥१॥ मंजरी पिंजरी कोयल टहुके, फूली फली वनराय ॥ ललना ॥ धर्मराज जिनराजजी खेले, होरी गोरी अजावीकाय ॥ च० ॥ २ ॥ संतोष मंत्री वडो मुख आगें, समकित मंमली जूप ॥ ललना ॥ सामंत पंच महाव्रत गाजे, गाजे मार्दव गजरूप ॥ च० ॥ ३ ॥ चरण करण गुण प्यादल चाले, सेनानी श्रुतबोध ॥ ललना ॥ शीलांगरथ शिर सांई सुहावे, अध्यवसाय जस योध ॥ च० ॥ ४ ॥ मोहराय पण इणे समे आयो, माया प्रिया सुत काम ॥ ललना ॥ मंत्री लोज जट दुर्द्धर क्रोधा, हास्यादि षट्रथ नाम ॥ च० ॥ ५ ॥ मिथ्या

तमंडली राय अटारो, बंधउदय निजठाण ॥ लल
ना ॥ समकित मिश्र मोहनी लघु नाइ, उदयें सत्तम
सम्म जाण ॥ च० ॥ ६ ॥ सित्तेर सागर कोमाकोमी,
मिथ्यात्वनो स्थितिबंध ॥ललना॥ सत्ता त्रण्यनी अमयु
णठाणें, मानहस्तीयें चाहे धंध ॥ च० ॥ ७ ॥ तस
रक्षक मन जिन पलटायो, मोह ते नागो जाय ॥
ललना ॥ ध्यान केशरिया केवल वरिया, वसंत अनं
त गुण गाय ॥ च० ॥ ८ ॥ ते शुभवीर जिणंदें दा
ख्यो, कर्मसूदन तप एह ॥ ललना ॥ तपफल फल
पूजा करी याचो, साचो सांइशुं करो नेह ॥ च० ॥ ए॥
॥ काव्यं ॥ शिवतरोः० ॥ १ ॥ शमरसैक० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम०॥दर्शनमोहनीयनिवारणाय
फलानि य०॥स्वा०कलश ॥ गायो गायो० ॥ इति दर्श
नमोहनीयनिवारणार्थमष्टमफलपूजा समाप्त ॥८॥३१॥

॥ इति चतुर्थ दिवसेऽध्यापनीयमोहनीय
कर्मसूदनार्थं चतुर्थपूजाष्टकं संपू
र्णम् ॥ ४ ॥ सर्वगाथा ( ७४ )

॥ अथ ॥

## ॥ पंचमदिवसेऽध्यापनीयायुष्कर्मसूदनार्थं ॥

## ॥ पंचमपूजाष्टक प्रारंभः ॥

॥ तत्र ॥

## ॥ प्रथम जलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंचम कर्मतणी कहुं, पूजा अष्ट प्रकार ॥ मोह राय दरबारमां, जीवित कारागार ॥ १ ॥ चार अ घाती आउखां, बंधोदय सुविचार ॥ सत्तायें पण जो इयें, अध्रुवपद निरधार ॥ २ ॥ चार गतिमां जीवको आयुकर्मने योग॥ बंध उदयथी अनुभवे, सुख दुःख केरा भोग ॥ ३ ॥ चरमशरीरी विण जिके, जीव इणे संसार ॥ समय समय बांधे सही, कर्म ते सात प्र कार ॥ ४ ॥ अंतरमुहूर्त्ते आउखुं, भवमां एकज वार ॥ बांधी अबाधा अनुभवी, संचरिया गति चार ॥५ एम पुद्गलपरावर्त्तना, करी संसार अनंत ॥ निर्भयदाय क नाथजी, मळियो तुं भगवंत ॥ ६ ॥ जलपूजा यु गतें करी, धरी प्रभुचरणें शीश ॥ चार पयन्नीमां सुरग ति, दायकगण कहीश ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ शीतलजिन सहजानंदी ॥ ए देशी ॥

॥ तीर्थोदक कलशा भरियें, अभिषेक प्रभुने करियें ॥ प्रातिहारज शोभा धरियें, लघु गुरु आशातना हरियें ॥ सलूणा संत ए रीत कीजें, देवआयु लहे भव बीजे ॥ स० ॥ १ ॥ परमातमपूजा रचावे, समता रस ध्यान धरावे ॥ शोक संताप अल्प करावे, साधु साधवीने वोहरावे ॥ स० ॥ २ ॥ गुणी राग धरे व्रत पाले, समकित गुणने अजुवाले ॥ जयणा अनुकंपा ढाले, करे गुरुवंदन त्रण्य कालें ॥ स० ॥ ३ ॥ पंचाग्नितापं सहंता, ब्रह्मचारी वनमां वसंता ॥ कष्टें करी देह दमंता, बाल तपसी नाम धरंता ॥ स० ॥ ॥ ४ ॥ बंध करतो सातमे जाणो, उदयें चोथोगुणठाणो ॥ उंघें सुरआयु प्रमाणो, सत्ताउपशम गुणठाणो ॥ स० ॥ ५ ॥ लोक लोकोत्तर गुणधारी, अंतें परिणाम समारी ॥ देवलोकमांहे अवतारी, शुभ वीर वचन बलिहारी ॥ स० ॥ ६ ॥

काव्यं ॥ तीर्थोदकैः० ॥१॥ सुरनदी० ॥२॥ जनमनो०॥३॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ देवायुर्बंधस्थाननिवारणा

य जलं य० ॥ स्वा० ॥ इति देवायुर्वंधस्थाननिवारणा र्थं प्रथमजलपूजा समाप्ता ॥ १ ॥ ३३ ॥

## ॥ अथ द्वितीयचंदनपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ पर्याप्ति पूरी करी, समकित दृष्टिदेव ॥
न्हवण विलेपन केसरें, पूजे जिन ततखेव ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ कोशा वेश्या कहे रागीजी ॥ मनो हर मन गमता ॥ ए देशी ॥

दुनियामां देवन दूजाजी, जिनवर जयकारी ॥ करुं अंग विलेपन पूजाजी, ॥ जि० ॥ तेम समकीती सुर पूजेजी ॥ जि० ॥मिथ्यात्वी पण केई बूझेजी ॥ जि० ॥ १ ॥ तिहां पहेली भवणनिकायजी ॥ जि०॥ एक सागर अधिकुं आयजी ॥ जि० ॥ उत्तरथी दक्षि ण हीणाजी ॥ जि० ॥ नवमां दोपलिय ते ऊणा जी० ॥ जि ॥ २ ॥ व्यंतर एक पलियनुं आयजी ॥ जि० ॥ सुण साहिब त्रिजी निकायजी ॥ जि० ॥ स हस लक्ष वरस अधिकेरंजी ॥ जि० ॥ रविचंद्र पल्यो पम पूरेंजी ॥ जि० ॥ ३ ॥ गह रिख तारक जोमाय जी ॥ जि० ॥ पल्यअर्धने चोथे पायजी ॥ जि० ॥

सौधर्मैं सागर दोयजी ॥ जि० ॥ बीजे अधिकेरांहो यजी ॥ जि० ॥ ४ ॥ दोय कल्पें सगहिय जाणोजी॥ जि० ॥ ए परमायु परिमाणोजी ॥ जि० ॥ दश चउ दश सत्तर दीजेंजी ॥ जि० ॥ महाशुक्र लगें ते लीजें जी ॥ जि० ॥ ५ ॥ हवे कीजें अधिक एक एकेंजी ॥ जि० ॥ एकत्रीश नवमे ग्रैवेकेंजी ॥ जि० ॥ तेत्रीश ते पंच विमानेजी ॥ जि० ॥ समकित दृष्टि तिहां माने जी ॥ जि० ॥ ६ ॥ शिवसाधन बाधक टाणेजी ॥ जि० ॥ सुरसुख ते दुःख करी जाणेजी ॥ जि० ॥ कल्याणक रंगें नीनाजी ॥ जि० ॥ शुभवीर वचन रस लीनाजी ॥ जि० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ जिनपतेः० ॥ १ ॥ सहजकर्म० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ सुरायुर्निगडभंजनाय चंदनं य० ॥ स्वा० ॥ इति सुरायुर्निगडभंजनार्थं द्वितीयचंदनपूजा समाप्ता ॥ २ ॥ ३४ ॥

## ॥ अथ तृतीयपुष्पपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ त्रीजी कुसुमनी पूजना, पूजेनित्य जिनराय ॥

पंक्तिसंग करे सदा, शास्त्र भणे धरे न्याय ॥ १ ॥
न्यायें उपार्जन करे, जयणायुत मुनिदान ॥ भद्रक
भावें नवि करे, आरंभ निंदा ठाण ॥ २ ॥ परउप
कारादि गुणें, वाधे मणुअनुं आय ॥ तुज शासन
रसिया थई, शिवमारग केई जाय ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ आसणरा योगी ॥ ए देशी ॥

॥ कुसुमनी पूजा कर्म नसावे, नागकेतुपरें भावे
रे ॥ सुणजो जगस्वामी ॥ आयुनिकाचित छे पण त
हवी, कर्मनुं जोर हठावे रे ॥ सु० ॥ १ ॥ श्रेणिक
सरिखा तुज गुणरागी, कर्मनी बेडी न भांगी रे
॥सु० ॥ सुकमालिका उपनय इहां भावो, सार्थवाह
घर लागी रे ॥सु० ॥ २ ॥ त्र्याशी लाख पूरव घर
वासें, जिनवर विरति न आवे रे ॥सु० ॥ बंध तुरिय
सत्ता उदयेंथी, केवली अंतें खपावे रे ॥ सु० ॥ ३ ॥
त्रण्य पल्योपम युगलिक आयु, कल्पतरु फललीना
रे ॥ सु० ॥ संखायु नर शिव अधिकारी, जाय ते
भवव्रतहीना रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ पूरवकोडि चरण फल
हारे, मुनि अधिकेरे आय रे ॥ सु० ॥ श्रीशुभवीर
अचलसुख पावे, चरम चोमासुं जाय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥
॥ काव्यं ॥ सुमनसां० ॥ १ ॥ समयसार० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ नरायुर्निवारणाय पुष्पाणि य० ॥ स्वा० ॥ इति नरायुर्निवारणार्थंतृतीय पुष्पपूजा समाप्ता ॥ ३ ॥ ३५ ॥

## ॥ अथ चतुर्थधूपपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर्म समिध दाहन भणी, धूपघटा जिनगेह ॥ कनक हुताशन योगथी, जात्यमयी निजदेह ॥ १ ॥ जिनगुणरंग सुगंगमें, ढलकत झलकत हंस ॥ आयु कलंक उतारतां, शोभे निर्मल वंश ॥ २ ॥ निर्मल वंश निहालीने, कुलवंती घरनार ॥ परघर रमतो देखीने, समजावे भरतार ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ राग योग्य आशावरी ॥ उड भमरा कंकणीपर बेठा ॥ नयणीसें ललकारुंगी ॥

॥ उडजारे ममरा तुज मारुंगी ॥ ए देशी ॥

॥ जिनगुण धूपघटा वासंती, कुलवंती परदारुंगी ॥ मत जा रे पिया तुज वारुंगी ॥ बालखेलमें न वि बतलायो, अब नयनें ललकारुंगी ॥ म० ॥ १ ॥

मात पिता सयणा लजवाते; लाजत दश दोष मारुं गी ॥ म० ॥ ए तुज ख्याल बुरो डुनियामें, क्या में मुख देखारुंगी ॥ म० ॥ २ ॥ रयणीघोरमें चोर फिरत हे, पियु हररोज पोकारुंगी ॥ म० ॥ इतने दिन जंजलमें रहेती, सहेती डुनीयां गारुंगी ॥ म० ॥ ३ ॥ तीनलोक साहिबकी आना, में मेरे शिर धारुंगी ॥ म० ॥ दीपकी ज्योतसें मंदिर रहेनां, परघर चार विसारुंगी ॥ म० ॥ ४ ॥ चारसज्झायें फूल बिछाउं, बतियांसेंबि लगारुंगी ॥ म० ॥ रंगमहेलमें सहेल करंतां, गोदमें पुत्त रमारुंगी ॥ म० ॥ ५ ॥ गंगानीरसें अंग पखारुं, नाथ सगांसें तारुंगी ॥ म० ॥ नवल वधूसें पुत्तसगाई, मंगलतूर बजारुंगी ॥ म० ॥ ६ ॥ नाथसें होती पुत्तपनोती, सखियां गीत उचारुंगी ॥म० श्रीशुभवीर चतुर चोरीमें, शिरपर लूण उतारुंगी ॥७॥ काव्यं ॥ अगरमुख्य० ॥ १ ॥ निजगुणाक्षय० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ नरायुर्विगमादंतरंगकुटुंबप्राप्तये धूपं य० ॥ स्वा० ॥ इति नरायुर्विगमादंतरंगकुटुंबप्राप्त्यर्थं चतुर्थधूपपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥ ३६ ॥

## ॥ अथ पंचमदीपकपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ मनमंदिर दीपक जिस्यो, दीपे जास विवेक ॥
तस तिरिआयु नहि कदा, थानकबंध अनेक ॥ १ ॥
॥ ढाल पांचमी ॥ चोरी व्यसन निवारियें ॥ ए देशी ॥

॥ दीपकपूजा जिनतणी, नित करतां हो अविवे
क ते जाय के ॥ अविवेकें करी आतमा, बंध पाडे हो
तिरियंचनुं आयके ॥ अज्ञानी पशु आतमा ॥ १ ॥ ए
आंकणी ॥ शीलरहित परवंचका, उपदेशें हो पोषे
मिथ्यात के॥वणिज करे कूड तोलशुं, मुख भांखे हो कु
कर्मनी वात के ॥अ०॥२॥ वस्तु उत्तम हीण जातिशुं,
भेलवीने हो वेचे नादान के॥ माया कपट कूड शाखि
यो, करे चोरी हो नित्य आरत ध्यान के ॥ अ० ॥३॥
थई घीरोली साधवी, शेठ सुंदर हो नंदन मणियार
के ॥ अविवेकें परभव लहे, गोहजाति हो डेडक अ
वतार के ॥अ०॥ ४॥ कूडकलंक चढावतां, नीलकापो
त हो लेश्या परिणाम के ॥ श्रीशुभवीरना निंदकी,
तिरिआयु रे बांधे एणें ठाम के ॥ अ० ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ भवति दीप ॥ १ ॥ शुचिमना ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ तिर्यगायुर्बंधस्थाननिवारणाय दीपं य० ॥ स्वा० ॥ इति तिर्यगायुर्बंधस्थाननिवारणार्थं पंचमदीपकपूजा समाप्ता ॥ ५ ॥ ३७ ॥

## ॥ अथ षष्ठाक्षतपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अक्षत पूजा पूजीयें, अक्षय पद दातार ॥ पशुआं रूप निवारीनें, निजरूपें करनार ॥ १ ॥

॥ ढाल छठी ॥ मनमोहन मेरे ॥ ए देशी ॥

॥ तुम अम मेलें एकठा, मनमोहन मेरे ॥ मलिया वार अनंत ॥ म० ॥ शीघ्रपणे केम साहिबा ॥ म० ॥ १ ॥ आप हुआ भगवंत ॥म०॥ आलसु मंद पराधीने ॥ म० ॥ अंतर पडियो जाय ॥ म० ॥ एकलडा में आचस्यां ॥म०॥ तिरिय गतिनां आय ॥ म०॥ ॥ २ ॥ एकेंद्रिमांहे रह्यो ॥ म० ॥ बावीश वरष हजार ॥ म० ॥ क्षुल्लकभव सत्तर कस्या ॥म०॥ श्वासोश्वास मोझार ॥ म० ॥ ३ ॥ बे इंद्रिय गुरु आयुथी ॥ म० ॥ जीवे वरस ते बार ॥म०॥ उंगण पंचाश वासरा ॥ म० ॥ त्रे इंद्रिय अवतार ॥ म० ॥ ४ ॥ छमा

सी चउरिंद्रियें ॥ म० ॥ पज्यपणिंदी तीन ॥ म० ॥ बंध कह्यो सास्वादनें ॥ म० ॥ उदयें पंच मलिन ॥ म० ॥ ५ ॥ सत्ता खसि गई सातमे ॥ म० ॥ पूज्य हुआ शुन्नवीर ॥ म० ॥ हुं पण मलियो अवसरें ॥ म० ॥ पूजुं अक्षत थइ धीर ॥ म० ॥ ६ ॥

॥ काव्यं ॥ क्षितितले० ॥ १ ॥ सहजन्नाव० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ तिर्यगायुर्निवारणाय अक्षतान् य० ॥ स्वा० ॥ इति तिर्यगायुर्निवारणार्थं षष्ठाक्षतपूजा सामाप्ता ॥ ६ ॥ ३७ ॥

## ॥ अथ सप्तमनैवेद्यपूजा प्रारंन्नः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अणाहारी पद में कस्यां, विग्गहगइय अणंत॥
नैवेद्यपूजा फल दियो, अणाहारी पद संत ॥ १ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ माता यशोदाजी हुलराव्यो ॥ न्नाव्यो मनगोपाल ॥ बालपणे वाह्यो ॥ ए देशी ॥

॥ आहार करंतां अहनिश माच्यो, नाच्यो इणे संसार ॥ सांन्नल विशरामी ॥ नैवेद्य थाल ठवी जिन

आगें, मागुं पद अणाहार ॥ सां० ॥ नहीं तुज वार ॥ सां०॥ तुजसरिखो दातार ॥ सां० ॥ नहीं कोइ आ संसार ॥ सां० ॥ त्रिशला मात मल्हार ॥सां०॥ मुज अवगुण न विचार ॥ सां० ॥ १॥ मद मछर लोभी अति विषयी, जीवतणो हणनार ॥ सां० ॥ महारंभी मिथ्यातने रौद्री, चोरीनो करनार ॥सां०॥ घात जिन अणगार ॥ सां० ॥ व्रतनो भंजनहार ॥ सां० ॥ मदिरा मांस आहार ॥सां०॥भोजन निशि अंधार ॥ सां० ॥ गुणी निंदानो ढाल ॥ सां०॥लेश्या धुर अधिकार ॥ सां० ॥ नारकीमां अवतार ॥सां० ॥ इणे लक्षण निरधार ॥ सां० ॥ अवगुणनो नहीं पार ॥ सां० ॥ पण आव्यो तुज दरबार ॥ सा० ॥ निजरूप दियो एक वार सां० ॥ जेम विद्याधर उपगार ॥ सां० ॥ संजीवनी बूटी चार ॥ सां० ॥ साजो कीधो भरतार ॥ सां० ॥ शुभवीर वको आधार ॥ सां०॥२॥

॥ काव्यं ॥ अनशनं० ॥ १ ॥ कुमतबोध० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ नरकायुर्बंधस्थाननिवारणाय नैवेद्यं य० ॥ स्वा० ॥ इति नरकायुर्बंधस्थान निवारणार्थं सप्तम नैवेद्यपूजा समाप्ता ॥ ७ ॥ ३९ ॥

## ॥ अथाष्टमफलपूजा प्रारंजः ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ बंधनी बेडी जंजवा, जिनगुणध्यान कुठार ॥
फलपूजाथी ते हुवे, फलथी फल निर्धार ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥परिग्रह गमता परिहरो ॥ए देशी॥

॥ फलपूजा वीतरागनी, करतां छुःख पलाय ॥ सलूणे ॥ अरिहापूज अरोचका, जीव ते नरकें जाय ॥ सलूणे ॥ १ ॥ बंध समयचित्त चेतियें, श्यो उदयें संताप ॥ स० ॥ शोक वधे संतापथी, शोक नरकनी गप ॥ स० ॥ बं० ॥ २ ॥ इग तिग सग दश सत्तरू, बावीशने त्रेवीश ॥ स० ॥ सागर साते नरकमां, नारकी पाडे चीश ॥ स० ॥ बं० ॥ ३ ॥ दश विध दाहक वेदना, वैतरणीनां छुःख ॥ स० ॥ परमाधामी वश पड्या, घडीय न पामे सुख ॥ स० ॥ बं० ॥ ४ ॥ जाति समरणें जाणता, अनुजविया अवदात ॥ स० ॥ तो पण रावण जूऊतो, लक्ष्मणशुं करी घात ॥ स० ॥ बं० ॥ ५ ॥ परमाधामी देखीने, नाखे अग्निमऊार ॥ स० ॥ चोथी नरकें बूऊव्या, सीतेंड्र तेणि वार ॥ स० ॥ बं ॥ ६ ॥ राय

वसु नरकें पड्या, सुजूम सरिखावीर ॥ स० ॥ सां भली हइडां कम कर्मे, भुज वबूटे शरीर ॥ स० ॥ वं० ॥ ७ ॥ आदि तुरिय वंध उदयथी, सत्ता सा तमे टाल ॥ स० ॥ कर्मसूदन तपफल दीयो, श्रीशु भवीर दयाल ॥ स० ॥ वं० ॥ ८ ॥

॥ काव्यं ॥ शिवतरोः० ॥ १ ॥ शमरसै० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ नरकायुर्निगरूविफलत्वाय फलानि य०॥स्वा०॥कलश॥गायो गायो० ॥ इति नरका युर्निगरूविफलत्वार्थमष्टमफलपूजा समाप्ता ॥ ८ ॥४०॥

॥ इति पंचमदिवसेऽध्यापनीय आयुः
कर्मसूदनार्थं पंचमपूजाष्टकं संपू
र्णम् ॥ ५ ॥ सर्वगाथा ॥ ६४ ॥

॥ अथ ॥

## ॥ षष्टदिवसेऽध्यापनीयनामकर्मसूदनार्थं ॥

## ॥ षष्ठपूजाष्टक प्रारंभः ॥

॥ तत्र ॥

## ॥ प्रथमजलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रणमुं श्रीशंखेश्वरो, साहिब सुगुण पवित्त ॥ मुज गुरु उपकारें करी, क्षणक्षण आवे चित्त ॥ १ ॥ नाम करम हवे दाखवुं, चित्रक सरिखुं जेह ॥ नट जेम बहुरूपी करे, तेम शुभ अशुभे तेह ॥ २ ॥ ऊंच नीच देहाकृति, खंपण देहें होय ॥ कृष्ण नील जाम्बो घणुं, अशुभ नाम ते जोय ॥ ३ ॥ रूपें ह रिबल सारिखा, ते शुभनाम वखाण ॥ मध्य तनु पीत उज्जलो, सुंदर रातो वान ॥ ४ ॥ जैनधर्म रातो रहे, गाय गुणी गुणग्राम ॥ तेणें शुभनाम ते संप जे, इत्तर अशुभ तेनाम ॥ ५ ॥ नामकर्म दूरें करी, पाम्या भवनो पार ॥ सिद्ध अरूपी पद भणी, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ सुतारीना बेटा तुनें वीनवुं रे लो ॥
॥ मारे गरबे मांडवमी लाव जो ॥ रमतां ।
अंगुठी वीसरी रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ पिंमपयडी चौद पखालवा रे लो, अनिषेक करुं अरिहंत जो ॥ जस ज्ञानदिशा रलियामणी रे लो, करे ज्ञानी करमनो अंत जो ॥ ज्ञानीनी गोठ मी मीठमी रे लो ॥१॥ नर, देव, निरय, तिरिया, गई रे लो, इग, विगल, पणिंदि जाति जो ॥ तरु, कीमो, कीडी, माखी, थयो रे लो, शुं वखाणुं आपणी बुनियात जो ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ तनु उरल विउवाहारगा रे लो, तेज कर्म अनादिनां साथ जो॥ त्रण्य आदि उपांगने टालवा रे लो, तुज सरिखो न मलियो नाथ जो ॥ ज्ञा० ॥ इंणे नामें बंधन संघातनां रे लो, पण बंधक ग्राहक पांच जो ॥ षट् संघयण आदि केवली रे लो, जो वज्रऋषननाराच जो ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ संसारें ऋषननाराच ठे रे लो, नाराच, अरधनाराच जो ॥ किलि, ठेवठु, पंचम कालमां रे लो, गयां रत्न, रह्यां तनु काच जो ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ समचउरंस निग्रोह सादियें रे लो, कुबरु वामण संगण जो ॥ हुंम वालानुं एकें न पांशरुं रे लो, हवे

वर्णादि विश प्रमाण जो ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ गंध वर्ण फरस रस पुग्गला रे लो, विश शोल बोलें ग्रहवाय जो ॥ जीव योग्य ग्रहण अरु वर्गणा रे लो, राग दोषने रस घोलाय जो ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ अनुपूर्वि कही गति चारनी रे लो, जाय ताण्यो रुषन्न घरनाथ जो ॥ शुन्न अशुन्न चाल बंकी करी रे लो, शुन्नवीर नें वलगो हाथ जो ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥

॥ काव्यं॥तीर्थोदकैः ॥१॥ सुरनदी० ॥२॥ जनमनो० ॥३॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ पिंरुप्रकृतिविछेदनाय जलं य० ॥ स्वा० ॥ इति पिंडप्रकृतिविछेदनार्थं प्रथमजल पूजा समाप्ता ॥ १ ॥ ४१ ॥

## ॥ अथ द्वितीयचंदनपूजा प्रारंन्नः ॥

॥ दोहा ॥

॥ दश तिग जिन घर साचवी, पूजीशुं अरिहंत ॥
दश यतिधर्म आराधिनें,करुं थावर दश अंत ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ व्रजना वाल्हाने वीनति रे ॥ ए देशी ॥

॥ साते शुद्धि समाचरी रे, पूजीशुं अमें रंगें ला

ल ॥ केसर कंचनशुं घसी रे, स्वामी विलेपन अंगें लाल ॥ लाल सुरंगी रे साहिबो रे॥ १॥ भू, जल, जलण, अनिल, तरु रे, थावर पंच प्रकारो लाल ॥ सूक्ष्म नाम करमथकी रे, भरिया लोक मोझारो लाल ॥ ला० २ ॥ निज पर्याप्ति पूख्या विना रे, मरता ते अपजत्ता लाल ॥ साधारण तरुजातिमां रे, जीव शरीरें अनंता लाल ॥ ला० ॥ ३ ॥ अंग उपांग जे थिर नहीं रे, नाम अथिर ते दीठे लाल ॥ नाभिहेठें अशुभाकृति रे, दुर्भगलोक अनीठे लाल ॥ ला० ॥ ४ ॥ न गमे जे स्वर लोकमां रे, दुःस्वर खेदनुं धामो लाल ॥ साचुं लोकने नवि गमे रे, वचन अनादेय नामो लाल ॥ सा० ॥ ५ ॥ अपजस नामथी निंदता रे, खेद विना लोक अनेको लाल ॥ श्रीशुभवीरने नवि होवे रे, ए दशमांहेंनी एको लाल ॥ ला०॥६॥ ॥ काव्यं ॥ जिनपते० ॥ १ ॥ सहजकर्म० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ स्थावरदशकनिवारणाय चंदनं य० ॥ स्वा० ॥ इति स्थावरदशकनिवारणार्थं द्वितीयचंदनपूजा समाप्ता ॥ २ ॥ ४२ ॥

## ॥ अथ तृतीयपुष्पपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ ए दश पयडी पापनी, पापें बंध करंत ॥ त्रस दश पामे जीवमो, जिम अंशें पुण्यवंत ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ रहो रे जादव दो घडीयां ॥ ए देशी ॥

रहो रहो रे रसञर दो घडीयां, दो घमीयां, दिलसें अमीयां ॥ रहो० ए आंकणी ॥ कुसुमनी पूजा करी फल मागुं, परमातम पाउं पमियां ॥ रहो० ॥ पुण्य उदय त्रस नाम धरायो, अब तुम बार नहीं घमीयां ॥ रहो० ॥ १ ॥ विगलेंद्रि पंचेंद्रि कहायो, प्रञु उलखाण हवे पमीयां ॥ रहो० ॥ बादर नाम जे नजरें देखे, उवेखे केम नजरें चडीयां ॥ रहो० ॥ ॥ २ ॥ थइ पर्याप्तो लब्धि करणें, चरणें आयो न विठंमीयां ॥ रहो० ॥ एक तनु एक जीव कहावे, प्रत्येकमां पण अमें वमीयां ॥ रहो० ॥ ३ ॥ दंतादिक तनु थिरथिर नामें, तहवी मन अमे थिर करियां॥रहो० नाञि उपर तनु शुञ सहु देखे, तेणें तुम हृदयकमल धरिया ॥ रहो० ॥ ४ ॥ सरवने वाल्हो सुञगथी

लागुं, जब अम घर तुम पावडीया ॥ रहो० सुस्वर सुणतां लागे मीठो, तुज गुण अंबा मंजरियां ॥ रहो० ॥ ५ ॥ आदेय नाम वचन जग माने, श्रीशुभ वीर मुखें चढीयां ॥ रहो० ॥ जस गुण गावे लोकव नावे, ते जस नाम ते तुम वरीयां ॥ रहो० ॥ ६ ॥

॥ काव्यं ॥ सुमनसां० ॥ १ ॥ समय सार० २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ त्रसदशकनिवारणाय पुष्पाणि य० ॥ स्वा० ॥ इति त्रसदशकनिवारणार्थं तृतीयपुष्पपूजा समाप्ता ॥ ३ ॥४३॥

## ॥ अथ चतुर्थधूपपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ धूपें जिनवर पूजीयें, प्रत्येक दाहनहार ॥ पयडि न जाये मूलथी, जब लगें ए संसार ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी, ॥ वीरजिणंद जगतउपकारी ॥ ए देशी

॥ आज गई मन केरी शंका, जब तुज दर्शन दीठजी ॥ दूर गई लोकसन्ना ठारी, आगम अमीय ते मीठजी ॥ आज० ॥ १ ॥ गुरु लघु अंगें एक न होवे, अगुरु लघु ते जाणजी ॥ सासउसास लिये

पज्जत्तो, सासोसास प्रमाणजी ॥ आज० ॥ २ ॥ लंबगात्र मुखमां पम्जीभ्नी, पयडी उदय उपघात जी ॥ बलियो पण नवि मुखपर आवे, नाम उदय पराघातजी ॥ आज० ॥ ३ ॥ ताप करे रविबिंब जे जीवा, आतप नाम कहायजी ॥ अंग उपांग सुतार पुतलियां, निर्माण घाट घडायजी ॥ आज० ॥ ४ ॥ वैक्रिय सुर खजुर्ज शशिबिंबें,ताप विना परकाशजी॥ उद्योतनाम करम में जाएयुं, आगम नयन उजाश जी ॥ आज० ॥ ५ ॥ केवल उपजे त्रिभुवन पूजे, वर अतिशय गंभीरजी ॥ जिननाम उदयें समवस रणमां, बेठा श्री शुभवीरजी ॥ आज० ॥ ६ ॥

॥ काव्यं ॥ अगरमुख्य० ॥ १ ॥ निजगुणाश्रय० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ प्रत्येकाष्टप्रकृतिनिवारणाय धूपं य० ॥ स्वा० ॥ इति प्रत्येकाष्टप्रकृतिनिवारणार्थं चतुर्थधूपपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥ ४४ ॥

॥ अथ पंचमदीपकपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीश कोडाकोडी सागरु, मूलगुरु थिति बंधाय ॥

उत्तरपयमि निहालवा, दीपकपूजा रचाय ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ साहिबा मोतीडो हमारो॥एदेशी॥

॥ दीपकपूजा ज्योति जगावुं, उत्तर पयमी तिमिर हरावुं ॥ साहिबा तें थितिबंध खपाव्यो, सेवकनो हवे लाग ते फाव्यो ॥ साहिबा संसार अटारो मोहना मुज तारो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सुहुम विगलतिग बंध अढार, मणुअ डुगें पन्नर अवधार ॥ संघयणागिई जुगल करीश, दश ऊपर डुग वुद्धी वीश ॥ सा० ॥ २ ॥ सुरजि मधुर शीत शुज चउ फासा, थिर ठ सुगइ सुरडुग दश खासा ॥ पीताम्लें वली रक्त कषायें, नील कटुक वली कृष्ण तीखायें ॥ सा० ॥ ३ ॥ साम्रा बार पन्नर युग एके, साम्रा सत्तरविश ठवियें विवेकें ॥ वैक्री निरय तिरि उरल डुगंका, तेअ पण अथिर ठ तस सास चउक्का ॥ सा० ॥ ४ ॥ थावर कुखगई जाति पणिंदी, पाप फरस डुरगंध एगिंदी ॥ वत्तीस पयमीने वीशजुं जोमी, सघले सागर कोडाकोमी ॥ सा० ॥ ५ ॥ आहारकडुग जिननाम करंतो, सागर एक कोमा कोडी अंतो ॥ जो जिननाम निकाचित कीजें, तो शुजवीर हुआजव त्रीजे ॥ सा० ॥ ६ ॥

॥ काव्यं ॥ नवति दीप० ॥१॥ शुचिमनात्म०॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ स्थितिबंधनिवारणाय दीपं य० ॥ स्वा० ॥ इति स्थितिबंधनिवारणार्थं पंचमदीपकपूजा समाप्ता ॥ ५ ॥ ४५ ॥

## ॥ अथ षष्ठाक्षतपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ वन्नचउ तेअ कम्मण, अगुरु लघु निर्माण ॥ उपघात नव ध्रुवबंधि छे, अन्नवन्न अध्रुवा जाण ॥१॥

ढाल छठी॥त्रीजे नव वर थानक तप करी॥एदेशी॥

अक्षतपूजा जिननी करतां, नाम करम क्षय जावे ॥ नामनी सरव अघाती पयडीयां, वरते निज निज नावें रे ॥ प्राणी ॥ अरूपी गुण निपजावो, पूज्य नी पूजा रचावो रे ॥ प्राणी० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ थावरचउ आताप छेवडु, हुंड निरयडुग जाणुं॥इग डू ति चउ जाति जीउ बांधे, पामी प्रथम गुणठाणुं रे ॥ प्राणी० ॥ २ ॥ मछ्नागिई संघयण तिरि डुग,दो हग तिग उद्योत ॥ अशुनविहायोगति सास्वादन, बंध कहे नगवंत रे ॥ प्राणी० ॥ ३ ॥ मणुअ उरलडु

ग धुरसंघयण, चोथे बंध कहावे ॥ अजस अथिरउ ग ठ्ठे बंधे, दशमे जस बंधावे रे ॥ प्राणी० ॥ ४ ॥ अगुरुलघु चउ जिन निरमाण, सुरडुग सुहगईकहि यें ॥ तस नव उरल विणु तणुबंगा, वर्णादिक च उ लहियें रे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥ समचउरस पणिंदी जाति, बांधे अरूगुण ठाणे ॥ बंधहेतु शुजवीर खपा वे, उज्ज्वल ध्यानने टाणे रे ॥ प्राणी० ॥ ६ ॥

॥ काव्यं ॥ क्षितितले० ॥ १ ॥ सहजजाव० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ऊँ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ नामकर्मबंधनिवारणाय अक्षतान् य० ॥स्वा०॥इति नामकर्मबंधनिवारणार्थं षष्ठाक्षतपूजा समाप्ता ॥ ६ ॥ ४६ ॥

## ॥ अथ सप्तमनैवेद्यपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ चउवन्ना तेअ कम्मण, निमित्त अथिर थिर दो ॥ अगुरु लघु उदयिनी, शेष अध्रुव ते जोय ॥१॥

ढाल सातमी ॥ देखो गति दैवनी रे ॥ एदेशी ॥ शुज० नैवेद्यपूजा जावियें रे, पुजल आहार ग्रहंता ॥

नाग असंखें आहारतारे, निर्जरे नाग अनंत॥जगत्गु रु आपजो रे, आपजो पद अणाहार ॥ जग० ॥१॥ ए आंकणी ॥ एह रीत दूरें हुवे रे, नामउदय जब जाय ॥ सुहुम तिगायव धुर गुणें रे, उदय कहे जि नराय ॥ जग० ॥ २ ॥ बीजे विगल इग थावरु रे, चोथे अणइज्ज दोय ॥पूर्वी डुहग वैक्रीडुगें रे, देव निरयगति जोय ॥ जग० ॥ ३ ॥ तिरिगइ उद्योत पां चमे रे, छठे आहारक दोय ॥ चरम संहन न तिग सातमे रे, रूषजडुग उपशम होय ॥ जग० ॥ ४ ॥ उरला थिर खगई डुगा रे, पत्तेय तिग छ संठाण॥ते अकम्म धुर संघयणनें रे, अगुरु लघु चउ जाण ॥ ॥ जग० ॥ ५ ॥ डुसर सुसर चउवन्ना रे, निर्माण उदय सोयोगी ॥ सुजगाईज्ज जस तस तिगो रे, नरग इ पणिंदी अयोगी ॥ जग० ॥ ६ ॥ जो जिननाम उ दय हुवे रे, तो तीर्थंकर लीध ॥ योगनिरोध करी हु आ रे, श्रीशुजवीर ते सिद्ध ॥ जग० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ अनशनं० ॥ १ ॥ कुमतबोध० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ नामकर्मउदयविछेदनाय

॥ अथ ॥

## सप्तमदिवसेऽध्यापनीयगोत्रकर्मसूदनार्थं ॥

## ॥ सप्तमपूजाष्टक प्रारंभः ॥

॥ तत्र ॥

## ॥ प्रथमजलपूजा प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ गोत्रकरम हवे सातमुं. व्याप्युं इणे संसार ॥ गोत्रकरम छेद्या विनां, नवि पामे भवपार ॥ १ ॥ चक्रदंड संयोगथी, घडतो घट कुंभार ॥ घी भरियो घट एकमें, वीजे मदिरा धार ॥ २ ॥ ऊंच नीच गोत्रें करी, भरियो आ संसार ॥ कर्मदहन करवा भणी पूजा अष्ट प्रकर ॥ ३ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ राग अलैयो ॥ बिल ॥ १ ॥ में कीनो नहीं प्रभुविना औरशुं राग ॥ ए चाल ॥

॥ केशरवासित कनककलशशुं, जलपूजा में भिषेक ॥ समकितरंगें सद्गुरु संगें, धरतो विनय विवेक ॥ में कीनो सही, या रीत गोतको बंध ॥ या रीत गोतको बंध॥में की० ॥ या०॥१॥ ए आंकणी॥ बहुश्रुत

नक्ति करतां सघला, पूज्या युगपरधान ॥ गीतारथ एकाकी रहेतां, पामे जग बहुमान ॥ में की० ॥२॥ अज्ञानी टोले पण नोले, बोले पन्नर नाव ॥ आलोयण देतो नडकने, पामे विराधकनाव ॥ में की० ॥ ३ ॥ बोधगुरुने बाणें हणतो, पग अण फरसी राय ॥ अज्ञानी मुनि उग्रविहारी, बाजीगरनो न्याय ॥ में की० ॥ ४ ॥ मंकुआ श्रावकने कहे स्वामी, होय जिनधर्म आशात ॥ अणजाण्यो श्रुत अर्थ वदंतां, साची गुरुगम वात ॥ में की० ॥ ५ ॥ ज्ञानी गुरुनी सेवा करतां, आराधे जिनधर्म ॥ अणुव्रत धरतो तप अनुसरतो, निर्मदगुण ग्रहे पर्म ॥ में की० ॥ ६ ॥ नणे नणावे वलि जिन आगम, आशातन वरजंत ॥ श्रीशुनवीर जिनेश्वरनक्तें, उत्तम गोत्र बांधंत ॥ में की० ॥ ७ ॥

॥काव्यं॥तीर्थोदकैः०॥१॥सुरनदी०॥२॥ जनमनो०॥३॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ गोत्रबंधनिवारणाय जलं य० ॥ स्वा० ॥ इति गोत्रबंधनिवारणार्थं प्रथम जलपूजा समाप्ता ॥ १ ॥ ४ए ॥

## ॥ अथ द्वितीयचंदनपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ ज्ञानादिक गुण नवि हणे, बंध उदयमें कोय॥ तिणे अघाती ते कही, गोत्रनी पयडीदोय ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ प्रतिमा लोपे पापिया, योगवहन उपधान जिनजी ॥ ए देशी ॥

॥ जिनतनु चंदन पूजतां, उत्तम कुल अवतार॥ जिनजी ॥ गोत्रवडे प्राणी वडो, मान लहे संसार ॥ जिनजी ॥ तुं सुखियो संसारमां ॥ १ ॥ उत्तम कुलना ऊपन्या, सूत्र कह्या अणगार ॥ जि० ॥ वाचकसूरिपदवी लहे, उंचगोत्र अवतार ॥ जि० ॥ तुं० ॥ २ ॥ उग्रभोग वली राजवी, हरिवंशें जिन देव ॥ जि० ॥ वासवकल्पें आवतां, चक्री हरिबल देव ॥ जि० ॥ तुं० ॥ ३ ॥ नीच गोत्र थावरसमान, मणि हीरो झलकंत ॥ जि० ॥ गंगा क्षीरसमुद्रनां, यमुनाजल वदंत ॥ जि० ॥ तुं० ॥ ४ ॥ कल्पतरु सह कारनां, केतकी पत्रने फूल ॥ जि० ॥ मंगल कारण शिर धरे, मंदपवन अनुकूल ॥ जि० ॥ तुं० ॥ ५ ॥ एम संसारें प्राणिया, उत्तमगोत्र विशेष ॥ जि० ॥

मान लहे मघवा वली, बाहुबली जरतेश ॥ जि० ॥ तुं० ॥ ६ ॥ धर्मरयणनी योग्यता, उंच गोत्र कहाय ॥ जि० श्रीशुजवीर जीनेश्वरु, सिद्धारथ कुल जाय ॥ जि० ॥ तुं० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ जिनपते० ॥ १ ॥ सहजकर्म० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ उच्चैर्गोत्रातीताय चंदनं य० ॥ स्व० ॥ इति उच्चैर्गोत्रातीतार्थं द्वितीय चंदनपूजा समाप्ता ॥ २ ॥ ५० ॥

## ॥ अथ तृतीयपुष्पपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ जिनवर फूलें पूजतां, उंच गोत्र बंधाय ॥ उत्तम कुलमां अवतरी, कर्मरहित ते थाय ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ सुण गोवालणी गोरसडां० ॥ ए देशी ॥

॥ सुण दयानिधि, उत्तम कुल अवतरतां पार न आव्यो ॥ सद्गुरु मले, तुज आगम अजवालें मुज समजाव्यो ॥ ए आंकणी ॥ समकित संजुत्त

व्रत आचरतां, जिनपूजा फूल पगर जरतां ॥ श्राव क मुनि दशमुं गुण धरतां, उंच गोत्र तणो बंधज करतां ॥ सु० ॥ १ ॥ तुमें सत्ता उदयें अनुजवियो, शैलेशी करण करी खवियो, ते रस चखवी मुज हेल वियो, एक स्वामी जे नवि जेलवियो ॥ सु० ॥ २ ॥ एके समयें एक बंधाये, तेणें ए अध्रुवबंधी थाये ॥ सत्तोदय अध्रुव कहेवाये, सुखिया थइयें जब ए जाये ॥ सु० ॥ ३ ॥ लघुबंधें अरू मुहूरत करियो, उंच गोत्रे गुरुठिइ आचरियो ॥दश कोडाकोमी साग रियो, दशसें वरसें जोगवि फरियो ॥ सु० ॥ ४ ॥ हवे में तुज आणा शिर धरियो, थइ अंत कोडा कोडी सागरियो ॥ मोटो दरियो पण में तरियो, शुजवीर प्रजुसेवन फलियो ॥ सु० ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ सुमनसां० ॥ १ ॥ समयसार० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ उच्चैर्गोत्रस्थितिवि छेदनाय पुष्पाणि य० ॥स्वा०॥ इति उच्चैर्गोत्रस्थितिवि छेदनार्थं तृतीयपुष्पपूजा समाप्ता ॥ ३ ॥ ५१॥

## ॥ अथ चतुर्थ धूपपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ पयडी दोय अघातिनी, गोत्र करमनी एह ॥
नीचगोत्र कारण कहुं, जे अनुजवियां तेह ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ चोथी ॥ गायो गौतम गोत्र मुणींद, रस वैराग्य घणो आयो ॥ ए देशी ॥

॥ जिनवरअंगें पूजाधूप, धूपगति ऊंचे जावी ॥
पामी पंचेंद्रीनां रूप, नीच गति मुज केम आवी ॥ १ ॥ कहिदे कारण सुणजो देव, तुज आगमरस नवि जाव्यो ॥ न करी बहुश्रुत केरी सेव, अरुचिपणुं अंतर लाव्यो ॥ २ ॥ जणे जणावे मुनिवर जेह, निंदा तेहतणी जाखी ॥ परगुण ढांकी अवगुण लेह, कूमी वात तणो साखी ॥ ३ ॥ विण दीठी आंण सांजली वात, लोकवच्चें चलवे पापी ॥ चामी करतां पामी जाति, वामी गुण तणी कापी ॥ ४ ॥ गुण अवगुण में सरिखा कीध, अरिहा जक्ति नवि कीधी॥
उत्तम कुल जाति प्रसिद्ध,वाह्यो मद गारव गिद्धि॥५॥
नीचठाण सेवंतां नाथ,बंधें नीच गोत्र करियो ॥ श्री शुजवीरनो काल्यो हाथ,सहेजें जवसायर तरियो ॥६॥

॥ काव्यं ॥ अगरमुख्य० ॥ १ ॥ निजगुणाश्रय० ॥२॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ नीचैर्गोत्रबंधस्थानोच्छेदनाय धूपं य० ॥ स्वा० ॥ इति नीचैर्गोत्रबंधस्थानोच्छेदनार्थंधूपपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥ ५२ ॥

## ॥ अथ पंचमदीपकपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ कागप्रसंगें हंस नृप, बाण प्राण परिहार ॥ गंगाजल जलधि मले, नीच ठाण सुविचार ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ जुवटु कोइ रमशो नहीं रे ॥

॥ ए देशी ॥

॥ फानसदीपक ज्योति धरी रे, पूजा रचुं मनोहार, प्रभुजी ॥ नीच कुलें हवे नहीं रे रहुं रे॥पूजा अरुचि भावें करी रे, नीचकुलें अवतार ॥ प्र० ॥१॥ तुज आगल नवि दीप धर्यो रे,नापिक हाथ मशाल ॥प्र०॥ मातंग जुंगित जाति कही रे, काढे अशुचि खाल ॥ प्र० ॥२॥ माली गोवाली कोली तेली रे, मोचीने शुचिकार ॥ प्र० ॥ त्रण वनेचर पापीयो रे,दोय अफासविचार ॥ प्र० ॥ ३ ॥ वणी मगमाहण रां

ककुली रे, भिक्षुककुल अवतार ॥ प्र० ॥ जिनदर्श न नवि शीश नमे रे, ते शिर वहेता भार ॥ प्र०॥४॥ गर्दभ जंबुक नीच तिरी रे, किल्बिषिया जे देव ॥प्र० झाडु दिये सुर आगलें रे, परभवनिंदक टेव ॥ प्र० ॥५॥ जीवमरीचि कुलमदथी रे, विप्र त्रिदंडिक थाय ॥प्र०॥श्रीशुभवीरजिनेश्वरु रे, देवानंदाघर जाय ॥प्र० ॥ काव्यं ॥ भवति दीप० ॥ १ ॥ शुचिमना० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ नीचैर्गोत्रोदयनिवार णाय दीपं य० ॥ स्वा० ॥ इति नीचैर्गोत्रोदयनिवार णार्थं पंचमदीपकपूजा समाप्ता ॥ ५ ॥ ५३ ॥

## ॥ अथ षष्ठाक्षतपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ नीचकुलोदय जिनमति, हूरथकी दरबार ॥ तु ज मुखदरशन देखतां, लोकवको व्यवहार ॥ १ ॥

॥ ढाल छठी ॥ वंदो वीर जिनेश्वर राय ॥ ए देशी ॥

॥ अक्षतपूजा गोधूम केरी, नीचैर्गोत्र विखेरीरे ॥ तुज आगमपुरसुंदरशेरी, वक्र नही भवफेरी रे ॥अ क्षत० ॥ १ ॥ सासायण लगें बंध कहावे, पांचमे

उदयें लावे रे ॥ गुणठाणुं जव ठहुं आवे उदयथी नीच खपावे रे ॥ अ० ॥ २ ॥ हरिकेशी चंमालें जाया, संयमधर मुनिराया रे ॥ नीच गोत्रउदयेंथी प लाया, ऊंचकुलें श्रुत गाया रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ समय अयोगी उपांतें आवे, सत्ता नीच खपावे रे ॥ अध्रुव बंधी उदय कहावे, ध्रुवसत्ता तिरिजावे रे ॥ अ० ॥ ॥ ४ ॥ सातइया दोय जाग लघेरी, जीवविपाकी वडे री रे ॥ वीश कोडाकोमि सागर केरी, ए थिति बंध घणेरी रे ॥ अ० ॥ ५ ॥ ए थितिबंध करंतां स्वामी, तुम सेवा नवि पामी रे ॥ श्रीशुजवीर मव्या विशरामी, हवें केम राखु खांमी रे? ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ काव्यं ॥ क्षितितले० ॥ १ ॥ सहजजाव० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ नीचैर्गोत्रसत्तास्थितिबंध निवारणाय अक्षतान् य० ॥स्वा०॥ इति नीचैर्गोत्रसत्ता स्थितिबंधनिवारणार्थंषष्ठाक्षतपूजासमाप्ता ॥६॥ ५४ ॥

## ॥ अथ सप्तमनैवेद्यपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ नैवेद्यपूजा सातमी, सातगति अपमान ॥ कर

वा वरवा शिवगति, विविध जाति पकवान ॥ १ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ राग सारंग, हम मग
न लये प्रजुज्ञानमां ॥ ए देशी ॥

॥ मीठाइ मेवा जिनपद धरतां, अणाहारी पद लीजीयें ॥ जिनराजनी पूजा कीजियें ॥विग्रहगतिमांवार अनंती, पामे पण नवि रीजीयें ॥ जि० ॥ १ ॥ उंच नीच गोत्रें ते होवे, कारण दूर करीजीयें ॥ जि०॥अरिहा आगें रागें मागो, सेवकने शिव दीजीयें॥जी० ॥ २ ॥ अगुरु लघुपद गोत्रविनाशी, पाम्या बंधन छीजीयें ॥ जि० ॥ योगी वियोगी रहत अयोगी, चरम तिजाग घटीजीयें ॥ जि० ॥ ३ ॥आत्मप्रदेशमयी अवगाहन, शिवक्षेत्रें ते रहीजीयें ॥ जि० ॥ बत्रीश अंगुल लघु अवगाहन, खेत्रसमी गुरु लीजीयें ॥ जि० ॥ ४ ॥ मस्तकसम सघले लोकांतें, शुरुगमजाव पतीजीयें ॥ जि० ॥ अगुरु लघु अवगाहन एकें, सिद्ध अनंत नमीजीयें ॥ जि०॥ ५ ॥ फरसित देश प्रदेश असंखह ॥ गुण अनंत ठवीजियें ॥ जि०॥ श्री शुजवीर जिनेश्वर आगम, अमृतनो रस पीजीयें ॥ जी० ॥ ६ ॥

॥ काव्यं ॥ अनशनं० ॥ १ ॥ कुमतबोध० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ अगुरुलघुगुणप्रापणाय नैवेद्यं य० ॥ स्वा० ॥ इति अगुरुलघुगुणप्रापणार्थं सप्तमनैवेद्यपूजा समाप्ता ॥ ७ ॥ ५५ ॥

## ॥ अथाष्टमफलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ गोत्रकरम नाशें करी, सिद्ध हुआ महाराज ॥
फलपूजा तेहनी करी, मागो अविचल राज ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ केरबानी देशी ॥

॥ मेंबी सेवक तोरा पायका, डुनियांके सांइ ॥ सेवक हम केई कालका, डुनियाके सांइ ॥ मेंबी से० ॥ ए आंकणी ॥ सुणियें देवाधिदेवा, फलपूजाकी सेवा, दीजीयें शिवफल राजियें ॥ डु० ॥ में० ॥ परिशाटन थई, अफुसमाण गई, जीत्यो जगत् केरी बाजीयें ॥ डु० ॥ में० ॥ १ ॥ गोत्रकरम हरी, ज्योतसें ज्योत मली, आप बिराजो रंग मेहेलमें ॥डु०॥में०॥ सुख अनंत लहे, सेवक दूर रहे, लाजियें अमो सारा शहेरमें ॥ डु० ॥ में० ॥ २ ॥ संसारसुख लीयो, वग्ग अनंत कीयो, तोभी न एक प्रदेशमें ॥ डु० ॥

में०॥ सिद्धको सुख लीनो, ताको एकांश कीनो, मा वे न लोकाकाशमें ॥ठु०॥ में०॥३॥ ताको जो अंश देवे, तामें क्या हानि होवे, साहिब गरीबनीवाजीयें ॥ ठु० ॥ में० ॥ महेर नजर जोवे, सेवककाम होवे, लोक लोकोत्तर गाजीयें ॥ ठु० ॥ में०॥ ४ ॥ कर्म कठिन जड्यो, सांयुंके मुख चड्यो, बात करत हम लाजीयें ॥ ठु० ॥ में० ॥ आपहितें जे गायो, कर्मफल गयो, एतनो अंतर न्नांजियें ॥ ठु० ॥ में० ॥ ५ ॥ श्रेणिक आदें नवा, उंबी सांयुंकी दवा, जिनपद लेत बिराजियें ॥ ठु० ॥ में० ॥ साची न्नगति कही, कारण योग सही, करजें कोम्मी दीवाजियें ॥ ठु० ॥ में०॥६॥ कर्मसूदन तपे, नाम प्रनुको जपे, ज्ञान अंवाजियें ॥ ठु०॥ में० ॥ कोइ न नाम लेवे, स्वामीआशिष देवे, श्रीशुन्नवीरबलें गाजियें ॥ ठु० ॥में०॥७॥

॥ काव्यं ॥ शिवतरोः० ॥ १ ॥ शमरसैक० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ॐ ह्रीं श्रीं परम०॥ गोत्रातीताय फलानि य० ॥स्वा०॥ इति गोत्रातीतार्थमष्टमफलपूजा समाप्ता॥ कलश ॥ गायो गायो०॥७॥५६॥ इति सप्तमदिवसेऽध्यापनीयगोत्रकर्मसूदनार्थं सप्तमपूजाष्टकं संपूर्णम् ॥ ७॥

॥ अथ ॥

## ॥ अष्टमदिवसेऽध्यापनीयअंतरायकर्मसूदनार्थ मष्टमपूजाष्टक प्रारंजः ॥

॥ तत्र ॥

### ॥ प्रथम जलपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीशंखेश्वर शिर धरि, प्रणमी श्रीगुरुपाय ॥ वंछित पद वरवा जणी, टालीशुं अंतराय ॥ १ ॥ जेम राजा रीज्यो थको, देतां दान अपार ॥ जंडारी खीज्यो थको, वारंतो तेणि वार ॥ २ ॥ तेम ए कर्म उदयथकी, संसारी कहेवाय ॥ धर्म करम साधन जणी, विघन करे अंतराय ॥ ३ ॥ अरिहानें अवलंबनें, तरियें इणे संसार ॥ अंतराय उछेदवा, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ मारी आंबाना वडला हेठ, जस्यां सरोवर लहेरयो लेबे रे ॥ ए देशी ॥

॥ जलपूजा करी जीनराज, आगल तो वात वीती कहो रे ॥ कहेतां नवि आणो लाज ,कर जोडीने आ

गल रह्यो रे ॥ जल० ॥१॥ जिनपूजानो अंतराय, आगम लोपी निंदा नजी रे ॥ विपरीत परूपणा थाय, दीनतणी करुणा तजी रे ॥ जल० ॥ २ ॥ तपसी न नम्या अणगार, जीवतणी में हिंसा सजी रे ॥ न वि मलियो आ संसार, तुम सरिखो रे श्रीनाथजी रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ रांक उपर कीधो कोप, माठां कर्म प्रकाशियां रे ॥ धरमें मारगनो लोप, परमारथ केता हांसिया रे ॥ जल० ॥ ४ ॥ जणतांने कस्यो अंतराय, दान दीयंतां में वारिया रे ॥ गीतारथने हेलाय, जूठ बोली धन चोरीयां रे ॥ जल० ॥ ५ ॥ नर पशुआ बालक दीन, भूख्यां राखी आपें जम्यो रे ॥ धर्मवेलायें बलहीन, परदाराशुं रंगें रम्यो रे ॥ जल० ॥६॥ कूडे कागलिये व्यापार, थापण राखीने उलवी रे ॥ वेच्यां परदेश मोझार, बाल कुमारिका नोलवी रे ॥ जल० ॥ ७ ॥ पंजरीयें पोपट दीध, केती वात कहुं घणी रे॥अंतराय करम एम कीध,ते सवि जाणो छो जगधणी रे ॥ जल० ॥ ८ ॥ जलें पूजंती द्विजनारि, सोमेशरि मुगति वरी रे ॥ शुभवीर जगत् आधार, आणा में पण शिर धरी रे ॥ जल० ॥ ए ॥

॥काव्यं॥ तीर्थोदकै० ॥१॥ सुरनदी० ॥२॥जनमनो०॥३॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ विघ्नस्थानकोछेदनाय जलं य० ॥ स्वा० ॥ इति विघ्नस्थानकोछेदनार्थं प्रथमजलपूजा समाप्ता ॥ १ ॥ ५७ ॥

## ॥ अथ द्वितीयचंदनपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ शीतलगुण जेहमां रह्यो, शीतल प्रभुमुखरंग ॥ आत्मशीतल करवा भणी, पूजो अरीहाअंग ॥ १ ॥ अंगविलेपन पूजना, पूजो धरि घनसार ॥ उत्तरपयडी पंचमां दानविघन परिहार ॥ २ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ कामणगारो ए कूकडो रे ॥ ए देशी॥

॥ करपी भुंडो संसारमां रे, जेम कपीला नार ॥ दान न दीधुं मुनिराजने रे, श्रेणिकनें दरबार ॥क०॥ ॥ १ ॥ करपी शास्त्र न सांभले रे, तेणे नवि पामे धर्म ॥ धर्मविना पशु प्राणीयो रे, छंडे नहीं कुकर्म क० ॥ २ ॥ दानतणा अंतरायथी रे, दान तणो परिणाम ॥ नवि पामे उपदेशथी रे, लोक न ले तस नाम ॥ क० ॥ ३॥ कृपणता अति सांभली रे, नावे घर अणगार ॥ विश्वासी घर आवता रे, कल्पे मुनि

आचार ॥ क० ॥ ४ ॥ करपी लक्ष्मीवंतने रे,मित्र स
ज्जन रहे दूर ॥ अल्पधनी गुण दानथी रे, वंछे लोक
पंकुर ॥ क० ॥ ५ ॥ कल्पतरु कनकाचलें रे, नवि क
रतां उपकार ॥ तेथी मरुधर रूडो केरडो रे, पंथग
ठाय लगार ॥ क० ॥ ६ ॥ चंदनपूजा धन वावरे रे,
क्षय उपशम अंतराय ॥ जिम जयसूरने शुभमति रे,
क्षायिक गुण प्रगटाय ॥ क० ॥ ७ ॥ श्रावक दान गुणें
करी रे, तुंगिया भंग डुवार॥श्रीशुभवीरें वखाणिया
रे, पंचम अंग मझार ॥ क० ॥ ८ ॥

॥ काव्यं ॥ जिनपते० ॥ १ ॥ सहजकर्म० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ दानांतरायनिवारणाय
चंदनं य० ॥ स्वा० ॥ इति दानांतरायनिवारणार्थं
द्वितीयचंदनपूजा समाप्ता ॥ २ ॥ ५८ ॥

## ॥ अथ तृतीयपुष्पपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे त्रीजी सुमनस तणी, सुमनस करण स्व
भाव ॥ भावसुगंध करण भणी, द्रव्य कुसुम प्रस्ताव
॥ १ ॥ मालतीफूलें पूजती, लाभविघन करी हाण ॥

वणिकसुता लीलावती, पामी पद निरवाण ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ उंरा उंराजी आवो रे, कहुं एक वातडली ॥ ए देशी ॥

॥ मनमंदिर आवो रे, कहुं एक वातडली ॥ अज्ञानी संगें रे, रमियो रातडली ॥ मन० ॥ १ ॥ व्यापार करेवा रे, देशविदेश चले ॥ परसेवा हेवा रे, कोडी न एक मले ॥ मन० ॥ २ ॥ राजगृही नयरें रे, डुमक एक फरे ॥ भिक्षाचरवृत्तियें रे,दुःखें पेट भरे ॥ मन० ॥ ३ ॥ लाभा अंतरायें रे, लोक न तास दीये ॥ शिला पाडंतोरे, पोहोतो सातमीयें ॥ म०॥४॥ ढंढण अणगारो रे, गोचरी नित्य फरे ॥ पशुआं तरायें रे, आहार विना विचरे ॥ म० ॥ ५ ॥ आदीश्वर साहिब रे, संयमभाव धरे ॥ वरसी तप पारणुं रे, श्रेयांसराय घरे ॥ म० ॥ ६ ॥ मिथ्यात्वें वाह्यो रे, आरतिध्यान करे ॥ तुज आगमवाणी रे, समकिती चित्त धरें ॥ म० ॥ ७ ॥ जेम पूणियो श्रावक रे, संतोष भाव धरी ॥ नित्य जिनवर पूजे रे, फूलपगर भरी ॥म०॥८॥ संसारें भमतां रे, हुं पण आविभल्यो ॥ अंतराय निवारक रे, श्रीशुभवीर मल्यो ॥ म०॥९॥

॥ काव्यं ॥ सुमनसां० ॥ १ ॥ समयसार० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ लाभांतरायोछेदनाय पुष्पाणि य० ॥ स्वा० ॥ इति लाभांतरायोछेदनार्थं तृतीयपुष्पपूजा समाप्ता ॥ ३ ॥ ५९ ॥

## ॥ अथ चतुर्थधूपपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर्म कठिन कठ दाहवा,ध्यान हुताशन योग ॥ धूपें जिन पूजी दहो, अंतराय जे भोग ॥ १ ॥ एक वार जे भोगमां, आवे वस्तु अनेक ॥ अशन पानवि लेपनें, भोग कहे जिन छेक ॥ २ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ राग आशावरी ॥छेडो नांजी ॥ ए देशी ॥

॥बाजी बाजी बाजी भूल्यो बाजी,भोग विघनघन गाजी ॥ भूल्यो० ॥ आगम ज्योत न ताजी ॥भूल्यो०॥ कर्मकुटिलवश काजी ॥ भूल्यो० ॥ साहिब सुण थइ राजी ॥ भूल्यो ० ॥ ए आंकणी ॥ काल अनादि चेत न रफले, एके वात न साजी ॥ मयणा भइणी न रहे छानी, मलियां मात पिताजी ॥ भूल्यो० ॥ १ ॥ अंतराय थानक सेवनथी, निर्धनगति उपराजी ॥

कूपनी गया कूप समावे, इछा तेम सवि नांजी ॥ नूख्यो० ॥ २ ॥ नैगम एक नारी धूंती पण, घेवर नूख न नागी ॥ जमी जमाई पाछो वलियो, ज्ञान दिशा तव जागी ॥ नूख्यो० ॥ ३ ॥ कवही कष्टें धन पति थावे, अंतराय फल आवे ॥ रोगी परवश अन्न अरुचि, उत्तमधान न नावे ॥ नूख्यो० ॥ ४ ॥ क्षायि कन्नावें नोगनी लब्धें, पूजा धूपविशाला ॥ वीर कहे नवसातमें सिद्धा, विनयंधर नूपाला ॥ नूख्यो० ॥५॥ ॥ काव्यं ॥ अगरमुख्य० ॥ १ ॥ निजगुणाश्रय०॥२॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ नोगांतरायदहनायधूपं य० ॥स्वा०॥ इति नोगांतरायदहनार्थं चतुर्थधूपपूजा समाप्ता ॥४॥६०॥

## ॥ अथ पंचमदीपकपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ उपन्नोग विघन पतंगियो, पडत जगत् जीउ ज्योत ॥ त्रिशलानंदन आगलें, दीपकनो उद्योत॥१॥ नोगवी वस्तु नोगवे; ते कहियें उपन्नोग ॥ नूषण चीवर वल्लना, गेहादिक संयोग ॥२॥

॥ ढाल पांचमी ॥ राग काफी ॥ अरनाथकुं सदां मेरी वंदना ॥ ए देशी ॥

॥ जिनराजकुं सदा मेरी वंदना ॥ वंदना वंदना वंदना रे ॥जिनराजकुंस० ॥ ए आंकणी ॥ उपभोगा तराय हणावी, भोगीपद महानंदना रे ॥ जि० ॥ अं तराय उदयें संसारी, निर्धनने परछंदना रे ॥ जि० ॥ १ ॥ देश विदेशें घरघर सेवा, भीमसेन नरिंदना रे ॥जि०॥सुणिय विपाक सुखी गिरनारें, हेलक तेह मु णींदना रे ॥जि०॥२॥ बावीश वरस वियोगें रहेती, पवनप्रिया सतीअंजना रे ॥ जि० ॥ नल दमयंती सती सीताजी, षट्‌ मासी आक्रंदना रे ॥ जि० ॥३॥ मुनिवरनें मोदक पडिलाभी, पछी करी घणी निंदना रे ॥ जि० ॥ श्रेणिक देखे पाउस निशियें, मम्मण शेठ बिटंबना रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ एम संसार विडंबन देखी, चाहुं चरण जिनचंदनां रे ॥ जि० ॥ चकवी चाहे चित्त तिमिरारि, भोगीभ्रमर अरविंदना रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ जिनमति धनसिरि दो साहेली, दीपक पूज अखंडना रे ॥ जि० ॥ शिव पामी तेम भवि प द पूजो, श्रीशुभवीर जिणंदना रे ॥ जि० ॥ ६ ॥

॥ काव्यं ॥ भवति दीप० ॥ १ ॥ शुचिमना० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ तुर्यविघ्नोच्छेदनाय दीपं य० ॥ स्वा० ॥ इति तुर्यविघ्नोच्छेदनार्थं पंचमदीपक पूजा समाप्ता ॥ ५ ॥ ६१ ॥

## ॥ अथ षष्ठाक्षतपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीर्य विघन घनपडलमें, अवराणुं रवितेज ॥ कालग्रीष्म समज्ञानथी, दीपे आत्म सतेज ॥ १ ॥ अक्षत शुद्ध अखंडशुं, नंदावर्त्त विशाल ॥ पूरी प्रनु सनमुख रही, थुणीयें जगत् दयाल ॥२॥

॥ ढाल ठठी ॥ राग वंगाली केरवो ॥ सफल नई मेरी आजुकी घरियां ॥ ए देशी ॥

॥ जिणंदा प्यारा मुणींदा प्यारा, देखोरी जिणंदा नगवान् ॥ देखोरी जिणंदा प्यारा ॥ ए आंकणी॥ चरम पयडीको मूल विखरियां, चरम तीरथ सुलतान ॥ दे० ॥ दर्शन देखत मगन नये हैं, मागत क्षायिक दान ॥ दे० ॥ १ ॥ पंचमविघनको खय उपशमसें, होवत हम नहीं लीन ॥ दे० ॥ पांगल बलहीणा उनियांमें, वीरो सालवी दीन ॥ दे० ॥ २ ॥

हरि बल चक्री शक्र ज्युं बली ए, निर्बल कुल अव तार ॥ दे० ॥ बाहुबली बल अक्षय कीनो, धन धन वाली कुमार ॥ दे०॥ ३ ॥ सफल भयो नर जन्म हमे रो, देखत जिनदेदार ॥ दे० ॥ लोहचमक ज्युं भग तिसें हलियें, पारस सांइ विचार ॥ दे० ॥ ४ ॥ कीर युगल ब्रीहि चंचुमें धरते, जिन पूजत भए देव ॥ दे० ॥ अक्षतसें अक्षतपद देवे,श्रीशुभवीरकी सेव॥दे० ॥५॥ ॥ काव्यं ॥ क्षितितले० ॥ १ ॥ सहजभाव० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ वीर्यांतरायदहनायअ-क्षतान् य० ॥ स्वा० ॥ इति वीर्यांतरायदहनार्थं षष्ठा क्षत पूजा समाप्ता ॥६॥६२ ॥

## ॥ अथ सप्तमनैवेद्यपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ निर्वेदी आगल धरो, शुचि नैवेद्यनो थाल ॥
विविधजाति पकवानशुं, शाली अमूलक दाल ॥ १॥
अणाहारी पद में कस्यां, विग्गह गइअ अणंत ॥
दूर करो एम कीजीयें, दिउ अणाहारी वदंत ॥ २॥

॥ ढाल सातमी ॥ राग काफी ॥

॥ अखियनमें गुलजारा ॥ ए देशी ॥

॥ अखियनमें अविकारा, जिणंदा तेरी अखियनमें अविकारा ॥ राग दोष परमाणु निपाया, संसारी स विकारा ॥ जि० ॥ शांतरुचि परमाणु निपाया, तुज मुद्रा मनोहारा ॥ जि० ॥ १ ॥ द्रव्य गुण परजाय ने मुद्रा, चउगुण चैत्य उदारा ॥ जि० ॥ पंच विघन घन पडल पलाया, दीपत किरण हजारा ॥ जि० ॥ ॥ २ ॥ कर्म विनाशी सिद्धस्वरूपी, इगतीस गुण उप चारा ॥ जि० ॥ वरणादिक विश दूर पलाया, आगि ई पंच निवारा ॥ जि० ॥ ३ ॥ तीन वेदका छेद करा या, संगरहित संसारा ॥ जि० ॥ अशरीरी नववीज दहायो, अंग कहे आचारा ॥ जि० ॥ ४ ॥ अरूपी पण रूपारोपणसें, ठवणा अणुयोगद्धारा ॥ जि० ॥ विषम काल जिनबिंब जिनागम, नवियणकुं आधा रा ॥ जि० ॥ ५ ॥ मेवा मीठाई थाल नरीने, षद्रस नोजन सारा ॥ जि० ॥ मंगल तूर बजावत आवो, नर नारी कर थारा ॥जि० ॥ ६ ॥ नैवेद्य ठवी जिन आगें मागो, हवि नृप सुर अवतारा ॥ जि०॥ टालि अनादि आहारविकारा, सातमे नव अणाहारा ॥

जि० ॥ ७ ॥ सगविह शुद्धि सातमी पूजा, सगगई सगजय हारा ॥ जि० ॥ श्रीशुजवीर विजय प्रजु प्यारा, जिनआगम जयकारा ॥ जि० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ अनशनं ॥ १ ॥ कुमतबोध० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ सिद्धपदप्रापणाय नैवेद्यं य० ॥ स्वा० इति सिद्धपदप्रापणार्थं सप्तमनैवेद्यपूजा समाप्ता ॥ ७ ॥ ६३ ॥

## ॥ अथाष्टमफलपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अष्ट कर्मदल चूरवा, आठमी पूजा सार ॥ प्रजु आगल फल पूजतां, फलथी फल निर्धार ॥ १ ॥ इंद्रादिक पूजा जणी, फल लावे धरी राग ॥ पुरुषोत्तम पूजी करी, मागे शिव फल त्याग ॥ २ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ राग धन्याश्री ॥ गिरुआ रे गुण तुमतणा ॥ ए देशी ॥

॥ प्रजु तुज शासन अतिजलुं, माने सुरनर राणो रे ॥ मिछ अजव्य न उलखे, एक अंधो एक काणो रे ॥ प्र० ॥१॥ आगमवयणें जाणीयें, कर्मतणी

गति खोटीरे॥ तीस कोडाकोडि सागरु, अंतराय थिति मोटी रे॥ प्र० ॥ २ ॥ ध्रुवबंधी उदयी तथा, ए पांचे ध्रुवसत्ता रे ॥ देशघातिनी ए सही, पांचे अपरिय त्ता रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ संपराय बंधे कही, सत्ताउदयें थाकी रे ॥ गुणठाणुं लही बारमुं, नाठी जीव विपा की रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ ज्ञानमहोदय तें वर्यो, ऋद्धि अ नंत विलासी रे ॥ फलपूजा फलआपीयें, अमें पण तेहना आशी रे॥प्र०॥ ५ ॥कीरयुगलशुं दुर्गता, नारी जेम शिव पामी रे ॥ अमें पण करशुं तेहवी, नक्ति न राखुं खामी रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ साचि नक्तें रीऊवी, साहिब दिलमां धरशुं रे॥ उत्सव रंग वधामणां, म नवांछित सवि करशुं रे ॥ प्र० ॥ ७॥ कर्मसूदन तप तरुफलें, ज्ञानअमृत रस धारा रे ॥ श्रीशुनवीरने आशरे, जगमां जयजयकारा रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥

॥ काव्यं ॥ शिवतरोः० ॥ १ ॥ शमरसै० ॥ २ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम०॥अष्टमकर्मोछेदनाय फला निय० स्वा० ॥ इति अष्टमकर्मोछेदनार्थं अष्टमफल पूजा समाप्ता ॥ ८ ॥ ६४ ॥

हवे प्रत्येक दिवसें आठमी पूजाने अंतें कलश नणीने पछी काव्य, अने मंत्र नणवो. ते कलश प्रारंनियें छैयें॥

॥ राग धन्याश्री ॥ तूठो तूठो रे ॥ ए देशी ॥

॥ गायो गायो रे महावीर जिनेश्वर गायो ॥ त्रिश ला माता पुत्र नगीनो, जगनो तात कहायो ॥ तप तपतां केवल प्रगटायो, समवसरण विरचायो रे ॥ महा० ॥ १ ॥ रयण सिंहासण बेसी चउमुख, कर्म सूदणतप गायो ॥ आचारदिनकरें वर्द्धमान सूरि, नविउपगारें रचायो रे ॥ महा० ॥ २ ॥ प्रवचनसारो द्धार कहावे, सिद्धसेन सूरिरायो ॥ दिन चउसठि प्रमाणें ए तप, उजमणे निरमायो रे ॥ महा० ॥ ३॥ उजमणाथी तपफल वाधे, इम नांखे जिनरायो ॥ ज्ञान गुरु उपगरण करावो, गुरुगमविधि विरचायो रे ॥ महा० ॥ ४ ॥ आठ दिवस मलि चोसठ पूजा, नव नव नाव बनायो ॥ नरनव पामी लाहो लीजें, पु एयें शासन पायो रे ॥ महा० ॥ ५ ॥ विजयजिनेंद्र सूरीश्वरराज्यें, तपगछ केरो रायो ॥ खुशालविजय मा नविजय विबुधना, आग्रहथी विरचायो रे ॥ महा० ॥ ६ ॥ वड उशवाल गुमानचंदसुत, शासनराग सवा यो ॥ गुरुनक्ति शा नवानचंद नित्य, अनुमोदन फल

पायो रे ॥ महा० ॥ ७ ॥ मृग बलदेव मुनि रथकार
क, त्रण्य हुआ एक ठायो ॥ करण करावणने अनु
मोदन, सरिखां फल निपजायो रे ॥ महा० ॥ ७ ॥
श्रीविजयसिंह सूरीश्वर केरा, सत्यविजय बुध गायो ॥
कपूरविजय तस खिमाविजय जस, विजयपरंपर
ध्यायो रे ॥ महा० ॥ ए ॥ पंडित श्रीशुभविजय सु
गुरु मुज, पामी तास पसायो ॥ तास शिष्य धीर
विजय सलूणा, आगम राग सवायो रे ॥ महा० ॥
॥ १० ॥ तस लघु बांधव राजनगरमें, मिथ्यात्वपुंज
जलायो ॥ पंडित वीरविजय कविरचना, संघ सकल
सुखदायो रे ॥ महा० ॥ ११ ॥ पहेलो उत्सव रा
जनगरमें, संघ मली समुदायो ॥ करता जेम नंदी
सर देवा, पूरण हर्ष सवायो रे ॥ महा० ॥ १२ ॥

॥ कलश ॥ श्रुतज्ञान अनुभव तान मंदिर, बजावतं
घंटो करी ॥ तव मोहपुंज समूल जलते, भागते सग
ठीकरी ॥ हम राजतें जग गाजते दिन, अखय तृतीया
आजथें ॥ शुभवीर विक्रम वेद मुनि वसु चंद्र वर्षे
विराजते ॥ १ ॥ ( संवत् १८७४ )

॥ इति अष्टमदिवसेऽध्यापनीयमंतरायकर्मसूदना
र्थमष्टमपूजाष्टकं संपूर्णम् ॥ ७ ॥

अहीं आठे कर्मनुं मूल उछेदवाने अर्थें, प्रत्येक कर्म आश्रयी उपवास थकी मांमीने अष्ट कवलपर्यंतनुं तप दिन आठ सुधी करवुं. तेने कर्मसूदन तप कहे छे. ते तप आठे कर्मनुं मली चोशठ दिवस पर्यंत करवुं. तेनो यंत्र लखियें छेयें.

| कर्मनि संख्याना अंक | जे कर्मसूदन आश्री तप करवुं, ते कर्मना नामनुं कोष्टक. | उपवासं. | एकासणुं. | एकसिथ्थुं. | एकठाणुं. | एकदाती. | नीवी. | आयंबिल. | आठ कवलं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ज्ञानावरणीय. | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ८ |
| २ | दर्शनावरणीय | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ८ |
| ३ | वेदनीयकर्म. | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ८ |
| ४ | मोहनीयकर्म | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ८ |
| ५ | आयुः कर्म. | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ८ |
| ६ | नामकर्म. | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ८ |
| ७ | गोत्रकर्म. | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ८ |
| ८ | अंतरायकर्म. | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ८ |

॥ अथ ॥

## ॥ पंमितश्रीवीरविजयजीकृत अष्टप्रकारी पूजा प्रारंभः ॥

॥ तत्र ॥

## ॥ प्रथमजलपूजा प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ सरस वचन रस वरसती, वंनी प्रणमी जेह ॥ भगवइ धुर वसुधासुतें, हुं पण प्रणमुं तेह ॥ १ ॥ श्रीशंखेश्वर शिर नमी, पभणुं पूजा विचार ॥ अंगादिक त्रिक पूजना, उत्तर अष्टप्रकार ॥ २ ॥ न्हवण, विलेवण, कुसुमनी, जिनपुर धूप, प्रदीप ॥ अक्षत, नैवेद्य, फल तणी, करो जिनराज समीप ॥ ३ ॥ क्षीरोदकचीवर धरी, तन मन वच संतोष ॥ उत्तरासंग सुविधि करो, आठपमो मुखकोश ॥ ४ ॥ प्रथम सुगंधजलें भरी, कनककलशनी श्रेणि ॥ नरनारी करसंपुटें, धरियें हर्ष भरेण ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ राग देशाख ॥

॥विशद गंधोदकें, वासित कुसुमादिकें, वलिय सुवासना महमहे ए ॥ इयो मह महे ए ॥ १ ॥ जडि

त मणिमाणिकें, कलश सोवन तणा, न्नरिय धरिय धरि हाथने सुर रहे ए ॥ इयो सुर रहे ए ॥ २ ॥ मेरुगिरि ऊपरें, मेघवाहन करे, हर्षन्नर हियडले जल तणी ए ॥ इयो जल तणी ए ॥ ३ ॥ जिनतणी पूजना, डुरित डुःख धूजना ॥ द्रव्यनें न्नावन्नेदें न्नणी ए, इयो न्नेदें न्नणी ए ॥ ४ ॥ इति ढाल ॥

॥ दोहा ॥

॥ जलपूजा जुगतें करो, मेल अनादि विनाश ॥
जलपूजाफल मुज हजो, मागो एम प्रन्नु पास ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥ अने होजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुरराजज्युं न्नवि, जलपूजा युगतें करोरे ॥ सुरराज ज्युं न्नवि, मागधने वरदाम, सनेहा ॥ सुर० ॥ देवनई परन्नासना रे ॥ सुर० ॥ क्षीरोदधि शुचि ठाम ॥ सनेहा ॥ १ ॥ सुर० ॥ जलपूजा युगतें करो रे ॥ ए आंकणी ॥सु०॥ अडविध कलशा जल न्नरी रे॥ सुर०॥ न्हवण करे जेम देव॥ सनेहा ॥ सुर०॥ तेम तीर्थोदक मलीनें रे ॥ सुर० ॥ अरिहा न्हवण करेव ॥ सनेहा ॥ २ ॥ सुर० ॥ मिश्रित केसर ऊषधिरे ॥ सुर०॥ कर्म पडल दूर जाय सनेहा ॥ सुर०॥ आत्मविमल केवल

लहे रे ॥ सुर० ॥ कारणें कारज थाय ॥ सनेहा ॥ ३ ॥ सुर० ॥ विप्रवधूजल पूजथी रे सुर० ॥ सोमेसरी तस नाम ॥ सनेहा ॥ सुर० ॥ जगजस भुज सुख संपदा रे ॥सुर०॥ पामी अविचल ठाम ॥ सनेहा ॥ ४ ॥ सुर० ॥ इति गीतं ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय । परमेश्वराय । जन्मजरामृत्युनिवारणाय । श्रीमते । जिनेंद्राय । जलं यजामहे स्वाहा ॥ ए मंत्र भणी कलश नामियें ॥ इति प्रथमन्हवणपूजा समाप्ता ॥ १ ॥

## ॥ अथ द्वितीयचंदनपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ आतमगुण वासन भणी, चंदनपूजा सार ॥
जेम मघवा अपछर करे, तेम करीयें नरनार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ रामग्रीरागेण गीयते ॥

॥ हर्ष उलट धरी, सुरभि जस विस्तरी, बावना चंदन सरस लीजें ॥ १ ॥ घसिय भेरस परी, मांहि केसर धरी, मन वचन काय थिरता करीजें ॥२॥ कनक मणियें घडी, रत्नकचोलडी, मांहे भरी नेत्र जिन

शुं ठवीजें ॥ ३ ॥ चरण, जानु, करें, अंस, शिर, भाल, गले, उर, उदर, प्रभु नव तिलक कीजें ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शीतल गुण जेहमां रह्यो, शीतल प्रभुमुख रंग ॥
आत्म शीतल करवाभणी, पूजो अरिहाअंग ॥ १ ॥

॥ गीतं ॥ राग काफी ॥ फुंबखडानी देशी ॥

॥ हरिचंदन घनसारशुं रे, द्रव्यतिलक नव अंग॥ जिनेसर पूजीयें ॥ शिवसुंदरी शिर सोहतुं रे, भाव तिलक मनरंग ॥ जिने० ॥ १ ॥ पढम चउ निज थानकें रे, तिलक विमल सुखकार ॥ जिने० ॥ गात्र विलेपन पूजना रे, जगद्गुरु जयकार ॥ जिने० ॥ २ ॥ क्रोध अनल शीतल थये रे, रीझ बनी तुज मुज ॥ जिने० ॥ क्षण क्षण पुलक प्रमोदशुं रे, अजबगति प्रभुपूज ॥ जिने० ॥ ३ ॥ जिम जयशूरने शुभमति रे, दंपती पद निर्वाण ॥ जिने० ॥ चंदन पूजा जिन तणी रे, करतां शुभ कल्याण ॥ जिने० ॥ ४ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ चंदनं य० ॥ स्वा० ॥

इतिद्वितीयविलेपनपूजा समाप्ता ॥ २ ॥

## ॥ अथ तृतीयपुष्पपूजा प्रारंज्ञः ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे त्रीजी सुमनस तणी, सुमनस करण स्वन्ना व ॥ न्नावसुगंध करण न्नणी, ऊव्य कुसुमप्रस्ताव ॥१॥

॥ ढाल ॥ राग सियानी धन्याश्री ॥ जाति रेखतानी ॥
॥ मोरी माय रे मुने जान दे ॥ ए देशी ॥

॥ सुरनाथज्युं न्नविलोक पूजो, जिनप ङूजो न हीं मले ॥ सौगंधि कुसुम विविध जातिशुं, मेलवी धन मोकले ॥ सुर० ॥ १ ॥ मोगरो चंपक मालती सुम, केतकी वर जासुलें ॥ प्रियंगुने पुन्नाग नागं, दाउमी वर पाम्लें ॥ सुर० ॥ २ ॥ सदा सोहागण जाई जुई, बोलसिरी सेवंत रे ॥ मचकुंदने चंबेली वे ली, उगियां शुचि जलथलें ॥ सुर० ॥ ३ ॥ लेई सुर न्निसुम जिनचरण पूजो, पूजिया आखंडलें ॥ शिव सुंदरी वरमालिका सुम, थापियें पारगगलें ॥ सुर० ॥४॥

॥ दोहा ॥

॥ सुरन्नि अखंड कुसुम ग्रही, पूजो गतसंताप ॥ सुमजंतु न्नव्यज परें, करीयें समकित गप ॥ १ ॥

॥ गीतं ॥राग काफी ॥ अरनाथकुं

सदा मेरी वंदना ॥ ए देशी ॥

॥ पूजो श्रीजिनचंदने रे, नवि पूजो श्रीजिनचंद ने ॥ शिव वरियें दुरित निकंदिनें रे ॥न०॥ ए टेक ॥ स रस सुगंध कुसुमवर जाति, पद्म मल्लिका कुंदनें रे ॥ न० ॥ दमणो मरुर्ड वर सहकारो, लावो वली मच कुंदने रे ॥ न० ॥ १ ॥ लाल गुलाब बकुल कोरंटो, के वडो कुसुम अखंडने रे ॥ न० ॥ पूजो नवि तेम परम प्रमोदे, पूज्या जेम शक्रेंदनें रे ॥ न० ॥२॥ धतूरे पू जत शिव विषयी, नर वायस पिचुमंदनें रे ॥ न० ॥ निरीहकुं कुसुमे सुर सेवत, परपुष्टा माकंदने रे॥ न० ॥ ॥३॥ शुन्न त्रिकयोगे वीर कहे जिन, पूजी हरो नवफं दने रे ॥ न० ॥ वणिगधुआ लीलावती पूजत, पामी पद महानंदने रे ॥ न० ॥ ४ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ पुष्पाणि य० ॥ स्वा० ॥
इति तृतीयपुष्पपूजा समाप्ता ॥ ३ ॥

## अथ चतुर्थ धूपपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर्मसमिध् दाहन जणी, ध्यानानल सलगाय॥
द्रव्यधूप करी आतमा, सहज सुगंधित थाय ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग मालवी गुरु ॥

॥ जवजय चूरणो, कृष्णअगर तणो, चूरण करी सुरजि मने ए ॥ १ ॥ अंवर तगरनो, शुचितर अगरनो, वलि घनसार वरासने ए ॥ २ ॥ कुंदरु तरुकनो, कस्तूरी पुरकनो जेलीये मेलवी चंदने ए ॥ ३ ॥ नव नव रंगनो, शुद्ध दशांगनो, धूप सुगंध जिनंदने ए ॥ ४ ॥ धूपधाणुं जणुं कंचन रयणनुं, पावकनिर्धूम परजले ए ॥ ५ ॥ जिनपमंदिर जतां, धूप उखेवतां, दश दिशि महमहे परीमले ए ॥६॥ इति ढाल ॥

॥ दोहा ॥

॥ ध्यानघटा प्रगटावियें, वाम नयन जिनधूप ॥
मिछतडुर्गंध दूरे टले, प्रगटे आत्मस्वरूप ॥ १ ॥

॥ गीतं ॥ सबावरागिणी ॥ जाति फाग ॥

॥ जिनवर जगतदयाल ॥ जवियां ॥ जिनवर जगतदयाल ॥ जिनपद सेवत धूप उखेवत, सुरवर नय

नहजार ॥ नवियां ॥ जि० ॥ तेम नवि शुद्ध दशांग उखेवो, मांहे साकर घनसार ॥ नवि० ॥ जि० ॥ १ ॥ परिमल वदने धूप कहत हे, सुणजो बुद्धिविशाल ॥न०॥जि०॥ जिनपद सेवत ऊर्ध्वगति हम, तेम नवि शिवसुखमाल ॥ न० ॥ जि० ॥ २ ॥ सिद्धस्वरूपी अरूपी विमलता, वेदी समय त्रिकाल ॥न०॥जि०॥ एहवा प्रभु पडिमा वामांगे, धरियें धूप रसाल ॥ न०॥ जि० ॥ ३ ॥चोथी पूजा चिहुं गतिहारी, वारी कर्मकी जाल ॥ न० ॥ जि० ॥ वीर कहे नव सातमे सिद्धा, विनयंधर नूपाल ॥ न० ॥ जि० ॥ ४ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ धूपं य० ॥ स्वा० ॥

इति चतुर्थधूपपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥

## ॥ अथ पंचमदीपकपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंचमी गति वरवानणी, पंचमी पूजा रसाल ॥ केवल रत्न गवेषवा, धरिये दीपक माल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग पूर्वी ॥

॥ दीपकी ज्योति बनी नवरंगा, दीनदयालके

दाहिण अंगा ॥ दीप० ॥ रयणजडित वर्तुल जाजन में, धेनुहविष जरिये उठरंगा ॥ दीप० ॥ १ ॥ प्राणी उगारण कारण फानस, करिये ज्युं नवि आय पतंगा ॥ दी० ॥ ऊगमग ज्योतिशुं दीपक धरिये, अनुजव दीपक समकितसंगा ॥ दी० ॥ २ ॥ जिनमंदिर जइ दीप प्रगट धरी, आशय शुद्ध विमल जलगंगा ॥दी०॥ ध्यान विमल करतां जवि नासे, दीप विराजश्री मोहजुजंगा ॥दी०॥३॥ तिम मिथ्यात्व तिमिरकुं हरिये, शार्वर तमहर व्योमपतंगा ॥दी०॥ गोइन देखत नासत तस्कर,ज्युं जिनदर्शन जात अनंगा ॥दी०॥४॥

॥ दोहा ॥

॥ द्रव्यदीप सुविवेकथी, करतां दुःख होय फोक ॥
जावप्रदीप प्रगट हुवे, जासित लोकालोक ॥ १ ॥

॥ गीतं ॥ राग आशावरी ॥ गरबानी देशी ॥

॥ दीपक दीपतो रे, लोकालोक प्रमाण ॥ एहवो दीवमो रे, प्रगटे पद निरवाण ॥दी०॥ द्रव्यथकी दीपकनी पूजा, करतां दो गति रोको रे ॥ प्रजुपमिमा आदर्श करीने, आतमरूप विलोको ॥दी०॥एहवो० ॥१॥ शुद्धदशा चेतनकुं प्रगटे, विघटे जवजव कूपो रे ॥ चिदानंद ऊकऊोल घटाशुं, केवलदीप अनूपो

॥दी०॥ एहवो० ॥ २ ॥ पडत पतंग न धूमकी रेखा, नहिं चंचल मारुते रे ॥ घृत विण पूरे पात्र न तापे, वलि नवि मेल प्रसूते ॥ दी० ॥ एहवो० ॥ ३ ॥ पाप पतंग पडत तेम दीपक, करती दो साहेली रे ॥ जिनमति धनसिरी वरी शिव सुखने, वीर कहे रंगरेली ॥ दी० ॥ एहवो० ॥ ४ ॥

॥ अथ मंत्रः

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ दीपमालां य० ॥ स्वा०

इति पंचमदीपकपूजा समाप्ता ॥ ५ ॥

## ॥ अथ षष्ठाक्षतपूजाप्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अक्षयपद साधन तणी,अक्षत पूजासार ॥ जिनप्रतिमा आगल मुदा, धरिये भवि नर नार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग बिलावल ॥

॥ जगत्प्रभु आगल भवि, वर अक्षत धरिये ॥ मणि मुक्ताफल लेइने, वली स्वस्तिक करिये ॥ हां हांरे वलि स्वस्तिक करिये ॥ हांहांरे करि पातक हरिये॥हांहांरे छठी पूजा समरिये ॥ हांहांरे प्रवहण भरदरिये॥ हांहांरे भवसायर तरिये ॥ हांहांरे पद अक्षर

वरिये ॥ जगतू० ॥ १ ॥ अथवा उज्ज्वल तंडुला, भरी थालने लावो॥स्वस्तिक चिहुं गति चूरणो,वच्चे रत्नने गावो ॥ हांहांरे वच्चे रत्नने गावो ॥हांहांरे धन सार वसावो ॥ हांहांरे गोधूमादि अणावो ॥ हांहांरे तस पुंज बनावो॥ हांहांरे अनुभव लय लावो ॥ हां हांरे जो होये शिवपुर जावो ॥जगतू० ॥२॥ इति ढाल ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुद्ध अखंड अक्षत ग्रही, नंदावर्त्त विशाल ॥ पूरी प्रभुसन्मुख रहो, टाली सकल जंजाल ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥ राग विहागडो ॥

॥ शिवनारी मुज प्यारी, दिलभर देखाव हो शि वनारी ॥ हांरे प्रभु तुं तेहनो अधिकारी, दिलभर दे खाव हो शिवनारी॥ए टेक॥शालि व्रीहि गोधूमको ढगलो, प्रभुसनमुख नर नारी ॥ दिल० ॥ धरी अ क्षत अक्षत पद वरिये, आधि व्याधि भवहारी ॥ दिल० ॥ १ ॥ शंभु स्वयंभु जगत्को त्रायक, नाय क जगदाधारी ॥ दिल० ॥ तीर्थपति सुलतान जिने श्वर, अविचल पद दातारी ॥ दिल० ॥ २ ॥ दव्वह गुणपज्जायने मुद्दा, चउगुण पडिमा प्यारी ॥दल० ॥ द्रव्याक्षत धरतां इह लोके, राज ऋद्धि भंडारी

दिल० ॥ ३ ॥ मरुदेवानंदन पद पूजत, ऊव्यन्नाव सुखकारी ॥ दिल० ॥ अनुन्नव अमरालय शुन्न सुख ने, कीरयुगल न्नवप्यारी ॥ दिल० ॥ ४ ॥ इतिगीतं ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ अक्षतान् य० ॥ स्वा० ॥

इति षष्ठाक्षतपूजा समाप्ता ॥ ६ ॥

## ॥ अथ सप्तमनैवेद्यपूजा प्रारंन्नः ॥

॥ दोहा ॥

॥ निर्वेदी आगल ठवो, शुचि नैवेद्य रसाल ॥ विविधजाति पक्वान्नशुं, न्नरि अष्टापद थाल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग काफी ॥

॥ पुरुषोत्तम गुण खाणी हो, पारग पुरुषोत्तम गुणखाणी ॥ ए टेक ॥ हवे नैवेद्य रसाल ठवी जे, प्रन्नु आगल न्नवि प्राणी॥मरकी अमृत पाक पता सां, फेणी सरस सोहाणी हो ॥ पारग पुरु० ॥ १ ॥ लाखणसाई मगदल साटा, घेबरथाल न्नराणी ॥ से व कंसारने सक्करपारा, पेंडा बरफी आणी हो ॥ पारग पुरु० ॥ २ ॥ खाजां खुरमां खीर खांड घृत,

पापम्न पूरी वखाणी ॥ मोतैया कलिसारने कोठां, ए म पक्वान्न मिलाणी हो ॥ पारग पुरु० ॥ ३ ॥ प्रभु पुर ढोइ करो डुःखहाणी, मागो जोडी पाणी ॥ प तितपावन जिन मुजने दीजे, अणाहारी शिवराणी हो ॥ पारग पुरु० ॥ ४ ॥ इति ढाल ॥

॥ दोहा ॥

॥ अणाहारी पद में कर्यां, विग्गहगश्य अणंत ॥ दूर करी ते दीजिये, अणाहारी शिवसंत ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥ वंद्रावनमां एकज गोपी॥ए देशी ॥

॥ हाटकथाल भरी पकवाने, शाल दाल शाक पा क रे॥अनुभव रस सिंचत भवि लहिये,अमृत पद वि नाक रे ॥ हाटक० ॥ १ ॥ ताल कंसाल मृदंग वजाव त, देता अढलक दान रे ॥ नर नारी जिनगुण गाव त आवो, जिनमंदिर बहुमान रे ॥ हाटक० ॥ २ ॥ प्रभुआगे नैवेद्य ठवीने, अणाहारी पद मागोरे ॥ पु द्गलभाव अनादिनी ईहा, टालि भजो प्रभु रागो रे ॥ हाटक० ॥ ३ ॥ सगभय वारक सातमी पूजा, क रतां गइ सगवारीरे॥ वीर कहे हलीनृप सुरसुखथी, सातमे भव शिवनारी रे ॥ हाटक० ॥४॥ इति गीतं॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ नैवेद्यं य० ॥ स्वा० ॥

इति सप्तमनैवेद्यपूजा समाप्ता ॥ ७ ॥

## ॥ अथाष्टमफलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अष्टमि गति वरवा भणी, आठमी पूजा सार॥
तरु सिंचत फल पामिये, फलथी फल निरधार॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग गोडी, मारुणी ॥

॥ मुगति फली रे फली रे फली, अहो भवियां हो मुगति फली ॥ कुमति टली सुमति भली, एम नर नारी मली रे मली ॥ अहो भ० ॥ मुग० ॥ ए टेक ॥ फलपूजा करिये फलकामी, निर्मल श्रीफल लाय ॥ अहो० ॥ दाडिम द्राख अखोड बदामो, पूगीफल समुदाय ॥ अहो० ॥ मुग० ॥ कुम० ॥ सु० ॥ एम० ॥ १ ॥ मिष्टांग लींबू खारेक कदली, सीता फल अभिराम ॥ अहो० ॥ जमरुख तरबुज नीमजां कोहलां, समरि समरि जिननाम ॥ अहो० ॥ मुग० ॥ कु० ॥ सुम० ॥ एम० ॥ २ ॥ चुयफल नारिंग

पिस्तां खरबुज, फनस अंगुर जंबीर ॥ अहो० ॥ शु भ चामीकरथाल भरीजे, सिंगोडां अंजीर ॥ अहो०॥ ॥ मुग ॥ कुम० ॥ सुम० ॥ एम० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ इंद्रादिक पूजा भणी, फल लावे धरी राग ॥ पुरुषोत्तम पूजी करी, मागे शिव फल त्याग ॥ १ ॥ ॥ अथ गीतं ॥ इमनरागिणी ॥ महारी सहीरे समाणी ॥ ए देशी ॥

॥ हरिपरें फल मागो भविलोका, फलथी शिव फल रोका रे ॥ धन धन जिनराया ॥ रायण बीजोरां फल टेटी, पूजत शिववहू भेटी रे ॥ धन० ॥ १ ॥ इत्यादिक शुचिफल भवि लावो, थाल विशाल भरावो रे ॥ धन० ॥ हर्ष भरे जिनमंदिर आवो, जिनवर आगल गावो रे ॥ धन० ॥ २ ॥ एम फलपूजा जे भ वि करशे, ते शिवरमणी वरशे रे ॥ धन० ॥ पूजो भवियण निर्मलबुद्धि, पण करी सगविह शुद्धि रे ॥ धन० ॥ ३ ॥ कीरयुगलशुं डुर्गता नारी, पूज्या जिन जयकारी रे ॥ धन० ॥ कहे शुभवीर अचल सु ख लीधो, अंत करमनो कीधो रे ॥ धन० ॥ ४ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ फलानि य० ॥ स्वा०

इति अष्टमफलपूजा समाप्ता ॥ ८ ॥

॥अथ कलश ॥ राग धन्याश्री ॥ वामानंदन जग०॥

॥ ए देशी ॥

॥ इणविध अष्ट प्रकारी पूजा, करशे तस नित्य सुख शाता ॥ सिद्धि बुद्धि दिठि अरु नविजन, पामी अड पवयण माता ॥ हरिपरें नक्ति करो प्रभु केरी ॥ १ ॥ राग द्वेष टाली जिनपूजत, अष्टमी गति अनुक्रमे लहे ॥ अष्ट कर्म समताये बाली, नीलतरु वन हिम दहे ॥ हरिपरें० ॥ २ ॥ तपगछ श्रीविजयसिंह सूरीश्वर, सत्यविजय पन्यास वरो ॥ कपूरसमुज्जल खिमा विजय जस, विजय सदा सौनाग्य करो ॥ हरि० ॥ ३ ॥ तास शिष्य शुन्नविजय सोन्नागी, तस अनुमति जिनराय सही ॥ गावत हर्ष कल्लोल नराया, राजनगर चउमास रही ॥ हरि० ॥ ४ ॥ संवत् अढार अठावन वरषे, नाद्रपदे सितपक्ष नलो ॥ द्वादशीदिन गुरुवार मनोहर, ए अन्यास नयो सफलो ॥ हरि० ॥ ५ ॥ सुरगुरु पण न शके करि वर्णन,

जिनथुणिया में मंदमति ॥ जलधिमान कहे जेम बाल क, निजशक्ते पंखी वदती ॥ हरि० ॥६ ॥ शक्तिविना पण तेम प्रभु गाया, गुणमाला भवि कंठ धरो ॥ वीर विजय कहे संघ सकल भवि, जई शिव मंदिर लील करो ॥ हरि० ॥७॥ इति कलश ॥ इति श्रीवीरविजयजी विरचितअष्टप्रकारीपूजा समाप्ता ॥ सर्वगाथा ॥९१॥

॥ अथ ॥

## ॥ पंमित श्रीवीरविजयजीकृतपंचकल्याणक महोत्सवेऽष्टप्रकारी पूजा प्रारंभः ॥

॥ तत्र ॥

## ॥ च्यवनकल्याणके प्रथमपुष्पपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीशंखेश्वर साहिबो, सुरतरु सम अवदात ॥ पुरिसादाणी पासजी, षट्दर्शन विख्यात ॥ १ ॥ पंचमे आरे प्राणिया, समरे उठी सवार ॥ वांछित पूरे दुःख हरे, वंदू वार हजार ॥ २ ॥ अवसर्पिणि त्रेवीशमा, पार्श्वनाथ जब हूंत ॥ तस गणधर पद पामिने, थाशो शिववधूकंत ॥ ३ ॥ दामोदर जिनमुख

सुणी, निज आतम उद्धार ॥ तदा आषाढी श्रावके, मूर्त्ति भरावी सार ॥ ४ ॥ सुविहित आचारज कने, अंजनशलाका कीध ॥ पंचकल्याणकउत्सवे, मानुंव चनज लीध ॥ ५ ॥ सिद्धस्वरूप रमण भणी, नौतम पडिमा जेह ॥ थापि पंचकल्याणके, पूजे धन्य नर तेह ॥६॥ कल्याणक उत्सव करी, पूरण हर्ष निमि त्त ॥ नंदीसर जई देवता, पूजे शाश्वत चैत्य ॥ ७ ॥ कल्याणक पूजन सहित, रचना रचशुं तेम॥ डुर्जन विषधर डोलशे, सज्जनमनशुं प्रेम ॥ ८ ॥ कुसुम फ ल अक्षत तणी, जल चंदन मनोहार ॥ धूप दीप नैवेद्यशुं, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ए ॥

॥ ढाल ॥ प्रथम पूरवदिशे ॥ ए देशी ॥

॥ प्रथम एक पीठिका, झगमग दीपिका, थापी प्रभु पास ते, ऊपरे ए ॥ रजत रकेबीयो, विविध कुसुमे भरी, हाथ नर नारी धरी, उच्चरे ए ॥ १ ॥ कनकबाहू भवे, बंध जिननामनो, करिय दशमे देव लोकवासी ॥ सकल सुरथी घणी, तेजकांति भणी, वीश सागर सुख, ते विलासी ॥२॥ क्षेत्रदश जिनव रा, कल्याणक पांचशे, उत्सव करत सुर साथशुं ए, थइय अग्रेसरी, सासय जिनतणी, रचत पूजा नि

जहाथशुं ए ॥ ३ ॥ योगशास्त्रे मता, मास पट् था कता, देवने दुःख बहु जातिनुं ए ॥ ते नवी निपजे, देवजिन जीवने, जोवतां ठाण उप पातनुं ए ॥ ४ ॥ मुगति पुर मारगे, शीतल बांहमी, तीर्थनी नूमि, गंगाजले ए ॥ चैत्य अनिषेकता, सुकृततरु सींचता, नक्के बहुला नवि, नव तरे ए ॥५॥ वारणने असी, दोय वचमां वसी, काशी वाराणसी, नयरीये ए ॥ अश्वसेन नूपति, वामा राणी सती, जैनमति रति, अनुसारिये ए ॥६॥ चार गति चोपमा, च्यवनना चूकवी शिव गया तास घर, नमन जावे ॥ बालरूपे सुर तिहां, जननीमुख जोवतां, श्रीनशुवीर आनंद पावे ॥ ७ ॥

॥ काव्यम् उपजातिवृत्तम् ॥

॥ नोगी यदालोकनतोऽपि योगी, बनूव पाताल पदे नियोगी ॥ कल्याणकारी दुरितापहारी, दशाव तारी वरदः सपार्श्वः ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय, परमेश्वराय, जन्म जरामृत्युनिवारणाय, श्रीमते जिनेंद्राय, पुष्पाणि य जामहे स्वाहा ॥ इतिच्यवनकल्याणकेप्रथमपुष्पपूजा॥

॥ अथ ॥

## ॥ च्यवनकल्याणके द्वितीयफलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ कृष्ण चतुर्थी चैत्रनी, पूर्णायु सुर तेह ॥ वामा मात उदर निशि, अवतरिया गुणगेह ॥ १ ॥ सुपन चतुर्दश मोटकां, देखे माता ताम ॥ रयणिसमे निजमंदिरे सुखशय्या विश्राम ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ मिथ्यात्व वामीने कोश्या, समकित पामी रे ॥ ए देशी ॥

॥ रूडो मास वसंत फली वनराजी रे, रायणने सहकार वाल्हा ॥ केतकी जायने मालती रे, भ्रमर करे झंकार वाल्हा ॥ कोयल मदभर टहूकती रे, बेठी आंबाडाल वाल्हा ॥ हंसयुगल जल झीलतां रे, विमल सरोवर पाल वाल्हा ॥ मंदपवननी लहेरमां रे, माता सुपन निहाल वाल्हा ॥ ए आंकणी ॥ दीठो प्रथम गज उज्वलो रे, बीजे वृषभ गुणवंत वाल्हा ॥ त्रीजे सिंहज केशरी रे, चोथे श्रीदेवी महंत वाल्हा॥ माल युगल फुल पांचमे रे, छठे रोहिणीकांत वाल्हा ॥ जगतो सूरज सातमे रे, आठमे ध्वज

लहकंत वाल्हा ॥ रूमो मास० ॥ १ ॥ नवमे कलश रूपा तणो रे, दशमे पद्मसर जाण वाल्हा ॥ अग्या रमे रत्नाकरू रे, बारमे देवविमान वाल्हा ॥ गंज र त्ननो तेरमेरे, चउदमे वन्हि वखाण वाल्हा ॥ उत रतां आकाशथी रे, पेसता वदन प्रमाण वाल्हा ॥ ॥ रूमो० ॥२॥ माता सुपन लही जागीयां रे, अवधे जुवे सुरराज वाल्हा॥शक्रस्तव करी वंदीयां रे, जन नी उदर जिनराज वाल्हा॥ एणे समे इंद्र ते आवि या रे, मा आगल धरी लाज वाल्हा॥ पुण्यवती तुम पामियुं रे, त्रण्य भुवननुं राज्य वाल्हा॥रूमो० ॥ ३ ॥ चउद सुपनना अर्थ कहि रे,इंद्र गया निज ठाम वा ल्हा ॥ चउसठ इंद्र मली गया रे, नंदीसर जिन धा म वाल्हा ॥ च्यवनकल्याणक उत्सवे रे, श्रीफलपूजा ठाम वाल्हा ॥ श्रीशुभवीर तेणे समे रे, जगत् जीव विश्राम वाल्हा ॥ रूमो० ॥ ४ ॥

॥ काव्यं ॥ भोगी यदा० ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ फलानि य० ॥ स्वा० ॥

॥ इति च्यवनकल्याणके द्वितीयफलपूजा संपूर्णा ॥२॥

॥ अथ ॥

## ॥ जन्मकल्याणके तृतीयअक्षतपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ रविउदये नृप तेडिया, सुपनपाठक निज गेह॥ चउद सुपनफल सांभली, वलीय विसर्ज्या तेह ॥१॥ त्रण्य ज्ञानशुं ऊपना, त्रेविशमा अरिहंत ॥ वामाउर सर हंसलो, दिन दिन वृद्धि लहंत ॥२॥ मोहला पूरे नृपति, सखियो वृंद समेत ॥ जिन पूजे अक्षत धरी, चामर पंखा लेत ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ चित्त चोखे चोरी नवि करिये ॥ ए देशी ॥

॥ रमती गमती हमुने साहेली, बिहु मली लिजीये एक ताली ॥ सखि आज अनोपम दीवाली ॥ लील विलासे पूरणमासें, पोषदशम निशि रढीयाली ॥ ॥ सखि० ॥१॥ पशु पंखी वसीया वनवासी, ते पण सुखियां समकाली ॥ सखि० ॥ इण राते घर घर उत्सव से, सुखियां जगत्मे नर नारी ॥ सखि० ॥ २ ॥ उत्तम ग्रह विशाखायोगे, जनम्या प्रभुजी जयकारी ॥ ॥ सखि० ॥ साते नरके थयां अजुवालां, थावरने पण सुखकारी ॥ सखि० ॥ ३ ॥ मात नमी आठे दिक्

कुमरी, अधोलोकनी वसनारी ॥ सखि० ॥ सूतीघर ईशाने करती, योजन एक अशुचि टाली ॥ सखि०॥ ॥ ४ ॥ ऊर्ध्वलोकनी आठ कुमारी, वरसावे जल कुसु माली ॥ सखि० ॥ पूर्वरुचक अड दर्पण धरती, द क्षिणनी अड कलशाली ॥ सखि० ॥ ५ ॥ अड पश्चि मनी पंखा धरती, उत्तर अड चामर धारी ॥ सखि०॥ विदिशिनी चउ दीप धरंती, रुचकद्वीपनी चउ वाली ॥ सखि० ॥ ६ ॥ केल तणां घर त्रण्य करीनें, मर्दन स्नान अलंकारी ॥ सखि० ॥ रक्षा पोटली बांधी बि हुने, मंदिर मेल्यां शणगारी ॥ सखि० ॥ ७ ॥ प्रभु मुखकमले अमरी भमरी, रास रमंती लटकाली ॥ ॥ सखि० ॥ प्रभुमाता तुं जगतूनी माता, जगदीपक नी धरनारी ॥ सखि० ॥ ८ ॥ माजी तुज नंदन घणुं जीवो, उत्तम जीवने उपकारी ॥ सखि० ॥ छप्पन दि क्कुमरी गुण गाती, श्रीशुभवीर वचनशाली ॥ सखि०॥

॥ काव्यं ॥ भोगी यदा० ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ अक्षतान् य० स्वा०॥

॥ इति जन्मकल्याणके तृतीयअक्षतपूजा संपूर्णा ॥३॥

॥ अथ ॥

## ॥ जन्मकल्याणके चतुर्थजलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

चलितासन सोहमपति, रची वैमान विशाल ॥
प्रभुजन्मोत्सव कारणे, आवंता ततकाल ॥ १ ॥
॥ ढाल ॥ काज सिध्धां सकल हवे सार, ॥ ए देशी ॥

॥ हवे शक्र सुघोषा वजावे, देव देवी सर्वे मिलावे ॥ करे पालक सुर अभिधान, तेणे पालक नामे विमान ॥ १ ॥ प्रभु पासनुं मुखडुं जोवा, भवभवनां पातक खोवां ॥ चाले सुर निज निज टोले, मुखमंगलिक माला बोले ॥२॥ ॥ प्रभु० ॥ सिंहासन बेठा चलिया, हरि बहुदेवे परवरिया ॥ नारी मित्रना प्रेर्या आवे, केइक पोताने भावे ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ हुकमे केई भक्ति भरेवा, वली केइक कौतुक जोवा ॥ हय कासर केशरी नाग, फणी गरुड चढ्या केइ बाग॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ वाहन वैमान निवास, संकीर्ण थयुं आकाश ॥ केइ बोले करता ताका, सांकडा भाइ पर्वना दहाडा ॥ प्रभु० ॥५॥ इहां आव्या सर्वे आणंदे, जिनजननीने हरि वंदे ॥ पांच रूपे हरि प्रभु हाथ,

एक छत्र धरे शिर नाथ ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ बे बाजु चामर ढाले, एक आगल वज्र उलाले ॥ जई मेरु धरी उत्संगे, इंद्र चोसठ मलिया रंगे ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ क्षीरोदक गंगावाणी, मागध वर दामनां पाणी ॥ जाति आठना कलश भरीने, अढिशे अभिषेक करीने ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ दीवो मंगल आरति कीजे, चंदन कुसुमे करी पूजे ॥ गीत वाजित्रना बहु ठाठ, आलेखे मंगल आठ ॥ प्रभु० ॥ए॥ इत्यादिक उत्सव करता, जई माता पासे धरता ॥ कुंडलयुग वस्त्र उशीके, दडो गेडी रतनमयी मूके ॥ प्रभु०॥१०॥ कोडि बत्रीश रत्न रूपैया, वरसावी इंद्र उच्चरिया ॥ जिनमातशुं जे धरे खेद, तस मस्तक थाशे छेद ॥ प्रभु० ॥ ११ ॥ अंगुठे अमृत वाही, नंदीसर करे अठाई ॥ देइ राजा पुत्र वधाई, घर घर तोरण विरचाई ॥ प्रभु०॥१२॥ दश दिन उछव मंडावे, बारमे दिन नात जिमावे ॥ नाम थापे पार्श्वकुमार, शुभ वीरविजय जयकार ॥ प्रभु०॥१३॥

॥ काव्यं ॥ भोगी यदा ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० जलं य० ॥ स्वा० ॥

॥ इति जन्मकल्याणके चतुर्थजलपूजा संपूर्णा ॥ ४ ॥

॥ अथ ॥

## ॥ जन्मकल्याणके पंचमचंदनपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अमृतपाने ऊछर्या, रमता पास कुमार ॥ अ हिलंछन नवकरतनु, वरते अतिशय चार ॥ १ ॥ यौं वन वय प्रभु पामता, मात पितादिक जेह ॥ परणा वे नृपपुत्रिका, प्रभावती गुणगेह ॥ २ ॥ चंदन घसि घनसारशुं, निज घर चैत्य विशाल ॥ पूजोपकरण मेलवी, पूजे जगत् दयाल ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ बालपणे योगी हुआ ॥ माई भिक्षा

द्योने ॥ ए देशी ॥

॥ सोना रूपाके सोगठे, सांयां खेलत बाजी ॥ इंद्राणी मुख देखते, हरि होत हे राजी ॥ १ ॥ एक दिन गंगाके बिचे, सुर साथ बहोरा ॥ नारी चको रा अप्सरा, बहोत करत निहोरा ॥ २ ॥ गंगाके जल झीलते, छांही बादलीयां ॥ खावन खेल खेला यकें, सवि मंदिर वलियां ॥ ३ ॥ बेठे मंदिर मालिये सारी आलम देखे ॥ हाथ पूजापाले चले, खांन

पान विशेपे ॥४॥ पूठ्या पमुत्तर देत हे, सुनो मो हन मेरे ॥ तापसकुं वंदन चले, उठी लोक सवेरे ॥ ५ ॥ कमठयोगी तप करे, पंच अग्निकी ज्वाला ॥ हाथे लालक दामणी, गले मोहनमाला ॥ ६ ॥ पासकुंअर देखण चले, तपसीपे आया ॥ उंहीनाणे देखके, पीठे योगी बोलाया ॥ ७ ॥ सुण तपसी सुख लेनकुं, जपे फोगट माले ॥ अज्ञानसे अगनिविचे योगकुं परजाले ॥७॥ कमठ कहे सुण राजवी, तुमे अश्व खेलाउ ॥ योगीके घर हे बडे, मत को वत लाउ ॥ए॥ तेरा गुरु कोन हे वमा, जिनें योग धराया ॥ नहिं उलखाया धर्मकुं, तनुकष्ट बताया ॥१०॥ हम गुरु धर्म पिठानते, नहिं कवकी पासे ॥ न्नूल गए डुनीयां दिशा, रहते वनवासे ॥ ११ ॥ वनवासी पशु पंखीया, एसे तुम योगी ॥ योगी नहीं पण न्नोगीया, संसारके संगी ॥ १२ ॥ संसार बूरा ठोरके, सुण हो लघु राजा ॥ योगी जंगल सेवते, लेई धर्म अवाजा ॥१३॥ दया धर्मको मूल हे, क्या कान फूकाया ॥ जीवदया नहू जानते, तप फोकट माया ॥ ॥ १४ ॥ वात दयाकी दाखिये, न्नूल चूक हमारा ॥

बेर वेर क्या बोलणां, एसा डाक डमाला ॥ १५ ॥ सांइ हुकमसे सेवके, बडा काष्ट चिराया॥नाग निकाला एकिला, परजलती काया ॥ १६ ॥ सेवक मुख नवकारसे, धरणेंद्र बनाया ॥ नागकुमारे देवता, बहु ऋद्धि पाया ॥ १७ ॥ राणीसाथ वसंतमे, वनभीतर पेठे ॥ प्रासाद सुंदर देखिने, उहां जाकर बेठे ॥ ॥ १८ ॥ राजिमतीकुं छोरुके, नेम संजम लीना ॥ चित्रामण जिन जोवते, वैरागे भीना ॥ १९ ॥ लोकांतिक सुर ते समे, बोले कर जोरी ॥ अवसर संजम लेनका, अब बेर हे थोरी ॥ २० ॥ निज घर आये नाथजी, पिया खिण खिण रोवे ॥ मात पिता सम जायके, दान वरसी देवे ॥२१॥ दीन दुःखी सुखिया किया, दारिद्रकुं चूरे ॥ श्रीशुभवीर हरि तिहां, धन सघलो पूरे ॥ २२ ॥

॥ काव्यं ॥ भोगी यदा० ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ चंदनं य० ॥ स्वा० ॥

॥इति जन्मकल्याणके पंचम चंदनपूजा संपूर्णा ॥५॥

॥ अथ ॥

## ॥ दीक्षाकल्याणके षष्ठधूपपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ वरसीदानने अवसरे, दान लिये भव्य तेह ॥ रोग हरे षट् मासनो, पामे सुंदर देह ॥ १ ॥ धूप घटा धरि हाथमां, दीक्षाअवसर जाण ॥ देव असंख्य मल्या तिहां, मानुं संजमठाण ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ देखो गति दैवनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ त्रीश वरस घरमां वस्या रे, सुखभर वामानंद॥ संयम रसिया जाणीने रे, मलिया चोशठ इंद ॥ नमो नित्य नाथजी रे, निरखत नयनानंद ॥ न० ॥ १ ॥ ॥ ए आंकणी ॥ तीर्थोदकवर औषधि रे, मेलवता बहु ठाठ ॥ आठ जाति कलशा भरी रे, एक सहसने आठ ॥ नमो० ॥ २ ॥ अश्वसेन राजा धुरे रे, पाछल सुर अभिषेक॥ सुरतरुपेरे अलंकर्या रे, देव न भुले विवेक ॥ नमो० ॥३॥ विशाला नृपशिबिका रे, बेठा सिंहासन नाथ ॥ बेठी वडेरी दक्षिणे रे, पट शाटक लेइ हाथ ॥ नमो० ॥ ४ ॥ वामदिशे अंब धातरी रे, पाछल धरी शणगार ॥ छत्र

धरे एक यौवना रे, ईशान फल करनारी ॥ नमो०॥ ॥ ५ ॥ अग्निकोणे एक यौवना रे, रयणमय पंखो हाथ ॥ चलत शिबिका गावती रे, सर्व साहेली साथ ॥ नमो० ॥ ६ ॥ शक्र ईशान चामर धरे रे, वाजित्र नो नहिं पार ॥ आठ मंगल आगल चले रे, इंद्रध्वजा झलकार ॥ नमो० ॥ ७ ॥ देव देवी नर नारीयो रे, जोइ करे प्रणाम ॥ कुलमां वडेरा सज्जना रे, बोले प्रभुने ताम ॥ नमो० ॥८॥ जितनिशाण चडावजो रे, मोहनी करी चकचूर ॥ जेम संवत्सर दानथी रे, दारिद्र काढ्युं दूर ॥ नमो० ॥ ए ॥ वरघोडेथी ऊतर्या रे, काशीनयरनी बार ॥ आश्रमपद उद्यानमां रे, वृक्ष अशोक रसाल ॥ नमो० ॥ १० ॥ अठम तप भूषण तजी रे, उच्चरे महाव्रत चार ॥ पोष बहुल एकादशी रे, त्रणसयां परिवार ॥ नमो० ॥ ११ ॥ मनःपर्यव तव ऊपनुं रे, खंध धरे जगदीश ॥ देवदुष्य इंद्रे दियुं रे, रहेशे वरस चउतीस ॥नमो०॥१२॥ काउस्सग्गमुद्राये रह्या रे, सुर नंदीश्वर जात ॥ मात पिता वंदि वल्यां रे, श्रीशुभवीर प्रभात ॥ न०॥१३

॥ काव्यं ॥ भोगी पदा० ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ धूपं ॥ य० ॥ स्वा ॥

इति दीक्षाकल्याणके षष्ठ ॥ धूपपूजा संपूर्णा ॥ ६ ॥

॥ अथ ॥

## ॥ केवलज्ञानकल्याणके सप्तम दीपकपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ सारथधनघरे पारणुं, प्रथम प्रभुये कीध ॥ पंच दिव्य प्रगटावीने, तास मुक्तिसुख दीध ॥ १ ॥ जगदीपक प्रगटाववा, तप तपता रहि राण ॥ तेणे दीपकनी पूजना, करता केवलनाण ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ महावीर प्रभु घर आवे ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभुपारसनाथ सिधाव्या, कादंबरी अटवी आव्या, कुंभनामे सरोवर तीरे, भर्युं पंकज निर्मलनीरे रे ॥ मनमोहन सुंदर मेला ॥ धन्य लोक नगर धन्य वेला रे ॥ मन० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ काउस्सग्ग मुद्रा प्रभु ठावे, वनहाथी तिहां एक आवे ॥ जलशुं ढ भरी नवरावे, जिनअंगे कमल चढावे रे ॥ मन०

॥ २ ॥ कलिकुंमतीरथ तिहां थावे, हस्ती गति देव नी पावे ॥ वलि कौस्तुभ वन आणंदे, धरणेंद्र विनय धरी वंदे रे॥मन०॥३॥ अन्य दिन फणी छत्र धरावे, अहिछत्रा नगरी वसावे ॥ चालता तापस घर पूंठें,नि शि आवी वस्या वड हेठे रे ॥ मन० ॥४॥ थयो कम ठ मरी मेघमाली, आव्यो विभंगे निहाली ॥ उपसर्ग कस्या बहुजाति, निश्चल दीठी जिनछाती रे ॥ मन० ॥ ५ ॥ गगने जल भरी वादलीयो, वरसे गाजे वीज लीयो ॥ प्रभुनासा उपर जल जावे, धरणेंद्र प्रियां सह आवे रे ॥ मन० ॥६॥ उपसर्ग हरी प्रभु पूजी, मेघमाली पापथी धूजी ॥ जिनभक्ते समकित पावे बहु जण स्वर्ग सिधावे रे ॥ मन० ॥७॥ आव्या का शी उद्याने, रह्या स्वामी काउसग्गध्याने ॥ अपूरव वीर्य उल्लासे, घनघाती चार विनासे रे ॥ मन० ॥ ॥ ८ ॥ चोराशी गया दिन आखा, वदि चैतर चोथ विशाखा ॥ अठम तरुघातकी वासी, थया लोकालो क प्रकाशी रे ॥ मन० ॥९॥ मले चोशठ इंद्र तेवार, रचे समवसरण मनोहार ॥ सिंहासन स्वामी सुहा वे, शिर चामर छत्र ढलावे रे ॥ मन० ॥ १० ॥ चो त्रीश अतिशय थावे, वनपाल वधामणी लावे ॥

अश्वसेनने वामा राणी, प्रभावती हर्ष भराणी रे ॥ मन० ॥ ११ ॥ सामईयुं सजी सहु वंदे, जिनवाणी सुणी आणंदे ॥ ससरो सासु वहू साथे, दीक्षा लीधी प्रभुहाथे रे ॥ मन० ॥१२॥ संघसाथे गणी पद धरता, सुर ज्ञान महोत्सव करता ॥ स्वामी देवछंदे सोहावे, शुभ वीरवचन रस गावे रे ॥ मन० ॥१३॥

॥ काव्यं ॥ भोगी यदा० ॥ ६ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम०॥ दीपं य० ॥ स्वा० ॥इति केवलज्ञानकल्याणके सप्तम दीपकपूजा संपूर्णा ॥७॥

## अथ निर्वाणकल्याणकेऽष्टमनैवेद्यपूजा प्रारंभः॥

॥ दोहा ॥

॥ शुभआदे दश गणधरा, साधु शोल हजार ॥ अडतीस सहस ते साधवी, चार महाव्रत धार ॥१॥ एकलख चउसठ सहस छे, श्रावकनो परिवार ॥ सगविस सहस ते श्राविका, तिग लख ऊपर धार॥२॥ देशविरतिधर ए सहु, पूजे जिन त्रण्य काल ॥ प्रभु पडिमा आगल धरे, नित्य नैवेद्यनो थाल ॥ ३ ॥

॥ढाल॥ एकसमे सामलियाजी ॥ वृंदावनमां ॥ ए देशी॥

॥ रंगरसीया रंगरस वन्यो ॥ मनमोहनजी ॥ कोई आगल नवि कहेवाय ॥ मनकुं मोह्युं रे, मनमोहनजी ॥ वेधकता वेधक लहे ॥ मन० ॥ बीजा बेठा वाखाय ॥ मन० ॥१॥ लोकोत्तर फल नीपजे ॥ मन० ॥ मोहोटो प्रभुनो उपकार ॥ मन० ॥ केवलनाण दिवाकरु ॥ मन० ॥ विचरंतां सुरपरिवार ॥ मन० ॥ २ ॥ कनक कमल पगलां ठवे ॥ मन० ॥ जल बुंद कुसुम वरसात ॥ मन० ॥ शिरछत्र वलि चामर ढले ॥मन०॥ तरु नमता मारग जात ॥ मन० ॥३॥ उपदेशी केई तारिया ॥ मन० ॥ गुण पांत्रीश वाणी रसाल ॥मन०॥ नर नारी सुर अप्सरा ॥ मन० ॥ प्रभु आगल नाटकशाल ॥ मन० ॥ ४ ॥ अवनीतल पावन करी ॥ ॥ मन० ॥ अंतिम चोमासुं जाण ॥ मन० ॥ समेतशिखर गिरि आविया ॥ मन० ॥ चडता शिवघर सोपान ॥ मन० ॥५॥ श्रावणशुदि आठम दिने ॥मन०॥ विशाखाये जगदीश ॥मन०॥ अणसण करी एक मासनुं ॥ मन० ॥ साथे मुनिवर तेत्रीश ॥ मन० ॥६॥ काउस्सग्गमां मुक्ति वर्या ॥ मन० ॥ सुख पाम्या सादि अनंत ॥ मन० ॥ एक समय समश्रेणिथी ॥

॥ मन० ॥ निःकर्मा चउ दृष्टांत ॥ मन० ॥ ७ ॥ सुरपति सघला तिहांमले ॥ मन० ॥ क्षीरोदधि आणे नीर ॥ मन० ॥ स्नान विलेपन भूषणे ॥ मन० ॥ देवडुष्ये स्वामिशरीर ॥ मन० ॥८॥ शोभावी धरी शीविका ॥ मन० ॥ वाजित्रने नाटक गीत ॥मन०॥ चंदन चय परजालता ॥ मन० ॥ सुर भक्तिशोकसहित ॥ मन० ॥ ए ॥ थुभ करे ते उपरे ॥ मन० ॥ दाढादिकस्वर्गे सेव ॥ मन० ॥ भावउद्योत गये थके ॥मन० ॥ दीवाली करता देव ॥ मन० ॥ १० ॥ नंदीसर उत्सव करे ॥ मन० ॥ कल्याणक मोक्षानंद ॥ मन० ॥ वर्ष अढीशे आंतरुं॥मन०॥ शुभवीरने पास जिणंद॥११॥

॥ अथ गीतं ॥ घरे आवो ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ उत्सव रंग वधामणां, प्रभु पासने नामे ॥ कल्याणक उत्सव कियो, चढते परिणामे ॥ उत्सव० ॥१॥ शत वर्षायु जीवीने, अक्षय सुख स्वामी ॥ तुम पद सेवा भक्तिमां, नवि राखुं खामी ॥ उ० ॥२॥ साची भक्ते साहेबा, रीझो एक वेला ॥ श्री शुभवीर हुवे सदा, मनवांछित मेला ॥ उ० ॥ ३ ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ गायो गायोरे, शंखेश्वर साहेब गायो ॥ यादव

लोकनी जरा निवारी, जिनजी जगत् गवायो ॥ पंच कल्याणक उत्सव करतां, अम घर रंग वधायो रे ॥ ॥ शंखे० ॥ १ ॥ तपगच्छ श्री सिंहसूरिना, सत्यविजय बुध गायो ॥ कपूरविजय गुरु खिमाविजय तस, जशविजयो मुनिरायो रे ॥ शंखे० ॥ २ ॥ तास शिष्य संवेगी गीतारथ, जयकमला जग पायो रे ॥ ॥ शंखे० ॥ ३ ॥ राजनगरमां रही चोमासुं, कुमति कुतर्क हठायो ॥ विजयदेवेंद्र सूरीश्वर राज्ये, ए अधिकार बनायो रे ॥ शंखे० ॥४॥ अढारशे नेव्याशी अक्षय त्रीज, अकृत पुण्य उपायो ॥ पंडित वीरविजय पद्मावती, वांछित दाय सहायो रे ॥ शंखे० ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ भोगी यदा० ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ नैवेद्यं य० ॥ स्वा० ॥

॥इति निर्वाणकल्याणके अष्टमनैवेद्यपूजा संपूर्णा॥८॥

इति पंडितश्रीवीरविजयजीकृत पंचकल्याणकमहोत्सवेऽष्टप्रकारी पूजा संपूर्णा ॥ १ ॥

॥ अथ ॥

## ॥ पंम्कितश्रीवीरविजयजीकृत द्वादशव्रत ॥

## ॥ पूजा प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ श्रावकगुणवर्णनकाव्यम् ॥

॥ उच्चैर्गुणैर्यस्य निबद्धमूलं ॥ सत्कीर्त्तिशाखाविन यादिपत्रः ॥ दानं फलं मार्ग्गणपक्षिनोजि ॥ जीयाच्चिरं श्रावककल्पवृक्षः ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुखकर शंखेश्वर प्रजु, प्रणमी शुजगुरु पाय ॥ शासननायक गायशुं, वर्द्धमान जिनराय ॥ १ ॥ समवसरण सुरवर रचे, वन महसेन मजार ॥ संघ चतुर्विध थापिने, जूतल करत विहार ॥ २ ॥ एक लख श्रावक व्रतधरा, उगण शाठ हजार ॥ सूत्रउपासके वर्णव्या, दश श्रावक शिरदार ॥ ३ ॥ प्रजुहाथे व्रत उच्चरी, बार तजी अतिचार ॥ गुरु वंदी जिननी करे, पूजा विविध प्रकार ॥ ४ ॥ मुनिमारग चिंतामणि, श्रावकसुरतरु साज ॥ बेहु बांधव गुणठाणमे,

राजाने युवराज ॥ ५ ॥ शिवमारग व्रतनो विधि, सातमा अंग मोझार ॥ पंचमआरे प्राणीने, सुणतां होय उपकार ॥ ६ ॥ तेणे कारण पूजा रचुं, अनुपम तेर प्रकार ॥ उतरवा भवजलनिधि, ए छे आरा बार ॥ ७ ॥ सुरतरु रूपानो करी, नील वरणमें पान ॥ रक्तवरण फल राजतां, वामदिशे तस ठाण ॥ ८ ॥ तेर तेर वस्तु शुचि, मेलविये नव रंग ॥ नर नारी कलशा भरी, तेर ठवो जिन अंग ॥९॥ न्हवण, विलेपन, वासनी;माल, दीप, धुप, फूल ॥ मंगल, अक्षत, दर्प्पणे; नैवेद्य, ध्वज, फलपूर ॥ १० ॥

॥ अथ ॥

## ॥ समकितारोपणे प्रथमजलपूजा प्रारंभः ॥

॥ ढाल ॥ रत्नमालानी ॥ प्रथम पूरवदिशे ॥ ए देशी ॥

॥ चतुर चंपापुरी, वनमांहे उतरी, सोहम जंबूने एम कहे ए ॥ वीरजिन विचरता, नवपुर आवता, वचन कुसुमे व्रत, महमहे ए ॥ १ ॥ शांत संवेगता, वसुमती योग्यता, समकित बीज आरोप कीजे ॥ सृष्टि ब्रह्मा तणी, विष्णु शंकर धणी, एक रखे एक संहरीजे ॥ २ ॥ गौरूप चाटणी, वाव्य

च, करीने पूजूं रे ॥ तोहे पेहेले व्रत अतिचार, थ की हुं धुजूं रे ॥ आ० ॥२॥ जीवहिंसानां पच्चरकाण, थूलथी करिये रे ॥ दुविहं तिविहेणं पाठ, सदा अनु सरिये रे॥ वासिवोलो विदल निशिज्ञक्त, हिंसा टालुं रे ॥ सवा विश्वा केरीजीव दया नित्य पालुं रे ॥ ॥ आ० ॥ ३ ॥ दश चंदरुआ दश ठाण, वांधीने र हिये रे ॥ जीव जाये एहवी वात, केहने न कहिये रे ॥ वध बंधनने छविछेद, भार न भरिये रे ॥ भात पा णीनो विछेद, पशुने न करिये रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ लौ किकदेव गुरु मिथ्यात्व, त्र्याशी भेदे रे ॥ तुज आगम सुणतां आज, होय विछेदे रे ॥ चोमासे पण बहु काज, जयणा पालुं रे ॥ पगले पगले महाराज, व्रत अजुवालुं रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ एक श्वासमांहे सोवार समरुं तुमने रे ॥ चंदनवाला ज्युं सार, आपो अमने रे ॥ माठी हरिवल फलदाय, ए व्रत पाली रे ॥ शुभ वीर चरण सुपसाय, नित्य दीवाली रे ॥ आ० ॥६॥

॥ काव्य ॥ श्रद्धासंयुत० ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ चंदनं य० ॥ स्वा० ॥

॥ इति प्रथमव्रते द्वितीयचंदनपूजा समाप्ता ॥ २ ॥

## ॥ अथ द्वितीयव्रते तृतीयवासपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ चूर्ण सरस कुसुमें करी, घसी केसर घनसार ॥
बहुल सुगंधिवासथी, पूजो जगत्‌दयाल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग भैरवी ॥ यमुनामां जाई पड्यो रे, बालक मेरो, यमुनामां जाई पड्यो ॥ ए देशी ॥

॥ मुक्तिसे जाई मल्यो रे, मोहन मेरो मुक्तिसे जाई मल्यो ॥ मोहसे क्युं न डस्यो रे ॥ मोहन० ॥ नाम करम निर्जरणा हेते, भक्तको भाव भर्यो रे ॥ मो० ॥ उपदेशी शिव मंदिर पहोते, तोसे बनाव ठर्यो रे ॥ मो० ॥१॥ आनंदादिक दश युं बोली, तुम कने व्रत उचर्यो रे ॥ मो० ॥ पांच मोटकां जूठ न बोले, मेंबी आश भर्यो रे ॥ मो० ॥ २ ॥ बीजुं व्रत धरी जूठ न बोलुं, पण अतिचारें डर्यो रे ॥ मो० ॥ वसुराजा आसनसें पडियो,नरकावास जर्यो रे ॥ मो० ॥३॥ मांसाहारी मातंगी बोले, भानु प्रश्न धर्यो रे ॥ मो० ॥ जूठा नर पग भूमिशोधन, जल छंटकाव कर्यो रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ मंत्रभेद रहनारी न कीजे, अछती आल हर्यो रे ॥ मो० ॥ कूट लेख मिथ्या उ

पदेशे, व्रतको पाणी ऊस्यो रे ॥ मो० ॥ ५ ॥ कमल शेठ ए व्रतसें सुखियो, जूठसें नंद कव्यो रे ॥ मो०॥ श्रीशुनवीर वचन परतीते, कल्पवृक्ष फव्यो रे॥ मो०

॥ काव्यं ॥ श्रद्धासंयुत० ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ वासं य० ॥ स्वा० ॥ इति द्वितीयव्रते तृतीयवासपूजा समाप्ता ॥ ३ ॥

## ॥ अथ तृतीयव्रतेचतुर्थपुष्पमालपूजाप्रारंन्नः ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुरतरु जायने केतकी, गुंथी फूलनी माल, त्रिशलानंदन पूजीये, वरिये शिव वरमाल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ हुंने अमारो हरजीवनजी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रनुकंठें ठवि फूलनी माला, थूलथकी व्रत उच्चरिये रे ॥ चित्त चोखे चोरी नवि करिये ॥ स्वामी अदत्त कदापि न लीजे, नेद अढार परिहरिये रे ॥ चित्त० ॥१॥ नवि करिये तो नवजल तरिये रे ॥ चित्त० ॥ ए आंकणी ॥ सातप्रकारे चोर कह्यो ठे, तृण तुषमात्र न कर धरिये रे ॥ चित्त० ॥ राजदंक उपजे ते चोरी, नावुं

पड्युं वली विसरियें रे ॥ चित्त० ॥ न० ॥२॥ कूडे तोले कूडे मापे, अतिचारे नवि अतिचरियें रे ॥ चित्त० ॥ आजव परजव चोरी करतां, वध बंधन जीवित हरियें रे ॥ चित्त० ॥ न० ॥३॥ चोरीनुं धन न ठरे घरमां, चोर सदा जूखे मरियें रे ॥ चित्त० ॥ चोरनो कोइ धणी नवि होवे, पासे बेठां पण डरियें रे ॥ चित्त० ॥ न० ॥४॥ परधन लेतां प्राणज लीधा, पंचेंद्रियहत्या वरियें रे ॥ चित्त०॥ व्रत धरतां जगमां जस उज्ज्वल, सुरलोके जइ अवतरियें रे ॥ चित्त० ॥ न० ॥ ५ ॥ तिहां पण सासय पडिमा पूजी, पुण्य तणी पोठी जरियें रे ॥ चित्त०॥ जलकलशा जरी जिनअजिषेके, कल्पतरु रूडो फलियें रे ॥ चित्त० ॥ न० ॥ ६ ॥ धनदत्त शेठ गयो सुरलोके, ए व्रतशाखा विस्तरियें रे ॥ चित्त० ॥ श्रीशुजवीर जिनेश्वर जक्ते, सासयसुख शिवमंदिरियें रे ॥ चित्त० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ श्रद्धासंयुत० ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ पुष्पमालां य० ॥ स्वा०॥

॥इति तृतीयव्रते चतुर्थपुष्पमालपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥

## ॥ अथ चतुर्थव्रते पंचमदीपकपूजा प्रारंज्ञः ॥

॥ दोहा ॥

॥ चोथुं व्रत हवे वरणवुं, दीपक सम जस ज्योत, केवल दीपक कारणे, दीपकनो उद्योत ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ वृंदावनना वासी रे, विठला तें मुजने विसारी ॥ ए देशी ॥

॥ ए व्रत जगमां दीवो मेरे प्यारे, ए व्रत जगमां दीवो ॥ टेक ॥ परमातम पूजीने विधिशुं, गुरु आगल व्रत लीजे ॥ अतिचार पण दूर करीने, परदारा दूर कीजे ॥ मेरे० ॥ निजनारी संतोषी श्रावक, अणुव्रत चोथुं पाले ॥ देव तिरी नर नारी नजरे, रूप रंग नवि धारे ॥मेरे०॥१॥ व्रतने पीडा कामनी क्रीडा, दुरगंधा जे वाली ॥ नासाविण नारी पण रागे, पंचासकमां टाली ॥ मेरे० ॥ विधवा नारी वाल कुमारी, वेश्या पण परजाती ॥ रंगे राती दुर्बल गाती, नरमारण ए काती ॥ मेरे० ॥२॥ परनारीहते श्रावकने, नव वाड्यो निरधारी ॥ नारायण चेडा महाराजे, कन्यादान निवारी ॥ मेरे० ॥ ज्ञरतरायने राज जलावी, राम रह्या वनवासे ॥ खरदूषण नारी सविकारी, देखी न

पड्या पासे ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ दश शिर रावण रणमां रो
ळ्यो, सीता सतीमां मोटी ॥ सर्व थकी जो ब्रह्मव्रत
पाले, नावे दान हेम कोटि॥मेरे०॥वैतरणीनी वेदना
मांहे, व्रत भांगे ते पेसे ॥ विरतिने प्रणाम करीने,
इंद्र सभामां बेसे ॥मेरे०॥४॥ मदिरा मांसथी वेदपुरा
णे, पाप घणुं परदारा ॥ विषकन्या रंडा पण अंधा,
व्रतभंजक अवतारा ॥ मेरे० ॥ व्रत संभाळे पाप प
खाळे, सुर तस वांछित साधे॥कल्पतरु फळदायक ए
व्रत, जग जश कीरति वाधे ॥ मेरे० ॥ ५ ॥ दशमे
अंगे बत्रीश उपम, शीलवती व्रत पाळी ॥ नाथ नि
हाळी चरणे आयो, नेह नजर तुम भाळी ॥ मेरे० ॥
हाथी मुखसे दाणो निकसे, कीडी कुटुंब सहु खावे
॥ श्रीशुभवीर जिनेश्वर साहेब, शोभा अम शिर
पावे ॥ मेरे० ॥ ६ ॥

॥ काव्यं ॥ श्रद्धासंयुत० ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ दीपं य० ॥ स्वा० ॥

॥ इतिचतुर्थव्रते पंचमदीपकपूजा समाप्ता ॥ ५ ॥

## ॥ अथ पंचमव्रते षष्ठधूपपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अणुव्रत पंचम आदरी, पांच तजी अतिचार ॥
जिनवर धूपे पूजीये, त्रिशला मात मल्हार ॥ १ ॥
॥ ढाल ॥ मारी अंबाना मांकवडा हेठ ॥ ए देशी ॥
॥मनमोहनजी जगतात, वात सुणो जिनराजजी रे ॥
नवि मलियो आ संसार,तुम सरीखो रे श्रीनाथजी रे
॥ ए आंकणी ॥ कृष्णागरु धूप दशांग, उखेवी करुं वि
नति रे ॥ तृष्णातरुणी रसलीन, हुं रझल्यो रे चारे
गति रे ॥ तिर्यंच् तरुनां मूल, राखी रह्यो धन उपरे
रे ॥ पंचेंद्रि फणीधररूप, धन देखी ममता करे रे
॥ मन० ॥ १ ॥ सुर लोभी छे संसार, संसारी धन सं
हरे रे ॥ त्रीजे भव समरादित्य, साधु चरित्रने सां
भले रे ॥ नरभवमांहे धनकाज, झाझ चढ्यो रण
मां रड्यो रे ॥ नीचसेवा मूकी लाज, राज्यरसे रण
मां पड्यो रे ॥ मन० ॥ २ ॥ संसारमांहे एक सार,
जाणी कंचन कामनी रे ॥ न गणी जपमाला एक
नाथ निरंजन नामनी रे ॥ भाग्ये मलिया भगवंत,

अवसर पामी व्रत आदरुं रे ॥ गयो नरके मम्मण शेठ, सांभली लोभथी उंसरुं रे ॥ ३ ॥ नवविध परिग्रह परिमाण, आणंदादिकनी परें रे ॥ अथवा इछा परिमाण, धण धन्नादिक उच्चरे रे ॥ वली सामान्ये षट् भेद, उत्तर चोशठ दाखिया रे ॥ दश वैकालिक निर्युक्ति, भद्रबाहु गुरु भांखिया रे ॥ मन० ॥ ४ ॥ परिमाणथी अधिकुं होय, तो तीरथे जइ वावरो रे ॥ रोकाये भवनुं पाप, छाप खरी जिननी धरो रे ॥ धन शेठ धरी धनमान, चित्रावेलीने परिहरी रे॥ शुभवीर प्रभुने ध्यान, संतोषे शिवसुंदरी रे ॥ मन० ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ श्रद्धासंयुत० ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ धूपं य० ॥ स्वा० ॥ इति पंचमव्रते षष्ठधूपपूजा समाप्ता ॥ ६ ॥

## ॥ अथ षष्ठव्रते सप्तमपुष्पपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ फूल अमुलक मेघ ज्युं, वरसावी जिनअंग ॥
गुणव्रत त्रण्ये तेहमां, दिशि परिमाणने रंग ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग सारंग ॥ दायक दिल वसिया ॥ ए देशी ॥

॥ समवसरण सुरवर रचे रे, पूजाफल अशेष ॥ साहिब शिव वसिया ॥ रायपसेणी सूत्रमां रे, करे सुरियाज्ञ विशेष ॥ साहि० ॥१॥ पूज्यनी पूजा तेम करीरे, करुं आशा परिमाण ॥सा०॥ चार दिशा विमलातमा रे, हिंसाये पच्चरकाण ॥ सा० ॥ २ ॥ आश करुं अरिहा तणी रे, पंच तजी अतिचार ॥ सा० ॥ तुम सरिखो दीठो नहिं रे, जगमां देव दयाल ॥ सा० ॥ ३ ॥ वरसी वरस्या ते समे रे, विप्र गयो परदेश ॥सा०॥ संयम लेइ सुखियो कर्यो रे, लाखिणो देइ खेस ॥ सा० ॥४ ॥ हुं पण ते दिन केइ गति रे, केवली जब जिनराज ॥ सा० ॥ शासन देखी ताहरुं रे, आव्यो तुम शिर लाज ॥सा०॥५॥ ए व्रतथी शिव सुख लहुं रे, जेम महानंद कुमार ॥ सा० ॥ श्रीशुभवीर जिनेश्वरू रे, अमने पण आधार ॥ सा० ॥६॥

॥ काव्यं ॥ श्रद्धासंयुत० ॥ १ ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम ॥ पुष्पाणि य० ॥ स्वा० ॥

॥ इति षष्ठव्रते सप्तमपुष्पपूजा समाप्ता ॥ ७ ॥

## ॥ अथ सप्तमव्रते अष्टमाष्टमांगलिक पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अष्ट मंगलनी पूजना, करिये करि प्रणाम ॥ आठमी पूजायें नमो, भावमंगल जिननाम ॥१॥ उपभोगें परिभोगथी, सप्तम व्रत उच्चार ॥ बीजुं गुण व्रत एहमां, विश तजो अतिचार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ सुतारीना बेटा तुने वीनवुं रे लो ॥

॥ ए देशी ॥

॥ व्रत सातमे विरति आदरुं रे लो, करो साहेब जो मुज मेहेर जो ॥ तुज आगम आरीसो जोवतां रे लो, दूर दीठुंछे शिवपुर सहेर जो ॥१॥ मने संसारशेरी वीसरी रे लो, जिहां बार पाम्रोसी चारु जो॥नित्य रेहेवुं ने नित्य वढवारु जो ॥मने०॥ ए आंकणी॥ फल तं बोल अन्न उपभोगमां रे लो, घर नारी चीवर परिभोग जो ॥ करी मान नमुं नित्य नाथने रे लो, जेथी जाए भवोभव शोक जो ॥ मने० ॥ २ ॥ प्रभुपूजा रचुं अठमंगले रे लो, परहांसी तजी अति रोष जो ॥ अति उद्भटवेश न पेहेरिये रे लो, नवि धरिये मलिन

ता वेश जो ॥ मने० ॥ ३ ॥ चार मोटी विगय करी वेगली रे लो, दश बार अभक्ष्य निवार जो॥ तिहां रात्रिभोजन करतां थकां रे लो, मांजार घुअम अवतार जो ॥ मने० ॥४ ॥ छले राक्षस व्यंतर भूतडां रे लो; केश, कंटक, जू नो विकार जो॥ त्रण्य मित्रचरित्रनें सांभली रे लो, करो रात्रीभोजन चोविहार जो॥ मने०॥ ॥ ५ ॥ गामां वहेल वेचे भाडां करे रे लो, अंगारकरम वनकर्म जो ॥ सरकूप उपल खणतां थकां रे लो, नवि रहे श्रावकनो धर्म जो ॥ मने०॥६॥ विष, शस्त्र, वेपार दांत, लाखनो रे लो; रस, केश, निलंछन कर्म जो ॥ शुक, मेनां न पालिये पांजरे रे लो, वनदाहे दहे शिवशर्म जो ॥ मने० ॥७॥ यंत्रपीलण, रस नवि शोषीये रे लो, तेणे करजो मया महाराज जो ॥ नहिं खोट खजाने दीजीये रे लो, शिवराज वधारी लाज जो ॥ मने० ॥८॥ राजमंत्री सुता फल पामती रे लो, व्रतसाधक बाधक टाल जो ॥ शुभवीर प्रभुना नामथी रे लो, नित्य पामिये मंगलमाल जो ॥ मने० ॥ ए ॥

॥ काव्यं ॥ श्रद्धासंयुत० ॥ १ ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम०॥अष्टमंगलानि य० ॥स्वा०॥

॥इति सप्तमव्रते अष्टमाष्टमांगलिकपूजा समाप्ता ॥८॥

## ॥ अथाष्टमव्रते नवमाक्षतपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ दंडाये विणहेतुये, वलगे पाप प्रचंड ॥ प्रभु पूजी व्रतकारणे, ते कहुं अनरथ दंड ॥ १ ॥ स्वजन शरीरने कारणे, पापे पेट जराय ॥ ते नवि अनरथ दंड छे, एम भांखे जिनराय ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ वेगलो रहे वरणागीया ॥ ए देशी ॥

॥ अनेक नजर करो नाथजी, जेम जाये दालिदर आजथी जी हो ॥नेक०॥ अमे अक्षत उज्ज्वल तंदुले, करी पूजा कहुं जिनआगले जी हो ॥ने०॥ आवी पोहोतो हुं पंचम कालमां, संसार दावानल जालमां जी हो ॥ ने० ॥१॥ ध्यान आरत रौद्रे मंडियो, गाम गाम अनर्थे दंडियो जी हो॥ने०॥उपदेश में पापनो दाखियो, कूडी वाते थयो हुं साखियो जी हो ॥ ने० ॥२॥ आरंभ कस्या घणी जातिना, में युद्ध कस्यां केइ जातिनां जी हो ॥ने०॥ रथ मूशल माग्यां आपियां, जतां पंथे ते तरुवर चांपियां जी हो॥ने०॥३॥ वलि वादे ते वृषभ दोडावियां, करी वातोने लोक लडावियां जी हो ॥ने०॥ चार विकथाये पुण्यधन हारि

यो, जेम अनीतिपुरें व्यवहारियो जी हो ॥ ने० ॥ ॥ ४ ॥ तिहां चार धूतारा वाणिया, भरे पेट ते पापें प्राणिया जी हो ॥ ने० ॥ रण घंटा वचन जो पाली युं, तो रत्नचूडें धन वालियुं जी हो ॥ ने० ॥ ५ ॥ ते म अरिहानी आणा पालशुं, व्रत लेइने पाप पखा लशुं जी हो ॥ने०॥ अतिचार ते पांच निवारशुं, गु रुशिक्षा ते दिलमां धारशुं जी हो ॥ ने० ॥ ६ ॥ वीर सेन कुसुमसिरि दो जणा, व्रत पाली थयां सुखियां घणां जी हो ॥ ने० ॥ अमें पामिये लीलविलासने, शुभवीर प्रभुने सासनें जी हो ॥ ने० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ श्रद्धासंयुत० ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ अक्षतान् य० ॥ स्वा० ॥

इत्यष्टमव्रते नवमाक्षतपूजा समाप्ता ॥ ए ॥

## ॥ अथ नवमव्रते दशमदर्प्पणपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ दशमी दर्प्पणपूजना, धरी जिन आगल सार ॥
आतमरूप निहालिने, कहुं शिक्षाव्रत चार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सुण गोवालणी ॥ ए देशी ॥

॥ हेसुखकारी! आसंसार थकी जो मुजने उद्धरे ॥ हे उपकारी! ए उपकार तुमारो कदिय न वीसरे ॥एटेक॥नवमे सामायिक उच्चरियें,अमे दर्प्पणनी पूजा करियें ॥ निज आतमरूप अनुसरियें, समता सामायिक संवरियें ॥ हेसु० ॥१॥ सामान्ये जिहां मुनिवर न्हाले, अतिचार पांच एहना टाले ॥ साधुपरें जीवदया पाले, निजघर चैत्ये पोषधशाले ॥ हे० ॥ २ ॥ राजा मंत्रीने व्यवहारी, घोडा रथ हाथी शणगारी॥ वाजित्र गीत आगल पाला, परशंसे षट्दरशनवाला ॥ हे० ॥ ३ ॥ एणी रीते गुरुपासे आवी, करे सामायिक समता लावी ॥ घरमी बे सामायिक उचरियें, वली बत्रीश दोषने परिहरियें ॥ हे० ॥ ४ ॥ लाख उंगणशाठ बाणुं कोडी, पचवीश सहस नवशे जोडी॥ पचवीश पल्योपम झामेरूं, ते बांधे आयु सुरकेरूं ॥ ॥ हे० ॥ ५ ॥ सामायिक व्रतपाली युगते, ते नव धनमित्र गयो मुगते ॥ आगमरीते व्रत हुं पालुं, पंचम गुणठाणुं अजुवालुं॥हे०॥६॥ तुम्हे ध्येयरूप ध्याने आवो, शुभवीर प्रभु करुणा लावो ॥ नहीं वार अचल सुख साधंते, घडी दोय मलो जो एकांतें ॥ हे० ॥७॥

॥ काव्यं ॥ श्रद्धासंयुत० ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ दर्प्पणं य० ॥ स्वा० ॥

॥इति नवमसामायिकव्रते दशमदर्प्पणपूजा समाप्ता॥

## ॥ अथ दशमव्रते एकादशनैवेद्य ॥

## ॥ पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ विग्रहगति दूरे करी, आपो पद अणाहार ॥
इम कही जिनवर पूजीये, ठवी नैवेद्य रसाल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ तेजे तरणीथी वडो रे ॥ ए देशी ॥

॥ दशमे देशावकाशिके रे, चउद नियम संखेप ॥
विस्तारे प्रभु पूजतां रे, न रहे कर्मनो लेप हो जिनजी
॥१॥ भक्ति सुधारस घोलनो रे, रंग बन्यो हे चोल
नो रे, पलक न छोड्यो जाय ॥ ए आंकणी ॥ एक
मुहूरत दिन रातिनुं रे, पक्ष मास परिमाण ॥ संव
त्सर इछा लगे रे, ते रीते पच्चरकाण हो जिनजी ॥
भक्ति० ॥२॥ बारे व्रतना नियमनो रे, संक्षेप एह
मां थाय ॥ मंत्रवदे जेम वींछिनुं रे, झेर ते डंके जा

य हो जिनजी ॥ भक्ति० ॥३॥ गंठसी घरसी दीपसि रे, एहमां सर्व समाय॥ दीपक ज्योते देखतां रे, चंदविंसगराय हो जिनजी ॥ भक्ति० ॥४॥ पण अतिचार निवारिने रे, धनद गयो शिवगेह॥श्रीशुभवीरशुं माहरे रे, साचो धर्मसनेह हो जिनजी ॥भक्ति०॥५॥

॥ काव्यं ॥ श्रद्धासंयुत० ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम०॥ नैवेद्यं य०॥ स्वा०॥ इति दशमदेशावकाशिकव्रते एकादशनैवेद्यपूजा समाप्ता॥

## ॥ अथ एकादशव्रते द्वादशध्वजपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ पडह वजावी अमारिनो, ध्वज बांधो शुभध्यान ॥ पोसह व्रत अगियारमे, ध्वजपूजा सुविधान॥१॥

॥ ढाल ॥ वगडानो वासी रे मोर शिद मारियो ॥

॥ ए देशी ॥

॥ प्रभुपडिमा पूजीने पोसह करिये रे, वातने विसारी रे विकथाचारनी ॥ प्राये सुरगति साधे पर्वने दिवसे रे, धर्मनी छाया रे तरु सहकारनी॥शीतल

नहिं गया रे आ संसारनी ॥ कूडी छे माया रे आ संसारनी ॥ काचनी काया रे छेवट गरनी ॥ साची एक माया रे जिन अणगारनी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ एंशी भांगें देशथकी जे पोसह रे, एकासण कह्युं रे श्रीसिद्धांतमें ॥ निजघर जइने जयणामंगल बोली रे, भाजनमुख पूंजी रे शब्दविना जमे ॥ शीतल० ॥ ॥ कू० ॥ का० साची० ॥ २ ॥ सर्वथी आठ पहोरनो चउविहार रे, संथारो निशि रे कंबल भाभनो ॥ पांचे परवी गौतम गणधर बोल्या रे, पूरव आंक तीस गुणो छे लाभनो ॥ शी० ॥ कू० ॥ का० ॥ सा० ॥३॥ कार्त्तिकशेठे पाम्यो हरिअवतार रे, श्रावक दश वीश वरसे स्वरगे गया ॥ प्रेतकुमार विराधकभावने पाम्यो रे, देवकुमार व्रत रे आराधक थया ॥ शी० ॥ कू०॥ ॥ का० ॥ सा० ॥ ४ ॥ पण अतिचार तजी जिनजी व्रत पाळुं रे, तारक नाम साचुं रे जो मुज तारशो॥ नाम धरावो निर्यामक जो नाथ रे, भवोदधि पारे रे तो उतारशो ॥ शी० ॥ कू० ॥ ॥ का० ॥ सा० ॥ ॥ ५ ॥ सुलसादिक नव जणने जिनपद दीधां रे,कर मे ते वेला रे वसियो वेगलो ॥ शासन दीठुं न वली लागुं मीठुं रे, आशाभर आव्यो रे स्वामी एकलो

॥ शी० ॥ कू० ॥ का० ॥ सा० ॥६॥ दायक नाम ध रावो तो सुख आपो रे, सुरतरुनी आगे रे शी बहु मागणी ॥ श्रीशुभवीर प्रभुजी मोंघे काले रे, दियंतां दान रे शाबासी घणी ॥शी०॥ कू० ॥का० ॥सा०॥७॥

॥ काव्यं ॥ श्रद्धासंयुत० ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्र ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ ध्व० य० ॥ स्वा० ॥

॥ इति एकादशव्रते द्वादशध्वजपूजा समाप्ता॥ १२ ॥

## ॥ अथ द्वादशव्रते त्रयोदशफलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अतिथि कह्या अणगारने, संविभाग व्रत तास, फलपूजा करि तेरमी, मागो फल प्रभुपास ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ भमरा ! भूधर शें नाव्या ॥ ए देशी ॥

॥ उत्तम फल पूजा कीजे, मुनिने दान सदा दीजे, बारमे व्रत लाहो लीजे रे ॥ श्रावकव्रत सुरतरु फलियो ॥ मनमोहन मेलो मलियो रे ॥ श्रावक० ॥ ॥१॥ ए आंकणी ॥ देश काल श्रद्धा क्रमिये, उत्तर पारणे दान दिये, तेहमां पण नवि अतिचरियें रे

॥ श्रा० ॥ २ ॥ विनति करी मुनिने लावे, मुनि वेस ण आसण ठावे, पडिलाभे पोते भावे रे ॥ श्रा० ॥ ॥३॥ दश रूगलां पूर्वे जावे, मुनिदानें जे नवि आवे, व्रत धारी ते नवि खावे रे ॥ श्रा० ॥४॥ मुनि अठते जमे दिशि देखी, पोसह पारणविधि भाखी, धर्मदा स गणी छे साखी रे ॥ श्रा० ॥ ५ ॥ एकादश पडि मा वहिया, सुरउपसर्गें नवि पडिया, कामदेवप्रभु मुख चडिया रे ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ गुणकर शेठ गया मु क्ते, हुं पण पालुं ए युक्ते, श्रीशुभवीर प्रभु भक्ते रे ॥ श्रा० ॥ ७ ॥

## ॥ अथ सर्वोपरि गीतं ॥

॥ निशिदिन जोउं वाटडी, घेर आवोढोला ॥

॥ ए देशी ॥

॥ विरतिपणे हुं वीनवुं, प्रभु अम घर आवो ॥ सेवक स्वामीभावथी, नथी कोइनो दावो ॥ वि० ॥ ॥१॥ लीलविलासी मुक्तिना, मुज तेह देखावो ॥ म न मेलो मेली करी, फोकट ललचावो ॥ वि० ॥ २ ॥ रंग रसीला रीझीने, त्रिशलासुत आवो ॥ थाये सेव क तुम आवते, चउद राजमां चावो ॥ वि० ॥ ३ ॥

पंचवचे प्रभुजी मल्या, हजु अरधे जावो ॥ निर्जय निजपुर पामतां, प्रभु पाको वोलावो ॥ वि० ॥ ४ ॥ श्रेणि चढी शैलेशिये, परिशाटन भावो ॥ एकसमय शिवमंदिरे, ज्योते ज्योति मिलावो ॥ वि० ॥ ५ ॥ नाटक दुनियां देखते, नवि होय अभावो ॥ श्रीशु भवीरने पूजतां, घेर घेर वधावो ॥ वि० ॥ ६ ॥

॥ काव्य ॥ श्रद्धासंयुत० ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ फलं य० ॥ स्वा० ॥

॥ इति द्वादशव्रते त्रयोदशफलपूजा समाप्ता ॥ १३ ॥

## ॥ अथ कलश ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ गायो गायो रे, महावीर जिनेश्वर गायो ॥ वीरमुखे व्रत उच्चरियां जेम, नर नारी समुदायो, एकशो चोवीश अतिचार प्रमाणे, गाथाये भाव ब नायो रे ॥ महा० ॥ १ ॥ व्रतधारीने पूजानो विधि, गणधर सूत्र गुंथायो ॥ निर्जय दावे शिव पुर जावे, जेम जगमाल ठपायो रे ॥ महा० ॥ २ ॥ तपगच्छश्री विजयसिंहसूरिना, सत्यविजय सत्य पायो ॥ कपूर

विजय गुरु खिमाविजय तस, जसविजयो मुनिरायो रे ॥ महा० ॥३॥ श्रीशुभविजय सुगुरु सुपसाये, श्रुत चिंतामणि पायो ॥ विजयदेवेंद्र सूरीश्वरराज्ये, ए अधिकार रचायो रे ॥ महा० ॥ ४ ॥ कष्ट निवारे वंछित सारे,मधुरे कंठे मिलायो ॥ राज नगरमां पूजा भणावी, घर घर उत्सव थायो रे ॥ महा० ॥५॥ मुनि वसु नाग शशी संवत्सर, ( १८८७ ) दीवालीदिन गायो ॥ पंडित वीरविजय प्रभुध्याने, जगजस पडह वजायो रे ॥ महा० ॥ ६ ॥

॥ इति पंडितश्री वीरविजयजीकृत
द्वादशव्रतपूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ ॥

## ॥ पंमितश्रीवीरविजयजीकृत पिस्तालीश ॥
## आगमनी अष्टप्रकारी पूजाप्रारंभः ॥

॥ तत्र ॥

## ॥ प्रथमजलपूजा प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीशंखेश्वर पासजी, साहेब सुगुणगरिठ ॥ शुभगुरु चरण पसायथी, श्रुतनिधि नजरे दीठ ॥१॥ शासननायक वंदिये, त्रिशलामात मल्हार ॥ जस मुखथी त्रिपदी लही, सूत्र रचे गणधार ॥ २ ॥ सुधर्मा गणधर तणी, रचना वरते सोय ॥ द्वादश अंगथकी अधिक, सूत्र नहीं जग कोय ॥ ३ ॥ आगे आगम बहु हतां, अर्थविदित जगदीश ॥ कालवशे संप्रति रह्यां, आगम पिस्तालिश ॥ ४ ॥ आथमते केवल रवि, मंदिरदीपक ज्योत ॥ पंचम आरे प्राणीने आगमनो उद्योत ॥५॥ प्रथम ज्ञान पछी दया, दशवैकालिक वाण ॥ वस्तुतत्त्व सवि जाणिये, ज्ञानथी पद निर्वाण ॥ ६ ॥ ज्ञान भक्ति करतां थकां, पूज्य

जिनअणगार ॥ ते कारण आगम तणी, पूजा भक्ति विशाल ॥ ७ ॥ ज्ञानोपकरण मेलिये, पुस्तक आगल सार ॥ पीठ रची जिनबिंबने, थापीजे मनोहार ॥८॥ ज्ञानउदय अरिहा तणी, सांभली देशना सार ॥ देव देवी नंदीश्वरे, पूजा विविध प्रकार ॥९॥ तेम आगम हैडे धरी, पूजो श्रीजिनचंद ॥ ध्येय ध्यान पद एकथी, पामो पद महानंद ॥ १० ॥ न्हवण, विलेपन, कुसुमनी, धूंप, दीप झलकार ॥ अक्षत, नैवेद्य, फल तणी, पूजा अष्टप्रकार ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ अने हां रे वहालोजी वाये छे वांसली रे ॥ ए देशी ॥

॥ अने हां रे गंगा क्षीरसमुद्रनां रे, जलकलश भरि नर नारि ॥ ज्ञाने वक्षा श्रुतकेवली रे ॥ अ० ॥ न्हवण करो प्रभु वीरने रे, दृष्टिवादना भाषण हार ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ अ० ॥ पांचे भेद छे तेहना रे, सांभलतां विकसे नाण ॥ ज्ञा० ॥ अ० ॥ परिकरमे सात श्रेणियो रे, अठ्याशी सूत्र वखाण ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ ॥ अ० ॥ पूर्वगते चउद पूर्व छे रे, महामंत्रने विद्या भरेल ॥ ज्ञा० ॥ अ० ॥ जंबूवेलंधर देवता रे, धरे पूर्व समुद्रनी वेल ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ अ० ॥ दश वस्तु

विनयी जाण्यां रे, पहेले पूरव उत्पाद ॥ ज्ञा० ॥ ॥ अ० ॥ वस्तु चउद अग्रायणी रे, अड वस्तु वीर्यप्रवाद ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ अ० ॥ अस्तिप्रवादे अढार छे रे, बार वस्तु ज्ञानप्रवाद ॥ ज्ञा० ॥ अ० ॥ सत्यप्रवादे दोय वस्तु छे रे, शोल वस्तु आत्मप्रवाद ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ अ० ॥ कर्मप्रवादे त्रीश धारिये रे, विश वस्तु पूरव पच्चरकाण ॥ ज्ञा० ॥ अ० ॥ पन्नर विद्या प्रवादमां रे, बार वस्तु कही कल्याण॥ज्ञा० ॥ ॥६॥ अ० ॥ प्राणावायमां तेर छे रे, त्रीश वस्तु क्रिया विशाल ॥ ज्ञा० ॥ अ० ॥ पणवीशे करी सोहतुं रे, चउदमुं लोकबिंदुसार ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ अ० ॥ पुंज मशी लखे त्रणशे रे, त्र्याशी गज शोल हजार ॥ ज्ञा० ॥ अ० ॥ श्रीशुजवीरना गणधरु रे, रचतां त्रीजो अधिकार ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दश पूरवपूरण जणे, लब्धिक्षीराश्रव होय ॥
तेणे जिनकल्प निवारियो, ज्ञानसमो नहिं कोय॥१॥

॥ अथ गीतं ॥ मनमोहन मेरे ॥ ए देशी ॥

॥ जेद चोथो हवे सांजलो ॥ मनमोहन मेरे ॥ द

ष्टि वाद अनुयोग ॥ म० ॥ दोय भेदे करी शीखियो ॥ म० ॥ जंबूगुरु संयोग ॥ म० ॥ १ ॥ पंचमभेदे चूलिका ॥ म० ॥ पहेले पूर्वे चार ॥ म० ॥ बारने आठ दश चूलिका ॥ म०॥ चोथा पूरव लगे सार ॥ म० ॥२॥ दश पूरवे नथी चूलिका ॥ म० ॥ नंदीसूत्र विचार ॥ म० ॥ दृष्टिवाद ए बारमुं ॥ म० ॥ अंग हतुं सुखकार ॥ म० ॥३॥ बार वरस डुकालिये ॥ म० ॥ बारमुं अंग ते लीध ॥ म० ॥ संप्रतिकाले नवि पडे ॥ म० ॥ एहवो काल प्रसिद्ध ॥ म० ॥ ४॥ मंदमति परमादथी ॥ म० ॥ पूर्व गयां अविलंब ॥ म०॥ श्री शुभवीरने शासने ॥ म० ॥ पूजो आगम जिन बिंब ॥ म० ॥ ५ ॥ इति प्रथमजलपूजा समाप्ता ॥ १ ॥

## ॥ अथ द्वितीयचंदनपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे पिस्तालीश वरणवुं, कलियुगमां आधार॥
आगम अगम अरथ भर्यां, तेहमां अंग अग्यार॥१॥

॥ ढाल ॥ श्मनरागिणी,धनधन जिनवाणी॥ए देशी॥

॥ चंदनपूजा चतुर रचावो, नागकेतु परें भावो १ ॥ धन धन जिनवाणी ॥ राय उदाइ प्रभुगुण गावे,

पद्मावतीने नचावे रे ॥ ध० ॥ १ ॥ काल सदा जे अरिहा थावे, केवल नाण उपावे रे ॥ ध० ॥ आचारांग प्रथम उपदेशे, नामनी भजनाशेषे रे ॥ ध० ॥ २ ॥ आचार रथ वेहेता मुनि धोरी, बहुश्रुत हाथमां दोरी रे ॥ ध० ॥ पंच प्रकारे आचार वखाणे, गलिया बलद केम ताणे रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ दो श्रुत खंध आचारांग केरा, संखित अणुजंगदारा रे ॥ ध० ॥ संख्याती निर्युक्ति कहीश, अध्ययणा पणवीश रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ पदनी संख्या सहस अढार, नित्य गणता अणगार रे ॥ ध० ॥ सूत्रकृतांगे भावजीवादि, त्रणशे त्रेशठ वादी रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ अध्ययन ते त्रेवीश छे बीजे, अवर पूरव परेलीजे रे ॥ ध० ॥ डुगुणां पद हवे सघले अंगे, दशठाणा ठाणांगे रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ दश अध्ययने श्रुत खंध एको, हवे सम वायांग छेको रे ॥ ध० ॥ शत समवाय श्रुतखंध एकें, धारिये अर्थ विवेके रे ॥ ध० ॥ ७ ॥ भगवती पंच मुं अंग विशेषा, दश हजार उद्देशा रे ॥ध०॥ एकता लीश शतके शुभवीरे, गौतम प्रश्न हजूरे रे ॥ध०॥८॥

॥ निर्युक्ति प्रतिपत्तियो, सघले ते समभाव ॥ बीजी अर्थप्ररूपणा, ते सवि जुजुआ भाव ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥ ऊंबखमानी देशी ॥

॥ ज्ञाताधर्म वखाणीये रे,दश बोल्या तिहां वर्ग॥ प्रभु उपदेशिया ॥ ऊंठ ते कोमी कथा कही रे, सांभलतां अपवर्ग ॥ प्र० ॥ १ ॥ उंगणीश अध्ययने करी रे, बे श्रुत खंध सुभाव ॥ प्र० ॥ उपासकदशांग मां रे, दश श्रावकना भाव ॥ प्र० ॥ २ ॥ अंतगडे अड वर्ग छे रे, अणुत्तरोववाई त्रण वर्ग्ग ॥ प्र० ॥ एकसूत्रे मुक्ति वस्या रे, बीजे गया जे सर्ग्ग ॥प्र० ॥ ३ ॥ प्रश्नव्याकरण सूत्रमां रे, दश अध्ययन व खाण ॥ प्र० ॥ सूत्रविपाके सांभलो रे, विश अध्य यन प्रमाण ॥ प्र० ॥ ४ ॥ बे श्रुतखंधें भाखिया रे, डुःखसुखकेरा भोग ॥ प्र० ॥ एम एकादश अंगनी रे, भक्ति करो गुरुयोग ॥ प्र० ॥ ५ ॥ आगमने अव लंबतां रे, उंलखिये अरिहंत ॥ प्र० ॥ श्रीशुभवी रने पूजतां रे, पामो सुख अनंत ॥ प्र० ॥ ६ ॥ इति द्वितीयचंदनपूजा समाप्ता ॥ २ ॥

## ॥ अथ तृतीयपुष्पपूजा प्रारंभः ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ अंग तणां उपांग जे, बारे कह्यां भगवंत ॥
गणधर पूरवधर तणी, रचना सुणिये संत ॥ १ ॥

### ॥ ढाल ॥ राग सारंग ॥ हो धन्ना ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानावरण दूरे करो रे मित्ता, पामी अंग उपांग ॥ फूल पगर पूजा रचो रे मित्ता, वीरजिनेश्वर अंग रे, रंगीला मित्ता ॥ ए प्रभु सेवोने ॥ ए प्रभु सेवो शांनमां रे मित्ता, ज्ञान लहो भरपूर रे, रंगीला मित्ता॥ए प्रभु सेवोने ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सामइयुं उववाईमां रे मित्ता, करतो कोणिक भूप ॥ अंबड शिष्यने वरणव्या रे मित्ता, प्रश्न ते सिद्ध स्वरूप रे, रंगीला मित्ता ॥ ए प्र० ॥ २ ॥ रायपसेणि सूत्रमां रे मित्ता, सूर्याभनो अधिकार ॥ जीवाभिग मत्रीजुं सुणो रेमित्ता, दश अध्ययन विचार रे ॥ रंगीला मित्ता ॥ए० ॥ ३ ॥ श्यामसूरी रचना करी रे मित्ता, पन्नवणा महासूत्र ॥ छत्रीश पद गुरुपासथी रे मित्ता, धारो अर्थ विचित्र रे ॥ रंगीला मित्ता ॥ ए० ॥ ४ ॥ जंबूदीवपन्नत्तिये रे मित्ता,

द्वीप विचार ॥ छठ्ठा सूरपन्नत्तीमां रे मित्ता, रविमं
डल ग्रह चार रे ॥ रंगीला मित्ता ॥ ए० ॥ ५ ॥
चंदपन्नत्ती पाहुडे रे मित्ता, ज्योतिषचक्र विशेष ॥
आगम पूजो प्राणिया रे मित्ता, कहे शुभवीर जिने
श रे ॥ रंगीला मित्ता ॥ ए० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ भवमंडलमें न देखियो, प्रभुजीनो देदार ॥ आ
गमपंथ लह्याविना, रझ्यो हुं संसार ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥ वीर जिणंद जगत् उपकारी ॥

॥ ए देशी ॥

॥ केतकी जायनां फूल मगावी, पूजो अंग उपां
गजी ॥ बंभी लीपी श्रीगणधरदेवें, प्रणमी भगवइ
अंग जी ॥ केत० ॥ १ ॥ आठमु निरयावलि उपांगे,
देवादिक अधिकारजी ॥ कप्पवडंसग नवम उपांगे,
दश अध्ययन उदारजी ॥ केत० ॥ २ ॥ पुप्फिया
नामे उपांग छे दशमुं, वली पुप्फचूलिया जा
णजी ॥ बारमुं वन्हिदशाये सघले, दश अध्य
यन प्रमाणजी ॥ केत० ॥ ३ ॥ गीतारथ
मुख अमीय झरतुं, आगम लाग्युं मीठ जी ॥
दूर थइ लोकसन्नाछारी, तव प्रभुदर्शन दीठजी

॥ केत० ॥ ४ ॥ दर्शनथी जो दर्शन प्रगटे, वि घटे नवजल पूरजी ॥ नावकुटुंबमे मंदिर महालुं, श्री शुभवीर हजूरजी ॥ केत० ॥ ५ ॥ इति तृतीय पुष्पपूजा समाप्ता ॥ ३ ॥

## ॥ अथचतुर्थधूपपूजाप्रारंभः॥

॥ दोहा ॥

॥ आज पयन्ना छे घणां, पण लही एक अधि कार, दशपयन्ना तेणे गण्यां, पिस्तालीश मझार ॥१॥

॥ ढाल ॥ साचुं बोलो शामलिया ॥ ए देशी ॥

॥ एक जन श्रुत रसियो बोले रे ॥ हो मनमान्या मोहनजी ॥ प्रभु ताहारे नहीं कोय तोले रे ॥ हो मन० ॥ अमे धूपनी पूजा करिये रे ॥ हो० ॥ दुर्गंध अनादिनी हरिये रे ॥ हो० ॥ १ ॥ तुम दर्शन लागे प्यारुं रे ॥ हो० ॥ अंते छे शरण तुमारुं रे ॥ हो० ॥ चउसरण पयन्नुं पहेलुं रे ॥ हो० ॥ अमे शरण कर्युं छे वहेलुं रे ॥ हो० ॥२॥ लही अर्थ अनोपम रीझुं रे ॥हो०॥ आउरपच्चरकाण ते बीजुं रे ॥हो०॥ सांभल तां भक्तपरिज्ञा रे ॥ हो० ॥परिहरशुं चारे संज्ञा रे ॥ हो० ॥ ३ ॥ संथारापयन्नो सीधो रे ॥ हो० ॥ सु

द्वीप विचार ॥ छठा सूरपन्नत्तीमां रे मित्ता, र
डल ग्रह चार रे ॥ रंगीला मित्ता ॥ ए० ॥
चंदपन्नत्ती पाहुडे रे मित्ता, ज्योतिषचक्र
आगम पूजो प्राणिया रे मित्ता, कहे शुनवीर
श रे ॥ रंगीला मित्ता ॥ ए० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नवमंडलमें न देखियो, प्रनुजीनो देदार ॥ आ
गमपंथ लह्याविना, रझ्यो हुं संसार ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥ वीर जिणंद जगत् उपकारी ॥

॥ ए देशी ॥

॥ केतकी जायनां फूल मगावी, पूजो अंग उपां
गजी ॥ बंनी लीपी श्रीगणधरदेवें, प्रणमी नगवइ
अंग जी ॥ केत० ॥ १ ॥ आठमुं निरयावलि उपांगे,
देवादिक अधिकारजी ॥ कप्पवडंसग नवम उपांगे,
दश अध्ययन उदारजी ॥ केत० ॥ २ ॥ पुप्फिया
नामे उपांग छे दशमुं, वली पुप्फचूलिया जा
णजी ॥ बारमुं वन्हिदशाये सघले, दश अध्य
यन प्रमाणजी ॥ केत० ॥ ३ ॥ गीतारथ
मुख अमीय झरतुं, आगम लाग्युं मीठ जी ॥
दूर थइ लोकसन्नाछरी, तव प्रनुदर्शन दीठजी

सोवन पंकज, बेठा सुर नर पूजो हो ॥ भ० ॥ ३ ॥ क्षीणमोही मुनि रत्नपात्र सम, वीजा कंचन सम पात्र ॥ रजतनां श्रावक समकित त्रंबा, अविरति लोह मटी पत्ता हो ॥ भ० ॥४॥ मिथ्यात्वी सहसथी एक अणुव्रती, अणुव्रती सहसथी साधु ॥ साधुसहस्रथी गणधर जिनवर, अधिका टाले उपाधि हो ॥ भ० ॥ ॥५॥ पांच दान दश दानमां मोहोटां, अजय सुपात्र विदिता ॥ एहथी हरिवाहन हुउं जिनवर, सौभाग्यलक्ष्मी गुणगीता हो ॥ भ० ॥ ६ ॥ इति गोयमपदपूजा पंचदशी ॥ १५ ॥

॥ अथ षोमश जिनपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ दोष अढारे क्षय गया,उपना गुण जस अंग ॥
वैयावच्च करिये मुदा, नमो नमो जिनपद संग ॥१॥

॥ ढाल ॥ चौद लोकके पार कहावे ॥ ए देशी ॥

॥ जिनपद जगमां जाचुं जाणो, स्वरूपरमण सुविलासी ॥ शोल कषाय जीते जिनजी, गुणगण अनंत उजासी ॥ जिनपद जपिये, जिनपद भजिये, जिन पद अतिसुख दायी ॥१॥ ए आंकणी ॥ श्रुत उहि मनः

पर्यव जिननी, ठउमत्था वीतरागी ॥ केवलीजिननें व चन अगोचर, महिमाजिन वडन्नागी ॥ जि०॥२॥जि नवर,सूरि,वाचक, साधु,बाल, थविर, गिलाणी॥तपसी, चैत्य,श्रमण, संघ केरी, वैयावच गुणखाणी॥जि०॥३॥ गुणिजन दशनो वैयावच कीजे, सहुमां जिनवर मुख्य॥ वैयावच गुण अप्पडिवाई, जिनआगम हित शिख्य॥ जि० ॥ ४ ॥ नीच गोत्र बांधे नहि कबहुं, करे उंच गोत्रनो बंध ॥ गाढ कर्मबंध शिथिल होवे, उत्तरा ध्ययने प्रबंध ॥ जि० ॥ ५ ॥ मनशुद्धे ए पदने आरा धि, जिमूतकेतु जिन होवे ॥ विजय सौन्नाग्यलक्ष्मी सूरि संपद्, परमानंद पद जोवे ॥ जि० ॥ ६ ॥ इति जिनपदपूजा षोडशी ॥ १६ ॥

॥ अथ सप्तदश संयमपदपूजा प्रारंन्नः ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुद्धातमगुणमें रमे, तजि इंद्रिय आशंस॥ थि र समाधिसंतोषमां, जय जय संयमवंश ॥ १ ॥

[illegible] कुंवर गंन्नारो नजरे देखतांजी ॥ ए देशी ॥

[illegible]मा[illegible]धिगुणमय चारित्रपद नलुं जी, सत्तरमुं सुखकार [illegible] ॥ वीश असमाधि दोष निवारिने जी, उपन्यो गुणसं

तोष श्रीकार रे ॥ नमो नमो संयमपदने मुनिवराजी ॥१ ॥ ए आंकणी॥अनुकंपा दीनादिकनी जे करे जी, ते कहीये ड्रव्यसमाधि रे ॥ सारणादिक कहि धर्ममांहे स्थिर करे जी, ते लहियें जाव समाधि रे॥नमो०॥२॥व्रत श्रावकनां बार जेदें कह्यांजी, मुनिनां महाव्रत पंच रे॥सत्तर ए ड्रव्यजावथी जाणीने जी, यथोचित करे संयमसंच रे॥नमो०॥३॥चार निक्षेपे सात नये करी जी, कारण पांच संजार रे॥त्रिपदीसाते जांगे करि धारियें जी, ज्ञेयादिक त्रिक अवधार रे ॥ नमो० ॥४॥ चार प्रमाणे षड् ड्रव्यें करी जी, नव तत्त्वे दिल लाव रे॥ सामायिक नवद्वारे विचारिये जी, एम षट् आवश्यकजाव रे ॥ नमो० ॥ ५ ॥ चार सामायिक आगममां कह्यां जी, सर्व विरति अविरुद्ध रे॥ पांच जेद ठे संयम धर्मनाजी, निर्मल परिणामे सवि शुद्ध रे॥नमो०॥६॥ समाधिवर गणधरजी जाचियोजी,चोविश जिनने करी प्रणाम रे ॥ पुरंदर तीर्थंकर थयो एहथी जी, सौजाग्यलक्ष्मी गुणधाम रे ॥ नमो० ॥ ७ ॥ इति संयम पदपूजा सप्तदशी ॥ १७ ॥

## ॥अथ अष्टादश अभिनवज्ञानपदपूजाप्रारंभः॥

॥ दोहा ॥

॥ ज्ञानवृक्ष सेवो भविक, चारित्रसमकित मूल ॥ अजर अगम पद फल लहो, जिनवर पदवी फूल ॥१॥

॥ ढाल ॥ कोईलो पर्वत धुंधलो रे लाल ॥ ए देशी॥

॥ अभिनवज्ञान भणो मुदा रे लाल, मूकी प्रमाद विभाव रे॥हुंवारी लाल॥बुद्धिना आठगुण धारिये रे लाल, आठ दोषनो अभाव रे॥हुंवारी लाल॥प्रणमो पद अढारमुं रे लाल ॥१॥ए आंकणी॥देशाराधक किरिया कहि रे लाल, सर्वाराधक ज्ञान रे ॥हुं०॥ मुहूर्त्तादिक किरिया करे रे लाल, निरंतर अनुभव ज्ञान रे॥हुं०॥ प्र० ॥ २ ॥ ज्ञानरहित किरिया करे रे लाल, किरिया रहित जे ज्ञान रे ॥ हुं०॥ अंतर खजुआ रविजि ह्यो रे लाल, षोडशकली [illegible] रे [illegible] ॥२॥ ठठ अ[illegible]॥ आरहंत गणधर नियमा तीरथ, चउविह हुं०॥ तेहश्रुतीरथ रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ लौपणे लङ्क रेसठ तीर्थने तजिये, लोकोत्तरने भजिये रे॥ करी रे लाल, ञ्यभाव बे भेदे, थावर जंगम जजिये रे॥ साच आतम ज्ञा[illegible]रीकादिक पांचे तीरथ, चैत्यना

रे ॥ हुं० ॥ प्र०॥५॥ पांच भेद छे ज्ञानना रे लाल, तेह आराधे जेह रे ॥ हुं०॥ सागरचंद्र परें प्रभु हुवे रे लाल, सौभाग्यलक्ष्मी गुणगेह रे ॥ हुं० ॥ प्र०॥६॥ इति अभिनवज्ञानपदपूजाऽष्टादशी ॥ १८ ॥

## ॥ अथ एकोनविंशति श्रुतपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ वक्ता श्रोतायोग्यथी, श्रुत अनुभवरसपीन ॥ ध्याताध्येयनी एकता, जय जय श्रुतसुख लीन ॥१॥

॥ ढाल ॥ अविनाशीनी सेजमीये रंग लागो मोरी सजनी जी ॥ ए देशी ॥

॥श्रुतपद नमिये भावे भविया,श्रुत छे जगत् आधार जी ॥ दुःसमरजनी समये साचो, श्रुतदीपकव्यवहार ॥ श्रुतपद नमिये जी ॥१॥ ए आंकणी॥बत्रीश दोष रहित प्रभ आगम. आठ गुणे करि भरियुं जी॥अर्थथी धर्मनाजी, निर्मल परिणामे सावे शुद्ध [illegible] ॥ समाधिवर गणधरजी जाचियोजी,चोविश जिनने करी प्रणाम रे ॥ पुरंदर तीर्थंकर थयो एहथी जी, सौभाग्यलक्ष्मी गुणधाम रे ॥ नमो० ॥ ७ ॥ इति संयम पदपूजा सप्तदशी ॥ १७ ॥

नवजल पार ॥ श्रु० ॥ ४ ॥ केवलथी वाचकता माटे छे सुअनाण समछ जी ॥ श्रुतज्ञानी श्रुतज्ञाने जाणे, केवली जेम पसछ ॥ श्रु० ॥ ५ ॥ कालविनय प्रमुख छे अडविध, सूत्रें ज्ञानाचार जी ॥ श्रुतज्ञानीनो विनय न सेवे, तो थाये अतिचार ॥ श्रु० ॥ ६ ॥ चउद भेदे श्रुत वीश भेदे छे, सूत्र पिस्तालीश भेदे जी ॥ रत्नचूड आराधतो अरिहा, सौभाग्यलक्ष्मीसुख वेदे ॥ श्रु० ॥ ७ ॥ इति श्रुतपदपूजा एकोनविंशतिः ॥

## ॥ अथ विंशति तीर्थपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ तीरथयात्र प्रभाव छे, शासन उन्नति काज ॥
परमानंद विलासतां, जय जय तीर्थजहाज ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ गिरुआ रें गुण तुम तणा ॥ ए देशी ॥

॥ श्री तीरथ पद पूजो गुणिजन, जेहथी तरिये ते ती[illegible] रे ॥ अरिहंत गणधर नियमा तीरथ, चउविह [illegible]हुं० ॥ तेह [illegible]तीरथ रें ॥ श्री० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ लौ[illegible] पणे लक्ष [illegible]सठ तीर्थने तजिये, लोकोत्तरने भजिये रे ॥ करी रे लाल, [illegible]व्यभाव बे भेदे, थावर जंगम भजिये रे ॥ साच आतम ज्ञा[illegible]रीकादिक पांचे तीरथ, चैत्यना पांच

प्रकार रे ॥ थावर तीरथ एह नणीजे, तीर्थ यात्रा मनोहार रे ॥श्री०॥३॥ विहरमान वीश जंगमतीरथ, बे कोमी केवली साथ रे॥विचरंतां डुःख दोहग टाले, जंगमतीरथनाथ रे ॥ श्री० ॥४॥ संघ चतुर्विध जंगमतीरथ, शासनने शोनावे रे॥अमतालीश गुणे गुणवंता, तीर्थपति नमे नावे रे ॥ श्री० ॥५॥ तीरथपद ध्यावो गुणगावो, पंचरंगी रयणने लावो रे ॥ थाल नरी नरी तीर्थ वधावो, गुण अनंत दिल लावो रे॥ श्री० ॥ ६ ॥ मेरुप्रन परमेश्वर हुउं, एह तीरथने प्रनावे रे॥विजयसौनाग्यलक्ष्मी सूरि संपद्, परम महोदय पावे रे ॥ श्री०॥७॥ इतितीर्थपदपूजा विंशतिः॥

## ॥ ढाल ॥

॥ घणुं जीव तुं जीव, जिनराज जीवोघणुं ॥ए देशि ॥

॥घणुं पूज तुं पूज, थानकपद पूज तुं,सम्यग् नाव गुण, चित्त आणी ॥ जिनवर पदतणुं, हेतु ठे ए नलुं को नहीं एह समुं, समयवाणी॥घणुं०॥१॥ए आंकणी॥ वीश वीश वस्तु मेलवी करी ऊजवो,नरनव पामियो लाहो लीजे ॥ तपफल वाधशे, उजमणाथकी, जिनवर गणधर, एम वदीजे ॥घणुं ॥२॥ खंनायत बंदिरे,

सुंदर नाविया, श्रावक श्राविका, पुण्यवंता ॥ वीश थानक तणी, नक्ति करे नावथी, शासन उन्नति, अ ति करंता ॥ घणुं० ॥३॥ तास तणे आग्रहे, स्तवन पूजा रची, शुरू करो श्रुतधरा, पुण्य जाणी ॥ विज य आनंदगणि, विजयसौनाग्यसूरि, विजयलक्ष्मी सूरि, जैन वाणी ॥ घणुं० ॥ इति ढाल समाप्त ॥

## ॥ कलश ॥

॥ एम वीश थानक, तवन कुसुमे, पूजियो शंखे श्वरो ॥ संवत् समिति, वेद वसु शशी, ( १८४५ ) विजयदशमी मन धरो ॥ तपगछ विजया, नंद पट धर, श्रीविजय सौनाग्य, सूरीश्वरो॥-श्रीविजयलक्ष्मी, सूरि पनणे, सयलसंघ मं, गलकरो ॥ १ ॥

इत श्रीविजयलक्ष्मीसूरिकृत विंशति स्थानक पदपूजा समाप्ता ॥

अथ

## ॥ श्रीनंदीश्वरद्वीपपूजा प्रारंभः ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ प्रणमु शांति जिणंदने, चउद रयण पति जेह॥ कंचनवर्णे सोहता, लक्षणलक्षितदेह ॥ १ ॥ सुरगिरि अष्टापद गिरि, गिरनार आबू तेम ॥ समेत शिखर ए पांचमो, वंदू बहु धरी प्रेम ॥ २ ॥ समरी शारद मातने, रचुं पूजा हुं रसाल ॥ जेम सुणतां भवि प्राणिने, हर्ष वधे तत्काल ॥३॥ विस्तीर्ण जिन भुवनमां, रची नंदीश्वर द्वीप ॥ तदनंतर प्रभु थापिने, करो अभिषेक प्रदीप ॥ ४ ॥ एकादश अभिषेक इहां, सामान्ये धरो चित्त ॥ आठ अधिक शत तो करो, होय विशेषे प्रीत ॥ ५ ॥ सकल सामग्री मेलवी, श्रद्धावंत नर नार ॥ जल कलशा निज कर धरो, पामवा भवजल पार ॥ ६ ॥ रहि समश्रेणी बिहु दिशे, वाजते मंगल तूर ॥ पूजा प्रभुनी भणा विये, करवा अघ चकचूर ॥ ७ ॥

### ॥ ढाल पहेली ॥

॥अने हांरे वालो वसे विमलाचले रे ॥ एदेशी॥

॥ अने हांरे शासन नायक जग विभु रें ॥ स्याद्वा

दना जाषण हार, ज्ञान वडो गुण प्रजु कहे रे॥श्री त्रिशला नंदन वीर ॥ ज्ञा०॥अ० ॥ पांच प्रकारे ते ज्ञान ठे रे, मति श्रुत अवधि श्रीकार ॥ ज्ञा०॥१॥अ०॥ मनःपर्यव केवल जलुं रे, जे प्रगटे दुःख नहीं कोय ॥ज्ञा०॥अ०॥ऊर्ध्व अधो तिर्ज्ञा लोकनुं रे, जे निश्चे ज्ञानथी होय ॥ज्ञा०॥२॥अ०॥ सुरलोक गेविज्ज अणुत्तरे रे, जिनप्रतिमा पूजे जे देव ॥ ज्ञा० ॥ अ० ॥ जाणे ते केवल ज्ञानथी रे ॥ ऊर्द्ध लोके रह्या सिद्धदेव ॥ ज्ञा० ॥३॥ अ०॥जुवनपति अधोलोकमां रे, प्रजुनी करे जक्ति रसाल ॥ज्ञा०॥अ०॥ तिर्ज्ञा लोके व्यंतर ज्योतिषी रे, जिनपूजा करे त्रण काल ॥ ज्ञा० ॥४॥ अ०॥ जंबू घातकी खंडमां रे,पुष्करार्द्ध द्वीपमोझार ॥ज्ञा०॥ अ०॥करी न करी प्रतिमा तणी रे, करे पूजा सुर नर नार॥ ज्ञा० ॥५॥ अ० ॥ दश क्षेत्रे दश चोविशी रे, पांच विदेहे वीश विहरमान॥ ज्ञा०॥ अ० ॥ तेह प्रजुनी वाणी सुणे रे, जवि पामवा निश्चय ज्ञान ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ अ० ॥ ते माटे श्रावक जावशुं रे, प्रजु पूजो थइ उजमाल ॥ ज्ञा० ॥ अ० ॥ कहे धर्मचंद्र जिनध्यानथी रे, लहे केवल ज्ञान विशाल ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ अ०॥ इति श्री प्रथम ढाल समाप्त ॥

स्तुतिः ॥ काव्यं ॥ शार्दूलविक्रीमितं वृत्तम् ॥

॥ स्नातस्याऽप्रतिमस्यमेरुशिखरे, शच्या विनोः शैशवे, रूपालोकनविस्मयाहृतरस, भ्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा॥ उन्मृष्टं नयनप्रन्नाधवलितं, क्षीरोदकाशंकया, वक्रं यस्य पुनःपुनःसजयति श्रीवर्द्धमानोजिनः॥१॥ए काव्य प्रत्येक पूजा दीठ कहेवुं. अने त्यार पठी कलश ढोलवा.

॥ दोहा ॥

॥सहु प्रजुने कल्याणके, चलितासन हरि होय ॥
आवी जे उत्सव करी, जाय नंदीसर सोय ॥ १ ॥
एक गिरिनिश्राये कह्या, गिरि दधिमुख जे चार ॥
गिरि रतिकर अरु जाणवा, चैत्य तेर सुविचार ॥२॥
एम चउदिशिना मेलव्यां, बावन चैत्य ते होय ॥
बिंब ठ सहस्स चारशे, अडतालीशने जोय ॥ ३ ॥
हरि आदे सुर बहु मली, मुक्ताफल लेइ हाथ ॥
हर्षे वधावे नाथने, जाचे अनंती आथ ॥ ४ ॥ पूर्व दिशे अंजनगिरे, सोहमइंद्र मनरंग ॥ आवी तिहां उत्सव करे, तजवा चउगति संग ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ जरतने पाटे जूपति रे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे नंदीसर द्वीपनी रे, देखी रचना सार॥सलू

णा ॥ सुरमनमधुकर जई वस्या रे, प्रभुपद कमले अपार ॥ स० ॥ ह० ॥ १ ॥ शो कोडिने त्रेशठ व ली रे, जोयण चोराशी लाख ॥ स० ॥ पहोलपणे द्वीप आठमो रे, सूत्रमां जेहनी साख ॥ स०॥ह० ॥ ॥२॥ पूर्वदिशे मध्यज्ञागमां रे, गिरि अंजन देव रम ण॥स०॥ चोराशी सहस्स ते जोयणारे, ठे उंचो क हे श्रमण ॥ स० ॥ ह० ॥३॥ हजार दश नीचे ऊ परे रे, जाडपणुं एक सहस्स ॥ स० ॥ सहस्स जोय ण कंद ठे रे, लहिये गुरुथी रहस्य ॥ स०॥ह० ॥४॥ ठशे एकत्रीश सहस्स ठे रे, ऊपर त्रेविश जाण ॥ ॥ स० ॥ अधोपरिधिना ए जोयणारे, अंजनगिरि नां प्रमाण ॥ स० ॥ ह० ॥ ५ ॥ त्रण सहस एकशो बाशठ रे, जे ऊर्ध्व परिधिना होय ॥ स० ॥ जगता रक अरिहा विना रे, कही न शके ते कोय ॥ स० ॥ ॥ ह० ॥ ६ ॥ जे देवरमणे चैत्य ठे रे, ऊंचु बहो तेर जोयण ॥ स० ॥ शो जोयण लांबु पहोलुं रे, पच्चास ए प्रज्ञुवयण ॥ स० ॥ ह० ॥ ७ ॥ चउबारो मणि रत्ननो रे, सूत्रमां कहे ज्ञगवंत ॥ स० ॥ देव नामे पूर्वद्वार ठे रे, तिहां देव गुणवंत ॥ स०॥ ह०॥ ॥ ८ ॥ दक्षिणे असुर देवता रे, पश्चिम उत्तर जाण

॥ स० ॥ भागने सोवन्न सोहता रे, ए नामे द्वार वखाण ॥ स० ॥ ह० ॥ ए ॥ चैत्यमध्ये मणिपीठिकारे ॥ लांबी पहोली शोल ॥ स० ॥ जोयण आठ ऊंची कही रे, लोक प्रकाशे ए बोल ॥ स० ॥ ह०॥ ॥ १० ॥ लांबो पहोलो पीठिका समो रे, देव छंदो अभिराम ॥ स० ॥ जोयण शोल अधिक ऊंचो रे, सोहे पीठिका ठाम ॥ स० ॥ ह० ॥ ११ ॥ ते मध्ये सिंहासने रे, जिनप्रतिमा जयकार ॥ स० ॥ सग वीश सगवीश चिहुं दिशे रे, शाश्वती नामे चार ॥ स० ॥ ह० ॥ १२ ॥ ते जिनप्रतिमा वंदीने रे, छांडी प्रमादनें छेक ॥ स० ॥ तीर्थजले कलशा भरी रे, देव करे अभिषेक ॥ स० ॥ ह० ॥१३ ॥ केसरे पूजी गुण स्तवे रे, देव देवी धरी नेह ॥स०॥ धर्मचंद्र जिन पूजतां रे, वर्षे मोतीना मेह ॥ स० ॥ ह० ॥ १४ ॥ काव्यं॥स्नात० ॥ इति प्रथमाभिषेके प्रथमपूजा स० ॥

॥ दोहा ॥

॥ करुं वर्णन बहु भावथी, शेष रह्यो अधिकार ॥
सुणो भविजन एक चित्तथी, न रहे पाप लगार ॥
दक्षिणे अंजन गिरि तिहां, चमर नामे सुरनाथ ॥
करे मोछव अठाइनो, वरवा शिववधू हाथ ॥ १ ॥

## ॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ ए व्रत जगमां दीवो मेरे प्यारे ॥ए०॥ ए देशी ॥

॥ दक्षिणदिशिये अंजन गिरि जे, नामे ते नित्योद्योत॥भ्रमर सम जे श्यामरतन, तेहनी छे बहु ज्योत ॥ मेरे प्यारे, वंदो बे कर जोडी ॥१॥ श्री नंदीश्वर चैत्यने पूज्यां, नाखे कर्मने त्रोडी ॥मेरे०॥ ए आंकणी॥तिहां प्रासाद द्वार चार जे, ते ऊंचां जोयण शोल ॥ आठ जोयण विस्तारे छे तेम, प्रवेश जोयण आठ बोल॥मेरे० ॥२॥ द्वार दीठ एक एक मुखमंडप, ते वली पडसाल सरिखा ॥ ते आगल प्रेक्षामंडप जे, घरसम ज्ञानीये निरख्या ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ ए मंडप जोयण शा लांबा, पहोला जोयण पच्चास ॥ शोल जोयणना ऊंचा त्राख्या, सुणतां होय उल्लास ॥ मेरे० ॥४॥ बेहु मंडपे त्रण त्रण द्वार, ते वली कह्या चार चार ॥ हवे प्रेक्षामंडपमध्ये, वज्र अक्षाटक सार ॥ मेरे० ॥ ५ ॥ ते मध्ये मणिपीठिका एक पोहोली, लांबी जोयण आठ ॥ चार जोयणनी ऊंची जाणो, जीवाभिगमे ए पाठ ॥ मेरे० ॥६॥ ते ऊपर हरियोग्य सिंहासन, चंद्रुवे झाक झमाल ॥ वच्चें वज्रने आं

कंठे वलगी, मुक्ताफलनी जे माल ॥ मेरे० ॥ ७ ॥ ते प्रेक्षामंडपनी आगल, मणिपीठिका एक सोहे ॥ शोल जोयण लांबीने पोहोली, देखतां सुरमन मोहे ॥ मेरे० ॥ ८ ॥ आठ जोयण उंची ते ऊपर, चैत्य थुन्न कहे नाणी ॥ ते शोल जोयण लांबी पहोली, शोल अधिक उंची जाणी ॥ मेरे० ॥ ए ॥ ते ऊपर आठ मंगल दीपे, तेथी चार दिशे चार ॥ ठे मणिपीठिका लांबि पहोली, आठ जोयण चित्त धारं ॥ मेरे० ॥ १० ॥ चार जोयणनी ठे ते उंची, ते पीठ उपर गुणधाम ॥ थुन्न सन्मुख अरिहंतनी प्रतिमा, बेठी तस कीजे प्रणाम ॥ मेरे० ॥ ११ ॥ देव देवी ते अरिहा पूजे, मनमां आणी विवेक ॥ कहे धर्मचंद्र नविजन प्रेमे, करो जिनने अनिषेक ॥ मेरे० ॥ १२ ॥ काव्यं ॥ स्नात० ॥ इति द्वितीयानिषेके द्वितीयपूजा समाप्ता ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वली इंद्र उत्सव करे, पश्चिम गिरिये सार ॥
तेहनुं वर्णन हवे करुं, बुद्धितणे अनुसार ॥ १ ॥

घंट धूप घटी श्रीकार रे ॥धन०॥४॥ ए आदि उपक रण घणेरां, रजत मणिनां जलेरां रे ॥ धन० ॥ प्रा साद जुमिये वेलने बूटा, ठाम ठाम सोनाना बूटा रे ॥ धन० ॥ ५ ॥ मूल प्रासादमध्ये शत आठ, शो ल जिननो द्वारे ठाठ रे ॥ धन० ॥ सर्व ए पडिमा एकशो चोवीश, सुर प्रणमे नमावी शीश रे ॥ धन० ॥६॥ कर धरी कलशा रजत मणिना,सुर गुण गाये ज- गत् धणीना रे ॥ धन०॥ वीणा मृदंग तालने भमरी, वजावे जे रागने समरी रे ॥ धन० ॥ ७ ॥ करे जि नस्नात्र विधिये एम, चंदने पूजे धरी प्रेम रे ॥ ध न० ॥ प्रजुगुण गावानी नित्यमेव, धर्मचंद्र मुनिनेए टेव रे ॥ धन० ॥ ८ ॥ काव्यं ॥ स्नात० ॥ इति च तुर्थाभिषेके चतुर्थपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लोकपालनो दधिमुखे, उत्सवनो अधिकार॥ क हिशुं जविजन सांजलो, जेम सुख लहो अपार॥१॥

॥ ढाल ५ठी ॥

॥ रंग रसीया रंगरस बन्यो ॥ देशी ॥

॥ प्रजु शिवरसिया वसिया दिले ॥ मनमोहनजी,

सुर सारे, करवा जवजय दूर जीरे॥कहे धर्मचंद्र जिन अजिषेक, जवि करो वाजते तूर ॥ जि० ॥७॥ काव्यं ॥स्नात०॥ इति तृतीयाजिषेके तृतीयपूजा समाप्ता॥३॥

॥ दोहा ॥

॥ इशानवज्री उत्तर दिशे,अंजन गिरियें आय ॥
करे उत्सव अठाइना, जिन गुण रंगे गाय ॥ १ ॥

## ॥ ढाल पांचमी ॥

॥ म्हारी सहिरे समाणी ॥ ए देशी ॥

॥ उत्तरदिशे अंजन गिरि नाम,कह्यो रमणिक अजिराम रे ॥ धन धन जिणवाणी,जेमां सर्वनी संख्या वखाणी रे ॥ धन० ॥ ए आंकणी ॥ तिहां चैत्ये एक शोने आठ, पडिमा ए सूत्रमां पाठ रे ॥ धन० ॥१॥ नाग जूत यक्षने आशाधर, ए दो दो प्रजु दीठ अमररे ॥धन०॥ प्रतिमा आठ ए विनय करंती, प्रतिमा दोय चमर विंऊती रे॥धन०॥२॥ प्रजु पूठें एक छत्रधर जाणो, ए सासय जावे वखाणो रे ॥ धन० ॥ हवे पूजा उपकरण कहिये, आठें अधिक शो लहिये रे ॥ धन० ॥३॥ जे अष्ट मंगल फूलनी दाम, कुंज ध्वज दर्प्पण अजिराम रे ॥धन०॥ पुष्फ चंगेरी छत्र जृंगार,

घंट धूप घटी श्रीकार रे ॥धन०॥४॥ ए आदि उपक रण घणेरां, रजत मणिनां जलेरां रे ॥ धन० ॥ प्रा साद छुमिये वेलने बूटा, ठाम ठाम सोनाना बूटा रे ॥ धन० ॥ ५ ॥ मूल प्रासादमध्ये शत आठ, शो ल जिननो छारे ठाठ रे ॥ धन० ॥ सर्व ए पडिमा एकशो चोवीश, सुर प्रणमे नमावी शीश रे ॥ धन० ॥६॥ कर धरी कलशा रजत मणिना,सुर गुण गाये ज- गत् धणीना रे ॥ धन०॥ वीणा मृदंग तालने भमरी, वजावे जे रागने ससरी रे ॥ धन० ॥ ७ ॥ करे जि नस्नात्र विधिये एम, चंदने पूजे धरी प्रेम रे ॥ ध न० ॥ प्रनुगुण गावानी नित्यमेव, धर्मचंद्र मुनिनेए टेव रे ॥ धन० ॥ ८ ॥ काव्यं ॥ स्नात० ॥ इति च तुर्थाभिषेके चतुर्थपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लोकपालनो दधिमुखे, उत्सवनो अधिकार॥ क ह्यिुं नविजन सांनलो, जेम सुख लहो अपार॥१॥

॥ ढाल ५मी ॥

॥ रंग रसीया रंगरस बन्यो ॥ देशी ॥

॥ प्रनु शिवरसिया वसिया दिले ॥ मनमोहनजी,

विधि विष्णु शंकर न सोहाय ॥ मनकुं मोह्युं रे मन मोहनजी ॥ पूजतां पडिमा जिनराजनी ॥ मन० ॥ नवनवनां ङुरित पलाय ॥ मन० ॥१॥ अंजनगिरि ए चारथी ॥ मन० ॥ चार दिशाये लाख लाख ॥ मन० ॥ जोयण गये जे वाव्य ठे ॥ मन० ॥ लाख जोयणनी ते नाष्य ॥ मन० ॥२॥ जोयण दश ऊंडी कही ॥ मत०॥ मत्स्य विनानुं जल सोय ॥ मन०॥ वाव्य एकने चारे दिशे ॥ मन० ॥ त्रण त्रण सोपान ते होय ॥ मन० ॥३॥ रत्नतोरण चारे दिशे ॥ मन०॥ ते ऊलके तेजे अपार ॥ मन० ॥ पणसय जोयण ङूर वाव्यथी ॥ मन० ॥ चउ दिशाये वन चार ॥ ॥ मन० ॥ ४ ॥ पहोलपणे शत पांचना ॥ मन० ॥ लांबा पुष्करिणी प्रमाण ॥ मन०॥ वाव्यमध्ये एक दधिमुख ॥ मन० ॥ स्फाटिक रत्ननो जाण ॥ मन० ॥ ॥५॥ चोशठ सहस्स जोयण ऊंचो ॥ मन० ॥ नीचे ऊपर दश हजार ॥ मन० ॥ जाडपणे ते जाणवो ॥ मन० ॥ सहस्स जोयण कंद विचार मन० ॥६॥ एम शोले दधिमुख जाणजो॥मन०॥ सर्व प्यालाने आकार ॥मन०॥ शोल ऊपर शोल चैत्य ठे ॥ मन० ॥ अंजनगिरि सरखा धार ॥ मन० ॥७॥ एकशो चोवीश चै

त्य दीठ ॥ मन० ॥ अरिहंतनी प्रतिमा सार॥मन०॥ लोकपाल सघला तिहां मली ॥ मन० ॥ करे अभिषेक कहे तार्य ॥ मन० ॥ ८ ॥ तेम श्रावक मनरंगशुं ॥ मन० ॥ जिनवरने करो अभिषेक ॥ मन० ॥ कहे धर्मचंद्र जिन पूजतां ॥ मन० ॥ पामिये शिवगतिने एक ॥ मन० ॥ ए ॥ काव्यं ॥ स्नात० ॥ इति पंचमाभिषेके पंचमपूजा समाप्ता ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंद्रकला रमणी कर्या, होय रतीकर मान ॥ तिहां जिनचैत्ये मूरति, पांचशे धनुष्य प्रमाण ॥१॥ भुवनपति व्यंतर तणा, ज्योतिषीना वली देव ॥ वैमानिक सुरवर इहां, करे जिनवरनी सेव ॥ २ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ राग सारंग ॥

॥ जिनराज पूजी लाहो लीजीये ॥ ए आंकणी॥ ॥ शिवसुखनो अभिलाष करो तो, जिन आणा शिर वहीजीये ॥ जिन० ॥ वाव्य वाव्यना अंतर वच्चे, रतिकर दो दो लहीजीये ॥ जिन० ॥ १ ॥ दश सहस्स जोयण लांबा पहोला, एक सहस्स ऊंचा कहीजीये ॥ जीन० ॥ पद्मराग मणिना जे दीपे, जलरीसं

ठाण सुणीजीये ॥ जिन०॥२॥ बत्रीश रतिकरे बत्रीश चैत्ये, प्रभु वंदी सुर हर्षीजीये ॥ जिन० ॥ तीर्थोद कना कलश भरीने, जिनअभिषेक करीजीये॥जिन० ॥ ३ ॥ केसर चंदने अरिहा पूजी, फूल टोडर कंठे ठवीजीये ॥ जिन० ॥ कनकपत्र कोरणी करीने, वच्चे वच्चे रत्न जडीजीये ॥ जिन० ॥ ४ ॥ सुरपरे भवि जन पूजा रचावी, लखमीनो लाहो लीजीये ॥ ॥ जिन० ॥ कहे धर्मचंद्र जिनेश्वर साहिब, हवे शिव सुख मुज दीजीये॥ जिन० ॥५॥ काव्यं ॥स्नात० इति षष्ठाभिषेके षष्टपूजा समाप्ता ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सोहम ईशानेंद्रनी, अग्र महिषी(आठ)आठ॥ तेहना भद्र जे शोलमा, प्रभुचैत्यनी ठाठ ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ झुमखडानी देशी ॥

॥ ए द्वीपना मध्यभागमां रे, चार विदिशे जे चार॥ प्रभुउपदेशिया ॥ रतिकर सर्व रतनमयी रे,सहस्सना उंचा धार ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ दश सहस्स लांबा पहो ला रे, अढीशे जोयण कंद ॥ प्रभु० ॥ एकत्रीश स हस्स उपर बशे रे, त्रेवीश कहे जिनचंद॥प्रभु० ॥२॥

परिधिना जोयण धारिये रे, नाखीये अज्ञान चूर ॥ प्रभु० ॥ रतिकरथी चारे दिशे रे,लाख जोयण जइये दूर ॥प्रभु०॥३॥ राजधानी चारे तिहां रे, गिरि चार मलीने शोल ॥प्रभु०॥ अग्नि नैरुतना गिरि पूठें रे, धुर हरिललनानी बोल ॥प्रभु०॥४॥ वाव्य ईशानना गिरि पुंठें रे,ईशान इंद्रनी आठ ॥प्रभु०॥ राजधानी अग्रमहिषीनी रे, छे सिद्धांते ए पाठ ॥ प्रभु० ॥५॥ जोयण लाख लाखनी रे, नगरी सोहे ए शोल ॥प्रभु०॥ ए प्रभुवाणी ते सद्दहे रे, जेने धर्मशुं रंगचोल ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ जिहां शोल चैत्य दीठ छे रे, प्रतिमा एकशो वीश ॥प्रभु०॥ तिहां अग्रमहिषी आवीने रे, स्नात्र करे वसा वीश ॥ प्रभु० ॥७॥ तेम तुमे भविजन भावशुं रे, पूजो श्री अरिहंत ॥ प्रभु० ॥ धर्म कहे जिन सेवतां रे, पामिये सुख अनंत ॥ प्रभु० ॥ ८ ॥ काव्यं॥स्नात०॥ इतिसप्तमाभिषेकेसप्तमपूजासमाप्ता ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिर्छालोकेदेहरां, बत्रीशशे मन आण ॥ त्रेगणशाठ ऊपर कह्यां, हवे करुं बिंब वखाण ॥ १ ॥ त्रण लाख एकाणुं सहस्स, त्रणंशेने वली वीश ॥ शाश्वती पडिमा एटली, हुं प्रणमुं निशि दीश ॥२॥

## ॥ ढाल नवम ॥

॥ मनमोहन मेरे ॥ ए देशी ॥

॥ कुंडल द्वीप सोहामणो ॥ मनमोहन मेरे ॥ चार तिहां जिनगेह ॥म०॥ जिनपडिमा चारशे ठवुं ॥मन०॥ वंडु हुं धरिनेह॥म०॥१॥रुचकद्वीपे चारचैत्य ठे ॥ म० ॥ चारशे ठवुं जिनराज ॥ म० ॥ मेरुवने एंशी देहरां ॥ म० ॥ ठवुंशे जिन वंडु आज ॥ म० ॥ २ ॥ पांच मेरु चूलिकाये ॥ म० ॥ प्रासादे ठशे जिनराय ॥म०॥ गजदंते वीश देहरां ॥म०॥ बिंव चोविशशे समुदाय ॥ म० ॥३॥ देवउत्तर कुरुक्षेत्रमां॥ म०॥ जिनघर दश विशाल ॥ म० ॥ बारशे बिंबने पूजतां ॥ म० ॥ पाप जाये पायाल ॥ म० ॥ ॥ ४ ॥ एंशी वखारागिरिये ॥ ॥ म० ॥ प्रासाद एंशी धार ॥ म० ॥ ठवुं अधिक जिन शाश्वता ॥ म० ॥ पूजीये नव हजार ॥ म० ॥ ५ ॥ कुलगिरिये त्रीश देहरां ॥म०॥ ठत्रीशशे जिनवर जाण ॥ म० ॥ चैत्य चालीश दिग्गजे ॥ म० ॥ अमृतानी रात जिनत्राण ॥ म० ॥ ६ ॥ दीर्घवैताढ्ये देहरां ॥ म० ॥ एकशो सित्तेर प्रमाण ॥ म० ॥ वीश हजार बिंव चारशे ॥ म० ॥ नविजन पूजो सुजाण ॥

॥ म० ॥७॥ जंबु प्रमुख तरुये वली ॥ म० ॥ चैत्य अग्यारशे सित्तेर ॥ म० ॥ चालीश हजारने चारशे ॥ म० ॥ लाख पूजीने ल्यो शिवसहेर ॥ म० ॥ ८ ॥ चैत्य हजार कंचनगिरिये ॥ म० ॥ बिंब लाखने वीश हजार ॥म०॥ एंशी द्रहे एंशी देहरां ॥म०॥ नवुंशे बिंब जुहार ॥ म० ॥ ए ॥ चैत्य कुंडे त्रणशे एंशी ॥ म० ॥ बिंब पिस्तालीश हजार ॥ म० ॥ उपरे बशे जिनवरा ॥ म० ॥ समरो ऊठी सवार ॥ म० ॥१०॥ महानदिये सित्तेर कह्या ॥ म० ॥ चोराशीशे अरिहंत ॥ म० ॥ वीश प्रासाद यमकगिरे ॥ म० ॥ चोवीशशे जगवंत ॥ म० ॥ ११ ॥ वृत्तवैताढ्ये वीश छे ॥ ॥ म० ॥ शाश्वता जिनगेह ॥ म० ॥ बिंब चोवीशशे पूजता ॥ म० ॥ थाये निर्मल देह ॥ म० ॥ १२ ॥ इखुकारे चार देहरां॥ म० ॥चारशे एंशी जिनबिंब ॥ म० ॥ ते जिनवरने पूजतां ॥ म० ॥ पाप जाये अविलंब ॥ म० ॥१३॥ मनुष्योत्तरे चार देहरा॥म०॥ चारशे एंशी जगवान ॥म०॥ व्यंतरमांहे असंख्य छे ॥ म० ॥ जिनघर बिंबनुं मान ॥ म० ॥ १४ ॥ असंख्य ज्योतिषीमां कह्यां ॥ म० ॥ जिनघरने जिनराय ॥म०॥ धर्म कहे प्रजु पूजतां ॥ म० ॥ शिवसुख वहेलुं

थाय ॥ स० ॥ १५ ॥ काव्यं ॥ स्नात० ॥ इति अष्टमाभिषेके अष्टमपूजा समाप्ता ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सात कोडी बहोत्तेर लाख, अधोलोके जिनगेह ॥ तेरशे नेव्याशी कोडी,शाठ लाख बिंब एह ॥१॥

## ॥ ढाल दशमी ॥

॥ काज सीधां सकल हवे सार ॥ ए देशी ॥

॥हवे असुरकुमारे देहरां, कह्यां चोशठ लाख भलेरां ॥ एकशो पन्नर कोडी जाणुं, पडिमा वीश लाख वखाणुं ॥ १ ॥ सासय जिनवरने पूजीजे, नरभवनो लाहो लीजे ॥ वली नागकुमारे कहिये, चैत्य लाख चोराशी लहिये ॥ एक सोने एकावनकोडी, वीश लाख नमुं कर जोडी ॥ सा० ॥ २ ॥ चैत्य बहोत्तेर लाख विचार, सुवर्णकुमारे श्रीकार ॥ एकशोने तेंग णत्रीश कोड, शाठ लाख उपर जिन जोड ॥ सा० ॥३॥ विद्युत् अग्नि द्वीप कुमार, उदधि दिग स्तनित सार ॥ चैत्य षट्निकाये वखाणो, लाख छेतेर छे तेर जाणो ॥ सा० ॥ ४ ॥ कोडी एकशोने छत्रीश, लाख एशी नमो निशदीश ॥ एक निकाये एटला

होय, तेम पांच निकाये जोय ॥ सा० ॥ ५ ॥ जिन प्रासाद छन्नुं लाख, वायुकुमारमांहे भाख ॥ कोम एकशो बहोत्तेर जिनराय, एशी लाख पूजे दुःख जाय ॥ सा० ॥ ६ ॥ अधोलोकना जिनवर गाया, जग सुजश पमह वजाया ॥ कहे धर्म नवि उजमाल, थइ पूजो जगत् दयाल ॥ सा० ॥७॥ काव्यं ॥ स्ना त० ॥ इति नवमाभिषेके नवमपूजा संपूर्णा ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ऊर्ध्वलोके जिनवर घर, लाख चोराशी जाण ॥ सहस सत्ताणुं ऊपरे, त्रेविशनुं परिमाण ॥ १ ॥ एकशो बावन कोमि जिन, लाख चोराणुं सार ॥ सहस चुम्मालीश वंदिये, सातशेने शाठ धार ॥ २ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ सिद्धाचल शिखरे दीवो रे ॥ आदे० ॥ ए देशी॥

॥ सौधर्मे चैत्यज कहिये रे ॥ अरिहा पूजो अलबेला॥ लाख बत्रीश संख्या लहिये रे ॥ अ० ॥ लाख साठ सत्तावन कोडी रे ॥अ०॥ पडिमा वंदोकर जोडी रे ॥ अ० ॥ १ ॥ चैत्य अडवीश लाख जाणो रे ॥ अ० ॥ ईशान स्वर्गे वखाणो रे ॥ अ० ॥ कोडी पच्चासने ला

ख चाली रे ॥ अ० ॥ वंदो प्रतिमा रढियाली रे ॥ अ० ॥
॥ २ ॥ जिनवरनां बार लाख देहरां रे ॥ अ० ॥ सन
तुकुमारे नलेरां रे ॥ अ० ॥ साठ लाखने कोमि एकवी
श रे ॥ अ० ॥ पडिमा कहे त्रिजग ईश रे ॥ अ० ॥
॥ ३ ॥ माहेंद्र चोथुं चित्त धारो रे ॥ अ० ॥ प्रासाद
आठ लाख संनारो रे ॥ अ० ॥ कोडि चउदने लाख
चाली रे ॥ अ० ॥ प्रनुध्याने सदा दीवाली रे ॥ अ० ॥
॥ ४ ॥ पांचमे प्रासाद लाख चार रे ॥ अ० ॥ सात
कोमि वीश लाख जिन धार्य रे ॥ अ० ॥ लांतके सह
स्स पच्चास रे ॥ अ० ॥ नेवुं लाख जिन नमिये उला
सरे ॥ अ० ॥ ५ ॥ सातमे शुक्रदेवलोके रे ॥ अ० ॥
प्रासाद चालीश सहस्स थोके रे ॥ अ० ॥ पडिमा ब
होत्तेर लाख मान रे ॥ अ० ॥ सदा धरिये एहनुं ध्या
न रे ॥ अ० ॥ ६ ॥ आठमुं सहस्रार ते कहिये रे ॥ अ० ॥
जिनघर हजार छ लहिये रे ॥ अ० ॥ दश लाखने ए
शी हजार रे ॥ अ० ॥ हुं प्रणमुं ऊठि सवार रे ॥ अ०
॥ ७ ॥ आणत प्राणते जिनगेह रे ॥ अ० ॥ नांखे
चारशे अरिहा तेह रे ॥ अ० ॥ बहोत्तेर हजार जिन
राय रे ॥ अ० ॥ जस प्रणम्यां पातक जाय रे ॥ अ० ॥
॥ ८ ॥ आरण अच्यूते वंदो रे ॥ अ० ॥ चैत्य त्रण

शे सुणि आणंदो रे ॥अ०॥ चोपन सहस्स देवाधि
देव रे ॥अ०॥ जस सारे सुरपति सेव रे ॥ अ० ॥ए॥
एकशो अग्यार धुर त्रिके रे ॥अ०॥ जिन चैत्यधारो
सुविवेके रे ॥अ०॥ त्रणशे वीश तेर हजार रे॥अ०॥
पूजतां पामे नवपार रे ॥ अ० ॥ १० ॥ त्रिक बीजी
ये एकशो सात रे ॥अ०॥ पमिमा बार सहसविख्या
त रे ॥अ०॥ आठशे अधिक नमो चाली रे ॥अ०॥
सुर पूजे नावे निहाली रे॥ अ० ॥११॥ त्रिक त्रीजीये
एकशो सार रे ॥अ०॥ प्रणमो बिंब बार हजार रे॥
अ०॥ अनुत्तरे पांच चैत्य विशाल रे॥अ०॥ बशे जि
न नमो थई उजमाल रे॥अ०॥१२ एम कल्पकल्पा
तीत देवा रे ॥ अ० ॥ द्रव्यनावे करे जिनसेवा रे
॥ अ० ॥ कहे धर्म नवि नित्य पूजो रे ॥अ०॥ जग
तारक देव न दूजो रे॥ अ० ॥१३॥ काव्यं ॥ स्नात०
इति दशमानिषेके दशमपूजा संपूर्णा॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ पन्नर क्षेत्रें प्रनु तणी, पडिमा असांसय जेह ॥
तेहनां पदपंकज नमुं, करवा पापनो ढेह ॥ १ ॥

## ॥ ढाल बारमी ॥

॥ चोवीश चोकनी देशी छे ॥

॥हे साहेबजी नेक नजर करी नाथ सेवकने तारो, हे साहेबजी ! मेहेर करी पूजानुं फल मुज आलो ॥ ए आंकणी ॥ प्रभु तुज मूरति मोहन वेली, पूजे सुर अपछरा अलबेली, वर घनसार केशरशुं भेली ॥ हे सा० ॥ १ ॥ सिद्धाचल तीर्थ भवि सेवो, चउद क्षेत्रें तीर्थ नहीं एहवो, एम बोले देवाधिदेवो ॥ हे सा० ॥२॥ गिरनारे जईये नेम पासे, इहां भावी जिन सिद्धि जाशे, जस ध्याने पातकडां नासे ॥ हे सा ॥ ॥ ३ ॥ आबूगढे आदि जिनराया, नेमनाथ शिवा देवी जाया, जस चोशठ इंद्रे गुण गाया ॥ हे सा० ॥ ४ ॥ वली समेतशिखरे जगना ईश, गया मोक्ष जिनराय वीश, ध्येय ध्यावो भविजन निश दीश ॥ हे सा० ॥ ५ ॥ अष्टापदे सकल करम टाली प्रभु वरिया शिववधू लटकाली, आदीश्वर पूजतां दीवाली ॥ हे सा० ॥ ६ ॥ ए आदे तीर्थ प्रणमो रंगे, वली पूजो प्रभुने नव अंगे, कहे धर्मचंद्र अति ऊमंगे ॥ हे सा० ॥ ७ ॥

॥ कलश ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ गायो गायो रे नंदीसर तीर्थ में गायो, जंघा विद्या चारण मुनिवर, जिहां सुरनो समुदायो ॥ किन्नर किन्नरी खेचर आवे, तेम चोशठ सुररायो रे ॥ नंदी० ॥ १ ॥ अपछरा इंद्राणी मनरंगे, स्नात्र करे सुखदायो, करे नृत्य सुकंठे गावें, जिन पूजि मोह घटायो रे नंदी० ॥ २ ॥ तपगछपति श्रीदयासूरिना, खुशालविजय उवज्झायो ॥ तास बंधव सुगुण गीतारथ, कल्याणचंद्र सवायो रे ॥ नंदी० ॥ ३ ॥ विजयदेवेंद्र सूरीश्वर राज्ये, ए अधिकार रचायो ॥ दमण बंदरे रही चोमासूं, ऋषभ देव सुपसायो रे ॥ नंदी० ॥ ४ ॥ अढारशे छन्नुं भाद्रपदमासे, संवछरि दिन गायो ॥ प्रभु समुदाय कवि धर्मचंद्रे, संघ सकल हरखायो रे ॥ नंदी० ॥ ५ ॥ इति एकादशाभिषेके एकादशपूजा संपूर्णा ॥ ११ ॥

॥ इति कविधर्मचंद्रजीकृतश्रीनंदीश्वरद्वीपपूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ ॥

## ॥ श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत नवपदपूजा प्रारंजः ॥

॥ तत्र ॥

## ॥ प्रथम अरिहंतपदपूजा प्रारंजः ॥

॥ काव्यं ॥ उपजातिवृत्तम् ॥

॥ उप्पन्नसन्नाणमहोमयाणं, सप्पाडिहेरास णासंठियाणं ॥ सदेसणाणं दियसज्जणाणं, नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥

॥ जुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ नमोऽनंतसंतप्रमोदप्रदान, प्रधानाय जव्यात्ते जास्वताय ॥ थया जेहना ध्यानथी सौख्यजाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ कस्यां कर्म उर्मर्म चकचूर जेणे, जलां जव्य नवपदध्यानेन तेणे ॥ करी पूजना जव्य जावे त्रिकाले, सदा वासियो आतमा तेणे काले ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदये करीने, दिये देशना जव्यने हित धरीने॥सदा आठ महापाडिहारे समेता, सुरेशे नरेशे स्तव्या ब्रह्मपुत्ता ॥ ॥ ४ ॥ कस्यां घातियां कर्म चारे अलग्गां, जवोपग्र

ही चार जे छे विलग्गां ॥ जगत् पंच कल्याणके सौं
ख्य पामे, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकामे ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥तीर्थपति अरिहा नमुं, धर्म धुरंधर धीरो जी॥
देशना अमृत वरसता, निजवीरज वड वीरो जी ॥
१ ॥ उलाला ॥ वरअखय निर्मल ज्ञानभासन, सर्व
भाव प्रकाशता ॥ निजशुद्ध श्रद्धा आत्मभावे, चर
णथिरता वासता ॥ जिननाम कर्मप्रभाव अतिशय,
प्रातिहारज शोभता ॥ जगजंतु करुणावंत भगवंत,
भविकजनने क्षोभता ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ त्रीजे भव वरस्थानक तप करी, जेणे बांध्युं
जिननाम ॥ चोसठ इंद्रें पूजित जे जिन, कीजे तास
प्रणाम रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्रपद वंदो, जेम चिर
काले नंदो रे ॥ भ० ॥ सि० ॥१॥ ए आंकणी॥जेहने
होय कल्याणक दिवसे, नरकेपण अजवालुं ॥ सकल
अधिकगुण अतिशय धारी, ते जिन नमी अघ टा
लुं रे ॥ भ० ॥ सि० ॥२॥ जे तिहुं नाण समग्ग उप्प
न्न, भोगकरम क्षीण जाणी ॥ लेइ दीक्षा शिक्षा दि
ये जनने, ते नमिये जिननाणी रे ॥ भ० ॥ सि० ॥

३ ॥ महागोप महामाहण कहिये, निर्यामक सथ वाह ॥ उपमा एहवी जेहने गजे, ते जिन नमिये उत्साह रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ४ ॥ आठ प्रातिहारज जस गजे, पांत्रीश गुणयुत्त वाणी ॥ जे प्रतिबोध करे जगजनने, ते जिन नमिये प्राणी रे ॥ भ०॥सि०॥५॥

॥ ढाल ॥

॥ अरिहंतपद ध्यातो थको, दव्वह गुण पज्जाय रे ॥ भेद छेद करी आतमा, अरिहंतरूपी थाय रे ॥ १॥वीर जिनेसर उपदिशे, सांभलजो चित्त लाइ रे॥ आतम ध्याने आतमा, ऋद्धि मले सवि आइ रे ॥ वी०॥१॥ इति प्रथम अरिहंतपदपूजा समाप्ता ॥१॥

## ॥ अथ द्वितीय सिद्धपदपूजा प्रारंभः॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ सिद्धाणमाणंसुरमालयाणं ॥

॥ नमो नमोऽणंतचउक्कयाणं ॥

॥ भुजंगप्रयात वृत्तम् ॥

॥ करी आठकर्मक्षये पार पाम्या, जराजन्ममरणादि भय जेणे वाम्या ॥ निरावरण जे आतमरूपे प्रसिद्धा, थया पार पामी सदा सिद्धबुद्धा ॥१॥ त्रि

नागोनदेहावगाहात्मदेशा, रह्या ज्ञानमय जातवर्णा दिलेषा ॥ सदानंद सौख्याश्रिता ज्योतिरूपा, अना बाध अपुनर्नवादिस्वरूपा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ सकलकरममल क्षय करी, पूरण शुद्धस्वरूपो जी ॥ अव्याबाध प्रभुतामयी, आतम संपत्तिभूपो जी ॥१॥ उलालो ॥ जेह भूप आतम सहज संपत्ति शक्तिव्यक्ति पणे करी ॥ स्वद्रव्यक्षेत्र स्वकालभावे, गुण अनंता आदरी ॥ सुस्वभावगुणपर्याय परिणति सिद्धसाधन परभणी ॥ मुनिराज मानसहंससमवरू, नमो सिद्ध महागुणी ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ समयपएसंतर अणफरसी, चरम तिभाग वि शेष ॥ अवगाहन लही जे शिव पोहोता, सिद्ध न मो ते अशेष रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ६ ॥ पूर्व प्रयोग ने गतिपरिणामे, बंधनछेद असंग ॥ समय एक ऊ र्ध्वगति जेहनी,ते सिद्ध प्रणमो रंग रे ॥ भ०॥ सि० ॥७॥ निर्मल सिद्ध शिलानी उपरे, जोयण एक लो गंत ॥ सादि अनंत तिहां स्थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ८ ॥ जाणे पण न

शके कही पुरगुण, प्राकृत तेम गुण जास ॥ उप मा विण नाणी जवमांहे, ते सिद्ध दीयो उल्लास रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ए ॥ ज्योतिशुं ज्योति मली जस अनुपम, विरमी सकल उपाधि, आतमराम रमा पति समरो, ते सिद्ध सहज समाधि रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥

॥ रूपातीत स्वजाव जे, केवल दंशणनाणी रे॥ ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गुणखाणी रे ॥ वी० ॥३॥ इति द्वितीय सिद्धपदपूजा समाप्ता ॥ २ ॥

## ॥ अथ तृतीयआचार्यपदपूजा प्रारंजः ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ सूरीणडुरीकयकुग्गहाणं ॥
॥ नमो नमो सूरसमप्पहाणं ॥

॥ जुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ नमुं सूरिराजा सदा तत्त्वताजा, जिनेंद्रागमे प्रौढ साम्राज्यजाजा ॥ षट्वर्गवर्गित गुणे शोजमाना, पंचाचारने पालवे सावधाना ॥ १ ॥ जविप्राणीनें देशना देश काले, सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले ॥

फिके शासनाधारदिग्दंतिकल्पा, जगे ते चिरं जीव जो शुद्धजल्पा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ आचारज मुनिपति गणि, गुणछत्रीशी धामो जी ॥ चिदानंद रस स्वादता, परजावे निःकामो जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ निःकाम निर्मल शुद्धचिद्घन, साध्यनिज निर्धारथी ॥ निजज्ञान दर्शन चरण वीरज, साधनाव्यापारथी ॥ जविजीव बोधक तत्त्वशोधक, सयलगुणसंपत्ति धरा ॥ संवरसमाधि गतउपाधि, डुविध तपगुण आगरा ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ पंच आचार जे सुधा पाले, मारग जाखे साचो ॥ ते आचारज नमिये तेहशुं, प्रेम करीने जाचो रे ॥ ज० ॥ सि० ॥११॥ वर छत्रीश गुणे करी सोहे, युगप्रधान जन मोहे ॥ जग बोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमुं ते जोहे रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १२ ॥ नित्य अप्रमत्त धर्म उवएसे, नहीं विकथा न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नमिये, अकलुष अमल अमाय रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १३ ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पमिचोयण वली जनने ॥ पटधारी

ततापसवि टाले ॥ ते उवज्झाय नमीजे जे वली, जिन शासन अजुवाले रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥

॥तपसज्झाये रत सदा, द्वादश अंगनो ध्याता रे ॥ उपाध्याय ते आतमा, जगवंधव जगभ्राता रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ इति चतुर्थ उपाध्यायपदपूजा समाप्ता ॥

## ॥ अथ पंचम मुनिपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रा वृत्तम् ॥

॥ साहूण संसाहिअ संजमाणं॥

॥ नमो नमो सुद्धदयादमाणं ॥

॥ भुजंगप्रयात वृत्तम् ॥

॥ करे सेवना सूरिवायग गणिनी, करुं वर्णना तेहनी शी मुणिनी ॥ समेता सदा पंचसमिति त्रिगुप्ता, त्रिगुप्ते नहीं काम भोगेषु लिप्ता ॥ १ ॥ वलि बाह्य अभ्यंतर ग्रंथि टाली, होये मुक्तिने योग्य चारित्र पाली ॥ शुभाष्टांग योगे रमे चित्त वाली, नमुं साधुने तेह निज पाप टाली ॥ २ ॥

॥ ढाल उलालानी देशी ॥

॥ सकल विषय विष वारीने, निःकामी निःसंगी

जी ॥ नवदवताप शमावता, आतमसाधन रंगीजी ॥१॥ उलालो ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणे, देह निर्मम निर्मदा ॥ काउसग्ग मुद्रा धीर आसन, ध्यान अभ्यासी सदा ॥ तप तेज दीपे कर्म जीपे, नैव छीपे परभणी ॥ मुनिराज करुणासिंधु त्रिभुवन, बंधु प्रणमुं हित भणी ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ जेम तरुफूले भमरो बेसे, पीडा तस न उपावे ॥ लेई रस आतम संतोषे, तेम मुनि गोचरी जावे रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २१ ॥ पंच इंद्रियने जे नित्य जीपे, षट्कायक प्रतिपाल ॥ संयम सत्तर प्रकारे आराधे, वंदुं तेह दयाल रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २२ ॥ अढार सहस्स शीलांगना धोरी, अचल आचार चरित्र ॥ मुनिमहंत जयणायुत वंदी, कीजे जनम पवित्र रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २३ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्ति जे पाले, बारसविह तप शूरा ॥ एहवा मुनि नमिये जो प्रगटे, पूरवपुण्य अंकूरा रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २४ ॥ सोना तणी परे परीक्षा दीसे, दिन दिन चढते वाने ॥ संजमखप करता मुनि नमिये, देश काल अनुमाने रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ अप्रमत्त जे नित्य रहे, नवि हरखे नवि शोचे रे ॥ साधु सुधा ते आतमा, शुं मूंडे शुं लोचे रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ इति पंचम मुनिपदपूजा समाप्त ॥५॥

## ॥ अथ षष्ठ सम्यक्त्वदर्शनपदपूजा प्रारंनः ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रा वृत्तम् ॥

॥ जिणुत्ततत्ते रुइलस्कणस्स ॥

॥ नमो नमो निम्मलदंसणस्स॥

॥ नुजंगप्रयात वृत्तम् ॥

॥ विपर्यास हठवासनारूप मिथ्या, टले जे अनादि अठे जेम पथ्या ॥ जिनोक्ते होये सहजथी श्रद्धानं, कहिये दर्शनं तेह परमं निधानं ॥ १ ॥ विना जेहथी ज्ञान अज्ञानरूपं, चरित्रं विचित्रं नवारण्यकूपं ॥ प्रकृतिसातने उपशमे क्षय ते होवे, तिहां आपरूपे सदा आप जोवे ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ सम्यग्दर्शन गुण नमो, तत्त्व प्रतीत स्वरूपो जी ॥ जसु निर्धार स्वनाव ठे, चेतनगुण जे अरूपोजी ॥१॥ उलालो ॥ जे अनुप श्रद्धा धर्म प्रगटे, सय

ल परईहा टले ॥ निजशुद्धसत्ता प्रगट अनुभव,कर णरुचिता ऊछले ॥ बहुमान परिणति वस्तुतत्त्वे, अ हव तसु कारणपणे ॥ निज साध्यदृष्टे सर्वकरणी, त त्त्वता संपत्ति गणे ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ शुद्धदेव गुरुधर्म परीक्षा, सद्दहणा परिणाम ॥ जेह पामीजे तेह नमीजे, सम्यग्दर्शन नामरे ॥ भ० ॥ सि० ॥२६॥ मलउपशम क्षय उपशमक्षयथी, जे होय त्रिविध अभंग ॥ सम्यगदर्शन तेह नमीजे, जिनधर्मै दृढरंग रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २७ ॥ पंच वार उपशमिय लहीजे, क्षयउपशमिय असंख ॥ एक वार क्षायिक ते समकित, दर्शन नमिये असंख रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २८ ॥ जे विण नाण प्रमाण न होवे, चारित्रतरु नवि फलियो ॥ सुख निर्वाण न जे विण लहीये, समकितदर्शन बलीयो रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ॥२९॥ सडसठ बोले जे अलंकरीयो, ज्ञानचारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्शन ते नित्य प्रणमुं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ भ० ॥ ३० ॥

॥ ढाल ॥

॥ शम संवेगादिक गुणा, क्षयउपशम जे आवे

रे ॥ दर्शन तेहिज आतमा, शुं होय नाम धरावे रे॥ वीर०॥७॥ इति षष्ठ सम्यक्त्वदर्शनपदपूजा समाप्ता ॥

## ॥ अथ सप्तम सम्यगज्ञानपदपूजा प्रारंजः ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रा वृत्तम् ॥

॥ अन्नाणसंमोहतमोहरस्स ॥
॥ नमोनमो नाणदिवायरस्स ॥

॥ जुजंगप्रयात वृत्तम् ॥

॥होये जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधे, यथा वरणनासे विचित्रावबोधे ॥ तेणे जाणिये वस्तु षड्द्रव्यजावा, न हुये वितछा (वाद) निजेछा स्वजावा ॥ १ ॥ होय पंच मत्यादि सुज्ञानजेदे, गुरूपास्तिथी योग्यता तेह वेदे ॥ वली ज्ञेय हेय उपादेय रूपे, लहे चित्तमां जेम ध्वांत प्रदीपे ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥जव्य नमो गुणज्ञानने, स्वपरप्रकाशक जावेजी ॥ परजय धर्म अनंतता, जेदाजेद स्वजावे जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ जे मुख्यपरिणति सकलज्ञायक, बोध जावविलछना ॥ मतिआदि पंच प्रकार निर्मल, सिद्ध साधन लछना ॥ स्याद्वादसंगी तत्त्वरंगी, प्रथमजेदा

भेदता ॥ सविकल्पने अविकल्प वस्तु, सकल संयम भेदता ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ भक्ष्याभक्ष्य न जे विण लहिये, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विण लहिये, ज्ञान ते सकल आधार रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ३१ ॥ प्रथम ज्ञानने पछी अहिंसा,श्रीसिद्धांते भाख्युं ॥ ज्ञानने वंदो ज्ञान न निंदो, ज्ञानीये शिवसुख चाख्युं रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ३२ ॥ सकल क्रियानुं मूल जे श्रद्धा, तेहनुं मूल जे कहिये ॥ तेह ज्ञान नित नित वंदीजे, तेविण कहो केम रहिये रे ॥ भ०॥सि० ॥३३॥ पंच ज्ञान मांहि जेह सदागम, स्वपर प्रकाशक जेह ॥ दीपक परे त्रिभुवन उपकारी, वली जेम रवि शशि मेह रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ३४ ॥ लोक ऊर्ध्व अधो तिर्यग् ज्योतिष, वैमानीकने सिद्ध ॥ लोकालोक प्रगटसवि जेहथी, तेह ज्ञाने मुज शुद्ध रे ॥ भ० ॥ सि० ॥३५॥

॥ ढाल ॥

॥ ज्ञानावर्णी जे कर्म छे, क्षयउपशम तस थाय रे ॥ तो हुए एहिज आतमा, ज्ञानअबोधता जाय रे ॥ वी० ॥७॥ इति सप्तम सम्यग्ज्ञानपद पूजा समाप्ता ॥

## ॥ अथ अष्टमचारित्रपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ आराहिअखंडीअ सक्किअस्स ॥

॥ णमो णमो संजमवीरिअस्स ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ वली ज्ञानफल चरण धरीये सुरंगे, निराशंस ता द्वाररोधप्रसंगे ॥ भवांभोधिसंतारणे यानतुल्यं, धरुं तेह चारित्र अप्राप्तमूल्यं ॥ १ ॥ होय जास महीमाथकी रंक राजा, वली द्वादशांगी भणी होय ताजा ॥ वली पापरूपोपि निःपाप थाय, थई सिद्ध ते कर्मने पार जाय ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ चारित्रगुण वली वली नमो, तत्त्वरमण जसु मूलोजी ॥ पररमणीयपणुं टले, सकलसिद्ध अनुकूलो जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ प्रतिकूल आश्रव त्याग संयम, तत्त्वथिरता दममयी ॥ शुचि परम खंति मुत्ति दश पद, पंच संवर उपचई ॥ सामायिकादिक भेद धर्मे, यथाख्याते पूर्णता ॥ अकषाय अकलुष अमल उज्ज्वल, कामकश्मलचूर्णता ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ देश विरतिने सरव विरति जे, गृही यतिने अभिराम॥ते चारित्र जगत् जयवंतुं, कीजे तास प्रणाम रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ३६ ॥ तृणपरे जे षट् खंड सुखछंडी, चक्रवर्ती पण वरियो॥ते चारित्र अक्षय सुख कारण, ते मे मनमांहे धरीयो रे ॥ भ० ॥ सि० ॥३७॥ हुआ रांक पण जे आदरी, पूजित इंद नरिंदे॥ अशरण शरण चरण ते वंदू, पूर्युं ज्ञान आनंदे रे ॥ भ० ॥ सि० ॥३८॥ बार मास पर्याये जेहने, अनुत्तर सुख अतिक्रमिये ॥ शुक्ल शुक्ल अभिजात्य ते उपरे, ते चारित्रने नमिये रे ॥ भ० ॥ सि० ॥३९॥ चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्रनाम निरुत्ते भाख्युं, ते वंदू गुणगेह रे ॥भ०॥ सि० ॥४०॥ ॥ ढाल ॥ जाण चारित्र ते आतमा, निज स्वभावमां रमतो रे ॥ लेश्या शुद्ध अलंकर्यो, मोहवने नवि भमतो रे॥ वी० ॥९॥ इत्यष्टम चारित्रपदपूजा समाप्ता॥

॥ अथ नवम तपःपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रा वृत्तम् ॥

॥कम्मद्दुमोम्मूलणकुंजरस्स ॥

॥ नमो नमो तिव्वतवोभरस्स ॥

॥ मालिनी वृत्तम् ॥

॥ इयनवपयसिद्धं, लद्धिविज्जासमिद्धं ॥ पयडियसुरवग्गं, ह्रींतिरेहासमग्गं ॥ दिसवइसुरसारं, खोणिपीढावयारं ॥ तिजयविजयचक्कं ॥ सिद्धचक्कंनमामि ॥ १ ॥

॥ भुजंगप्रयात वृत्तम् ॥

॥ त्रिकालिकपणे कर्म कषाय टाले, निकाचीतपणे बांधियां तेह बाले ॥ कह्युं तेह तप बाह्य अंतर दुभेदे, क्षमायुक्त निर्हेतु दुर्ध्यान छेदे ॥ २ ॥ होये जास महीमाथकी लब्धि सिद्धि, अवांछकपणे कर्म आवरणशुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेते, होय सिद्धि सीमंतिनी जिम संकेते ॥ ३ ॥ इस्या नव पद ध्यानने जेह ध्यावे, सदानंद चिद्रूपता तेह पावे ॥ वली ज्ञान विमलादि गुणरत्नधामा, नमुं ते सदा सिद्धचक्रप्रधाना ॥ ४ ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥

॥ इम नवपद ध्यावे, पर्म आनंद पावे, नव भव शिव जावे, देव नरभव पावे ॥ ज्ञान विमल गुण गावे, सिद्धचक्रप्रभावे, सवि दुरित समावे, विश्व जयकार पावे ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी ॥ देशी ॥

॥ इच्छारोधन तप नमो, बाह्य अभ्यंतर भेदे जी॥ आतम सत्ता एकता, परपरिणति उच्छेदे जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ उच्छेद मर्म अनादिसंतति, जेह सिद्धपणु वरे ॥ योगसंगे आहार टाली, भाव अक्रियता करे॥ अंतर मुहूरत तत्त्व साधे, सर्व संवरता करी ॥ निज आतमसत्ता प्रगटभावे, करो तप गुण आदरी ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ एम नवपद गुणमंमलं, चउ निक्षेप प्रमाणें जी ॥ सात नये जे आदरे, सम्यग्ज्ञानने जाणे जी ॥ ३ ॥ उलालो ॥ निर्द्धारसेती गुणी गुणने, करे जे बहुमान ए ॥ करण ईहा तत्त्व रमणे, थाय निर्मल ध्यान ए ॥ एम शुद्धसत्ता भव्यो चेतन, सकल सिद्धि अनुसरे ॥ अक्षय अनंत महंत चिद्घन, परम आनंदता वरे ॥ ४ ॥

॥ इय सयल सुखकर गुणपुरंदर, सिद्धचक्र पदा वलि ॥ सवि लब्धिविद्यासिद्धिमंदर, भविक पूजो मन रुली ॥ उवज्झायवर श्रीराजसागर, ज्ञानधर्म सुराजता॥ गुरुदीपचंद सुवरण सेवक, देवचंद सुशोभता ॥ १ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ जाणंता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते भवमुक्ति जिणं द ॥ जेह आदरे कर्म खपेवा, ते तपशिवतरु कंद रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ४१ ॥ कर्म निकाचित पण क्षय जाये, क्षमा सहित जे करतां ॥ ते पण नमिये जेह दीपावे, जिनशासन उजमंतां रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ॥ ४२ ॥ आमोसही पमुहा बहु लब्धी, होवे जास प्रभावे ॥ अष्ट महा सिद्धि नवनिधि प्रगटे, नमिये ते तप भावे रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ४३ ॥ फल शिव सुख महोटुं सुर नरवर, संपत्ति जेहनुं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखुं वंदू, सम मकरंद अमूल रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ४४ ॥ सर्वमंगलमां पहेलुं मंगल, वरणवीये जे ग्रंथे ॥ ते तप पद त्रिहुं काल नमीजे, वर सहा य शिवपंथे रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ४५ ॥ एम नवपद थुणतो तिहां लीनो, हुउं तन्मय श्रीपाल ॥ सुज शविलासे चोथे खंडे, एह अग्यारमी ढाल रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ४६ ॥

॥ ढाल ॥

॥ इछारोधे संवरी, परिणति समता योगे रे ॥ त प ते एहिज आतमा, वर्त्ते निजगुण भोगे रे ॥ वी०॥

॥१०॥ आगम नोआगम तणो, जाव ते जाणो सा
चो रे ॥ आतमजावे थिर होजो, परजावे मत राचो रे
॥ वी० ॥ ११ ॥ अष्ट सकल समृद्धिनी, घटमांहे सि
द्धि दाखी रे ॥ तेम नवपद ऋद्धि जाणजो, आतम
राम ठे साखी रे ॥ वी० ॥१२॥ योग असंख्य ठे जि
न कह्या, नव पद मुख्य ते जाणो रे ॥ एह तणे अ
वलंबने, आतम ध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० ॥ १३ ॥
ढाल बारमी एहवी, चोथे खंडे पूरी रे ॥ वाणी वा
चक जस तणी, कोइ नये न अधूरी रे ॥ वी० ॥
१४ ॥ इति नवम तपः पदपूजा समाप्ता ॥ ए ॥

॥ अथ काव्यम् ॥ द्रुतविलंबितवृत्तम् ॥

॥ विमलकेवलजासनजास्करं, जगति जंतुमहोदय
कारणं ॥ जिनवरं बहुमानजलौघनं, शुचिमनाः स्न
पयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ इति काव्यम् ॥ आ काव्य
प्रत्येक पूजादीठ कहेवुं ॥

॥ स्नात्र करतां जगद्गुरु शरीरे, सकलदेवे विमल
कलशनीरे ॥ आपणा कर्ममल दूर कीधां, तेणे ते
विबुध ग्रंथे प्रसिद्धा ॥२॥ हर्ष धरी अप्सरावृंद आवे,
स्नात्र करी एम आशीष पावे ॥ जिहां लगे सुरगिरि
जंबुदीवो, अम तणा नाथ देवाधिदेवो ॥ ३ ॥

॥ अथ नवपदकाव्यानि प्रारभ्यंते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीअरिहंतपदकाव्यम् ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ नियंतरंगारिगणे सुनाणे, सप्पाडिहेराइ सयप्पहाणे ॥ संदेहसंदोहरयं हरंतो, जाएह निच्चंपि जिणे रहंतो ॥ १ ॥

॥ श्रीसिद्धपदकाव्यम् ॥

॥ दुठ्ठकम्मावरण प्पमुक्के, अनंतनाणाइ सीरीचउक्के ॥ समग्गलोगग्ग पयप्पसिद्धे, जाए ह निच्चंपि समग्गसिद्धे ॥ २ ॥

॥ श्रीआचार्यपदकाव्यम् ॥

॥ सुत्तहसंवेगमयं सुएणं, संनीरखीरामय विसुएणं ॥ पीनंति जे ते उवझायराए, जाएह निच्चंपि कयप्पसाए ॥ ३ ॥

॥ श्रीउपाध्यायपदकाव्यम् ॥

॥ ननं सुहं नहि पीया न माया, जे दंति जिवाण्हिसूरीसपाया ॥ तम्हाहु ते चेव सया भजेह, जं मुस्क मुस्काइं लहु लहेह ॥ ४ ॥

॥ श्रीसाधुपदकाव्यम् ॥

॥ खंतेय दंतेय सुगुत्तिगुत्तो, मुत्तेय संते गु

णजोगजुत्तो ॥ गयप्पमाए गयमोहमाए, झाए
हनिच्चं मुणिरायपाए ॥ ५ ॥

॥ श्रीसम्यग्दर्शनपदकाव्यम् ॥

॥ जं दव्वछिकायेसु सद्दहाणं, तं दंसणं
सव्वगुणप्पहाणं ॥ कुग्गहि वाही उवयंति जेणं,
जहा विधेण रसायणेणं ॥ ६ ॥

॥ श्रीसम्यग्ज्ञानपदकाव्यम् ॥

॥ नाणं पहाणं नयचक्कसिद्धं, ततव्वबोहीक
मयं पसिद्धं ॥ धरेह चित्तावसए फुरंतं, माणि
कदिउवतमो हरंतं ॥ ७ ॥

॥ श्रीचारित्रपदकाव्यम् ॥

॥ सुसंवरं मोहनिरोधसारं, पंचप्पयारं विग
माइयारं ॥ मूलोत्तराणेगगुणं पवित्तं, पालेह
निच्चंपिहु सच्चरित्तं ॥७॥

॥ श्रीतपः पदकाव्यम् ॥

॥ वज्झं तहा ज्जितरज्जेयमेय, कयाय डुब्धेय कुक
म्म ज्जेयं ॥ डुक्कस्कयछे कयपावनासं, तवेणदा
हागमयं निरासं॥ए॥इति नवपदकाव्यानि सं०॥

## ॥ अथ श्रीदेवविजयजीकृत अष्ट ॥
## ॥ प्रकारीपूजा प्रारंजः ॥

॥ तत्र ॥

## ॥ प्रथम न्हवणपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अजर अमर निकलंक जे, अगम्य रूप अनंत ॥ अलख अगोचर नित्य नमुं, परम प्रजुतावंत ॥ १ ॥ श्री संजवजिन गुणनिधि, त्रिजुवन जन हितकार ॥ तेहना पद प्रणमी करी, कहिशुं अष्ट प्रकार ॥२॥ प्रथम न्हवण पूजा करो, वीजी चंदन सार ॥ त्रीजी कुसुम वली धूपनी, पंचमी दीप मनोहार ॥३॥ अक्षत फल नैवेद्यनी, पूजा अतिहि उदार ॥ जे जवियण नित नित करे, ते पामे जव पार ॥ ४ ॥ रतन जडित कलशे करी, न्हवण करो जिनजूप ॥ पातक पंक पखालतां, प्रगटे आत्मस्वरूप ॥ ५ ॥ द्रव्य जाव दोय पूजना, कारण कार्य संबंध ॥ जावस्तव पुष्टि जणी, रचना द्रव्य प्रबंध ॥६॥ शुज सिंहासन मांडीने, प्रजु पधरावो जक्त ॥ पंच शब्द वाजित्रशुं, पूजा करीये व्यक्त ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ अने हांरे जिनमंदिर रलियामणुं रे

॥ ए देशी ॥

॥ अने हांरे न्हवण करो जिनराजने रे, एतो शुद्धालंबन देव ॥ परमातम परमेसरू रे, जसु सुरनर सारे सेव ॥ न्ह० ॥ १ ॥ अ० ॥ मागध तीर्थ प्रभासना रे, सुरनदी सिंधुनां लेव ॥ वरदाम क्षीर समुद्रनां रे, नीरे न्हवे जेम देव ॥ न्ह० ॥ २ ॥अ०॥ तेम भवि भावे तीर्थोदके रे, वासो वास सुवास ॥ औषधीयो पण भेली करो रे, अनेक सुगंधित खास ॥ न्ह० ॥ ३ ॥ अ० ॥ काल अनादि मल टालवा रे भालवा आतम रूप ॥ जल पूजा युक्ते करी रे, पूजो श्री जिनभूप ॥ न्ह० ॥ ४ ॥ अ० ॥ विप्रवधू जल पूजथी रे, जेम पामी सुख सार ॥ तेम तमे देवाधिदेवने रे, अर्ची लहो भवपार ॥ न्ह० ॥ ५ ॥ ॥ अथ काव्यं ॥ विमलकेवलदर्शनसंयुतं, सकलजंतुमहोदयकारणं ॥ स्वगुणशुद्धिकृते स्नपयाम्यहं, जिनवरं नवरंगमयांभसा ॥ १ ॥ इति प्रथमजल पूजा समाप्ता ॥ १ ॥

## ॥ अथ द्वितीय चंदनपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥हवे बीजी चंदन तणी, पूजा करो मनोहार ॥ मिथ्या ताप अनादिनो, टालो सर्व प्रकार ॥ १ ॥ पुद्गल परिचय करी घणो, प्राणी थयो डुर्वास ॥ सुगंध द्रव्य जिनपूजने, करो निजशुद्ध सुवास ॥ २ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ मनथी डरणां, परनारीसंग न करणां ॥ ए देशी ॥

॥ भवि जिनपूजो, डुनियामां देव न दूजो ॥ जे अरिहा पूजे, तस भवनां पातक ध्रूजे ॥ भ० ॥ १ ॥ प्रभुपूजा बहु गुण भरी रे, कीजे मनने रंग ॥ मन वच काया थिर करी रे, अरचो अरिहा अंग ॥भ०॥ ॥ २ ॥ केसर चंदन घसी घणुं रे, मांहे भेली घन सार ॥ रत्नकचोलीमांहे धरी रे, प्रभुपद चर्चो सार ॥ भ० ॥ ३ ॥ भवदव ताप शमाववा रे, तरवा भवजल तीर ॥ आतम स्वरूप निहालवा रे, रूठो जगगुरु धीर ॥ भ० ॥ ४ ॥ पद जानु कर अंस शिरे रे, भाल गले वली सार ॥ हृदय उदर प्रभुने सदा रे, तिलक करो मन प्यार ॥ भ० ॥ ५ ॥

एणिविध जिनपद पूजनारे, करतां पाप पलाय ॥ जेम जयसुरने शुन्नमति रे ॥ पाम्या अविचल ठा य ॥ न्न० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ जगडुपाधिचयाङ्गहितं हितं, सहजतत्त्वकृते गुणमंदिरं ॥ विनयदर्शन केशर चंदनै, रमलहन्मलहज्जिनमर्च्चये ॥ १ ॥ इति द्वि तीयचंदनपूजा समाप्ता ॥ २ ॥

## ॥ अथ तृतीय कुसुमपूजा प्रारंन्नः ॥

॥ दोहा ॥

॥ त्रीजी कुसुम तणी हवे, पूजा करो सद्न्नाव ॥ जेम डुष्कृत दूरे टले, प्रगटे आत्मस्वन्नाव ॥१॥ जे जन षट् रुतु फूलशुं, जिन पूजे त्रण काल ॥ सुर न र शिव सुख संपदा, पामे ते सुरसाल ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ साहेलमीयांनी देशी ॥

॥ कुसुम पूजा न्नवि तुमे करो ॥ साहेलमीयां ॥ आणी विविध प्रकार ॥ गुण वेलमीयां ॥ जाइ जूइ केतकी ॥ सा० ॥ दमणो मरुउ सार ॥ गु० ॥ १ ॥ मोघरो चंपक मालती ॥ सा० ॥ पामलपद्मने वेल ॥ गु० ॥ वोलसिरी जासूलशुं ॥ सा० ॥ पूजो मनने गे ल ॥ गु० ॥ २ ॥ नाग गुलाब सेवंतरी ॥ सा० ॥ चं

पेली मचकुंद ॥ गु० ॥ सदा सोहागण दाउदी ॥ सा० प्रियंगु पुन्नागना वृंद ॥ गु० ॥ ३ ॥ वकुल कोरंट अं कोलथी ॥ सा० ॥ केवडो ने सहकार ॥ गु० ॥ कुं दादिक पमुहा घणे ॥ सा० ॥ पुष्पतणे विस्तार ॥ गु० ॥ ४ ॥ पूजे जे भवि भावशुं ॥ सा० ॥ श्री जिन केरा पाय ॥ गु० ॥ वणिकसुता लीलावती ॥ सा० ॥ जिम लहे शिवपुर ठाय ॥ गु० ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ सुक रुणासुनृतार्जवमार्दवैः, प्रशमशौचशमादिसुमैर्जनाः ॥ परमपूज्यपदस्थितमर्चितं, परमुदारमुदारगुणं जिनं ॥ ॥ १ ॥ इति तृतीय पुष्पपूजा समाप्ता ॥ ३ ॥

## ॥अथ चतुर्थ धूपपूजा प्रारंभः॥

॥ दोहा ॥

॥ अर्चा धूप तणी करो, चोथी हर्ष अमंद ॥ कर्म धन दाहन भणी, पूजो श्री जिनचंद ॥ १ ॥ सुविधि धूप सुगंधशुं, जे पूजे जिनराय ॥ सुरनर किन्नर ते सवि, पूजे तेहना पाय ॥ २ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ सामरी सुरत पर मेरो दिन अटक्यो ॥ ए देशी ॥

॥ अरिहा आगें धुप करीने, नरभव लाहो ली

जेरी ॥ अगर चंदन कस्तूरी संयुक्त, कुंदरु मांहे धरी जेरी ॥ अरि० ॥ १ ॥ चूरण शुद्धि दशांग अनोपम, तुरुक्क अंबर नावीजेरी ॥ रत्नजडित धूपधाणामांहे, शुन्न घनसार ठवीजे री ॥ अरि० ॥ २ ॥ पवित्र थइ जिनमंदिर जइने, आशय शुद्ध करीजे री ॥ धूप प्रगट वामांगे धरतां, नव नव पाप हरीजे री ॥ अ० ॥ ३ ॥ समतारस सागर गुण आगर, परमातम जिन पूरा री॥चिदानंद घन चिन्मय मूरति, ऊग मग ज्योति सनूरा री अरि० ॥ ४ ॥ एहवा प्रनुने धूप करंतां, अविचल सुखमां लहिये री ॥ इह नव परनव संपत्ति पामे, जेम विनयंधर कहिये री ॥ अरि० ॥ ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ अशुनपुजलसंचयवारणं, सम सुगंधकरं तपधूपनं ॥ नगवता सुपुरोहितकर्मणां, जयवतो यवतोऽक्रयसंपदा ॥ १ ॥ इति चतुर्थधूप समाप्त ॥ ४ ॥

## ॥ अथ पंचम दीपकपूजा प्रारंनः ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ निश्चय धन जे निज तणुं, तिरोनाव छे तेह ॥
प्रनुमुख ऽव्य दीपक धरी, आविर्नाव करेह ॥१॥

॥ अभिनव दीपक ए प्रभु, पूजी मागो देव ॥ अज्ञान तिमिर जे अनादिनुं, टालो देवाधिदेव ॥ २ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ झुंमखडानी देशी ॥

॥ भावदीपक प्रभु आगले, द्रव्यदीपक उत्सा हे ॥ जिनेसर पूजीये ॥ प्रगट करी परमातमा, रूप भावो मनमांहे ॥ जि० ॥ १ ॥ धूम कषाय न जे हमां, न छिपे पतंगने तेज ॥ जि० ॥ चरण चित्राम ण नवि चले, सर्व तेजनुं तेज ॥ रे ॥ जि० ॥ अधन करे जे आधारने, समीर तणे नहीं गम्य ॥ जि० ॥ चंचल भाव जे नवि लहे, नित्य रहे वली रम्य ॥ जि० ॥ ३ ॥ तैल प्रक्षेप जिहा नही, शुद्ध दशा न हि दाह ॥ जि० ॥ अपर दीपक ए अरचतां, प्रगटे प्रशम प्रवाह ॥ जि० ॥ ४ ॥ जेम जिनमतिने धनसिरि, दीप पूजनथी दोय ॥ जि० ॥ अमरग ति सुख अनुभवी, शिव पुर पोहोती सोय ॥ जि० ॥ ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ बहुलमोहतमिस्रनिवारकं, स्वप रवस्तुविकासनमात्मनः ॥ विमलबोधसुदीपकमादधे, भुवनपावनपारगताग्रतः ॥ १ ॥ इति पंचम दीपक पूजा समाप्ता ॥ ५ ॥

## ॥ अथ षष्टाक्षत पूजा प्रारंजः ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ समकितने अजुआलवा, उत्तम एह उपाय ॥ पूजाथी तुमे प्रीछजो, मन वंछित सुख थाय ॥ १ ॥ अक्षत शुद्ध अखंडशुं, जे पूजे जिनचंद ॥ लहे अखंमित तेह नर, अक्षय सुख आणंद ॥ २ ॥

॥ ढाल छही ॥ धर्मजिणंद दयालजी, धर्म तणो दाता ॥ ए देशी ॥

॥ अक्षत पूजा जवि कीजे जी, अक्षत फल दाता ॥ शालि गोधूम पण लीजेजी ॥ अ० ॥ प्रजु सनमुख स्वस्तिक कीजेजी ॥अ०॥ मुक्ताफल नीचमे दीजेजी ॥ ॥ अ० ॥१॥ एहवा उज्ज्वल अक्षत वासीजी ॥अ०॥ शुज्र तंडुल वासे उल्लासी जी ॥ अ० ॥ चूरक चउ गति चित्त चोखें जी ॥अ०॥ पूरी अक्षय सुख लहो जोखे जी ॥ अ० ॥ २ ॥ पुनरावर्त्त हरवा हाथे जी ॥ अ० ॥ नंदावर्त्त करो रंग साथे जी ॥ अ० ॥ कर जोडी जिनमुख रहीने जी ॥अ०॥ एम आखो शिव दीयो वहीने जी ॥ अ० ॥ ३ ॥ जगनायक जगगुरु जेता जी ॥अ०॥ जगबंधु अमल विज्ञु नेता जी ॥अ०॥

ब्रह्मा ईश्वर वरुनागी जी ॥ अ० ॥ योगीश्वर विदित वैरागी जी ॥ अ० ॥ ४ ॥ एहवा देवाधिदेवने पूजे जी ॥ अ० ॥ नवनवनां पातक धुजे जी ॥ अ० ॥जेम कीरयुगल नवपार जी ॥ अ० ॥ लहे अक्षत पूज प्रकार जी ॥ अ० ॥५॥ काव्यं ॥ सकलमंगलसंन वकारणं, परममक्षतनावकृते जिनं ॥ सुपरिणाममम येरहमक्षतैः, परमया रमया युतमर्च्चये ॥ इति षष्ठा क्षत पूजा समाप्ता ॥ ६ ॥

## ॥ अथ सप्तम फल पूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीकार उत्तम वृक्षनां, फल लेइ नर नार ॥ जिनवर आगे जे धरे, सफलो तस अवतार ॥ १ ॥ फल पूजानां फलथकी, कोडि होय कल्याण ॥ अमर वधू उलट धरी, तस धरें चित्तमां ध्यान ॥ २ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ बिंदलीनी देशी ॥

॥ फलपूजा करो फलकामी, अनिनव प्रनु पुण्ये पामी हो ॥ प्राणी जिन पूजो ॥ श्रीफल अखोम बदाम, सीताफल दाडिम नाम हो ॥ प्र० ॥ १ ॥ जमरुख तरबूज केलां, निमजां कोहलां करो नेलां हो ॥

प्रा० ॥ पीस्तां फनस नारंग, पूंगी चूअफल घणुं चंग हो ॥ प्रा० ॥२॥ खरबूज डाख अंजीर, अन्नास रायण जंबीर हो ॥ प्रा० ॥ मिष्ट लींबुने अंगुर, शिं गोडा टेटी बीजपूर हो ॥ प्रा० ॥३॥ एम जे जे विष य लहंत, ते ते जिनभुवने ढोयंत हो ॥ प्रा० ॥ अनु पम थाल विशाल, तेहमां भरीने सुरसाल हो॥प्रा० ॥४॥ फलपूजा करे जे भावे, ते शिवरमणी सुख पावे हो ॥ डुर्गता नारी जेम लहे, कीरयुगल वली तेम हो ॥ प्रा० ॥५॥ काव्यं ॥ अमलशांतिरसैकनिधिं शु चिं, गुणफलैर्मलदोषहरैर्हरं ॥ परमशुद्धिफलाय यजे जिनं, परहितं रहितं परभावतः ॥ १ ॥ इति सप्तम फलपूजा समाप्ता ॥ ७ ॥

## ॥ अथाष्टम नैवेद्यपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ भवदव दहन निवारवा, जलद घटा सम जेह ॥ जिन पूजा युगते करी, त्रिविधे कीजे तेह ॥ १ ॥ पूजा कुगतिनी अर्गला,पुण्य सरोवर पाल ॥ शिवग तिनी साहेलडी, आपे मंगल माल ॥ २ ॥ शुभ नै वेद्य शुभ भावशुं, जिन आगे धरे जेह ॥ सुरनर शिवपद सुख लहे, हलीय पुरुष परे तेह ॥ ३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ श्रावण मासे स्वामी, महेली चा
व्या रे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे नैवेद्य रसाल, प्रभुजी आगे रे ॥ धरतां भवि सुखकार, प्रभुता जागे रे ॥ कंचन जमित उदार, थालमां लावो रे ॥ तार तार मुज तार, भावन भावो रे ॥ १ ॥ लापसी सेव कंसार, लाडु ताजा रे॥ मनोहर मोतिचूर, खुरमां खाजां रे ॥ बरफी पेंमा खीर, घेवर घारी रे ॥ साटा सांकली सार, पूरी खारी रे ॥ २ ॥ कसमसीया कूलेर, सकरपारा रे ॥ लाखण साइ रसाल, धरो मनोहारा रे ॥ मोतैया कलि सार, आगे धरीये रे ॥ भव भव संचित पाप, क्षणमां हरिये रे ॥ ३ ॥ मुरकी मेसुर दहींथरा, वर सोलां रे ॥ पापड पूरी खास, दोठां घोलां रे ॥ गुंद वडांने रेवमी, मन भावे रे ॥ फेणी जलेबी मांहे, सरस सोहावे रे ॥ ४ ॥ शालि दालने सालणां, मन रंगे रे ॥ विविध जाति पकवान, ढोवो चंगे रे ॥ ताल कंसाल मृदंग, वीणा वाजे रे ॥ भेरी नफेरी चंग, मधुरध्वनि गाजे रे ॥ ५ ॥ शोल सजी शणगार, गोरी गावे रे ॥ देतां अढलक दान, जि

नयर आवे रे ॥ एणि परे अष्ट प्रकार, पूजा करशे रे ॥ नृप हरिचंद्र परे तेह, नवजल तरशे रे ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ सकल चेतनजीवितदायिनी, विमलनक्ति विशुद्धिसमन्विता ॥ नगवतःस्तुतिसारसुखासिका, श्रमहरा महरास्तु विज्ञोः पुरः ॥ इत्यष्टम नैवेद्य पूजा समाप्ता ॥ ८ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ नमो नवि नावशुं ए ॥ ए देशी ॥

॥ अष्ट प्रकारी चित्त नाविये ए, आणी हर्ष अपार ॥ नविजन सेविये ए ॥ अष्ट महासिद्धि संपजे ए, अरूबुद्धि दातार ॥ नवि० ॥ १ ॥ अडदिठि पण पामीये ए, पूजथी नवि श्रीकार ॥ न० ॥ अनुक्रमे अष्ट करम हणी ए, पंचमी गति लहो सार ॥ न० ॥ २ ॥ शा न्हानासुत सुंदर ए, विनयादिक गुणवंत ॥ न० ॥ शाह जीवणना कहेणथी ए, कीयो अन्यास ए संत ॥ न० ॥ ३ ॥ सकल पंमित शिरसेहरो ए, श्रीविनितविजय गुरु राय ॥ न० ॥ तास चरण सेवाथकी ए, देवनां वंठित थाय ॥ न० ॥ ४ ॥ शशि नयन गज विधु वरु ए, (१४२१) नाम संवत्सर जाण ॥न०॥ तृतीया सित आशोतणी ए, शुकर वार

प्रमाण ॥ न० ॥ ५ ॥ पादरा नगर विराजता ए, श्री संनव सुखकार ॥ न० ॥ तास पसायथी ए रची ए, पूजा अष्टप्रकार ॥ न० ॥ ६ ॥

## ॥ कलश ॥

॥इह जगत् स्वामी, मोहवामी, मोक्षगामी, सुख करू ॥ प्रज्ञु अकल अमल, अखंड निर्मल, नव्य मिथ्या, तम हरू ॥ देवाधिदेवा, चरणसेवा, नित्य मेवा आपीये ॥ निजदास जाणी, दया आणी, आप समो वरू थापीये ॥ १ ॥ श्लोक ॥ इति जिनवरवृंदं, शुऊनावेन कीर्त्ति, विमलमिह जगत्यां, पूजयंत्यष्टधा ये ॥ निज कलिमलहेतोः, कर्मणोंतं विधाय, परमगुणमयं ते, यांति मोक्षं हि वीराः ॥ १ ॥ इति अष्टप्रकारी पूजा संपूर्णा ॥

॥ इति श्रीदेवविजयजीकृत अष्ट प्रकारी पूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ ॥

## ॥ श्रीसकलचंदजी उपाध्यायकृत एकवीशप्रकारी पूजा प्रारंनः ॥

॥ तत्र ॥

### ॥ प्रथम जलपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रणमुं प्रथम जिणंदने, जगवति कर सुपसाय॥ पूजा एकवीश ऊव्यशुं, नावमंगल उपाय ॥ १ ॥ न्हवण वस्त्र चंदन करी, कुसुम वास चूनार ॥ मा ला अष्टमंगल नणी, दीप धूपाक्त धार ॥ २ ॥ ध र्मध्वज चामर सही, छत्रें मुकुट विशेष ॥ दर्पण द र्शन दाखवे, नैवेद्य फल सुप्रदेश ॥ ३ ॥ गीत नट्ट वाजित्रशुं, जन पूजे जिनइंद ॥ काउस्सग्गध्याने जेणे करी, पूजा सकल मुनिचंद ॥ ४ ॥

॥ प्रथम पूरवदिशे ॥ ए देशी ॥ राग देशाख ॥

॥ प्रथम जिननायकं, पूजी सुखदायकं, खीरस मुद्र जल, शुं नरी ए ॥१॥ कनककलशा धरी,गंधोद के तेह नरी, श्रीजिन चरणे, नमन करे ए ॥२॥ इंद्र

इंद्राणी करे, हर्ष उलट धरे, धन्य कृतारथ भव क
रे ए ॥३॥ प्रथम जिन पूजना, एणी विधे भविज
ना, सकलमुनि काउस्सग्गे, एम भणे ए ॥ ४ ॥ इति
प्रथम जलपूजा समाप्ता ॥

## ॥ अथ द्वितीयवस्त्रपूजा प्रारंभः ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ निर्मल एह जिनगात्रशुं, निर्मल जेहनी कांति ॥
अंगलुहणा अंगे करी, टालो मननी भ्रांति ॥ १ ॥
॥ ध्रुवपदं ॥ आशावरी, तथा गोडीरागेण गीयते ॥
॥ उज्ज्वल वस्त्रादिक भणी, उज्ज्वल चित्त आणी ॥
वस्त्रश्वेत जिन पूजतां, परमानंद निशाणी ॥ १ ॥
इंद्रादिक प्रभु पूजीयो, तेपरे केम होय प्राणी ॥ तो
पण मुज तुज रीझशुं, पूजा अधिक मे जाणी ॥ इं
द्रा० ॥ २ ॥ देवदुष्यवस्त्र लायके, अंगलूहणां करि
ये ॥ इंद्र भक्ति करे भावशुं, चपल चित्त ठरिये ॥ इं
द्रा० ॥३॥ उज्ज्वल चित्त लगायके, प्रभुपूजा कीजे ॥
उपशम रस भरी ते पीये, परम महारस लीजे ॥
इंद्रा० ॥ ४ ॥ इति द्वितीयवस्त्रपूजा समाप्ता ॥

## ॥ अथ तृतीयचंदनपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ शीतल गुण जेमां रह्यो, शीतल जिन सुखसंग ॥ चंदनघन शुभसारशुं, पूजीजे मनरंग ॥ १ ॥

॥ ध्रुवपदं ॥ आशावरी रागेण गीयते ॥

॥ बावना चंदन, घसी घनसारशुं, कनक कचोली, लेईये ए ॥ वास सुवास, बरास भेलीने, सुरभिवर कस्तूरी, देईये ए॥बावना० ॥१॥ ए आंकणी ॥ प्रथम चरणमे, पूजि जानू करे, अंस शिर भालमां, सोहिये ए ॥ कंठ हृदि उदर नव दीजीये, एणी विधे प्रभुपूजा मोहिये ए ॥ बावना० ॥ २ ॥ इंद्रादिक परे केम हम होवत, तोभी हम तुम संगिये ए ॥ देवि देवादिक, गात्रविलेपिने, सकलदुरित भय, भंजिये ए ॥ बावना० ॥३॥ इति तृतीयचंदनपूजा समाप्ता ॥ ३ ॥

## ॥ अथ चतुर्थपुष्पपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ जाई जुई सेवंतरी, प्रफुल्लित वेली विशाल ॥ जिनचरणे चढावतां, दुरित हरे तत्काल ॥ १ ॥

॥ आशावरीरागेण गीयते ॥

॥ कमल कुसुमवर विविध जातिशुं, वेली वालो वि शाल रे ॥ चंपक केतकी कुंद जासुलवर, पाडल लाल गुलाल रे॥कमल० ॥१॥ ए आंकणी ॥ मरुवरो मालती दमणजातिशुं, बोलसिरी नागप्रियंगो रे॥कुंद मचकुंद विमालया जातिशुं, दाउदीसंग अनंगोरे ॥ कमल० ॥२॥ इंद्र इंद्रादिक नक्ति करे मली, हर्ष धरी मन रंगे रे॥विविधजाति वरकुसुम ग्रहीने, प्रनु पूजे चि त्त चंगे रे ॥ कमल० ॥३॥ सूर्याभ नावे करी जिनपू जा, शुन शुन फल तेम लीजे रे ॥ तस फल ना व सुणी जिन आगम, चोथी पूजा कीजे रे ॥ कम ल० ॥ ४ ॥ इति चतुर्थकुसुमपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥

## ॥ अथ पंचमवासपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ नंदनवन सुरपतिरमण, अनिनंदन मुऊ स्वाम ॥ वास सुगंधमां मेलवी, पूजीजें जिनधाम ॥ १ ॥

॥ सारंग तथा आशावरीरागेण गीयते ॥

॥ नंदना वनतणुं बावना चंदन, नविजन आणो, शुरू करी ए ॥ वास सुवास बरास नेलीने, शुरू घन

सार तेहमां धरी ए ॥ १ ॥ जाइ मंदारशुं वासित ते सही, अगर चंदनशुं विरचिया ए ॥ विविध सुगंध, द्रव्यादिक नेलिनें, तिहां जेम सुरपति अरचिया ए ॥२॥ तेम प्रनुसंगे, करी मनरंगे, आज उलट धरी, हर्ष नरी ए ॥ कुंमर कुमरी पूजे, मनने आणंदे संसार सायर, जेम तरी ये ॥ ३ ॥ पंचमी पूजना, पंचम गति कारण, वासविलास दे, सरसीया ए ॥ प्रनु तणे अंगे, हर्ष नरी पूजता, तेणे सवि डुरित नय, खरचिया ए ॥४॥ इति पंचमवासपूजा समाप्ता ॥५॥

## ॥ अथ षष्ठचूआचूर्णपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अगरचुर्ण चंदनमयी, घनसारादिक सार ॥
प्रनुचरणे पूजा करे, तस होय नवनो पार ॥ १ ॥

॥ ध्रुवपदं ॥ काफीरागेण गीयते ॥

॥ घनसारादिक चूर्ण मेली, चूआ चंदनमांहे नेली ॥ पूजो प्रनु मनरंगे रे ॥ १ ॥ शिवसुख लेवा जो मन धरिये तो, चूरण पूजा प्रनु करिये ॥ आतम आनंदमय गुण नरिये ॥२॥ चूरण गंधवासित बहु

सार, सुरपति पूजा करे निरधार ॥ जन्म कृतारथ तेह निस्तार ॥ ३ ॥ अमर अमरी करे पूजा गुण पामी, चित्त धरे शिवपुर आरामी ॥ परपरिणति करिये निष्कामी ॥४॥ इति षष्ठचूआचूर्णपूजा समाप्ता ॥६॥

## ॥ अथ सप्तमपुष्पमालापूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ रत्नमाल सुरपति करे, कुसुम सहित सुगंध ॥
प्रभु कंठे आरोपीने, प्रफुल्लित होय सुरवृंद ॥ १ ॥

॥ सारंगरागेण गीयते ॥

॥मनमोहन माला कीजीये, विविध जाति सुर कुसुम ग्रहीने, गुंथी जिनकंठे दिजीये ॥ मन० ॥ १ ॥ ॥ ए आंकणी ॥ चंपक केतकी कुंद जासुलवर, लाल गुलाल मांहे लीजीये ॥ मन० ॥ २ ॥ मोघरो मालती दमणो पुन्नागशुं, गुंथी सुरपति रीजीये ॥ मन०॥ ॥ ३ ॥ सप्तमी पूजा करत एम सुरपति, अनुभवरस शुं भींजीये ॥मन०॥४॥ सूर्याभ भावे करी जिनपूजा, उपशम रस भरी पीजीये ॥मन० ॥५॥ इति सप्तमपुष्पमालपूजा समाप्ता ॥ ७ ॥

## ॥ अथ अष्टमाष्टमांगलिकपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥सुरपति अष्ट मंगल रची, मणितंदुल विस्तार॥ रत्न विविध मणि तेहशुं, पूरे अखंडित धार ॥ १ ॥

॥ नट्ट रागेण गीयते ॥

॥मंगल मोहे घर कीजे ॥ जिणंदराय ॥ मंगल०॥ ॥ ए आंकणी ॥ सवि साधन एक सिद्धि कीजे, मंगल आठ रचीजे ॥ जिणंद०॥मंगल० ॥१॥ स्वस्तिक श्रीवत्स कुंभ भद्रासन, चार गतिकुं छीजे॥ तंदुल वासित अष्ट मंगल धरी, अक्षयपद ए लीजे ॥ जिणंद० ॥ मंगल० ॥ २ ॥ नंदावर्त्त करी जिणंदमुख, वर्द्धमान तिहां सार ॥ मत्स्ययुगल तेहमांहे रचीजे, दर्पण अष्ट प्रकार ॥जिणंद०॥ मंगल०॥३॥ एह विध मंगल आठ लखीने, सुरनर जिन पूजीजे ॥ अष्टमी पूजा करो तुमे भविजन, अष्टकर्म दूर कीजे ॥ जिणं ॥मं०॥४॥ इति अष्टमाष्टमांगलिकपूजा समाप्ता ॥७॥

## ॥ अथ नवम दीपकपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ द्रव्यदीप पुजा करी, भावदीप शुद्धवास ॥ अज्ञानता दूरे करी, ज्ञानदीप परकाश ॥ १ ॥

॥ ध्रुवपदं ॥ काफीरागेण गीयते ॥

॥ दीप प्रगट कर लीजे, जिणंदमुख॥दीप प्रगट कर ली जे ॥ ए आंकणी॥जिनपति सन्मुख दीप ग्रहीने, आतम प्रकाशक कीजे ॥ जि० ॥ दी० ॥ १ ॥ मिथ्या तिमिर रह्यो घट अंतर् , ताकूं ज्योति धरिजे ॥ ज्ञानदशा प्रगटे चित्त अंतर् , चिदानंदघन रीजे ॥ जि० ॥ दी०॥२॥ द्रव्य दीप दया करी फानस, अनुकंपा करी लीजे ॥ जीवदया कारण करी करुणा,एह विध नक्ति करी जे॥ जि० ॥दी० ॥ ३ ॥ एह विध दीपकपूजा कीजे, तत्त्व ते नव ग्रहीजे ॥ नव ग्रैवेयके आतम प्रकाशे, काल अनादि ठीजे ॥जि०॥दी० ॥ ४ ॥ इति नवमदीपकपूजा समाप्ता॥ए॥

## ॥ अथ दशमधूपपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर्मदहनने कारणे, ध्यानानल करी जेह ॥
॥ द्रव्यधूप पूजा करी, निर्मल करि निज देह ॥ १ ॥

॥ ध्रुवपदं ॥ पूर्वीरागेण गीयते ॥

॥ धूप प्रगट करी लीजे, नविकजन धूप प्रगट करी लीजे॥सुरपति धूप ग्रही जिन आगल, कृष्णागरु मांहे दीजे ॥ न० ॥ धू० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कुंदरु

कस्तूरी अंबर नेली, वली घनसार मेलावो ॥ शुद्ध वरास अगर तगरशुं, दिशोदिश धूप करावो॥ ज॰ ॥ ॥ धू॰ ॥ २ ॥ चंदनचूरण करी मांहे वली, शर्करादिक मेलावो ॥ जेम सुरपति जिन नक्ति करत शुन, तेम तुमे करी नवि नावो ॥ ज॰ ॥ धू॰ ॥ ३ ॥ जिनमुख आगल धूप करीने, निर्धूम आत्म करीजे॥ ते कारण धूप पूजा करतां, नवसायर तरी जे ॥ ज॰ ॥ धूं॰ ॥ ४ ॥ इति दशमधूपपूजा समाप्ता ॥ १० ॥

## ॥ अथ एकादश अक्षतपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अक्षयपद देवा नणी, अक्षत पूजा सार ॥
॥ अखंडाक्षत जिन पूजीये, तो लहिये जयकार ॥१॥

॥ ध्रुवपदं ॥ काफीरागेण गीयते ॥

॥ चित्त तमे करो नविकजन, मणि तंडुल उदार ॥ चित्त॰ ॥ अखंड अक्षत आणी नावे, थाल नरो जय कार ॥ चित्त॰ ॥ मणि॰ ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जिन आगल सवि आय करो तुम, स्वस्तिक पूरो विशाल ॥ विच बिच रत्न धरीजे अमूलक, निजचित्त जाक जमाल ॥ चित्त॰ ॥ मणि॰ ॥ २ ॥ उज्ज्वल अक्षत

नरी तंडुल शुन्न, वासवासित घनसार ॥ मुक्ता फल वली मांहे मनोहर, शोन्ने अति शिरदार ॥ चित्त० ॥ मणि० ॥ ३ ॥ एहविध पूजा करत जिनवर की, पावत हे नवपार ॥ ऊव्यविधाने नक्तिशुं कीजे, नाव प्रगटे निरधार ॥ चित्त० ॥ मणि० ॥ ४ ॥ इति एकादश अक्षतपूजा समाप्ता ॥ ११ ॥

## ॥ अथ द्वादशध्वजपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ इंड इंद्रादिक नावशुं, नक्ति करे वली जेह ॥
॥ इंड ध्वजशुं शोनता, हर्ष धरे वली तेह ॥ १ ॥

॥ ध्रुवपदं ॥ गोडीरागेण गीयते ॥

॥ कनकदंडकर रत्नजमित वली, सुरपति ग्रहे मनरंगे रे ॥ वली उपर मुक्ताफल माला, कुसुममाल सुखसंगे रे ॥ क० ॥ १ ॥ दंड गगनशुं वाद करे जे, किंकिणीनाद घन गाजे रे ॥ चपला करी पताका एम कहे, घोषण दे सुरराजें रे ॥ क० ॥ २ ॥ सहस योजन दंड उत्तंग सोहे, नविजननां मन मोहे रे ॥ लघुपताके पूजा करतां, जेम जिन आगल जोहे रे ॥क०॥३॥ सुरनरनां मन मोहे सुंदर, सुरनर ध्वज जेम कीधो रे

॥ तेम नविजन ध्वजपूजा करतां, तेणे नरनव फल लीधो रे॥क०॥४॥इति द्वादशध्वजपूजा समाप्ता ॥१२॥

## ॥ अथ त्रयोदशचामरपूजा प्रारंभः ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ सिंहासन जिन थापीने, पूजा करे सुरराय ॥
चामर प्रनुशिर ढालतां, करतां पुण्य उपाय ॥ १ ॥

### ॥ ध्रुवपदं काफीरागेण गीयते ॥

॥ तेम तुमे करो नविक जन, चामर वींजे सुरराज॥ तेम तुमे० ॥ इंद्रइंद्रादिक सन्मुख गाढे, करता जन्मशुनकाज ॥ तेम तुमे० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ हेम तार सुर गुंथी करथी, करता जडित जमाव ॥ रत्नमयी दंड रत्नमे जडता, करता नक्ति प्रनाव ॥ तेम तुमे० ॥ २ ॥ मणि माणिक मोतीमे जडता, हीरा लाल विशाल ॥ चामर वींजे सुरमन रीजे, वींजे थई उजमाल ॥ तेम तुमे० ॥३॥ इणविध पूजा तेरमी कीजे, कुशल क्षेम तस दीजे ॥ सुरपति नक्ति सहित करे पूजा, सुरसुख शुनफल लीजें ॥ तेम तुमे० ॥ ४ ॥ इति त्रयोदश चामरपूजा समाप्ता ॥ १३ ॥

## ॥ अथ चतुर्दश छत्रपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ रत्नजडित घट ऊपरे, थापी श्री जिनराज ॥ सुरपति छत्रादिक धरे, साधे वांछित काज ॥ १ ॥

॥ ध्रुवपदं ॥ सोरठ रागेण गीयते ॥

॥ विविधजुगते जड्युं, छत्र शोभा वन्युं, प्रभुशिर शोहतुं ॥ १ ॥ रयण कंचन तणुं, जडित जडावनुं, सुर मन मोहतुं ॥ २ ॥ मणि माणिक सही, हीरला पुखराजमयी, लाल लीलम सोहतुं ॥ ३ ॥ इंद्रइंद्राणी भक्ति करे, हर्ष मनशुं धरे, उत्साह करे जोहतुं ॥ ४ ॥ इति चतुर्दश छत्रपूजा समाप्ता ॥ १४ ॥

## ॥ अथ पंचदश मुकुटपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर्णकुंडलशुं जड्यां, रयणादिक वली जेह ॥ मुकुट प्रभु शिर सोहतो, निरखे इंद्र वली तेह ॥ १ ॥

॥ ध्रुवपदं ॥ गोमीरागेण गीयते ॥

॥ मुकुट इंद्र जडित लइ आवे, प्रभुशिर तेह सोहावे रे ॥ इंद्र इंद्राणी मली कुसुम भरावे, मुक्ताफलशुं जडावे रे ॥ मुकुट० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ उपर हा

र रचित बहु भूषण, जिनकंठें तेह पहेरावे रे ॥ भु जजुग वर बहेरखा देई, भाल तिलक जडावे ॥ मुकुट० ॥ २ ॥ सुरपति भक्ति करे मनरंगे, सहस लोचन करी निरखे रे ॥ तेम भविकजन निर्मल चित्ते, पूजे प्रभु मन हर्षे रे ॥ मुकुट० ॥ ३ ॥ इति पंचदशमुकुटपूजा समाप्ता ॥ १५ ॥

## ॥ अथ षोमश दर्प्पणपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रभुदर्शन करवा भणी, दर्प्पणपूज विशाल ॥
आतमदर्पणथी जुए, दर्शन होय तत्काल ॥ १ ॥

॥ ध्रुवपदं ॥ काफीरागेण गीयते ॥

॥ शुद्ध देव गुरुधर्म धरो रे, तब दर्शन तमे आतम करो रे ॥शु०॥ दर्प्पणपूजा दर्शन कारण, जिनपूजी तमे आप तरो रे ॥ शु० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ शुद्ध देव मनमांहे धरीने, चित्तदर्प्पणशुं आप जुउं रे ॥ गुरु उपदेश धर्म चित्त धारी, परपरिणति तुमे आप खुउं रे ॥शु० ॥२॥ चेतन ऋद्धि अनंत धरावे, दर्शन विण ऋद्धि आप खुए रे ॥ दर्प्पणपूजा करत जिनवरकी, तब निज ऋद्धि आप जूए रे ॥ शु० ॥३॥ एहविध पू

जा करत जिनवरकी, चेतन आवरण सर्व मटे रे ॥ शुद्ध दशा दर्प्पणपूजाथी, अशुनदशा तस सर्व कटे रे ॥शुद्ध०॥४॥ इति षोडश दर्प्पणपूजा समाप्ता॥१६॥

## ॥ अथ सप्तदश नैवेद्यपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ विविध युक्ति पक्वान्नशुं, लेई चित्त उदार ॥ अणाहारिपद पामवा, विनवुं वारं वार ॥ १ ॥

॥ ध्रुवपदं ॥ पूर्वी सोरठ रागेण गीयते ॥

॥ जिणंदराय! नैवेद्यथाल नरी री ॥ जिणंद०॥नैं० ॥ हेमपात्र नरी विविधशुं रे, कंसार शींग धरी री ॥ जि० ॥ नै० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ घेबर फीणी पेंडा पतासां, साकरपाक करी री ॥ खाजां खुरमां खांत शुं लावो, खीर खांड घृतशुं पुरी री ॥ जि० ॥ नै०॥ ॥२॥ शाल दाल शुनसालणां रे,शाक पाक करि जेह॥ एहविधि नैवेद्य थाल नरीने, अणाहारिपद लिये तेह ॥जि०॥नै०॥३॥ इति सप्तदशनैवेद्यपूजा समाप्ता॥१७॥

## ॥ अथ अष्टादशफलपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूजा करतां नीपजे, तरुवर सींचे जेम ॥ तरुवर फल जेम आपशे, पूजाफल होय तेम ॥ १ ॥

॥ ध्रुवपदं ॥ सोरठी तथा आशावरीरागेण गीयते ॥
॥ ज्ञवि ज्ञावे श्रीफलपूजा करो॥ज्ञवि०॥जेम होये फल अनंत रे॥ज्ञवि०॥ विविधजाति फल ग्रही जिन आगे, कीजे निर्मलचित्त रे ॥ ज्ञवि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ दाडिम डाख खारेक अखोड, पूगीफल मनरंगे रे ॥ कदली बदाम मिष्टांग लींबु, पूजीजे जिनसंगे रे ॥ज्ञवि० ॥ २ ॥ इंद्रादिक वली पूजाकारण, फल लावे धरी रागे रे॥फलपूजा करतां मनशुद्धे, शिवफल प्रज्ञु पें मागे रे॥ज्ञवि०॥३॥इति अष्टादशफलपूजा समाप्ता ॥

## ॥ अथ एकोनविंशतिगीतपूजा प्रारंज्ञः ॥

॥ दोहा ॥

॥ इंद्र इंद्राणी ते मली, गावे गीत रसाल ॥ ताल मृदंग वाजित्रशुं, प्रज्ञु गुंथी गुणमाल ॥ १ ॥

॥ ध्रुवपदं ॥ सोरठीरागेण गीयते ॥

॥ प्रज्ञुगुणध्यान करे जे सुरपति, गावे धरि आणंदो रे॥धन्य ज्ञाग्य धन्य आज हमारो, डुरित सकल निकंदो रे ॥ प्रज्ञु ॥१॥ गाजति वाजति इंद्र ददामा, श्रीमंडल घनघोर रे ॥ सात स्वर तिन ग्राम मूर्छना, गीत

गाये रंगरोल रे ॥प्रभु०॥२॥ इंद्र इंद्राणी गाय स्वर मधुरे, प्रभुगुण चित्तमे धरता रे ॥ तेम नविकजन प्रभुगुण गातां, डुरित तिमिर सवि हरता रे ॥प्रभु० ॥ ३ ॥ इति एकोनविंशतिगीतपूजा समाप्ता ॥ १९ ॥

## ॥ अथ विंशति नाटक पूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ सूरियानादिक जेम करे, नाटकपूजा जेह ॥
नाटक प्रनु आगल करी, कर्म खपावे तेह ॥ १ ॥

॥ सोरठ रागेण गीयते ॥

॥ सरस नाटक करी, शुद्ध नावज धरी, करी निज आतमा, मतिअ सारी ॥ एकशत आठ कुमर, कुमरी करथी करे, विविध संगीत, वाजित्र धारी ॥सर०॥१॥ शोल शृंगार करी, कुमरी नाचति वली, थैयां थैयां थेई यां करंती ॥ देखावति हस्तगत,घूघरीनादशुं, घूटण देइ नम रिथ फरंती ॥सर०॥२॥ विविध प्रकार एम, नाटक करती, लाज मर्याद, मनमां धरंती ॥ एहविध नविकजन, नाटक करतां, संसारसमुद्र,वहेलां तरंती ॥ ॥ सर० ॥ ३ ॥ इति विंशतिनाटकपूजा समाप्ता ॥२०॥

## ॥ अथ एकविंशतिवाजित्र पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ समोसरण देवे रच्युं, थापी श्रीजिनराज ॥ वाजित्रनी पूजा करी, साधे वांछित काज ॥ १ ॥

॥ धन्याश्रीरागेण गीयते ॥

॥ समवसरण सुररचित सिंहासन, वाजित्रपूजा सार रे ॥ देवदुंदुभि महुवर भेरी, वीणा वंसी जयकार रे॥ स० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ढोल निशान कंसाल ताल शुं, शरणाई रणकारो रे ॥ भुंगल भेरी अंबर गाजे, कहे जग तुंही आधारो रे ॥ स० ॥ २ ॥ वाजित्र वाजे दे आशीषो, कहे प्रभु तुं जगदीवो रे ॥ दीये आशीष् वाजित्र सवि बोले, कहे प्रभु तुं चिरंजीवो रे ॥स०॥३॥इति एकविंशतिवाजित्रपूजा समाप्ता ॥२१॥

## ॥ कलश ॥

॥ थुणीयो थुणियोरे, प्रभु चित्त अंतरमें थुणीयो ॥ त्रण्य भुवनमां नहीं तुज तोले,ते मे मनमां धरियो रे॥ प्रभु० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ एकशत पंच कवित करी अनुपम, तुज गुण गुंथी गुणीयो ॥ भविकजीव तुज पूजा करतां, दुरित ताप सवि टलियो रे॥प्रभु०॥२॥एणी वि

थ एकवीश पूजा करतां, शिव सुख फल सहु मलियो॥ सकल मुनीश्वर काउस्सग्गध्याने, चिदानंदशुं जलियो रे ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ श्री तपगछे दिनकर शोभे, विजय दान गुरु गुणियो ॥ श्रीहीरविजय प्रभुध्याने ध्यातां, हे महीरो जेम जडियो रे ॥ प्रभु० ॥४॥ इति कलशः ॥

॥ इति सकलचंदजी उपाध्यायकृत एकवीश प्रकारीपूजा संपूर्ण ॥

## ॥ श्री परमात्मने नमः ॥

## ॥ द्रुतविलंबित वृत्तम् ॥

॥ वरजिनेश्वरजक्तिविधायिनी ॥ कृतिरियं बुध गंजीरसन्मुनेः ॥ जयतु जैनपथे प्रथिता सदा ॥ जन सुबोधकरस्तवनावली ॥ १ ॥

## ॥ शार्डूलविक्रीमित वृत्तं ॥

॥सद्बोधार्थविकाशकं च विमलं यन्निस्तुलानंददं ॥
नित्यं जाड्यतमोपहं कुमतिहं ज्ञानास्पदं प्रीतिदं ॥
मग्नानांच जवांबुधौ विमनसा संतारकं पुस्तकं ॥
जैनज्ञानसुदीपकाख्यसजया नीतं प्रकाशं मुदा ॥ २ ॥

## ॥ मुनिराज श्री वृद्धिचंदजीना शिष्य मुनि गंजीरविजयजी कृत दशविध यति धर्म पूजा ॥

### ॥ दोहा ॥

॥श्री जिन सर्ववेदी नमी, जजी शारद एकचित्त,
गुरुपद तेम मुनि धर्मनी, पूजा जणुं सुपवित्र. ॥ १ ॥
ते दशविध श्रीजिन कह्यो, क्षमा मुख्य त्यां जोय;
पंच जेद खंतीतणा, अपराध क्षमणथी होय. ॥ २ ॥

भावाभाव निमित्तनो, क्रोध दोष चित्तलाय; बाल स्वभाव चींती खमे, उत्तर लाभ मनलाय. ॥ ३ ॥ कर्म फलागम क्षमागुणे, केवली श्रीजिन थाय; अष्ट द्रव्य संजुत करी, पूजे सुरनर राय. ॥ ४ ॥ पण
५
अरु डुग डुग द्वादशे, सतर चौ वली चार; नव डुग
८ २ २ १२ १७ ४ ४ ए २
स्वस्ती फलादीके, ढोको भाव उदार. ॥ ५ ॥ अष्ट द्रव्य पंचामृते, सज्ज करो दश थाल; दशधर्मे पूरण विभू, कीजे भक्ति रसाल. ॥६॥

॥ राग वढंस ॥ नाथ केसे जंबुको मेरु कंपायो. ॥
॥ ए देशी ॥

॥ अहो जिन रीत अपूर्व तहारी, एतो जग जन अचरज कारी, अहो जिन रीत अपूर्व तहारी ॥ ए आंकणी. ॥ क्षमा गंगमे हंस ज्युं झील्यो, वंदक मल अपहारी;अंतरंग रीपु अंत करीने,अनघ रह्या शुभका री ॥ अहोजिन० ॥१॥ आयासने प्रायछीत न आवे, ध्यान धरे एक तारी; श्रेय समाधी दरीशन उपजे, नीश्चल रह्यो अवीकारी. ॥ अहोजिन० ॥ २ ॥ वीम लातम अघसंचय वर्जीत अर्जीत साम वीहारी; प्र

शमरस भींनी विषय नदीनी, अखीआं अमृत क यारी. ॥ अहो जिन० ॥ ३ ॥ ओर सहस्त्र सहाय न जोवे, क्षमा नीशित असी धारी; क्षमा रंगी असंगी प्रभुकी, बलैयां क्रोरु हजारी. ॥ अहोजिन० ॥ ४ ॥ कर्म कटक वीकट कीम चूरो, क्रुरो क्रोधकी यारी; निरारंभ मुख कमल प्रसन्न, क्षमा हे अजबडुब्बारी ॥ अहोजिन० ॥ ५ ॥ चीदूघन रंगी शिव वधु संगी, अद्भुत अचरज कारी; रिद्धी वृद्धी पूरण महीमा, गंभीर गुणी हितकारी. ॥ अहोजिन० ॥ ६ ॥

श्लोक

॥ सकलकर्मकलंकनिवारकं, दशविधं
यतिधर्मप्रदायकं ॥ निबीडकर्मवनानल
सन्निभं,प्रणत भव्य सदा जिननायकं ॥१॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥

॥ अथ द्वितीय पूजा. ॥

॥ दोहा ॥

॥ क्रोधाभाव क्षमा कही, मान छते नव होय;
मानने संगत क्रोधनी, मान तजो प्रभु जोय. ॥ १ ॥

॥ राग देशी झींझोटी ठुमरी ॥ आज डुगधा मेरी मीट गइ रे ॥ ए देशी. ॥

॥ राज मझाव मन वस रहीरे, अमल कमल सम जुगल नयन; समरससे विकस रहीरे॥ए आंकणी ॥ मझावमंथर अखीआं तोरी, गर्व गुमान वरी जीत मृडु गोरी; नमन दमन गुण रमण नीपाइ, मठर मद हरशहीरे. ॥ राज० ॥ १ ॥ मझाव करत वज्रशुं जोरी, अभ्रमद अचल शीखर सो फोरी; केवली भा सरुके कीनसेती, सुजोत पसर रहीरे. ॥ राज० ॥२॥ माने धारो कृत्य न करीने, माने संगथी मनसा ह रीने; प्रजुपद नमन दमन चित्त लाइ, जय पामे जवी सहीरे. ॥ राज० ॥ ३ ॥ मान अजावे विनय सुहावे, वोध लक्ष शुं तन मन जावे, मनन सेवन लय ला वो जाइ, गुणगण लहे गह गही रें. ॥ राज० ॥ ४ ॥ नीरमद सुगुण पुरंदर तोरी, हरीहर ब्रह्म करे केम होरी; वासव श्रेणि रही करजोरी, तुजपदमे नमर हीरे. ॥ राज० ॥ ५ ॥ हीन अधम नर तुमने भोरी, गुणयुत वचन मनसा जोरी; कल्पित रचना प्रीत लगाइ, डुःख मान वसे लहीरे. ॥ राज० ॥६॥ जेम जेम मूर्त्ति नीहाळुं तोरी, तेमतेम विपत् कठीन गए

मोरी; सुख वृद्धि संपत् सवी पाइ, गंभीर जिन रस लहीरे. ॥ राज० ॥ ७ ॥ सकल० ॐ०॥

## ॥ अथ तृतीय पूजा. ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ मान गए मृडुता हुए, कपटे कठीन कठोर; कपट नीपट चुरण भणी, सज्ज प्रभु बहु ओर. ॥ १ ॥

॥ राग परज. ॥ नीश दीन जोऊं वाटडी घेर आवो ढोला. ॥ ए देशी ॥

॥आर्जवसे जिन पूजतां, मीटे माया अंधारा; अनुभव जोतही ऊगमगे, टले कर्म प्रचारा. ॥आर्जव०॥ ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ माया संग नीसी ठारता, नही तस्कर चारा, माया उरगी नाग्रसे, तरे भवनुं बारा ॥ आर्जव० ॥ २ ॥ माइरींद कबु आंटीमे, रुके ज्ञान उजारा; आर्जव सोधने सोधीए, सवी क्रिया डंबारा. ॥आर्जव०॥३॥श्रद्धा निर्मल नीपजे,होय ज्ञान सुधारा; सहज सरल ठे विरता, आपो आप नीहारा. ॥ आर्जव०॥४॥ आर्जव अमृत धोइने नीज आतम प्यारा; केवल डुग प्रभु पामीने, हार्यो माया प्रसारा ॥ आर्जव०॥५॥ त्रीसला उरसर हंसने पूजो भाव उदारा;

शिवरमणीकी सेजमें, करो सेल अपारा. ॥ आर्जव० ॥ ६ ॥ कर जोरी करुं वीनती, दीजे दरीशन प्यारा; बुद्धि करण वर्धमानसे, सुख गंभीर हजारा. ॥ आर्जव० ॥ ७ ॥ सकल जं० ॥

## ॥ अथ चतुर्थ पूजा. ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ माया विन उत्तम रुजु, लोभ नीच करे फंद; लोभ कीचड शोषण भणी, भजीए सविता जिणंद॥१॥

॥ राग ठुमरी ॥ चालो सखी सब देखनकुं, रथ चढी जदुनंदन आवत हे ॥ ए देशी ॥

॥ संतोष अमृत सुभोगी प्रभुको, पुजो भवियण शिव रसीया ॥ संतोष० ॥ ए आंकणी. ॥ संतोष वीन नहु आवे तृपती, पुद्गल रासी सवी ग्रसीआ. ॥ संतोष० ॥१॥ त्रीभुवन केली तृष्णा वेली, मुल चुल तस रस कसीआ. ॥ संतोष० ॥२॥ मुक्ति यावन पावन भावन, नीस्पृह भावित अहोनीसीआ,॥संतोष० ॥ ३ ॥ लोभ पयोधी मनोरथ पवने, ऊर्मी उछलत धसमसीआ. ॥ संतोष० ॥ ४ ॥ मुक्ति तराविन केसे तराए, आतम रसे प्रभु अनुसरीआ. ॥ संतोष० ॥५॥

क्षपक श्रेणी अनुकुल पवनसे, केवल लही जइ शिव वसीआ ॥ संतोष० ॥ ६ ॥ मुक्ति भजि लहो मुक्ति पुआरी, ममता तज समता सजीआं. ॥ संतोष०॥७॥ हित वृद्धि कर वीर सुनोजी, गंभीर दीसी दीओ ऊगरसीआं. ॥ संतोष० ॥ ८ ॥ सकल० उँ० ॥

## ॥ अथ पंचम पूजा. ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ लोभ अधीक जग देहनो, लोभनुं मुल शरीर; निर्लोभी प्रभु तप तपे, बाले कर्मनो हीर. ॥ १ ॥

॥ राग देश वुमरी ॥ कुमतिको छोरके, मोए सुमति सुहावेरे ॥ ए देशी ॥

॥ तन ने धन कारमा, तपे क्युं न रुची सोरे ॥ तनने धन कारमा. ॥ ए आंकणी ॥ तन धन सुंदर धन मीले तपथी, तप वीना भव भमसोरे. ॥ तन० ॥ १ ॥ अरिहंत पद प्रभु तप फल जाणी, तप करत उकरीसोरे. ॥ तन० ॥ २ ॥ इच्छा रुंधन तप कर निश्चे, वही अंतर सरीसोरे. ॥ तन० ॥३॥ बेआशन तीवीहार न करता, करो नहीं ऊपवासोरे. ॥ तन० ॥ ४ ॥ तप लघु छठ प्रभु गुरु छमासी, वीचर्या वार

वरसोरे. ॥ तन० ॥ ५ ॥ घाती खीण वरे केवल क मला, करे समय वीलासोरे. ॥ तन० ॥ ६ ॥ गभ्रा गइ रह आवीर करणी, पर्यय द्रव्य सार्योरे. ॥ तन० ॥ ७ ॥ अस्ती धर्मादी उपदेशी, संशय विनासोरे ॥ ॥ तन० ॥ ८ ॥ समवसरण वासव मील पूजे, जल पुष्प पगरसोरे.॥तन०॥९॥ वृद्धिविजय कर त्रीसला नं दन, गंभीर ने उधरसोरे ॥ तन०॥१०॥ सकल०॥ॐ० ॥

## ॥ अथ छठी पूजा. ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ तप असंयत पणे करे, निरनुबंधन थाय;
संयमयुत निरबंधी जिन, संजमस्युं चित्तलाय.॥१॥

॥ राग दादरो ॥ सजी संजममे रमण करे ज्ञानीरे ॥ ॥सजी संजममे॥ आंकणी ॥ कर्मजनीत भव कर्म छे बंधे, धरे बंधहर जाणीरे. ॥ सजी० ॥ १ ॥ करी करी जतना मन वच अपना, संजम रस छाणीरे. ॥ सजी० ॥२॥ भुवी जल अनला अनील वन वीगला, पणींदी जीव जाणीरे. ॥ सजी० ॥ ३ ॥ अजीवन रू पधी पुस्तक पाछा, जतन करो गुण खाणीरे. ॥ सजी० ॥ ४ ॥ पेख उवेख देख पमजान, मनोवृत्ती

वरतानीरे. ॥ सजी० ॥५॥ वचन अदोषी वंदे गुण पोषी, जतना दील मानीरे. ॥ सजी० ॥ ६ ॥ सरंभ समारंभ ने आरंभा, कल्प न पीड प्राण हानीरे. ॥ सजी० ॥ ७ ॥ त्रीविध त्रिजोगे बंधादि निवृत्ती, संजमवंत प्रभु नाणीरे. ॥ सजी० ॥८॥ संजम वृद्धि वीर गंभीरसे,पूजी पायो भवी प्राणी रे॥सजी॥९॥सकल०ॐ

## ॥ अथ सातमी पूजा. ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ संयम थीरता कारणे, सत्य धरो हृदे मांहे;
सत्ये सवी वंछीत लहो, प्रभुता सत्यके मांहे.॥१॥

॥ राग वसंत ॥ चंदा प्रभुजीसे नीहालरे, मोरी लागी लगनवा. ॥ ए देशी ॥

॥सत्य भाषीसें प्रीतरे, मोरी लागी भरमना.॥ ए आंकणी ॥ लागी भरमना जुठे न राचु, याचु अमृत पानरे. ॥ मोरी० ॥ १ ॥ कोप कठीन वचन प्रभुके, तजी मर्मनी रीतरे ॥ मोरी० ॥ २ ॥ हित मीत अवीतथ अनुग्रहकारी, तेम जनक प्रतीतरे. ॥ मोरी० ॥ ३ ॥ जुठ मीश्र संभ्रांत तजीने, संदीग्ध अनीतरे. मोरी० ॥ ४ ॥ राज देश जन कालभावथी, धर्म वि

रुद्ध हितरे. ॥ मोरी० ॥५॥ रागाकुलमे द्वेष न बोले, नहीं वीकथ न जीतरे. ॥ मोरी० ॥ ६ ॥ स्फुट मधुर ऊदार चातुरी, प्रश्नोत्तर शुन्न रीतरे. ॥ मोरी०॥ ७॥ चपल वीन्यास ने नींदाकारी, सत्य जगत्नो मीतरे. ॥ मोरी०॥ ८ ॥ ग्राम हास्य पैशुन्य तजीने, सत्य सु धाम चित्तरे. ॥ मोरी० ॥ ए ॥ धर्म वृद्धि जिन वीर गंन्नीर, ते अमीत दीए प्रीतरे. ॥ मोरी० सकल० ॥ ॐ० ॥ १० ॥

## ॥ अथ अष्टमी पूजा. ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ शौच विना कीम ऊजलो, सत्य हुवे निरधार; शौच रयण तिणे जाणीने, आदरे जगदाधार. ॥१॥

॥ राग गजल॥टुंक दीलगीचसम खोल ॥ ए देशी ॥

॥ दीन रात आप जापसे, वीनाव कोठली, दील वागके मेदान जगे, वासना कली. ॥ दीन० ॥ १ ॥ सुरिंद वृंदवंदकी, ऊपासना मली, जलादी शौच एक लोन, मुक्ति कंदली. ॥ दीन० ॥ २ ॥ जिनींद वाक पाकता, ऊदार सांनली; स्पर्श तज अदत्तको, वीनावकी मली. ॥ दीन०॥ ३ ॥ संताप हार तीरथी

स्वभाव उजली; चारोही अदत्त छोर, वीरती है ऊ
रमली. ॥ दीन० ॥ ४ ॥ जीव कुंद केतकी, गुलाबने
वोलसली; फुल स्वामी मालीकी, नलेनाङग कली.
॥ दीन० ॥५॥ अरिहंत प्रसिद्ध फुल, छेदोना कली,
प्रीयंगु चंपो मोगरो, ने मालती भली० ॥ दीन०॥६॥
गुरु उक्त रीत पद्म, जुश्वी भली; परीमले सुवर्णके,
सुभोमीजा वली ॥ दीन०॥ ७ ॥ फुलोकी जाती भा
ती, अंगीओ भली भली; पगर भरो वर्षो भवी,
फुल देव जो मीली ॥ दीन० ॥८॥ द्वीविध लेप रूप
छेद, वीर नहीं बली,वृद्धि गंभीर शौच धीर, कीर्त्ती
उजली० ॥ दीन ॥ ए ॥ सकल० ॐ० ॥

## ॥ अथ नवमी पूजा. ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ब्रह्मविना शुचिता कीसी, इम जाणी जगदीश;
ब्रह्म हेतु सुं ब्रह्मने, अंगे धरे नीशदीस. ॥ १ ॥

॥ राग भैरवी ॥ तजो मनरे कुमत कुटीलकी
संग ॥ ए देशी ॥

॥यजो भवीरे, ब्रह्म वृती अवतंस.॥ यजो० आंक
णी ॥ पूरण ब्रह्म ब्रह्मनिवासी, सम्मर सम्मर अरिहंत.

॥ यजो० ॥ १ ॥ दीव्य उदारीक करण करावण, अनुमती तास तजंत; मन वच काए नव डुग काम वशहु दशा वरजंत० ॥ यजो० ॥ २ ॥ सुरनर किन्नर हरी धाता हर, कामकी आण धरंत; त्रीसला नंदन दमीए ठीनमे,नीज आदेशी करंत. ॥ यजो० ॥ ३ ॥ कुलमल कर्म कलंक पखालन, जलधर ब्रह्म महंत खेद हरण नव तरण दरी सम, पातीह बोध करंत. ॥ यजो० ॥४॥ अनुनव चुरण वंठीत पुरण, शिव पंथ वीघ्न हरंत; सुर करे सानिध्य कींकरी लठी, आपद् हर मज संत. ॥ यजो० ॥ ५ ॥ प्रजु पालीत नवविधसे पालो, डुरीत हर जगवंत; बुद्धि सिद्धि सवीन्न दाइ, गंन्नीर बोध तरंत०॥ यजो०॥६॥ सकल ॥ ॐ ॥

## अथ दशमी पूजा.

॥ दोहा ॥

॥ कींचन धरी ब्रह्म डुषवे, होय न पुरण ब्रह्म;
पुरण ब्रह्म प्रजु नीत धरे,अकींचन धर्म अदंन.॥१॥

राग ऊींऊोटी ठुमरी ॥ चलत पवन सुरही
अंगनां ॥ ए देशी ॥

॥ सजन कींचनको ठेरनकुं, जजो श्री जिनवर

गुणी खाणरे ॥ सजन० ॥ ए आंकणी ॥ कींचन सं
चीत नाकरोरे, निर्ग्रंथ थई वर्ध्धमानरे; इछा मुर्छा
त्यागीने प्रभु, पाम्या सवी कल्याणरे ॥ सजन०
॥ १ ॥ कींचन संचन जीन कहेरे, सर्वारंभ निदान
रे; जगजन प्रियन तीहां लगे सवी, गामीन दंशण
ज्ञानरे; ॥ सजन० ॥ २ ॥ आप तरे ने परने तारे,
गुण रसीआ एक तानरे; सचित्त अचित्त शब्दादि
विषये, लोपाए न महानरे ॥ सजन० ॥ ३ ॥ दशही
धर्मे पूरण जिनजी, कल्पसूत्रनी वाणरे; पुरण फरसे
तेहीज ते भव, पामे पद निर्वाणरे ॥ सजन० ॥ ४ ॥
आप सरुपी आतमरामी, केवल रतन निधानरे; जोग
नीरुंधी नीरभर सुख मय, एक समयमे वीधानरे
॥ सजन० ॥ ५ ॥ अनंत चतुष्टय अक्षय थीती जुग,
समय वेदी भगवानरे, उत्पाद व्यय ध्रुव संगी अरुपी,
चिदानंद मंमाणरे ॥ सजन० ॥६॥ सुता जागता नीत
नित समरो, ध्यावो ज्योती समानरे; रिद्धी वृद्धि मं
गल माला, गंभीर महोदय ठाणरे ॥ सजन० ॥ ७ ॥
सकल० ॐ० ॥

## ॥ अथ कलश ॥

॥ ध्यांया ध्यायारे में इन वीध जीन गुण ध्याया, ए मुनि धर्म महोदधी मांहे; सघला धर्म समाया, तेणे ए निर्मल तन मन भजीए; अघघन सकल पलायारे ॥ मेंइन० ॥ १ ॥ वीसथानकने सेवी भवं तरे, अरीहा गोत्र वंधाया; मुनि धर्म ते भवमां पुर ए, फरसी शिव पद पायारे ॥ मेंइन० ॥ २ ॥ प्रभु फरसीत तेणे मानो पूजो, समदम क्षमणे भराया; प्रीय धरीने सेवी समरी, बहु जन सिद्धी सुहायारे ॥ मेंइन० ॥ ३ ॥ सोहम स्वामी पट परंपर, तप गण नभ मणी गाया; श्रीविजयसिंहसुरीश्वर केरा सत्यविजय मुनिराया रे ॥ मेंइन० ॥ ४ ॥ कपुर क्ष माजिन विजय विबुधवर, उत्तम विजय सुहाया; पद्म विजय वररुप कीर्त्ति, कस्तुर विजय निपायारे ॥मेंइन० ॥ ५ ॥ मणी विजयना मती वैभव सम, बुद्धि विज य गुरुराया; तास शिष्य समदम रतनाकर, वरते तेज सवायारे ॥ मेंइन० ॥ ६ ॥ अंग चंग मन मोहन नीति, मुक्ति विजय गुरुपाया; तस विश्वास भाजन गुण सिंधु, वृद्धि विजयलघु भायारे ॥ मेंइन० ॥ ७ ॥

तस पद रज सम मुनि गुण रंगी, जीन भक्तिथी उमाह्या, मोह सुभटने ठगवा काजे, गंभीर विजय गुण गायारे ॥ मेंइन० ॥ ८ ॥ संकट विघन दुर प लाया, रागद्वेषी वीरलाया; सकल संघने वीरशासन सुर होजो मंगलदायारे ॥ मेंइन० ॥ ए ॥ व्योम युग अही उर्वी संवत्सर, सीत सुची मास सुहाया; गुरु चतुर्थी राज नगरमां, मंगलरंग वधायारे ॥ मेंइन वी धजीन गुण ध्याया ॥ १० ॥ समाप्त ॥

॥इति दशविध यतिधर्म पूजा संपूर्णा.॥

## ॥ ॐ नमो जगत्सद्रूपाय श्री सिद्धचक्राय. ॥

## ॥ महा मुनिराज श्री गंभीर विजयजी विरचित ॥

## ॥श्री नवपदजीनी पूजा॥

### ॥ दोहा ॥

॥प्रणमि जीन शासन पति, यशो विजयादि सार॥
रचना अर्थ हृदय धरी, नव पद पूजा उदार ॥ १ ॥
पंच वरण नव दल कमल, रच नव पद हृदिधार ॥
पंचामृत कलशा भरी, नव अभिषेक उदार ॥ २ ॥
प्रगट ज्ञान ज्योतीमया, प्रातीहारज वंत ॥ देशना नंदित भविजना, नमिये ते अरिहंत ॥ ३ ॥ अनंत

शान्त प्रमोदघन, जग प्रधान जीनंद ॥ भविक कमल रवि रुप थुणें, मुद भर सुर नरइंद ॥ ४ ॥ जस ध्याने सुखीया थया, राजा श्री श्रीपाल ॥ डुष्ट करम दल चुरवा, नव पद पूजो त्रिकाल ॥ ५ ॥ नव पद भक्ते वासिआ, जे पूजे नरनार, ध्यान सिद्धि तप संपजे, सुख संपत्त विस्तार ॥ ६ ॥ जीन नाम कर्मोदये करी, जगहित दीये उपदेश ॥ पुरण ब्रह्म पावन सदा, अतिशय शोभा अशेष ॥ ७ ॥ घाति कर्म चउ खपी गयां, रह्या अघाति चार ॥ जग सुखी पंच कल्याणकें, नमुं ते जगदाधार ॥ ८ ॥

॥ पूजा १ ली ॥

॥ ढाल १ ली ॥ राग भेरवी ताल ठुमरी ॥

॥ ( पन घटवारोकीरे ) ए राग ॥

॥ पूजो श्री तिरथ पति अरिहा, पाप पखालन शिव रसीया ॥पू०॥ धर्म धुरंधर धर्म पति जीन, धीरज मेरु अधिक वरिया ॥ पू० ॥१॥ विषय ताप तापित जीय ठारण,देशना अमृत घन झरियां ॥ पू०॥ खायक अनंत सहज जस वीरज, सुर अतुल बल गुण दरिया ॥ पू० ॥२॥ अक्षय निरमल ज्ञान प्रकाशे, (जग) भाव सकल दरशित करिया ॥ पू०॥ जग जन

करुणावंत महंत, ( भव ) पमत भवि जन कर गहिया ॥ पू० ॥ ३ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ राग कालींगमो अथवा अडाणो ताल दादरो ॥ नदियां नारे विसर आइ कगनारे ॥ ए चाल॥

॥ श्री सिद्धचक्र पूजो भवि भावेरे, ॥

भाव रुद्धि वृद्धि लहो भव लग, मुगति सुगति सुख पावेरे ॥श्री०॥ वीश स्थानक तप करी भव, त्रीजे अरिहा गोत्र नीपावेरे ॥ श्री० ॥१॥ चोसठ इन्द्रे पूजीत जे जीन, प्रगटयो पूज्य स्वभावेरे ॥श्री०॥ प्रशम रस सिंधु दीन जन बंधु, ज्ञानानंद खिलावेरे ॥श्री० ॥ २ ॥ साते नरके पण अजुवालो, कल्याणिक दिन थायेरे ॥श्री० ॥ जगत् अधिक गुणी अतिशय धारी, नमतां पाप पलावेरे ॥श्री०॥३॥ जे त्रण ज्ञान सहित अवतरता, भोग करमने खपावेरे ॥श्री०॥ संजम धरी जग धरम शिखावत,ज्ञानी नमतां दुःख जावेरे॥श्री० ॥४॥ महा गोप महा माहण स्वामी, निर्यामक तटे लावेरे ॥श्री०॥ सारथ पति प्रभु भव अटवीमां, नमो भवि उलसित भावेरे ॥श्री०॥ जे प्रतिबोध करे जग जनने, पणतिग वाणीगुण भावेरे ॥ श्री० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ राग केरबो, ठुमरी ॥

( सहस फणा मोरा साहेबा, तोरी शामरी सुरत पर वारीजाउरे ॥ ए चाल ॥ )

॥ ध्यावो ध्यावो अरिहंत पद ध्यावो रे, एकाग्र लय दिल लाइये; द्रव्य गुण पर्याये समरो, ध्याता ध्येय अजेद निपाइये रे ॥ ए० ॥ १ ॥ क्षिण घाति चउ चेतन द्रव्य, गुण ज्ञानादि पुरण ध्याइये रे॥ए०॥२॥ जन्म दिक्षा केवल पर्याये, ध्याइ अरिहंत रुपी था इए रे ॥ ए० ॥३॥ ज्ञान नये श्रीवीर वचन ए, परि णामी परिणति एक ताइये रे ॥ ए० ॥ ४ ॥ आतम ऋद्धि मिले सवि आइ, जस वृद्धि गंजीर सुख पा इयेरे ॥ ए०. ॥ ५ ॥

## ॥ द्रुत विलंबित वृत्तं ॥

॥ सकलसद्गुणपादपसेचनं, निखिलमोहमलि मषक्षालनं, नवपदात्मकचक्रसमर्चनं, जवतु जव्य जने शिव कारणं,॥ ॐ ह्रीँ परम पुरुषाय सर्वात्म स्व रुपाय श्री सिद्ध चक्राय जलं चंदनं पुष्पं धूपं दीपं अक्षतं फलं नैवेद्यंयजामहे स्वाहा ॥

॥ए पाठ सर्वपुजा ए कहेवो.॥इति अरिहंतपदपूजा.॥

॥ पूजा २ जी ॥

॥ दोहा ॥

॥ सहजानंद सुख सागरा, चउ अनंत धन रुप ॥
सिध्ध ते प्रेमे पूजतां, जीव होय चिद्रूप ॥ १ ॥
अष्ट करम दल क्षय करी, पाम्या भव जल पार ॥
जरा मरणने जन्म भय, रह्या न जास लगार ॥ २ ॥
वर्ण गंध रस फरस नहि, गता कार संठाण ॥ प्रग
टित आतम रुप जे, नमो सिद्ध भगवान ॥ ३ ॥
तजि तिभाग तनु गाहना, रहे आतम घन शेष ॥
अनंत नाण दंसण मय, नित सुखी जोति महेश ॥४

॥ढाल १ ॥ ली ॥ राग झींझोटी॥

॥ सकल करम मल क्षय करिनें, भये पूरण शुद्ध स्वरुपरे, ॥स०॥ अव्याबाधप्रभुतामयलीना, आतमसंपत्ति भूपरे, शक्ति अनंति प्रगट विलस रही, नमो नमो सिद्ध स्वरुपरे ॥स० ॥१॥ सकल विभाव वरजीत स्वद्रव्य, प्रदेश पुरीत स्वक्षेत्र रे, ॥ समय समय उपयोग थिति, स्वकाल ते सिद्ध पवित्र रे॥स०॥२॥ज्ञान दरशन उपयोग स्वभावे, अनंत गुणी अनुप रे, स्वभाव गुण पर्याय परिणति, समरी लहो अरुपरे ॥ स० ॥३॥

॥ ढाल २ जी राग ॥ श्याम कल्याण ॥

॥ रीषभ विहारी तोरी तो छबी न्यारी, ए चाल ॥

॥सुगुण विहारी सिद्ध हि निज पद धारी ॥पूजो सु०॥ अयोगी पणेमें जेइहां फरसे ॥ (ते) विनु फरश नभधारी पूजो ॥ सु० ॥१॥ अफरस गति करते उर्ध्व जाये,एक समये रुजु चारी ॥सु०॥तनु त्रिभाग न्यून अवगाहन, करी वरी शिव नारी ॥ सु० ॥ २ ॥ पूर्व प्रयोग ने गति परीणामे, अबंध असंग निहारी ॥ सु०॥ हेतु चारए मुक्त शिव गमने, एक समय गति कारी ॥सु०॥३॥निरमल सिद्ध शिलाथी एक जोजन, लोकान्ते रहे अविकारी ॥ सु० ॥ सादि अनंत थिति सवि काले, सिद्ध हि आनंद कारी ॥सु०॥४॥ जस सुख जाने कही न शकाये, केवली सर्व निहारी ॥ सु.० ॥ जेम पुर ऋद्धि वन चर जानी,उपमा विन न उच्चारी ॥सु० ॥ ५ ॥ ज्योति में ज्योत मिली जस अनुपम, सर्व उपाधी निवारी ॥ सु० ॥ आतम राम रमा पति सहज,सिद्ध समाधी विहारी॥सु०॥६॥

॥ ढाल ३ जी ॥ राग सोरठ ॥

॥समर मन सिद्ध सनातन रंग,॥

॥नित्य अरुपी स्वभाव निहारो ॥स०॥केवल युगल

सुसंग ॥स०॥ १ ॥ लीन रही तिहां आतम ध्यावो, आपही सिद्ध निसंग ॥ स० ॥२॥ जस वृद्धि गंभीर सुख संगी, उलसीत ज्ञान तरंग ॥ स० ॥ ३ ॥

॥ काव्य तथा मंत्र कहेवो ॥इति सिद्ध पद पुजा ॥

॥ पूजा ३ जी ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुरि नमो अकदागृही, कनक सुकोमल चित्त, मोहतमोहर रविप्रभा, ज्ञानसुधा भरवित्त ॥ १ ॥ तत्त्व स्फूरे जस ओठपे, जीन मत करि साम्राज्य ॥ बारशो छत्तुं गुणे भर्या, पंचाचार समाज ॥ २ ॥ देश कालादिक अनुसरी, जीनवाणी अनुकुल ॥ दिये देशना भव्यने, तजी प्रमाद समुल ॥ ३ ॥ शासन भर मही धारका, जे दिग् दंति समान ॥ शुद्ध प्ररुपक तत्त्वना, चिरंजीवो जगभान ॥ ४ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ राग आशागोडी ॥

॥ आचारज सुखदाई, नमो भवी, आचारज सुखदाइ॥ए टेक॥मुनिपति गणपति गणधर सूरि, गुण छत्रीसे सुहाइ ॥ न० ॥ १ ॥ चिदानंद रस स्वादन रसिया, तनु सुख इछा गमाइ ॥न० ॥ २ ॥ निष्काम निरमल शुद्ध जे चिद्घन,ते निज साध्य निपाइ॥न०

॥ ३ ॥ जविजन बोधे तत्त्वने शोधे, सविगुण संपत्त पाइ ॥ न० ॥ ४ ॥ संवर समाधि धरे निरुपाधि, छौत पखान निपाइ न० ॥ ५ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ राग आशावर ॥

॥ आशा ओरनकी क्या कीजे ॥

॥ सूरिराय मान्या ए मुनि मनमांहि ॥मा०॥ पंचाचार शुचि पाले पलावे,(शुरू) मारग जविने दिखाय ॥सू०॥ जाचो प्रेमधरि पदपूजो,छत्रिस गुणी गणि राय ॥सू० ॥१॥ जुग प्रधान जग बोधन मोहन, क्रोध वश कणहुं न थाय॥सू०॥सावधान चुंपे करि वंदो, प्रमाद पंचन दिखाय॥सू०॥२॥धर्मोपदेशे न आलस रेष, वर्जी विकथाकषाय॥सु०॥ ते आचारज नमिये नेहे, अकलुष अमलअमाय ॥सू०॥३॥जे करे सारण वारण चोयण, पडिचोयण हित लाय॥पटधारि गछ थंज आचारज, ते विन केम रहेवाय ॥सू०॥४॥ आथमिये जीन सूरज केवल, जग दिपक चित्तलाय॥सू०॥ जुवन पदारथ प्रगटन समरथ, चिरंजीव शासन राय॥सू०॥५॥

॥ ढाल ३ जी ॥

॥ राग नाथ केसे गजको बंध छुडायो ॥

॥सुधियसे आचारज पद ध्यावे, सुरि आतम अ

भेद निपावे ॥ सुसूरि मंत्र शुभ ध्यानी आतम, पंच प्रस्थाने ध्यावे ॥ विद्यादि पेठे जेम ते थापे ( तेम ) ध्यातां आचारज थावे ॥ सु० ॥ १ ॥ जे भावे जे परि णमे तेही, विर जीनंद सुहावे ॥ सुजस महोदय घटमें प्रगटे, वृध्धि गंभिर सुख पावे ॥ सु० ॥ २ ॥ ॥काव्य तथा मंत्र बोलवो ॥इति आचार्य पद पूजा॥

॥ पूजा ४ थी ॥

॥ दोहा ॥

॥सुत्र अर्थ विस्तारवा,सज्ज रहे भरपुर ॥ कुमत वाद गढ भंजवा, नमो वाचक सिंधुर ॥ १ ॥ सुरि नहिं सुरि गण तणी, करता नित्य सहाय ॥ मोह मद माया तजी, निरभिमान सदाय ॥ २ ॥ अं गादि सूत्र अर्थना, दान दीयनमें सज्ज ॥ पण विश गुण गणे शोभता, नित धरि गणि गण मज्ज ॥ ३ ॥ प्रवादि गज गण त्रासवा, जे पंचानन वीर ॥ चेतन प्रभुता अनुभवे, नमो वाचक ते धीर ॥ ४ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ राग रेखतो ॥

॥ वाचक पद पुज तुं प्यारे,करम घन समीर ज्युं दारे ॥ क्षमा मृदु आर्जवी सोहे, परिणती मुक्ति मन मोहे ॥ वा० ॥१॥ तपो तप संजमे माची, सत्य

शुचि शोच गुण राची ॥ अकिंचनी आश सब गंरी, ब्रह्म नव वाड अविकारी ॥ वा० ॥२॥ समिति गुप्तिमें राता, तत्त्व कहे स्याद्वाद माता ॥ आत्म पर विवेची भव भीरु, साधन में धीर ज्युं मेरु ॥ वा० ॥ ३ ॥ शासन भर वहन को धोरी, वाचना दिये चित्त जोरी ॥ वाचक पद ध्याइ एक धारा, खपें अघ कष्टकें भारा ॥ वा० ॥ ४ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ राग भैरव अथवा देवगंधार ॥

॥ पाठक पूजो प्रेम अपार, ॥पा०॥

द्वादश अंग नित करत सझाय, आगम मार्ग कर्यो हृदिहार ॥पा०॥ सुत्र अरथ विस्तारण रसिया, नमिये तेहने भक्ति उदार ॥ पा० ॥ १ ॥ अर्थ दायि मुनिने होय सुरि, सुत्र दायि कहे वाचक सार ॥पा०॥ भव त्रीजे वरे दोय शिव कमला, और न भगवइ भेद लगार ॥पा० ॥२॥ जडने करे जग पुज्य प्रभुजे, पथ्थर मूर्त्ति ज्युं सूत्रधार ॥पा० ॥ ते उवझाय सकल जन पुजीत सुत्र अरथ सवि जाननहार ॥ पा० ॥३॥ राजकुंवर परे करे गण रक्षण, आचारज पद योग्य उदार ॥ ते उवझाय नमन ते नावे, भव भय शोक उद्वेग लगार ॥ पा० ॥ ४ ॥ बावना चंदन रस सम

वचने, अहित ताप सवि टालनहार ॥ ते उवझाय नमिजे जे फुनि, जीन मत तीव्र दीपावनहार ॥पा०॥५॥

॥ ढाल ३ जी ॥ राग कालींगडो त्रीताल ॥

॥बंसीयारे केसे बजाइ रघुवीर ॥ ए देशी ॥

॥ सुगतियांरे पावे वाचक ध्याइ धीर ॥ सु०॥ जेसे सझाय तप रति नितु कीनी, जीन मत रसे रंग्या हीर ॥ सु० ॥ १ ॥ ज्युं जगबंधु जग जीवन पालक, ध्यातां ध्यानी वाचक वीर ॥ सु० ॥ वीर वचन रस पीये जस वृद्धि, सविनय सिद्ध गंभीर ॥ सु० ॥ २ ॥ ॥काव्य तथा मंत्र बोलवो.॥इति उपाध्याय पद पूजा॥

॥ पूजा ५ मी ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिद्ध संजम रस जसहुओ, नमीए अणगार॥ क्षमण दमन दया नौ बले,उतरे भव निधि पार॥१॥ सुरि वाचक गणी सेवना, करवा जे उजमाल ॥ तस वर्णव केम करी शकुं, उज्वल गुण मणिमाल ॥२ ॥ समिति पंच समिते सदा, गुप्त त्रिगुप्ते सदैव ॥ भोग पिपासा दोप तजि बहि, अंतर ग्रंथि भजेव ॥ ३ ॥ मुक्ति योग चरणे करी, रमे योग अष्टांग ॥ ते मुनि नमतां कीजीए, पाप करम दल भंग ॥ ४ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ राग वसंतनी काफी ॥

॥ वीरजमे खेले नदके शामरो, पीतांवर उडका राय ए चाल ॥ सरवथी छेदि विषय विष जालने, रमे निष्कामी निस्संग ॥स०॥ वचन रसे भव ताप शमा वता, आतम साधन रंग ॥ स० ॥ १ ॥ शुद्ध स्वरुप निज रमण सनातन, निर्मम निर्मदचंग, ॥स०॥ ध्या नमे थिर आसन काउसग्गमे, नित्य तप तेज सुरंग ॥स० ॥ कर्मने जीते छिपे नवि पर पणे, करुणा कर नमे रंग ॥ स० ॥ २ ॥

॥ढाल २ जी ॥ राग झींझोटी॥

॥ पानी केसे जाऊंरे में पानी केसेजाऊं ॥ ए चाल॥ मुनि पद एसे ध्याऊंरे, में मुनिपद एसे ध्याउ ॥ पुजी पावन थाउंरे में॥मु०॥जेमतरु फुले भमरो बेसे, न करे वाध लगाररे ॥ जरा जरा रसे आतम तोषे गोचरी करे अणगाररे ॥ मु० ॥इंद्रिय पांचे निजवश राखे, छकाय जीव रक्षकाररे ॥ संजम सत्तर भेदे पाले, करुणा रस भंडाररे ॥ मु० ॥ २ ॥ सहस अढार शीलांगरथ धोरी, अचल आचार व्यवहाररे॥ मुनिम हंत जतनाये वंदो, करो सफल अवताररे ॥ मु०॥३॥ नव वाडे शुद्ध ब्रह्मवृत्त पाले, तप तपे बार प्रकाररे॥

पुरव पुण्य अंकुर जस जागे, ते वांदे ए अणगाररे ॥मु० ॥ ४ ॥ कंचननी परे दिसे परीक्षा, नित्य चढते नाव प्रकाररे ॥ देश काल अनुसारे संजम, पाले नमो अणगाररे ॥ मु० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ राग बीरुओ अथवा पीलु. ॥

॥ सोय सोय सारी रेण गमाइ, वेरिण निद्रा कहांसे आइ ॥ ए चाल ॥ अप्रमत चित्त निजरस गणी, जामे हरखे न शोचे गुमानी ॥ अ० ॥ साधु सुधारस परिणति तेहि,क्या मुंडेहीलों लोचे वखाणी ॥ अ० ॥ १ ॥ एवीर वाणी चित्त धर प्राणी, यशो वृद्धि गंनीर सुख खाणी ॥ अ० ॥ २ ॥

॥ काव्य ने मंत्र बोलवो॥ इति साधु पद पुजा ॥

॥ पूजा ६ ठी ॥

॥ दोहा ॥

॥जीन नाषित नव तत्त्वनी,जे निरमल रुचि रुप॥
सम्यग् दर्शन ते नमुं, परिणति आत्म स्वरुप ॥१॥
अनादिथी जीन वचनमे, परिणति जे विपरीत ॥
हठ परिणाम सहित मिटे, मिथ्या दरशन नीत॥२॥
श्रद्धा तव सहजे हुवे, जीन मत रुचे प्रधान ॥ सम्यग् दरशन ते कह्युं, शिवसुख रत्न निधान ॥ ३ ॥

जे विन ज्ञान अज्ञान छे, चरण जीसो भव कूप ॥
प्रकृति सग क्षय उपशमे तव,लही देख निजरुप ॥४॥
॥ ढाल १ ली ॥ राग देश मुलतानी ख्याल ॥
॥ प्रभुतोरी साची सुधारस वाणी॥ए चाल ॥
॥ नमजीया सम्यग् दंसण रागे, तत्त्व प्रतीति स्व रुप तसजानी, निर्धार स्वभाव तां जागे ॥न०॥ १ ॥ जे चेतन गुण अरुपी अनुपम, श्रद्धा धर्म प्रगटे भागे ॥ न० ॥ सविपर इहा शमे शुद्ध सत्ता, प्रगट लखन रुची जागे ॥ न० ॥ २ ॥ बहु मान परिणति वस्तु धरमे,हेतु गवेषण मागे ॥न०॥ साध्य लक्ष धरि करे सब करणी, वास्तवी संपत्त रागे ॥ न० ॥ ३ ॥
॥ ढाल २ जी ॥ राग जंगलो ॥
॥ तीहारे सैयां रंगमे भीने नयन ॥ ए चाल ॥
अरचो भवि सम्यग् दरशन धाम, ॥ अ० ॥ शुद्ध देवगुरु धर्म परखिने, श्रद्धा करण परिणाम ॥अ०॥१॥ गुण जीयांपावे तेह कही जे, सकल सुधर्मनो ठाम अ० ॥ २ ॥ मल उपशम क्षय उपशम क्षयथी, उ पजे त्रिविध अभिराम ॥ अ० ॥ ३ ॥ सम्यग् दरशन नम जीन वचने, अभंग सुमन विशराम अ० ॥४॥ पंचवार उपशम क्षय उपशम, वार असंख्य जे पाम

॥ अ० ॥५॥ एकवार लहे क्षायक समकित, दरशनी असंख्य उदाम ॥अ० ॥ ६ ॥ जे विन ज्ञान नहोवे साचो, व्रत तरु न फले काम ॥अ० ॥ ७ ॥जेनिफल मोक्ष न जे विनु पावे,समकित बल हे उदाम ॥अ० ॥ ८ ॥ सडसठ भेदे सोहे ज्युं सुरतरु, ज्ञान चरण मूल ठाम ॥अ०॥ ए ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ राग वढंस ॥

॥ हमारे को खेले बाहोरी, जामे आवागमनकी दोरी ॥ ए चाल ॥

॥जीया नम दंसण आतम सोरी,जामे रीझ रहि शिवगोरी, ॥जी०॥ क्षय उपशम रस वश गुण आये, सम संवेगे सजोरी॥ आस्तिक अनुकंपादिक प्रसरे, क्या मुनि श्राद्ध कहोरी ॥जी० ॥ १ ॥ वीरजीणंद वचनसे निकसी, वाणी सुधारस गोरी ॥ सुजस वृद्धि करि नवल तरंगे, गंभीर परमहित जोरी ॥जी०॥२॥

॥ काव्यने मंत्र बोलवां ॥ इति दर्शन पद पूजा ॥

॥ पूजा ७ मी ॥

॥ दोहा ॥

॥निबिड अज्ञान तिमिर हरी,प्रकाशे वस्तु मात्र, नमो नमो ज्ञान दिनपति, उदयो दिनने रात्र ॥१॥

यथोचित आवरण नाशजे, शुरू ज्ञान सुबोध, ॥ षट् द्रव्य ज्ञान प्रकाशवा, हेतु ज्ञान सुशोध ॥ २ ॥ वितथ वाद जेमां नहीं, न इच्छा वाद बनाव ॥ मति आदे पण ज्ञानते, वंदे नित सद्भाव ॥ ३ ॥ गुरु सेवी लहे योग्यता, निज घट देखे सदैव ॥ ज्ञेय हेय उपादेयतते, तमगत घटज्युं दीप ॥ ४ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ राग धनाश्री ॥

॥ भुल्यो भमत कहो वे अजान ॥ ए चाल॥

॥ ज्ञानहि नमन बनावे सुज्ञान ॥ ज्ञा० ॥ स्वपर भाव प्रकाशि दिखावे, पर्याय अनंत विधान ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ भेदाभेद स्वभावनो ग्राही, परिणति मुख्य पिछान ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ ज्ञापक सकल पदारथ भाव, निर्मल पंचहि ज्ञान ॥ ज्ञा०॥३॥ साधन साध्य उभय निरधारे, संशय सवहर भान ॥ ज्ञा०॥४॥ स्याद्वाद मय वस्तु जणावे, विशेष सामान्य विधान॥ज्ञा०॥५॥

॥ ढाल २ जी ॥ राग ॥

॥ तुमचिद् घन आनंद लाल, तोरे दरिशणकी बलीहारी ॥ ए राग ॥

॥जीनज्ञान सकल आधार सार, नमुं नित नित वे कर जोरी ॥ जी० ॥ १ ॥ भव्य अभव्य न जे

विनु जाने, पेय अपेय न धारी ॥ जी० ॥२॥ कृत्य अकृत्य न देखे जे विन,देवगुरु शुद्धिकारी॥जी०॥३॥ ज्ञान विना संजम नवि होवे, आगम वचन निहा री ॥ जी० ॥४॥ ज्ञानने वंदो, ज्ञान म निंदो, ज्ञानी शिवसुखना अधिकारी ॥ जी० ॥ ५ ॥ सकल क्रियानुं मुल छे श्रध्धा, (एतो) श्रध्धा मुल विहारी ॥ जी० ॥ ६ ॥ ते विनुं केसे रहुं क्षण एक, नमुं शुतल मस्तक धारी ॥ जी० ॥ ७ ॥ पंचज्ञानमां जेह सदागम, स्वपर प्रकाशनकारी ॥ जी० ॥ ८ ॥ दीपक रवि शशि मेघ परे ते, जगजीवन उपकारी ॥ जी० ॥ ए ॥ लोक ऊर्ध्व अध तिर्यग् ज्योतिष, सुर शिव दर्प्पण धारी ॥ जी० ॥१०॥ लोकालोक प्रगट सवि जेहथी,(तेह) आगमे शुध्धि अमारी ॥जी०॥११॥

॥ ढाल ३ जी ॥ राग कानमो ॥

॥ अवसर बेहर बेहर नहीं आवे ॥ ए चाल ॥

॥ चेतन ज्ञान स्वभाव ज्युं ध्यावे ॥चे०॥ ज्ञानावरणी कर्म जीयाने, क्षय उपशम जो पावे ॥चे०॥१॥ ज्ञान हुवे तव एही आतम, अबोध पणुं सविजावे ॥चे०॥२॥ वीर जीणंद वाणी रस पानी, सुजस महो

दयपावे ॥चे०॥३॥ वृद्धि गंभीर वरे शिवकमला, अ मलविपुल सुखपावे ॥ चे० ॥ ४ ॥

॥ इति ज्ञान पद पूजा काव्य तथा मंत्र बोलवां ॥

॥ पूजा ७ मी ॥

॥स्वरुप शुद्ध किरिया गहे, रहे जे निरतिचार ॥ जस बले संजम शक्ति ते, नमिये वार हजार ॥१॥ ज्ञान फल चरण रंगे धरुं, निस्पृह आश्रव रोध ॥ भवजल प्रवहण सुखमय, सुमन करम मल शोध ॥ २ ॥ रंक जेथी राजा हुये, अंगोपांग भणंत ॥ पापरुप निष्पाप हुये, दीपे तेज महंत ॥ ३ ॥ कर्म खपे सिद्धि लहे, जन्म मरण मिटि जाय ॥ इह भ वमें सुरवर नमे, परभव सुगते जाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ राग श्याम कल्याण॥

॥जीन जन्म जानी दिशि कुमरी आवे रे ॥ए चाल॥

नमन चरण गुणन ठरण मगन भावेरे, जस तत्त्व रम ण मुल रुप गावेरे, परमे रमणीकपणुं सर्व विसरी जावेरे॥ गमे खास, सिद्धि वास, अचल भास,रमण जास, मुगति भावेरे ॥ न०॥१॥ करमाश्रव त्याग रूप संजम सुहावेरे, तत्त्व थिरता दम मयि परिणति आ वेरे ॥ शुचि परम क्षमादि मुनि धर्म भावेरे ॥ नमो

अतुल, अमल विपुल, अकल सरल, उज्ज्वल चरण निर्मल भावेरे ॥ न० ॥ २ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ राग काफी वसंतनी होरी॥

॥ बावरे मत मारो पिचकारी ॥ ए चाल ॥

॥ पूजो चारित्र जग जयकारी, जयकारीरे, पूजो जगजयकारि मुनि अधिकारी, गृहिने देशे निहारी, हेरी लाला॥पू०॥देश विरति ने सर्व विरति जे,चक्रि लीये हित धारी, तृण परे षट्खंड छारी ॥ पू० ॥१॥ अक्षय सुखकारी, अघ हारी, अशरण शरण विहा री, हेरीलाला॥ रंक हुवा परमेश्वर जेहथी इंद्र नरींद नम्यारी, ज्ञानानंदि जुहारी ॥ पू०॥२॥ बार मास जे संजम धारी,अनुत्तर सुर सुख पारी,हेरीलाला॥ शुकल शुकल अभिजात्य ते उपर, पाप खपन अधिकारी, खपी तन बंध पुनारी, ॥पू०॥३॥ चय अड कर्मनो सं चय धारी,रिक्त करे खाली कारी,हेरीलाला ॥ चारित्र नाम निर्युक्ति धारी, नाम अतुल सुखकारी, नमुं त सवार हजारी ॥ पू० ॥ ४ ॥

॥ ढाल २ जी राग मारुणि ॥

॥ पिया पर घर मत जाउंरे, कर करुणा महाराज, पि०॥एचाल ॥जीया चिद् चरण बनाउरे,रमि निज गुण

दिनरात ॥ जी०॥ परिणमि शुद्ध स्वभावमेरे, लेश्या शुद्ध सुहात ॥ मोह वने भमवो नहीं, आतम चरण विख्यात ॥ जी० ॥१॥ वीरजीणंद वाणी सुनीरे, स्वरस रंगी सवधात ॥ सुजस स्वरुप वृद्धि करी, गंभीर सलोनी वात ॥ जी० ॥ २ ॥
॥इति चारित्र पद पूजा ॥ काव्य तथा मंत्र बोलवां॥

॥ पूजा ए मी.॥

॥ दोहा ॥

॥ कर्म तरु भंजन गजवरु, नमो तिव्र तपसार, ॥ एम नव पद सिद्ध यंत्रए, अरिहंत ह्रींमोकार ॥१॥ स्वरश्री प्रमुख देवता, सिद्ध प्रमुख पद वर्ग, तत्त्वाक्षर लब्धि पदो, गुरुपद नमुं समग्र० ॥ २ ॥ ह्रींत्रिविट कलशो करी, नव निधि ग्रह निर्धार ॥ जयादि अधिष्ठातृ चउ, जीन जननी जीन धार ॥ ३ ॥ विद्या शासन सुर सुरी, प्रातिहार्य शुरवीर ॥ दिक्पाल सिद्ध चक्रए, थापि अरचो धीर ॥ ४ ॥ कलशे अमृत मंडलो, चउद्वीते क्षिति पीठ ॥ पूर्व सूरि कहे सेवीए, शिवसाधन ए जीठ ॥ ५ ॥ भूत भावि वर्त्तमानना, कठिन कर्म हरनार ॥ निकाचित पण सवि खपे, तपकर बार उदार ॥ ६ ॥ क्षमा स

हित अनिदान पणे,टालीने कुध्यान ॥ निरिछक तप सेवीये; महिमा लब्धि निधान ॥ ७ ॥ कर्मावर णने संहरे, महानंद पद हेत ॥ रीझे सिद्धि सीमं तिनी, ज्ञान विमल संकेत ॥ ८ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ राग देश सोरठ ॥

॥ पुद्गलका क्या विश्वासा, जेसे पानी बिच प तासा ॥पु०॥ ए चाल ॥ तप छ्छा रोधन जानी, बहिंतर भेद पिछाणी, ॥ तप० ॥ आतम सत्ता चित्त धरीने, पर परिणति विरमाणी ॥तप०॥१॥ अनादि कर्म प्रवाह उच्छेदी, सिद्धपणुं वरे प्राणी ॥ तप० ॥ २ ॥ योग निरोधि थइ अनाहारी,अक्रिया भाव निसानी॥तप० ॥ ३ ॥ अंतर मुहूर्त तत्त्व निज साधे, सर्व संवर मय प्राणी ॥ तप० ॥ ४ ॥ एम नव पद गुण मंडल विर चो, निखेष नय विधि जाणी ॥ तप० ॥ ५ ॥ शुद्ध सत्तारामी चेतन होय, देवचंद पद ठाणी ॥तप०॥६॥

॥ढाल २ जी ॥ राग खमाच॥

॥पूजो तप गुण शिव तरु कंद,जे शम मकरंद अमंद रे ॥ पू० ॥ जेहने आदरे कर्म खपेवा, ते भव मुग ति जीनंदरे ॥ पू० ॥ १ ॥ कारण वश कारज छे नि श्चये, जाने परम मुनींदरे ॥ पू० ॥ कर्म निकाचीत

पण क्षय जावे, क्षमा सहित करठंद रे ॥ पू० ॥२॥
ते तप नमिये जेह दीपावे, जीन पंथ उजम अमंद
रे ॥ पू० ॥ आमोसही पमुहा बहु लब्धि, ( लहे)
जास प्रजावे मुनींदरे ॥ पू०॥३॥ अड महा सिद्धि नव
निधि प्रगटे, नमता जावे महींद रे ॥ पू० ॥ फल
शिव सुख मोटुं सुर नरवर, संपत्त कुसुम जीनंदरे
॥ पू० ॥ ४ ॥ ते तप वंदो सुर तरु सरिखो, अमोल
समता कंदरे ॥ पू० ॥ सर्व मंगलमां पहेलुं मंगल,
तप कहे आगम वृंद रे ॥ पू० ॥ ५ ॥ ते तप पद
त्रिकालेनमिये, शिव पंथ सहाय गईंद रे ॥ पू० ॥
इम नव पद ते तिहां लीना, श्री श्रीपाल नरींद रे
॥ पू० ॥ ६ ॥ चोथे खंडे अग्यारमी ढाले, जस वृ
द्धिना कंदरे ॥ पू० ॥ नव पद महीमा प्रेमे गावे,
गंजीर ध्वनि सुर वृंदरे ॥ पू० ॥ ७ ॥

॥ ढाल ३ ॥ जी ॥ राग॥

॥ आइ वसंत बहाररे प्रजु बेठे मगनमे ॥ ए चाल ॥
॥संवरी आत्म स्वजाव,सोही तप आतम पूजो ॥ प
रिणति समता रस रंगानी,इच्छा रोध बनाव ॥सोही०॥
निज गुण जोगी विषयनिराशी,प्राणी तप मय जाव ॥
सोही० ॥१॥ नव पद ज्ञान उपयोगे आगम, नो आ

गम किया जाव ॥ सोही० ॥ रिझो जत्नयमे साचा जानी, जक्ति ज्ञान स्वजाव ॥ सोही० ॥ २ ॥ थिर रही आतम जावे नित करी,पर सुख रतिनो अजाव ॥सोही०॥ सकल समृद्धि अष्टक रुद्धि,निज घट मे प्रगटाव॥सोही०॥३॥तेम सघली श्री नव पद रुध्धि, आतम रुध्धि जाव॥सोही०॥साधन असंख कहे जीन देवे,नव पद मुख्य लखाव॥सोही०॥४॥आलंबी नव पद ने ध्यातां, आतम ध्यान निपाव॥सोही०॥आतम नव पद नव पद आतम, ज्ञान क्रिया नय लाव ॥सोही० ॥ ५ ॥ ए दो नयमे सग नय सेतर पजय निश्चय जाव॥सोही०॥यशो विजय वृद्धि तव गंजीर,जीन गुण मंगल गाव ॥ सोही० ॥६॥ ॥ इति तप पद पूजा ॥

॥ कलश ॥

॥ एम विघन वारण, सिद्धि कारण, सिद्ध चक्र पदावली ॥ विबुध चारनी गहन रचना, सुगम ए में संकली ॥ वृद्धि विजय गुरु पाद सेवी, गंजीर जंपे मन रली, ओगणीश सत्तावन पौषिसितबठ गोघेमन आशाफली ॥ इति श्री नव पद पूजा संपुर्ण ॥

॥ अथ श्री नवपदजीनी आरति ॥

॥नम, मेव, नम, मेव,नवपद जयकारी ॥ नम०॥

संकट विघन सवचुरे, पुरे आशारी ॥ नम० ॥ १ ॥
अरिहंत सिद्ध आचारज, जग जन हितकारी (२),
वाचक मुनिवर नमता,सुखियां नर नारी ॥ नम०॥२॥
दरशन ज्ञान आतम रुप, निरधारणकारी (२),अजि
नव कर्म ने रोधे, संजम हित धारी ॥ नम० ॥ ३ ॥
पूर्वकरम मल शोधक, तपगुण अविकारी (२), सिद्ध
चक्र सेवक वृध्धि, गंजीर जयकारी ॥ नम० ॥ ४ ॥

॥ समाप्त. ॥

॥ अथ ॥

## ॥ श्रावकगुणोपरि एकवीशप्रकारी ॥

## ॥ पूजा प्रारंजः ॥

॥ तत्र ॥

## ॥ प्रथमस्नात्रपूजाप्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥स्वस्तिश्री सुख पूरवा, कल्पवेली अनुहार ॥ पू
जा जक्ति जिननी करो, एकवीश जेयविस्तार ॥ १ ॥
( पाठांतरे ) विधिपूर्वक विस्तार ॥ १ ॥ स्नात्र, विलेप
न, जूषणं, पुष्प वास धूप दीव ॥ फल अक्षत, तेम

पत्रनी, पुगी नैवेद्य अतीव ॥२॥ उदक वस्त्र चामर तथा, छत्र वाद्य गीत जात ॥ नृत्य स्तुति जिनकोशनी, वृद्धि ए एकविश ठाण ॥३॥ शुचितनु तैलजलादिके, पहेरी चीवर सार ॥ पीठत्रिकोपरि जिनठवी, जिनआणा शिर धार ॥ ४ ॥ गंगा मागध क्षीरनिधि, औषधिमिश्रित सार ॥ कुसुमे वासित शुचि जले, करो जिनस्नात्र उदार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ सूरती महीनानी देशी ॥

॥ मणिकनकादिक अड विध, करी भरी कलश सफार ॥ शुभरुचि जे जिनवर न्हवे,तस नहिं डुरित प्रचार ॥ मेरुशिखर जेम सुरवर, जिनवर न्हवण अमान ॥ करता वरता निजगुण, समकित वृद्धि निदान ॥ ६ ॥ काव्यम् ॥ हर्षे भरी अप्सरावृंद आवे, स्नात्र करी एम आशीष भावे ॥ जिहां लगें सुरगिरि जंबुदीवो, अम तणा नाथ जीवो तुं जीवो ॥ ७ ॥ इति प्रथम स्नात्रपूजा ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बावना चंदन कुंकुमे, मृगमदने घन सार ॥ जिनतनु लेपे तस टले, मोह संताप विकार ॥ ८ ॥

ढाल ॥ सकल संताप निवारण, वारण सवि नवि चित्त ॥ परम अनीहा अरिहा, तनु चरचो नवि नित्य ॥ निज रूपे उपयोगी, धारी जिनगुण गेह ॥ नाव वंदन सुहभावथी, टाले डुरित अबेह ॥ ए ॥ काव्यम् ॥ जिनतनु चरचतां सकल नाकी, कहे कुग्रह उषणता आज थाकी ॥ सकल अनिमेषता आज माकी, नव्यता अम तणी आज पाकी ॥१०॥ इति द्वितीयविलेपन पूजा ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिलक मुकुट कुंडल जुगल, अंगद कंठी हार॥ नूषणनूषित जिनतनु, करी पामो नवपार ॥ ११ ॥ ॥ ढाल ॥ मणि मूगता फल हीरला, लालडी पाच पीरोज ॥ नीलवी विद्रुम पुष्करे, लसणीया लहे बहु मोज ॥ कनकजडित वर नूषणे, नूषित जिन वर देह ॥ साधक धर्म जगायवा, अतिशय संपद् एह ॥ १२ ॥ काव्यम् ॥ शोनता नूषण देखि बीजे, जड मयी आतमा स्वगुण भीजे ॥ अविकारी जिनतणो देखी एह, नवि लहे तत्त्व आणंद रेह ॥ १३ ॥ इति तृतीय नूषणपूजा ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शतपत्री वर मोघरा, चंपक जाय गुलाब ॥ केतकी दमणय बोलसिरि, पूजो जिन नरी बाब ॥१४॥ ढाल ॥ अमल अखंडित विकसित, शुभ्र सुमनी घणि जाति ॥ लाखीणो टोमर ठवो, आंगी रची बहु जाति ॥ गुणकुसुमे निज आतम, मंडित करवा नव्य ॥ गुणरागी जरूत्याग, पुष्प चढावो नव्य ॥ १५ ॥ काव्यम् ॥ जगधणी पूजतां विविधफूले, सुरवरा ते गणे कण अमूले ॥ खांति धरी मानवा जिन पूजे, तस तणां पाप संताप ध्रूजे ॥ १६ ॥ इति चतुर्थकुसुमपूजा ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बावना चंदन कुंकुमं, सुरभिजात मंदार ॥ घनसारेयुत वासशुं, पूजो जिनप उदार ॥ १७ ॥ ॥ ढाल ॥ सरस सुगंधित वासे, वासे जिनपति जेह॥ तस मिथ्यात विनासे, वासे समकित देह ॥ निज गुण वासित आतमा, गततम होये निःशंक॥ तत्त्वालंबी चेतना, टाले कर्म कलंक ॥ १७ ॥ काव्यम् ॥ सुरभिवर वासशुं भक्तिरागे, विबुधवर वासतां एम

मागे ॥ तुज गुणज्ञानमां लीन अप्पा, थिर रहो दू र ठंमी विगप्पा ॥ १ए ॥ इति पंचम वासपूजा ॥५॥

॥ दोहा ॥

॥ कृष्णागरु मृगमद तगर,अंबर तुरुक्क लोवान ॥ मेलि सुगंध घनसार घण, करो जिनने धूप धाण ॥ २० ॥ ढाल ॥ धूप घटी जेम मह महे, तेम दहे पा तकवृंद ॥ अरति अनादिनी जावे, पावे मन आणंद॥ जे जिन पूजे धूपे, नवकूपे फरी तेह ॥ नावे पावे ध्रु व घर, आवे सुख अछेह ॥ २१ ॥ काव्यम् ॥ जिन घर वासतां धूप पूरे, मिछत दुर्गंधता जाय दूरे ॥ धूप जिम सहज ऊर्ध्वग स्वनावे, कारका उच्चगतिना व पावे ॥ २२ ॥ इति षष्ठधूपपूजा ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मणिमय रजत ताम्रप्रमुख, पात्र नरी घृत पू र ॥ वृत्ति सूत्र कौसुंजनी, करो प्रदीप सनूर ॥ २३ ॥ ढाल ॥ मंगलदीप वधावो, गावो जिनगुण गीत ॥ दीप तणी जेम आलिका, मालिका, मंगल नीत ॥ दीपतणी शुन्न ज्योति, द्योतित जिनमुख चंद ॥ नि रखी हरखो नविजना, जेम लहो पूर्णानंद ॥ २४ ॥ काव्यं ॥ जिनगृहे दीपमाला प्रकाशे, तेहथी ति

सिर अज्ञान नासे ॥ निज घटे ज्ञान ज्योति विकासे, जेहथी जग तणा नाव नासे ॥ २५ ॥ इति सप्तम दीपपूजा ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पक्क बीजोरुं जिनकरे, ठवतां शिवफल देय ॥ सरस मधुर शुद्ध फल घणां, इह जिन नेट करेय ॥ २६ ॥ ढाल ॥ श्रीफल कदली सुरंगा, नारिंग आंवा सार ॥ जंबीर अंजिर दाडिम, करणा षट्बीज सफार ॥ मधुर सुस्वादिक उत्तम, लोके अनिंदित जेह ॥ वर्ण गंधादिके रमणिक, बहु फल ढोके तेह ॥ २७ ॥ काव्यम् ॥ फल नरे पूजतां जगत् स्वामी, मनुज गति वेलि होय सफल पामी ॥ सकल मुनि ध्येय गतनेद रंगे, ध्यावतां फल समाप्ति प्रसंगे ॥२८ ॥इत्यष्टमफलपूजा ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥

॥ अक्षत अक्षत पूरशुं, जे जिनआगे सार ॥ स्वस्तिक रचतां विस्तरे, निज गुण नर विस्तार ॥२९॥ ॥ ढाल ॥ उज्ज्वल अमल अखंडित, मंम्रित अक्षत चंग ॥ पुंजत्रयी करो स्वस्तिक, आस्तिक नावे रंग ॥ निज सत्ताने सन्मुख उन्मुख नावे जेह ॥

ज्ञानादिकगुण गावे, भावे स्वस्तिक एह ॥ ३० ॥ काव्यम् ॥ स्वस्तिक पूरतां जिनप आगे, स्वस्ति श्री भद्रकल्याण जागे ॥ जन्मजरामरणादि अशुभ भागे, नियति शिवशर्म रहे तास आगे ॥ ३१ ॥ इति नवमाक्षतपूजा ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ अमल अखंडित अग्रयुत, शुभ संख्यायें पत्त ॥ जिणकरपत्तें पत्त भवि, ठवतां बहुगुण पत्त ॥ ३२ ॥ ढाल ॥ विश्वगुणाकर नागर, आदर धरी ग्रहे जास ॥ भोजन उत्तर देवे, लेवे तस मुख वास ॥ तेह सुपत्ते पूजतां, पूजक वाधे नूर ॥ अहमुरुवादिकपत्ते, विभत्ति भत्तें पूर ॥ ३३ ॥ काव्यम् ॥ पूजना पत्र शुचिभाव जागे, अग्र उपयुक्तता सवि दोष ता[ ] ॥ भावतंबोल श्रीजेह माचे, शिववधू तेहथी सत्तराचे ॥ ३४ ॥ इति दशमपत्रपूजा ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ उज्ज्वल शुद्ध सुस्वाद्यवर, नव्य भव्य जे जाति॥ जनप्यारी सोपारी वर, पूजो जिन भक्ति भाति ॥३५॥ ढाल ॥ मंगल कारण लाविर्ये, भाविये घर घर हर्ष ॥ स्वस्तिक मंडन खंडन, डुरित तणा उत्कर्ष ॥ क्रमुक

फले जिन अरचो, विरचो धरी गुणराग ॥ मंगलमा ला थावे, पावे नवजल ताग ॥ ३६ ॥ काव्यं ॥ शु द्धस्याद्वाद मृडुनावसंगे, शुक्लता शुद्धवर नाव रंगे ॥ नावथी पूजतो एम पूगें, नियति आनंद घर तेह पूगे ॥ ३७ ॥ इत्येकादशपूगीफलपूजा ॥११॥

॥ दोहा ॥

॥ सरस शुचि पकवान नर, शालि दाल घृतपू र ॥ करे नैवेद्य जिन आगले, क्षुधा दोष तस दूर ॥३८॥ ढाल ॥ लाखनश्री वर घेवर, मृडुतर मोतीचूर ॥ सिंह केशर सेवइया, दलिया मोदक पूर ॥ साकर द्राख शींगोडां, नक्त व्यंजन घृत सद्य ॥ एम नैवेद्य जिनने करे, तस नवे सुख अनवद्य ॥ ३९ ॥ का व्यम् ॥ ढोकता नोज्य परनाव त्यागे, नविजना नि जगुण नोग मागे ॥ अम नणी अम तणुं स्वरूप नोज्य, आपजो तातजी जगत पूज्य ॥ ४० ॥ इति द्वादशनैवेद्यपूजा ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुचरुच्चि शुचिनिर्वाणनुं, पूर्ण कलश नरि तो य ॥ जिनपति आगल ढोकतां, गततृष्णा नवि होय॥ ॥ ४१ ॥ ढाल ॥ जगजीवन गुणपावन, निर्म्मल श्री

तल जेह ॥ उदक रयणे जिन पूजतां, न रहे पातक रेह ॥ अतिभीष्मे भवग्रीष्मे, नवि पीमाये तेह ॥ सुखभर शिवघर वासवा, आदिमंगल एह ॥ ४२ ॥ काव्यम् ॥ निम्मले समजले जेह प्राणी, भरी पात्र श्रद्धान ते सुगुणखाणी ॥ एकता जिन गुणे देवदेवा, भजे भावथी जल तणी एह सेवा ॥ ॥ ४३ ॥ इति त्रयोदश जलपूजा ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चीनांशुक मुखमल अमल, जरबाफी शुद्ध प ट्ट ॥ सरस सुकोमल मूल घणां, वस्त्रपूज गहगट्ट ॥ ॥ ४४ ॥ ढाल ॥ वस्त्रजोमी मन कोमे, थापो जिनद्ध गमाग ॥ गतशोचे उल्लोचे, अह जिनमंदिर राग ॥ शोभावो ध्वज गावो, चावो करी बहु मान ॥ वस्त्र पूजा हरे भविकनां, दुःख शीतादि अमान ॥ ४५ ॥ काव्यम् ॥ भावथी वस्त्रयुग जे परिभ्रा, ते धरे जिनतणी आण लीना ॥ शिशिर जड आश्रवे मोहग्रीष्मे, नवि लहे दुःख संसारभीष्मे ॥ ४६ ॥ इति चतुर्दश वस्त्रपूजा ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अति उज्ज्वल अंगुल तणुं, एकशत आठ प्र

माण ॥ चामररत्नें पूजतां, नासे डुरितविहाण ॥४७॥

ढाल ॥ कनकरयणने दंडे, मंम्मित चामरजोडि ॥ ह रखतां जिनमुख निरखतां, वींजे होमा होडि ॥ वि कसित कज जेम जिनमुख, सन्मुख आवी हंस ॥ सेवे एम उपमित करे, नवि जन धरी आशंक॥४८॥

काव्यम् ॥ ज्ञान मय किरिय उज्ज्वल स्वजावे, नति उन्नति गौण मुख्यादि जावे ॥ मानगुणसंख जिन राज आणे, जावथी बुद्ध चामर वखाणे ॥ ४९ ॥

इति पंचदशचामरपूजा ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ उज्ज्वल शारद चंद जिम, बत्रत्रय बहु मूल ॥ बाविजे जिन उपरे, तस डुगसिरि अनुकूल ॥ ५० ॥

॥ ढाल ॥ बत्रत्रय जेम फरके, थरके पातकवृंद ॥ मोहादिक अरि जागा, नागा करे आक्रंद ॥ जे नित्यपूजे बत्रे, शुजगोत्रें लहे जम्म ॥ ततक्षणे बत्र धरे हरि, सुरगिरे उत्सव कम्म ॥ ५१ ॥ काव्यम् ॥ हृत्कजे जेह जिनराज ध्यावे, लीनता अवंचक योग बावे, जावबत्र त्रयी गुणसमाजे, सादि निरअंत शि वराजराजे ॥ ५२ ॥ इति षोडशपूजा ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ भंभा भेरी मृदंगवर, तंत्री ताल कंठताल ॥ झल्लरी डुंडुही शंख इति, वाजित्र पूज विशाल ॥५३॥ ॥ ढाल ॥ जेम जेम वाजित्र वाजे, गाजे अतिघन घोर ॥ तेम तेम जिनगुणे राचे, माचे ज्युं घनमोर॥ निसुणि भूपति रुंका, वंका तस्कर दूर ॥ जाये तेम वाजित्रथी, गात्रथी दोष ते भूर ॥ ५४ ॥ काव्यम् ॥ श्रीजिनआण वरते गंधारी, नियत उपयोगी वचन ते वाद्य भारी ॥ वीर्योल्लास लखि मोह त्रासे, भावथी वाद्यपूजा प्रकाशे ॥ ५५ ॥ इति सप्तदशवाजित्रपूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ भैरव विभास आशावरी, टोरी नट्ट कल्याण॥ धन्यासिरि पमुह स्तवे, पूजा गीत प्रमाण ॥ ५६ ॥ ढाल ॥ गुणरागे शुद्ध रागे, रागे जे जिन गान ॥ जागे अनुभववासना, मागे केवलमान ॥ तान मान स्वरग्रामनी, मूर्छनाभेदे भेद ॥ लय लागे रुचि जागे, त्यागे ममता खेद ॥ ५७ ॥ काव्यम् ॥ शुद्धनिर्द्वंद्व जिनरूप धारी, अहव वाच्यता गुणसंभारी ॥ दव्वगुण पज्जवा शुद्ध भाखे, भावथी गीतरस तेह चाखे॥ ॥ ५८ ॥ इति अष्टादशगीतपूजा ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मूकी शंक संसारनी, जिनपति आगे जत्ति॥करीनृत्य सूर्याज्ञ परे, तस नहीं जवज्ञय नृत्य॥ ५ए॥ ॥ ढाल॥ जूचर खेचर अमरवर, किन्नरी नरी शुज्ञचित्त ॥ नाचे माचे जिनगुणे, सांचे सुकृतवित्त ॥ योग अवंचक एहथी, तेहथी जिनपद हेतु॥ चउगइ गमणनिवारण, तारण जवजलसेतु ॥ ६० ॥ काव्यम् ॥ जेह निजयोगगति सहज रंगे, फोरवे अम्रतानुष्ठान संगे ॥ अतुलगुणतान न चूके असंगे, जावनृत्यपूजना एह ढंगे ॥ ६१ ॥ इति एकोनविंशतिनृत्यपूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ व्याकरण काव्य अलंकृति, तर्क ठंद अप्रब्ध ॥ दोष न दोषे स्तुति करे, स्तुतिपूजा गुणसब्ध ॥६२॥ ॥ ढाल ॥ स्वरपदवर्णविराजति, ज्राजति उक्ति अनूप ॥ अतिशय धारी उपकारी, अह तस शुद्ध स्वरूप ॥ संपद् त्रिक एम स्तवतो, ठवतो जिनगुण चित्त ॥ सुरनर किन्नर थवे तस, एणीदृश कवे नित्त ॥ ६३ ॥ काव्यम् ॥ जेह षट्द्रव्य जिन आण जाखे, शुद्ध स्याद्वादनी टेक राखे ॥ अवर एकांतता दूर

नाखे, नावस्तुति पूजना एह आखे ॥ ६४ ॥ इति विंशतिस्तुति पूजा ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥निज सुकृतउदये लह्युं, न्यायोपार्जितवित्त ॥ वृद्धि जिनपतिकोशनी, करे पूजा जहसत्ति ॥ ६५ ॥ ॥ ढाल ॥ रूपैया सोनैया, अनिरामी अतिचंग ॥ हूण पूतलिया गब्बर, उपन्न नेदप्रसंग ॥ पुण्ये पामी लछी, स्वछीमतिजिनकोश ॥ वृद्धि करो अप्पा नरो, निजगुण नावसंतोष ॥ ६६ ॥ काव्यम् ॥ प्रतिक्षणे जेह जिनराज आणे, निजपरनाव विन्नाण नाणे ॥ जेहथी आत्मगुणगण वाधे, नावथी कोशनी वृद्धि साधे ॥ ६७ ॥ इति एकविंशतिकोशपूजा ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम एकवीश विधिपूजना, विरचे जे थिरचित्त॥ मानव नव सफलो करे, वाधे समकितवित्त ॥ ६७ ॥ ढाल ॥ अगणित गुणगण आगर, नागरवंदितपाय ॥ श्रुतधारी उपकारी, ज्ञानसागर उवयाय ॥ तास चरणकज सेवक, मधुकरपरे लयलीन ॥ श्रीजिनपूजा गाई, जिनवाणी रसपीन ॥ ६ए ॥ काव्यम् ॥ संवत् गुण युग अचल इंडु, हर्षनर गाइयो श्रीजिनें

छ ॥ तास फल सुकृतथी सकल प्राणी, लहो ज्ञान ज्योत घन शिवनिशानी ॥ ७० ॥

॥ दोहा ॥

॥ इगवीश श्रावकगुणवने, पूजा पुष्कर मेह ॥ सुर नर सुख फूले फले, शिवसुख लहे अछेह ॥७१॥

॥ इति पंडित श्रीदेवचंदजीकृत श्रावकगुणोपरि एकविंशप्रकारी पूजा संपूर्णा ॥

## ॥ अथ श्रीज्ञानविमलसूरिकृत शांतिनाथजीनो कलश प्रारंभः ॥

॥श्री जयमंगलकृतत्नमन्युदयतावल्लीप्ररोहांबुदो, दारिद्र्यद्रुमकाननैकदलने मत्तो धुरः सिंधुरः ॥ विश्वैः संस्तुतसत्प्रतापमहिमा सौनाग्यनाग्योदयः, स श्रीशांतिजिनेश्वरोऽनिमतदो जीयात् सुवर्णछविः ॥ १ ॥ अहो नव्याः शृणुत तावत् सकलमंगलकेलि कलालीलासनकाः लीलारसरोपितचित्तवृत्तयः विहितश्रीमज्जिनेंद्रनक्तिप्रवृत्तयः सांप्रतं श्रीमछांतिजिनेंद्रजन्मानिषेककलशोगीयते ॥

॥ राग वसंत, तथा नट्ट, देशाख ॥

॥ श्रीशांतिजिनवर, सयल सुखकर, कलश नणीये तास ॥ जिम नविक जनने, सयल संपत्ति, बहुत लील विलास ॥ कुरु नानिजनपद, तिलक सम वरू, हछिणाउर सार ॥ जिननयरी कंचन, रयण धण कण, सुगुणजन आधार ॥ १ ॥ तिहां राय राजें बहु दिवाजे, विश्वसेन नरींद ॥ निज प्रकृति सोमह, तेज तपनह, मानुं चंद दिणंद ॥ तस पणवखाणी, पट्टराणी, नामे अचिरा नार ॥

सुखसेजे सुतां, चौद पेखे, सुपन सार उदार ॥ २ ॥
सवढ सिद्ध विमानथी तव, चवियो उर उप्पन्न ॥
बहुनह्न नट नत्त क्षीण सत्तमी, दिवस गुणसंपुन्न ॥
तव रोग सोग वियोग विड्डुर, मारी इति शमंत ॥
वर सयल मंगल, केलि कमला, घर घरे विलसंत
॥ ३ ॥ वर चंद योगे, ज्येष्ठ तेरश, वदि दिने थयो
जम्म ॥ तव मध्यरयणीये दिशिकुमारी, करे सूई क
म्म ॥ तव चलिय आसन, सुणीय सवि हरि, घंटनादे
मेली ॥ सुरविंदसछें, मेरुमछें, रचे मज्जन केली ॥४॥

॥ ढाल ॥ विश्वसेननृप घरे नंदन जनमीया ए ॥
तिहुअण नवियण प्रेमशुं प्रणमिया ए ॥ ५ ॥
चाल ॥ हांरे प्रणमीया ते चौसठ इंद्र, लेइ ठवे मेरुगि
रींद ॥ सुरनदी नीर समीर तिहां, क्षीरजलनिधि ती
र ॥६॥ सिंहासने सुरराज, जिहां मळ्या देवसमाज
॥ सर्व औषधिनी जात, वर सरस कमल विख्यात
॥ ७ ॥ ढाल ॥ विख्यात विविध परे कमलना ए ॥
तिहां हरख नर सुरत्ति वरदामना ए ॥ ८ ॥
॥चाल॥ हांरे वरदाम मागध नाम, जे तीर्थ उत्तम
ठाम॥तेहतणी माटी सर्व, कर ग्रहे सर्व सुपर्व ॥ ए ॥
बावना चंदन सार, अभियोग सुर अधिकार ॥ मन

कुम चित्त ॥ शिर मुकुट मंडल, काने कुंमल, हैये नवसर हार॥ एम सयल भूषण भूषितांबर, जगतजन परिवार ॥ २७ ॥ जिनजन्म कल्याणक महोत्सवे, चौद भुवन उद्योत ॥ नारकी थावर, प्रमुख सुखीयां, सकलमंगल होत ॥ दुःख दुरित ईति, शमित स घलां जिनराजने परताप ॥ तेणे हेते शांति, कुमार ठवियुं, नामइति आलाप ॥ २८ ॥ एम शांति जिननो, कलश भणतां, होवे मंगलमाल ॥ कल्याण कमला, केली करती, लहे लील विलास ॥ जिन स्नात्र करीये, सहेजे तरीये, भवसमुद्रनो पार ॥ एम ज्ञानविमल, सुरींद जंपे, श्रीशांतिजिन जय कार ॥ २९ ॥ इतिश्री ज्ञानविमलसूरिकृत श्रीशांति जिनकलशः सपूर्णः ॥

॥ अथ ॥

## ॥ श्रीअढीशें अभिषेकनो कलश प्रारंभः ॥

### ॥ ढाल पहेली ॥

॥ जय केवलकमला केलिगेह, जय कंचन कोमल विमल देह ॥ जय शांतिजिनेसर शुद्ध देव, जय सकल सुरासुर करेय सेव ॥ १ ॥ जय चउत्तिशे अ

तिशय संयुक्त, जय पांत्रीश वचनातिशय पवित्त ॥ जय शांतिकरण श्रीशांतिनाह, पन्नणी तस कलशह मनउत्साह ॥ २ ॥ सवठ विमानथी चविय नाह, हथ्थिणाउर आवीय गुणअगाह ॥ नरवइ सिरि विस्ससेण नाम, अचिरा उयरे उप्पन्नो स्वाम ॥ ३ ॥ चउदस वर सुमिणा निरखे ताम, गज वृषन्न हरि अन्निशेष दाम ॥ शशी रवि ऊय कुंन्न पउम तडाग, सागर सुरघर मणि विमल आग ॥ ४ ॥ शुन्न सुपनां देखी जागी देवि, प्रहसमे निज प्रन्नुने कहती हेव॥ सुणी नृप मनमांहे हरष पाय, तुम संतति जिनपति चक्री थाय ॥ ५ ॥ जेठवदि तेरश न्नरणी रिख्क॥ एणे दिवसे जायो रहिय डुःख ॥ तब आसन चलियां दिशिकुमारि, सूति कर्म करे आवीने सार ॥६॥ संवट मेह आयसगाय, न्नींगार ताल वाजित्र संटाय ॥ चामर जोइय रख्क करंति, दिशि कुमारीनो एजीत तंति ॥ ७ ॥ तदनंतर आसन चलिय इंद, अवधे जाणिय जम्म जिणंद॥ हर्षित हुई अरूपय साहामो आय, करि अंजलि प्रणमी जिणंद पाय ॥७॥ सुणो रे सर्व सुरलोय देव, जिन जम्म महोत्सव करण हेव ॥ नियनिय सामग्गी सजीय रंग, अमराचल

आवजो धरी उमंग ॥ ए ॥ एम जंपी सुघोषा घंट नाद, वजमावे सुरपति मन आल्हाद ॥ पालक या न बेसी सुहम साम, थइ नंदीश्वर आवी जम्म गा स ॥ १० ॥ परदक्षिणा देइ जिन जम्मगेह, जिनने जननी प्रणमे सनेह ॥ पडीरूव मूकी पंचरूप करेय, हरि आवे मंदरशैल तेह ॥११॥ अच्चुवइनो आदेश लेव, आज्ञियोगिक सुर तव ततखेव ॥ खीरोदधिनां जल ज्ञरिय कुंज्ञ, तीरथजलने मृत्तिका सुरंज्ञ ॥१२॥

॥ ढाल बीजी ॥ नवमे मासने आठमे दिवसे,
जाया जिनवर रायाजी ॥ ए देशी ॥

॥ जन्महोत्सव करवा कारण, सुरपति सुरगिरि मलियाजी ॥ अढीशे अज्ञिषेक करणने, अरुविह कलशा ज्ञरियाजी ॥ १ ॥ ज्ञवियण ज्ञाव धरीने पूजो, श्रीजिनवरनी मुद्राजी ॥ चोशठ सहस्स कलश जल ज्ञरीने, एक अज्ञिषेके इंद्रा जी ॥ २ ॥ पणवीश जोयण उंचा कलशा, पोहोला जोयण वारजी ॥ जोयणनुं नालुं एक कोमि, शाठ लाख मन धार जी ॥ ३ ॥ एकशोचोराणुं सुरपतिना, जाणो जिन अज्ञिषेका जी, वैमानिक देवीना षोडश, अज्ञिषेकह सुविवेकाजी ॥ ४ ॥ दश असुरदेवीना सुंदर, नागकु

मरीना बारजी, व्यंतर देवीना वली चारज, ज्योतिष सुरना चार जी ॥ ५ ॥ लोकपालना चउ अभिषेकह, अंगरक्षकनो एक जी ॥ सामानिकसुरनो पण एकज, एक अभिषेक अनीक जी ॥६॥ त्रायत्रिंशक सुरनो पण एक, एक पर्षद सुर केरो जी ॥ पन्नग सुरनो एक अभिषेको, करता लाज घणेरो जी ॥ ७ ॥

॥ढाल त्रीजी ॥ आनंद मंगलमां जीउ रहीयें॥ए देशी॥

॥ अच्चुत सुरपति प्रथमथकी करे, तदनु प्राणत इंद्राजी ॥ सहस्रार पति वली शुक्र इंद्रें, लांतक ब्रह्म सुरेंद्राजी ॥ १ ॥ जवियण स्नात्र करो बहु जावें, समकित निर्मल करवाजी॥रत्नत्रय आराधन कारण, जवसायरथी तरवाजी ॥ ज० ॥ २ ॥ माहेंद्रनें वली सनत्कुमारह, ईशानेंद्र न्हवरावेजी ॥ तदनंतर करे जवनाधिपति अभिषेका बहुजावेंजी ॥ ज० ॥३॥ चमरेंद्रने वली बलींद्रह, धरणेंद्र जूतानेंद्रजी ॥ वेणुदेवने वेणुदाली, हरिस्सह हरीकंत इंद्रजी ॥ ज० ॥ ॥४॥ अग्निशिखाने अग्नि माणव, पूरणने वशिष्टजी ॥ जनकंतने जलप्रनेंद्रह, अमितगति अमित वाहनें द्रजी ॥ ज० ॥ ५ ॥ वेलंबकने इंप्र प्रजंजन, घोष अने महाघोषजी ॥ प्रथम दक्षिणनो पश्चिम उत्तर ह

रि, हरता पातक दोष जी ॥ ज० ॥ ६ ॥ तेवार प श्चिम व्यंतर महर्द्धिक, शोल हरि मनरंगे जी ॥ का ल अने महाकाल स्वरूपा, प्रतिरूपा मनरंगेजी ॥ ज० ॥ ७ ॥ पूरणजद्रने माणिजद्र हरि, जीम अने महाजीमजी ॥ किन्नरने किंपुरिस सहपुरिसा, महापु रिस अतिप्रेमजी ॥ ज० ॥ ८ ॥ अतिकायने महाका य करी, गीतरति हरि जाणोजी ॥ गीतयशा ए शोल व्यंतरना, अधिपति मनमां आणोजी ॥ ज० ॥ ए ॥ ते पण दक्षिणपतिनो पहेलो, पश्चिम उत्तरनो रंगेजी ॥ अल्पऋद्धिया वाणव्यंतरना, षोडश हरि सुप्रसंगेजी ॥ ज० ॥ १० ॥ सन्निहित इंद्रने सामानित हरि, धा य विधाय सुरेशाजी ॥ ऋषिइंद्रने ऋषिपाल व्यंतरी वई, ईश्वर महेश्वर ईशाजी ॥ ज० ॥११॥ सुवत्स विशा ल शचिपति, हास्य हास्यरइ मघवाजी ॥ श्वेत अने म हाश्वेत पुरंदर, पयंग पयंगवइ अहवाजी ॥ज०॥१२॥

॥ढाल चोथी॥ नमोरेनमो श्रीशेत्रुंजा गिरिवर ॥एदेशी॥

॥ नमोरे नमो श्रीशांतिजिनेसर, शांतिसुधारस दातारे ॥ तीन जुवन मनमोहन मूरत, जगबंधव जगत्राता रे॥ नमो० ॥ १ ॥ हवे कहुं शशि रविनां अनिषेका, एकशतने बत्रीश रे ॥ जंबूद्वीपना दो र

वि दो शशि, लवणना चार अधीश रे ॥ नमो० ॥ ॥ २ ॥ धातकीखंडना द्वादश रवि शशि, कालोदधि बियाला रे ॥ तदनंतर उत्तरना शशि रवि, स्नात्रकार उजमाला रे ॥ नमो० ॥ ३ ॥ बाशठ अभिषेका दक्षिणना, बाशठ उत्तर केरा रे ॥ सर्व मली एकशोने बत्रीश, करतां सुख अधिकेरां रे ॥ नमो० ॥ ४ ॥ त्यार पछी त्रायत्रिंश सामानिक, अंगरक्षकने अभिषेका रे ॥ परषद्ने पन्नग सुर केरा ॥ लोकपाल अभिषेका रे ॥ नमो० ॥ ५ ॥ सोहमपतिनी आठ इंद्राणी, पद्मा शिवादेवी रे ॥ शची अंजू अमलो अप्सरा, नवमीका रोहणी देवी रे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ ईशानेंद्र तणी पण आठे, कृष्णने कृष्णाराइ रे ॥ रामा रामरक्षिता देवी, वसु वसुगुप्ता गाइ रे ॥ नमो० ॥६॥ वसुमित्रा वसुंधरा जाणो, बेहु मलीने शोल रे॥आठ दक्षिणना आठ उत्तरना, अभिषेका रंगरोलरे ॥ नमो० ॥७॥ तदनंतर चमरेंद्रनी देवी, काली राति रयणी रे ॥ विजुने मेहा ए पांचे, दक्षिणवइ इंद्राणी रे ॥ नमो० ॥ ए ॥ तेम बलिहारिनी पण पांचे, शुभानीने शुभा रंभा रे ॥ निरंभा देवीने मदना, ए पांचे गतदंभा रें ॥ नमो० ॥ १० ॥ एहना पण जे

दश अजिषेका, दक्षिण उत्तर कीजे रे ॥ हवे धरणेंद्र तणी पटराणी, षट्अजिधान ग्रहीजे रे ॥ नमो०॥११॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ पायो पायो रे जले श्रीजिनशासन पायो ॥ स्नात्र महोत्सव करो मनरंगे, एहिज मोक्ष उपायो रे ॥ जले० ॥ १ ॥ अल्लाइ इंद्राणीने मक्का, त्रीजी जाणो सुतेरा ॥ सोहामणी इंदाघणविजूआ, ए अजिधान जलेरां रे ॥ जले० ॥ २ ॥ जूतानेंद्रनी षट् इंद्राणी, रूपारूप सरूपा ॥ रूपकावतीने वली रूपकांता, रूपप्रजाने अनूपा रे ॥ जले० ॥३॥ एहना पण बा दश अजिषेका, दक्षिण उत्तर धारो ॥ तदनंतर व्यंतर देवीना, अजिषेका ठे चारो रे ॥ जले० ॥ ४ ॥ कमला कमलप्रजाने उपला, सुदंसणा इंद्राणी ॥ ए पण दक्षिण उत्तरे रहीने, जक्ति करे चित्त आणी रे ॥जले०॥५॥ चंद्रतणी चारे इंद्राणी, चंद्रप्रजा देवी जाणो, अनुष्णाजाने अर्चिमाली, प्रजंकरा मन आणो रे ॥जले०॥६॥हवे रविनी चारे अग्रमहिषी, सूर्य प्रजातिहां पहेली, आतपा देवीने अर्चिमाली, प्रजंकरा रंग रेली रे ॥ जले० ॥ ७ ॥ ए आठे मली चउ अजिषेका, समकित निर्मल कारी ॥ ठेतालीश अजिषेका

देवीना, सूत्र तणे अनुसारी रे ॥ भले० ॥ ८ ॥ केइ गीत गावे केइ तूर बजावे, केइ करे नाटारंभ ॥ ताल मृदंगने वीणा तंबूरा, जल्लरी भेरी अदंभ रे ॥ भले० ॥ ए ॥ तदनंतर ईशानेंद्र लेवे, सोहमपति न्हवरावे ॥ चार वृषभनां रूप करीने, अधिकी भक्ति बनावे रे ॥ भले० ॥ १० ॥ अच्युतपरे अभिषेक करे वली, सोहमपति मन रंगे ॥ ए अभिषेक तणो अनुक्रम, जंबूपन्नति उपांगे रे ॥ भले० ॥११॥ एम अभिषेक अढीशे करीने, समकित निर्मल कीजे ॥ केवलज्ञान महोदय पदवी, आतम संपत्ति लीजे रे ॥ भले० ॥१२॥ त्यार पछी हरि प्रभुने लेइ, मेले मानी पासे॥ बत्रीशकोड रतनी वृष्टि, इंद्र करे उल्लासे रे ॥ भले० ॥ १३ ॥ नंदीश्वर अठ्ठाइ महोत्सव, करीने मन आणंद ॥ सकल सुरासुर निजनिज थानक, पोहोता मंद अमंद रे ॥ भले० ॥ १४ ॥ एह कलश जे भणशे गुणशे, ते लहे शिवसुख कंद ॥ केवलकमला कल्पवेलि घन, पावे परमानंद रे ॥ भले० ॥ १५ ॥

॥ कलश ॥

॥ श्रीशांति जिनवर, सयल सुखकर, संस्तव्यो त्रि

भुवन धणी, शुभलद्धिमाला, गुण विशाला, दीये निज, सेवक भणी ॥ जन्माभिषेक, महंत महिमा, करत शिवसुख, पाइये ॥ त्रैलोक्यनाथ, सुदेव जिन वर, जगत् मंगल, गाइये ॥ १ ॥ इतिश्रीसार्द्धद्विशत अभिषेकाः संपूर्णाः ॥

## ॥ अथ अढिशें अभिषेकनी गाथा ॥

॥ इंदसम तायतिंसा, पारसीया आयरक्ख लोग पालाणं ॥ अणिय पइन्ना अभिजो, गअग्गमहिसी णमभिसेसा ॥ १ ॥ चउ णवइसयं एगो, तिन्नीसा तिन्नि एग चउसत्त ॥ एगो एगो पंचय, णेया शंखा क्कमेणेसिं ॥ २ ॥

॥ अढीशे अभिषेकनो शरवालो नीचे प्रमाणे छे.

१० वैमानिकबारदेवलोकनादशइंद्रतेनादश अभिषेक.

२० भुवनपतिना वीशइंद्रना वीश अभिषेक.

३२ व्यंतरना बत्रीश इंद्रना बत्रीश अभिषेक.

१३२ ज्योतिषीअढी द्वीप मांहे लाछाशठचंद्रअनेछाशठ सूर्य मली एकशो बत्रीशनाएकशोनेबत्रीश अभिषेक.

८ सौधर्मेंद्रनी आठ अग्रमहिषीना आठ अभिषेक.

८ ईशानेंद्रनी आठ अग्रमहिषीना आठ अभिषेक.

५ चमरेंद्रनी पांच अग्रमहिषीना पांच अभिषेक.
५ बलींद्रनी पांच अग्रमहिषीना पांच अभिषेक.
६ धरणेंद्रनी छ पटराणीना छ अभिषेक.
६ भूतानेंद्रनी छ पटराणीना छ अभिषेक.
४ व्यंतरनी चार अग्रमहिषीना चार अभिषेक.
४ ज्योतिषीनी चार अग्रमहिषीना चार अभिषेक.
४ चारलोकपालना चार अभिषेक.
१ अंगरक्षकदेवनो एक अभिषेक.
१ सामानिकदेवनो एक अभिषेक.
१ कटकना देवनो एक अभिषेक.
१ त्रायत्रिंशक देवनो एक अभिषेक.
१ परषदाना देवोनो एक अभिषेक.
१ पइन्नगसुरनो एटले प्रज्ञास्थानदेवनो एक.

इति कलशः समाप्तः

॥ अथ ॥

## ॥ देवपालकविकृत स्नात्रपूजा प्रारंभः ॥



॥ पूर्व दिशाये अथवा उत्तर दिशाये बाजोठ मांडी, तेना उपर कुमकुमनो स्वस्तिक करी, पछी तेना उपर एक थाल मूकीये; ते थालमां केशरनो स्वतिक करि, मांहे पंचतीर्थी प्रतिमा स्थापन करिये. पछी श्रावक पंचामृतनो कलश भरी तेने अंगलूहणे ढांकीने ते कलशने त्यां स्थापन करी नीचे लखेली गाथा कहे ॥

॥(गाथा)आर्या ॥ मुक्तालंकारविका,रसारसौम्यत्व कांतिकमनीयम्॥सहज निजरूप निर्जित,जगत्त्रयं पातु जिनबिंबम् ॥१॥ ए गाथा कही, प्रतिमाजीना अलंकार उतारीये ॥ गाथा ॥ अवणिय कुसुमाहरणं, पयइ पयठिय मनोहरछायं ॥ जिणरूवं मज्जणपीढं, संठियंवो सिवं दिसउ ॥२॥ ए गाथा भणी निर्माल्य उतारीये॥गाथा ॥बालतणम्मिसामिअ, सुमेरुसिहरम्मिकणयकलसेहिं॥तिअसा सुरेहिंएहविउ, ते धन्ना जेहिं दिठोसि ॥३॥ ए गाथा कही, कलशे पखाल करी संक्षेपे पूजीये. पछी स्नात्र कारकना हाथ, धूप चंदने वासी हा

थमां कुसुमांजलि आपी, प्रभुनी जमणी बाजु पाट
ला उपर उभो राखिये, पछी नमोऽर्हत् सि०॥ कहिये.॥

॥ ढाल (चाल)॥ पवित्र उदक लेइ अंग पखाली,
विविधवस्त्र जादव चिरमाली॥ कुसुमांजलि म्हेलो आ
दिजिणंदा, तोरां चरणकमल सेवे चोशठ इंदा ॥ कु
सुमांजलि० ॥ १ ॥ गाथा आर्या ॥ सयवत्त कुंद मा
लइ, बहुविह कुसुमाइ पंचवन्नाइं ॥ जिणनाहन्हवण
काले, दिंति सुरा कुसुमांजलि हिठा ॥ १ ॥ एम कही
प्रभुना चरणे कुंसुमांजलि चढाविये॥ इति प्रथमकुसु
मांजलिः ॥ १ ॥ नमोऽर्हत् सि० ॥ कहीये ॥

॥ ढाल ( चाल )॥ सिंहासण सामी थापीजे, प
यकमले कुसुमांजलि दीजे॥ कुसुमांजलि म्हेलो शां
ति जिणंदा ॥ तोरां चरणकमल सेवे चोशठ इंदा ॥
कुसु० ॥ २ ॥ गाथा दोहा ॥ जा मुक्किय सुरासुरे
हिं, मज्जण पढम जिणेस ॥ सा कुसुमांजलि अवह
रउ, नवियह डुरिय असेस॥ १ ॥ एम कही कुसुमां
जलि चढावीये ॥ इति द्वितीय कुसुमांजलिः ॥ २ ॥
न मोऽर्हत्सि० ॥ कहीये ॥

॥ ढाल (चाल) ॥ कनककलश जल निर्मल नरिये,
सामीने सिरपर एह्वणज करिये ॥कुसुमांजलि म्हेलो

उरिं आविअ गयविवाह ॥ कुलघर सिरिनाभिनरिंद गेहिं, सुसम डुःसम तिय अयरछेहि ॥ २ ॥

॥ हरिगीतछंद ॥ सुसम डुःसम अयरमंऊण, स व्वठविमाणह, सुरचविं ॥ सिरिनाभिराया, कुलहमंऊ ण, उवफाउरिं, अवतारिं ॥ सुविशाल माला पउढ मुगता, गीत नाद सवे करे ॥ उत्सव जाणी, मन्न आणी, तिछंकरकुल, अवतारिं॥३॥ हवे दान दीजे, पु एय कीजे, मन्न रीऊे, अति घणां ॥ घरघर मंगल, तरियां तोरण, उत्सव होय, वधामणां ॥ निशिन्नरे पोढी, हर्ष आणी, इशुं जाणी, एम कहे ॥ पाछली राते, प्रन्नात वेला, सुपन मरुदेवा लहे ॥ ४ ॥

॥ अथ सुपननी ढाल ॥ उलालानी ॥

॥ प्रथम ऐरावण दीठो, नयणे अमीय पइठो ॥ बीजे वृषन्न उदार, दीठो अति सुखकार ॥ १ ॥ त्री जे मृगपति पेखे, दरिसण डुरित उवेखे ॥ चोथे लख मीअ सोहे, जिण दीठे जग मोहे ॥ २ ॥ पांचमे कु सुमनी माला, छठे चंद्रविशाला ॥ सातमे तमहर दिनकर, आठमे इंद्रध्वज जयकर॥ ३ ॥ नवमे कल श मनोहर, दशमे पद्म सरोवर ॥ अगिआरमे सागर सुंदर, बारमे अमरनुं मंदिर ॥ ४ ॥ तेरमे मणिन्नर ग

गने, चउदमे निर्धूम अगनि ॥ इति सुणी सुपनना पाठक, बोल्या निजमुख वाचक ॥ ५ ॥ राजन्! तुम सुत होशे, त्रिभुवन तस मुख जोशे ॥ नरपति अहवा जिणंद, तुम कुल आव्यो ए चंद ॥ ६ ॥ राय दिये बहु मान, पाठकने घणां दान ॥ पाठक सुपन सुणावे, घरणी निज घरे आवे ॥ ७ ॥ इति सुपननी ढाल ॥

॥ मूल गाथा ॥ मरुदेवीहिं उयरिं उप्पन्नह जाम, चउदस वर सुमणां लहिय ताम ॥ चित्तह वदि अठमी साढरिक्क, कमि कमि जिण जाइउं रहिय डुरक ॥

॥ वस्तुछंद ॥ अठ अठय अठ अठय उड्ढ अहोदिसिं, दिसिकुमरी उपन्न तिहिं ॥ रूववंत वरनत्ति जुत्तिय, रूअग पव्वय चिहुं दिसिं ॥ अठ अठ चिहुं विदिसि पहुत्तिय, चउरो रूअगदीव पुण ॥ आवीय नाभिहि गेहिं, जणणी नमिय आरंभिउं, जनममहोछव तिहिं॥

॥ ढाल ॥ ( चाल ) अठ संवठ वायेण कयवर हरइं, अठ गंधोदकिं वुठि कुमरी करइं॥ अठ दप्पण धरा अठ भिंगारया अठ वरवीजणा अठ चामरजुआ ॥५॥ चउर दीवय धरा चउर रिक्खाकरा, गाईअ नच्चिअ तिन्नि केलीहरा ॥ करिय जिण मज्जण जणणी सुकुमारिया, अप्पिउं निय निय ठाण सवे गया

॥ ६ ॥ तखणे चलिय सिंहासण सुरवई, घंटनाएण तिहिं सयल सुर मेलई॥पालगारूढ जिण जम्म गिहि आविउ, पंचरूवें करी रिसह मेरु निउ ॥ ७ ॥

॥ वस्तु छंद ॥ इंद तह्य इंद तह्य,वीस भवणिंदा वंतर पहु बतीस हुअ, चंद सूर कपिंद दस वर, चउसठिअ मिलिअ हरि, एहवइ नाह बहुभत्ति निब्भर, अठ सहस चउसठिजुअ, पंचवन्न कलसेहिं ॥ ह्वइ सोहम्मउ जिण एहवइ, तं पभणुं संखेवि ॥८॥

॥ ढाल ॥ ( चाल ) ॥ इसाणिंद जिण उछंग देई, चउ धवल वसह सुरवइ करेई ॥ तसु सिंगिहिं अठ सुगंध धार, जल निवरूइं सुर तियलोय सार ॥ ए ॥ वाजंतइ मद्दल तिवलनाद, वर जल्लरि झुंगल भेरिसाद ॥ गाजंत अंबर देवि देव, जिण मज्जिय नच्चिय करइ सेव ॥ १० ॥ पूजइ वर कुसुमहिं रिसहनाह, बहुभत्तिअ भावे हुइ सनाह॥आरत्तिअ मंगल दीवु खेव, उत्तारइ सुरवइ रंगदेव ॥११॥ वस्तु छंद ॥ रिसहमज्जण रिसहमज्जण करिय सुरराय, उप्पाभिय जयजय करिय, जणणिपासि मिल्हेवि जत्ता, नंदीसर अठ दिवस करिय, देवदेवी नियठाण पत्ता, इणि परिं सयल जिणेसरहिं, करहु न्हवण बहुभत्ति, सु

णिरयणायर पावहर, जिम तुम दियइ वरमुत्ति ॥ १२॥ इति श्रीआदिनाथजन्माभिषेककलशःसमाप्तः ॥

॥ अहीं कुसुमांजलि वाला स्नात्रीया, त्रण खमासमण देइ, जगचिंतामणि चैत्यवंदन करी, नमुथुणं कही, जयवीयराय पर्यंत कहे. पछी एक कलशधारक श्रावकना हाथ धोवरावी, चंदन चरची धूपीने मुखे मुखकोश बांधे. पछी त्रण खमासमण आपी एक नवकार गणी, पंचामृतनो कलश, अंगलूहणे ढांकी फूलमाला पहेरावी हाथमां लेइ, हृदय आगल धरी उभो रहीने मुखथकी श्री पार्श्वनाथ स्वामीनो जन्माभिषेक कलश कहे, ते कलश लखीये छैये.॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ कलशः ॥

॥ श्रीसौराष्ट्र देशमध्ये, श्रीमंगलपुर मंडणो, दुरित विहंडणो, अनाथनाथ, अशरणशरण, त्रिभुवनजनमनरंजणो, त्रेवीशमो तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथ तेह तणो कलश कहिशुं ॥ ढाल ॥ हांरे वाणारसी नयरी वसेय अनुपम, उपम अवदधार ॥ तिहां वावि सरोवर नदीय कूपजल, वनस्पति अढार ॥ तिहां गढ मढ मंदिर दीसे अभिनव, सुंदर पोलि प्राकार ॥ कोसीसां पाखल फिरति खाई, कोटे विसमा

घाट ॥१॥ हांरे जिनमंडप शिखर बहुत प्रासादे, दंड कलश ब्रह्मांड ॥ अतिगिरुआ गुणसागर बहु सोहे दीसे पुहवीप्रचंड ॥ तिहां हाट चउटा वस्तुविवेकी विवहारीया अनेक ॥ लखेसरी कोटी गढतल मंदिर बोले वचन विवेक ॥ २ ॥ हांरे ते नगरी बहुरी व्यवहारी, घर घर मंगल चार ॥ नारीकरकंकण सुंदर झलके, करी सकल शणगार ॥ तिहां राजा अश्वसेन महीमंडल, दानखड्ग झीपंत ॥ अति न्यायवंत दीसे नरनायक, वामादेवीकंत ॥ ३ ॥ हांरे सरगलोक थी चवीय सुरवर, उप्पन्नो कुल जास ॥ तिहां कृष्ण चोथे चैत्रमासे, एहवे अति उल्लास ॥ तिहां राणी पश्चिम रयणी पेखे, सुहणां चउद विशाल ॥ तस कुखे अवतरशे जिनवर, जीवदया प्रतिपाल ॥ ४ ॥

॥ अथ सुपननी ढाल उलालानी ॥

॥ पहेले गयवर दीठो, मुझ मुखकमल पइठो ॥ बीजे वृषभ उदार, दीठो अति सुकुमार ॥५॥ त्रीजे सिंह संपूरो, मही मंगलमांहे ए सूरो ॥ चोथे लखमी ए दीठी, रतन कमले ए बेठी ॥ ६ ॥ उर उतरती ए माल, कुसुमनी झाकझमाल ॥ छठे पूनम चंदो, अमीय झरे सुखकंदो ॥ ७ ॥ तेजे तपंतो ए भाण,

करतो सफल विहाण ॥ ध्वजा उतरती आकाशे, लोडंती अंबरवासे ॥ ८ ॥ कणयकलस शिरे करियो, अमीय महारस भरियो ॥ दशमे पद्मसरोवर, दीठो वामादेवी मनोहर ॥ ए ॥ खीरसमुद्र घरे आयो, मुज मन सयल सुहायो ॥ ठंकी निज निज ठाम, आव्युं आव्युं अमर विमान॥१०॥ पेखी पेखी रयणनी राशि, सग पण चढी आकाशि ॥ जलण जलंतो ए दक्खिण, जागी वामादेवी तक्खिण ॥ ११ ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ ढाल ॥

॥ नवमे मासे आठमे दिवसे, जायो जिनवर रायोजी ॥ घर गूकी तरियां तोरण लहेके, जिणमंदिर उन्नायो जी ॥ १ ॥ तत्क्षण छप्पन्न कुमरी आवे, वधावे जिणंदो जी ॥ डुस्तर कालमांहि ए जिनवर, प्रगट्यो पूनमचंदो जी ॥२॥ उलाली वज्र सुर एम बोले, आसन कंपे इंदो जी ॥ तिहां जोइ अवधिनाणे तेणी वेला, अवतरिया जिणंदो जी ॥ ३ ॥ तेणे स्थानके जनममहोत्सव करवा, आवे चोशठ इंदोजी॥ मेरुशिखर पर रत्नसिंहासन, बेठा पास जिणंदोजी ॥ ४ ॥ तिहां हुउं सनाथ छत्र शिर सोहे, ढाले चामर सुरेंदो जी ॥ पहुता सुर मली प्रभुथानकवर,

लब्धिपात्र जयवंतो जी ॥५॥ नवपल्लव जिन महिमासागर, आगर तणो भंडारो जी ॥ इख्कागवंस तिहुयण मनरंजण, जिनशासन सिणगारो जी ॥६॥ भणे ब्रह्मचारी अम मन, वसियो श्रीअरिहंतो जी॥ नीलवरण तनु महिमासागर, जयउ जयउ भगवंतो जी ॥ ७ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथकलशः संपूर्णः ॥

॥ अर्हीं स्नातस्याप्रतिमस्य० ॥ ए श्लोक, आ चोपडीना पृष्ठ (३००) मां छे ते कहिने, कलशा भिषेक करियें. पछी दूध, दधि, घृत, जल अने शर्करा, ए पंचामृतनो पखाल करी पछी पूजा करियें ॥

॥ मोघरलाल गुलाब मालती, चंपक केतकी वेली ॥ कुंद प्रियंगु नागवरजाति, बोलसिरि शुचिमेलि ॥ मो० ॥ १ ॥ भुमंफल जल मोकले फूले, ते पण शुद्ध अखंडि ॥ जिनपदपंकज जेम हरि पूजे, तिण परे भवि तुमे मंडि ॥ मो० ॥ २ ॥ गीतं ॥ पारग तेरे पदपंकज पर, विविध कुसुम सोहे ॥ डेरनकुं हे आक धतुरे, तुम समो नवि कोहे ॥ पा० ॥ १ ॥ विविध कुसुमजाति सोहे, पांचमी पूजा पूजे ॥ तव भविजन रोग सोग, सवि उपद्रव ध्रुजे ॥ पा० ॥ २ ॥ इति देवपालकविकृत स्नात्रपूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ ॥ लूणउतारणं ॥

॥ लूण उतारो जिनवर अंगे, निर्मल जलधारा मन रंगे ॥ लू० ॥१॥ जिम जिम तडतड लूणय फूटे तिम तिम अशुन्न कर्मबंध त्रूटे ॥ लू० ॥ २ ॥ नयन सलूणां श्रीजिनजीनां, अनुपम रूप दयारस न्नीनां ॥ लू० ॥ ३ ॥ रूप सलूणुं जिनजीनुं दीसे, लाज्युं लूण ते जलमां पेसे ॥ लू० ॥ ४ ॥ त्रण प्रदक्षिण देइ जलधारा, जलण खेपवीये लूण उदारा ॥ लू० ॥ ५ ॥ जे जिन उपर डुमणो प्राणी, ते एम थाजो लूण ज्युं पाणी ॥ लू० ॥ ६ ॥ अगर कृष्णागरु कुंदरु सुगंधे, धूप करीजे विविध प्रबंधे ॥ लू० ॥ ७ ॥ इति लूणउतारणं ॥

॥ अथ आरतिः ॥

॥ विविधरत्न मणिजडित रचावो, थाल विशाल अनोपम ॥ लावो आरति उतारो प्रन्नुजीने आगे, न्नावना न्नावि शिव सुख मागे ॥ आ० ॥१॥ सात चौदने एकवीश न्नेवा, त्रण त्रण वार प्रदक्षिणं देवा ॥ आ० ॥ २ ॥ जिम जिम जलधारा देइ जंपे, तिम तिम दोहग थर हर कंपे ॥आ०॥३॥ बहुन्नव संचित पाप पणासे, द्रव्य पूजाथी न्नाव उलासे ॥ आ० ॥

४ ॥ चौद भुवनमां जिनजीने तोले, कोई नहीं आरति एम बोले ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति आरतिः ॥

॥ अथ मंगल दीपकः ॥

॥ दीवो रे दीवो मंगलिक दीवो, भुवन प्रकाशक जिन चिरं जीवो ॥ दी०॥१॥ चंद सूरज प्रभु तुम मुख केरां, लूंछण करता दे नित्य फेरा ॥ दी० ॥ २ ॥ जिन तुज आगल सुरनी अमरी, मंगलदीप करी दिये भमरी ॥ दी० ॥ ३ ॥ जिम जिम धूपघटी प्रगटावे, तिम तिम भवनां दुरित दझावे ॥दी०॥४॥ नीर अक्षत कुसुमांजलि चंदन, धूप दीप फल नैवेद्य वंदन ॥ दी० ॥ ५ ॥ एणी परे अष्टप्रकारी कीजे, पूजा स्नात्र महोत्सव भणीजे ॥ दी० ॥६॥ इति मंगलदीपकः ॥

॥ अथ आरतिः ॥

॥ आरति कीजे पासकुमरकी, जनम मरण भय हर जिनवरकी ॥आ०॥ नयरी वणारसी जनम कहावे, वामा माता प्रभु हुलरावे ॥ आ० ॥ १ ॥ यौवनवन फल भोगी जणावे, नारी प्रभावती नृप परणावे ॥ काय नीरोग भोग विलसावे, पुरिसादाणी बिरुद धरावे ॥ आ० ॥२॥ ज्ञान विलोकी कमठ हरावे, गहन दहनथी फणी निकसावे ॥ सेवक मुख नवकार

सुणावे, धरणरायपदवी निपजावे ॥ आ० ॥ ३ ॥ क्रोधी कमठ हठ तप लय लावे, जिनदर्शनसें सुरगति पावे ॥ जोग संयोग वियोग बनावे, संयमश्री आतम परणावे ॥ आ० ॥४॥ ध्यान लेहेरीयां काउस्सग्ग जावे, स्वामीकुं वमालय तव ठावे ॥ मेघमाली जलधर वरसावे, जब नासा जर जर जल लावे ॥ आ० ॥ ५ ॥ तव धरणेंद्रासन कंपावे, पद्मावती साथे तिहां आवे ॥ नाथऊरधशिर फणीकुं ढलावे, जइ अपराधी देव रूरावे ॥ आ० ॥६॥ सांइं शरण लहि समकित पावे, फणिपति नाटकविधि विरचावे ॥ प्रजुचरणे नमी गेह सिधावे, जगदीश्वर घनघाती हरावे ॥ आ० ॥ ७ ॥ साकारे केवल डुग पावे, धर्म कही जिननाम खपावे ॥ जूतल विचरी मोक्ष सिधावे, अगुरु लघु गुण प्रजु निपजावे ॥ आ० ॥ ८ ॥ आरतगतकी आरति गावे, श्रोता वक्तारति उतरावे ॥ मनमोहन प्रजु पास कहावे, श्रीशुजवीर ते शीश नमावे ॥ आ० ॥ ए ॥ इति आरतिः ॥

॥ अथ श्रीजिननवअंगपूजन दोहा ॥

॥ जल जरी संपुट पत्रमां, जुगलिक नर पूजंत॥ रुषजचरण अंगुठमो, दायक जवजल अंत ॥१॥ जा

भुवले काउस्सग्ग रह्या, विचर्या देश विदेश ॥ खडा खडा केवल लह्युं, पूजो जानु नरेश ॥ २ ॥ लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान ॥ करकंडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहु मान ॥ ३ ॥ मान गयुं दोय अंशथी, देखी वीरज अनंत ॥ भुजावले भवजल तर्या, पूजो खंध महंत ॥ ४ ॥ सिद्धशिला गुणउज्ज्वली, लोकांते भगवंत ॥ वसीया. तेणे कारण भवि, शिरशिखा पूजंत ॥ ५ ॥ तीर्थंकरपद पुण्यथी, त्रिभुवन जन सेवंत ॥ त्रिभुवनतिलक समा प्रभु, भालतिलक जयवंत ॥ ६ ॥ शोल पहोर प्रभुदेशना, कंठविवर वरतुल ॥ मधुरध्वनि सुर नर सुणे, तेणे गले तिलक अमुल्य ॥ ७ ॥ हृदय कमल उपशम बले, वाल्या रागने रोष ॥ हीम दहे वनखंडने, हृदयतिलक संतोष ॥ ८ ॥ रत्नत्रयी गुणउज्ज्वली, सकल सुगुणविशराम ॥ नाभिकमलनी पूजना, करतां अविचल धाम ॥ ९ ॥ उपदेशक नव तत्त्वना, तेणे नव अंग जिणंद ॥ पूजो बहुविध रागथी, कहे शुभवीर मुणींद ॥१०॥ इति श्रीजिननवअंगपूजन दोहा॥

॥ अथ श्रीदेवचंद्रजीकृत स्नात्रपूजाविधि प्रारंभः ॥

॥ प्रथम निस्सहीपूर्वक श्रीदेरासरमध्ये आवी अंग

शुद्ध करी, नवीन वस्त्र पहेरी, स्वन्नालतिलक करी बाजोठनी स्थापना करी, ते उपर बाजोठ मांडी, स्नात्र पीठ उपर थालनी स्थापना करवी, ते उपर तंडुलनी ढगली करवी ॥ तेनी उपर रूपानाणुं तथा नालीयेर धरीने पछी स्नात्रीयाये पोताने हाथे मौली सूत्र बांधवुं, तथा बीजा कलश प्रमुख स्थानके मौली बंधन करी, कलशाने धूप दइ, डुध, दधि, घृत, जल तथा शर्करा, ए पंचामृतथी कलश न्नरी राखवा. पछी मुखकोश बांधी मूल नायकजी आगल आवी नमस्कार करी, अने धूपधाणुं हाथमां लइ धूप उखेववो ॥ ते समये मुखथी धूपावलिनी गाथा कहेवी, ते आ प्रमाणेः—

॥ असुरिंदसुरिंदाणं, किन्नर गंधव चंद सूराणं ॥ विद्याहरा सुराणं, सञ्जोगा सिद्धाण सिद्धाणं ॥ १ ॥ मुनिय परमछ विछर, गियछ विविह तव सोसियंगाणं ॥ सिद्धिवहू निप्परठं, वियाणं जोगीसराणं च ॥२॥ जंपूयाय न्नगवउ, तिछयरा राग रोस तम रहिया ॥ विणय पणएण तेसिं, समुद्धूउ मे इमे धूउ ॥३॥ तिछंकर पडिमाणं, कंचण मणिरयण विद्रुममयाणं ॥ तिहुयण विन्नूसगाणं, सासय सुरनर कयाणं च ॥

॥ ४ ॥ सिद्धाण सूरि पाढग, साहूणं झाण जोग नि रयाणं ॥ सुयदेवय माईणं, समुद्धुउं मे इमे धूउं ॥५॥

॥ ए गाथाउं कह्या पछी प्रथम अक्षतने धोइ तेउ ने केशर तथा चंदन लगाडवुं, तथा पुष्पोने पण ज लथी शुद्ध करी राखवां, तदनंतर ते अक्षत तथा फु लनी कुसुमांजलि हाथमां लइ, उन्ना थइने " नमो अरिहंताणं, नमोऽर्हत्सिद्ध०" ॥ एम पाठ कहेवो. अने पछी बे श्लोक पठन करवा, ते आ प्रमाणेः—

॥ श्रीमत्पुण्यं पवित्रं कृतविपुलफलं मंगलं लक्ष्म लक्ष्म्याः, क्षुद्रारिष्टोपसर्गग्रहगतिविकृतिस्वप्नमुत्पात घाति ॥ संकेतं कौतुकानां सकलसुखमुखं पर्व सर्वो त्सवानां, स्नात्रं पात्रं गुणानां गुरुगरिमगुरोर्वंचिता यैर्न दृष्टम् ॥ १ ॥ अशेषभुवनांतराश्रितसमाजखेद क्षमो, नचापि रमणीयतामतिशयीत तस्यापरः ॥ प्र देश इहमानतो निखिललोकसाधारणः, सुमेरुरिति तापिनः स्नपनपीठभावं गतः ॥ २ ॥

॥ एम कह्या पछी स्नात्र पीठ सन्मुख कुसुमांजलि अर्पण करवी, तदनंतर स्नापनपीठ पखाली लूंछीनें कुंकुमनो स्वस्तिक करवो, धूप उखेववो, अने सर्व स्नात्रीयाउंना हाथने धूपावली आपवी, पछी कर्पूर

लगाम्मवो, अने एक नवकार कहीने स्नात्रपीठ उपर प्रतिमाजीनी स्थापना करवी, ते प्रतिमा प्रायः पंच तीर्थिक, अर्थपरकरसंयुक्त स्थापवी, तेना मुख आ गल अक्षतोनी ढगली करवी, अने तेनी उपर पंचा मृतनो एक कलश मुकवो, पठी हाथमां कुसुमांज लि इने "मुक्तालंकारविकार०" ए आर्या नणी कुसु मांजलि अर्पण करीने, प्रतिमाजीनां निर्माल्य उता री प्रक्षालन करवुं, पठी अंगलूहणाथी प्रमार्जिने धूं प उखेववो, अने केशर, चंदन, कर्पूर तथा कस्तूरी घसी ते पवित्रनाजनमां नरीने ते नाजन प्रतिमाजी आगल धरवुं. वली कुसुमांजलि हाथमां लइ उना थइ "इठं णमो अरिहंताणं० ॥ नमोऽर्हत्सिद्ध०॥" कहीने स्नात्र पूजानी पहेली पांखमी कहेवी,एम अनुक्रमे पांच पांखमी कही कुसुमांजलि पूर्ण करीने हाथमां चामर लइने तेने नगवंतनी उपर ढोलवो ॥ वस्तु ॥ "सयल जिनवर"थी मांमीने यावत् "वधाई वधाई थइ अतीव" सुधीनो पाठ कहेवो, ते पूर्ण थया पठी चैत्यवंदन करवुं.प ठी शक्रस्तव कही जयवीयराय सुधी नणवुं. पठी हाथ धोई धूप कर्पूरादिक हाथने लगाम्मवां, त्यार केमे जे पूर्वे कलशोने धोइ धूप आपी कंठे मौलीसूत्र वांधी उपर स्व

स्तिक करी तेउमां पंचामृत भरी, अक्षतोना ढगलाउ उपर धारण करी तेनी उपर अंगलूहणां ढांकी धूप उखेववी, तेउमांना मात्र वेज कलशोने आसपास ज लधारा देइने राख्या होय पछी स्नात्रीयाना हाथमां स्वस्तिको करी सर्वे जणोये श्रेणिबद्ध उभा रहेवुं, अने प्रत्येक स्नात्रीयाये खमासमण देइ, पंचांग नमस्कार करवो, पछी प्रत्येक स्नात्रीयाये पोताना बे हाथमां कलशो लेवा, ते कलशधारक स्नात्रीयाये पोताना बन्ने हाथनेविषे रहेला कलशने उत्तरासंग वस्त्रवडे ढांकी राखवा, अने पोते उभा छतां मुखथी "श्रीतीर्थपतिनो कलश मज्जन०" इहांथी मांडीने संपूर्ण पूजा भणवी, त्यार पछी प्रतिमाजी उपर कलशो ढोली, पखाल करी अंगलूहणाथी मज्जन करी, केशर चंदनथी अर्चन करीने फूल चढाववां.पछी थालमां स्वस्तिक करी बिंबनी स्थापना करवी ॥ अने धूप करवो; ते समये आ प्रमाणे पाठ भणवोः—

॥ अथ कलश ढालवा समयनुं स्तवन ॥

॥ इंद्र कलशभर ढाले श्रीजिन पर॥ इंद्र कलश०॥ हाथो हाथ अमरगण आनत, खीर विमल जलधारे ॥ श्रीजिनपर० ॥ १ ॥ सुरवनिता मलि मंगल गा

वे, ज्ञावत ज्ञाव महारे ॥ श्रीजिनपर० ॥ २ ॥ किन्नर अरु गंधर्व महोरग, निरत नीर नित्य सारे ॥ श्रीजिनपर० ॥ ३ ॥ देव डुंडुन्निधुनि गर्जत अति, शिर पर सुजस विथारे ॥ श्रीजिनपर० ॥ ४ ॥ परमानंद जिनराज जगतूपद, जगजीवन हितकारे ॥ श्रीजिनपर० ॥ ५ ॥ इति कलश ढालवा समयनुं स्तवन ॥

॥ पढी रकेबीमां लूणपाणी लइने आरतिनी परे करवुं अने ते वखते मुखथकी गाथाउं कहेवी, ते आवी रीतेः–

॥ अथ लूण उतारण गाथा ॥

॥ उवहि पडिन्नग्ग पसरं, पयाहिणं मुणिवइ करेऊणं ॥ पडइ सलूण त्तणला.जियं च लूणं हु अवहंमी ॥१॥ दोहा॥ पिरकेविणु मुह जिणवरह, दीहर नयण सलूण ॥ न्हावइ गुरु मह्वर ज्नरिय, जलणी पइस्सइ लूण ॥ २ ॥ लूणउतारिह जिणवरह, तिन्नि पयाहिण देउ ॥ तम्यड सद्द करंति यह, विज्ञा विज्ञ जलेण ॥३॥ गाथा ॥ जं जेणविज्ञ विज्ञाइ, जलेण तं तह निहढह ससदं ॥ जिणरूप मह्वरेणुव, फुट्टइ लूण तडयडस्स ॥४॥ ए गाथाउं कहीने लूणने अग्निशरण

करवुं. पछी वली प्रथमनी पेठे लूण पाणी लइने मुखथी आवी रीते गाथाउं कहेवीः—

॥ दोहा ॥ सव्वं मुणिवइ जलविजड, तं तह भमलइ पास ॥ अहव कयंतसुनिम्मलु, निग्गुण बुद्धि पयास ॥१॥ जल आणेविणु जलणिह पासह, भर विकयंजवि भाविहिं पासह ॥ तिन्नि पयाहिण दिंतिय पासह, जिम जिउ बुड्डइ भव डुह पासह ॥२॥ जल निम्मल कर कमलहि लेविणु, सुरवइ भावहि मुणिवइ सेविणु ॥ पभणइ जिणवर तुह पइ सरणं, भय तुटइ लप्भइ सिद्धि गमणं ॥३॥ ए गाथाउं कही लूण पाणी उतारीने जल शरण करवुं, त्यार पछी माला लइ उभा रहिने आप्रमाणे गाथाउं कहेवीः—

॥ अथ पुष्पमाल पूजा गाथा ॥

॥ उन्नय पुज्जाय भत्तस्स, नियठाणे संठियं कुणं तस्स ॥ जिणपासे भमिय जिणस्स, निय ठाणे संठियं तस्स ( पांठांतरे ) पिछतुह हुय वहे पडणं ॥ १ ॥ सव्वो जिणप्पभावो, सरिसा सरिसेसु जेण रच्चंति ॥ सवन्नूण मपासे, जम्मस्स भमणं ण संकमणं ॥२॥ अच्चंत डुक्करं विहु, हुअवह निवडेण जडेण कयं ॥ आणा सवन्नूणं, न कया सुकयछ मूलमणिं ॥ ३ ॥ ए

पाठ जणीने माला चढाववी, पछी हाथमां बुटां फूलो लेवां, ते वखत गाथाउ, कहेवी, ते आ प्रमाणेः—

॥ अथ बूटां फूलपूजा गाथा ॥

॥ उसरणो जिणपुरउ, परिमल मिलिया उक्किविह संगीया ॥ मुत्तामरेहिवो कुणउ, मरमल मिलिया उक्किविहसं ॥ १ ॥ उवणेउ मंगलं वो, जिणाण मुहलालि जाव संचलिया ॥ तित्थ पवत्तण समए, तिय सेवी मुक्का कुसुम वुठी ॥ २ ॥ ए पाठ कहीने प्रजुनी आगल फूलो उछालवां. हवे आजरण तथा वस्त्रो लइने उजा रहतां गाथाउ कहेवी, ते आ प्रमाणेः—

॥ अथ वस्त्राजरण पूजा ॥

॥ श्लोकः ॥ शक्रोयथा जिनपतेः सुरशैलचूला, सिंहासनोपरि मितस्नपनाऽवसने ॥ दध्यक्षतैःकुसुम चंदनगंधधूपैः, कृत्वार्चनं तु विदधाति सुवस्त्रपूजां, ॥ १ ॥ तद्वत् श्रावकवर्गएष विधिनालंकारवस्त्रादिकां, पूजां तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्यातिजक्त्याहृतः ॥ नीरागस्य निरंजनस्य विजितारातेस्त्रिलोकीपतेः, स्व स्यान्यस्य जनस्य निर्वृत्तिकृते क्लेशक्षयाकांक्षया ॥ ॥ २ ॥ एम कही आजरण तथा वस्त्र पूजा करवी॥

॥ पछी ज्ञान पूजा करे, तेनी गाथाउ ॥

॥ नमंति सामिति महीवनाहं, देवाय पूयं सु जहेव पुव्वं ॥ जत्तीय चित्तं मण दाम एहिं, मंदार पुप्फेह सवेह नाहं ॥१॥ तहेव सद्धामण मुत्त एही, सुगंध पुप्फेह वरंस एहिं ॥ पूयंत वंदंत नमंत नाणं, नाणस्स ला जाय जवरकयाय ॥२॥ ए गाथाउ कहीने पुष्पोनी माला चढाववी, तथा रौप्यमुद्रा, सुवर्णमुद्रा, मणि रत्न, अने वस्त्र एउंये करी स्वशक्ति अनुसार ज्ञाननी पूजा करवी.

॥ पछी धूप करती वखते आ गाथा कहेवी ॥

॥ मीनकुरंगमुदारमसारं, सारसुगंधनिशाकरतारं ॥ तारमिलन्मलयोद्भविकारं, लोकगुरोर्दह धूपमुदारं ॥ २ ॥ एम कहीने धूप उखेववो. पछी मंगल दीपक करीने आ गाथाउ कहेवीः—

॥ अथ मंगलदीपक पूजा ॥

॥ कोसंबी संठियस्सवि, पया हिणं कुणइ मनुलियपईवो ॥ जिणसोम दंसणोदिण, यरूवतुह नाह मंगल पईवो ॥१॥ जामीजंतो सुरसुंदरीहिं, तुह नाह मंगल पईवो ॥ कणयायलस्स निज्जिय, जाणुव पयाहिणं दिंतो ॥ २ ॥ मरगय सामल थालधरे विणु, कोमल सरलिहि करिहिं करेविणु, जे उत्तारइ मंग

ल पईवो, सो नर होइ तिलोय पईवो ॥ ३ ॥ ए गा
था कहीने मंगलप्रदीप करवो, पछी रकेबीमां क
पूर धरी, आरतिमां वत्ती सलगावीने मुखथकी आ
गाथाउं कहेवीः—

॥ अथ आरति गाथा ॥

॥ जं मरगय मणि गडिय, विसाल थाल माणिक्क
मंडिय पईवो ॥ एहवण यरकुरु खित्तं, नमउ जिण
आरत्तियं तुम्हं ॥ १ ॥ आरत्तिअं नियछह, जिणस्स
धूव किसणागरुछायं ॥ पासेसु नमउ निज्जिय, संगमय
विन्निन्न दिछिव॥२॥पसणेयवो नवंतर,समज्जियंकम्मरे
णु संघायं॥आरत्तिय मंगलग्गा,उछलंति सलिलधारा॥
३॥ एवी रीते आरति करवी॥इतिसंक्षेपआरतिविधिः॥

॥ पछी उत्तरासंग करी, चैत्यवंदन करवुं, अने
अष्ट प्रकारे पूजा करवी. कदाचित् अष्टप्रकारे पूजा
न कराय तो शेष फल फूलने नैवेद्य जे होय, ते ए
मज चढावी देवां. पछी गुणगीत करवां, जय जय श
ब्द उच्चारवा, स्वामीवात्सल्य करवुं, तथा यथाश
क्ति दान देवुं ॥ इति श्रीस्नात्रपूजाविधिः समाप्तः ॥

॥ आरति ॥ दीपक ॥ लूणजलविधिः प्रारभ्यते ॥

॥ प्रभुथी अंतरपट करी, प्रभु सन्मुख बेशी आर

ति करनारने नव अंगे कुकुमनां तिलक करवां. पढी एक थालमां स्वस्तिक करी, तेमां आरति, मंगल दीपक, जमणी बाजु राखी, त्यां आरतिमां घृत थोडुं जरवुं. अने मंगलदीपकमां घृत पूर्ण जरवुं. पढी केशर, फूल, तंडुले करी, तेनी पूजा करवी. उपर कुंकुमना ढांटा नांखी मंगल दीपक प्रगटाववो अने कर्पूर सलगाववो तेनो मंत्र कहेढे॥ ॐ अर्हते पंचज्ञानमहाज्योतिर्मयाय, ध्वांतघातने द्योतनाय, प्रतिमायै दीपो जूयात्सर्वदार्हते ॥ १ ॥ एम जणी, मंगलदीपक प्रगटावीने पढी ते मंगलदीपकथी आरति प्रगटावी, पढी दीवा नीचे मूकीने आरति उतारवी. तेवार पढी दीपक उतारे. पढी लूणनी कांकरि लेइ "लूण उतारो जिनवर अंगे"इत्यादिक पाठ कही लूणनी गाथाजणवी पढी "वृहढांति" कहेवी, ते न आवडे तो त्रण नवकार गणी, आ प्रमाणे श्लोक कहेवो ते ॥ श्लोक ॥ आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत्कृतं ॥ तत्सर्वं क्षमया देव, क्षम त्वं परमेश्वर ! ॥ १ ॥ एम कही चैत्यवंदन करवुं ॥ इति आरति दीपक लूण जलविधिः ॥

॥ अथ सत्तरजेदीपूजाध्यापनविधिः ॥

॥ प्रथम स्नात्र करे, पढी अष्टप्रकारी पूजा करे.

उज्ज्वल रूपा प्रमुखनी रकेबीमां कुंकुम तथा केशर विगेरेनो स्वस्तिक करे. पछी सुंदर कलश, केशर प्रमुख मिश्रित शुद्ध जले भरी, स्थापनानो रूपैयो कलशमां नाखे. कलश रकेबीमां राखी, पछी स्नात्री या मुखकोश उत्तरासंगथी करी त्रण नवकार गणी नमस्कार करे; हाथे धूप देइ रकेबी हाथमां धारण करे, मन स्थिर राखे, छीक वर्जन करे. स्नात्रीया प्रभुजी सन्मुख उभा रहे. पंचामृतनो कलश अडग राखे, मुखथकी पहेली पूजानो पाठ भणे, ते भणीनें पछी प्रभुने पंचामृतनुं न्हवण करे तथा प्रभुनी डाबी बाजुने अंगुठे जलधारा आपे.

२ पछी सुंदर सूक्ष्म अंगलूहणे जिनबिंब प्रमार्जी केशर, चंदन, मृगमद, अगर, कर्पूरादिकथी कचोली भरी हाथमां लइ उभो रहीने मुखथकी बीजी पूजा नो पाठ भणे. ते भणीने विलेपन करी नव अंगे पूजन करे.

३ पछी अत्यंत सुकोमल सुगंधित अमुलक वस्त्र युग्म उपर केशरनो स्वस्तिक करी, प्रभुजी आगल उभो रही, मुखथकी त्रीजी पूजानो पाठ भणे. ते भणीने प्रभुजी आगल वस्त्र युग्म चढावे.

रमी पूजानो पाठ भणे. ते भणीने फूलघर चढावे फूल नी चंदनमाला, फूलना चंद्रुवा, पोठीया प्रमुख बांधे.

१२ पछी पंचवर्णा सुगंधित पुष्प लेइ, फूलनो मेघ वरसावतो बारमो पूजानो पाठ भणे. ते भणीने पुष्प उछाले.

१३ पछी अखंड तंडुलने रंगी, पंचवर्णा करी एक थालमां दर्पण, भद्रासन, नंदावर्त्त शरावसंपुट, पूर्णकुंभ, मत्स्ययुग्म, श्रीवत्स, वर्द्धमान अने स्वस्तिक, ए अष्ट मांगलिक रची ते थाल हाथमां लेइ प्रभुजीनी आगल उभो रही तेरमी पूजानो पाठ भणे, ते भणीने रूपानाणे संयुक्त ते थाल प्रभुजी आगल धरे.

१४ पछी कृष्णागरु, कुंदरुक, सेलारस, सुगंधवटी, घनसार, चंदन, कस्तूरी, अंबर इत्यादिक वस्तुनुं धूपधाणुं रकेबीमां धरी मुखथकी चौदमी पूजानो पाठ भणे, ते भणीने धूपधाणुं उखेवे.

१५ पछी सुंदर स्वरूपवान एवां कुमार कुमारिकाउं मधुरस्वरे प्रभुजीनी आगल उभां थकां गीत गान करे. अने मुखथकी पंदरमी पूजानो पाठ भणे ते भणीने पंदरमी पूजा करे.

१६ पछी पंचेंद्रिये परिपूर्ण एवा सुंदर कुमार अ

ने कुमारिकाउं अथवा समान अवस्थावाली सधवा स्त्रियो अथवा एकली कुमारिकाउं सुंदर वस्त्र आभूषण पहेरी, प्रभुनी सन्मुख उभी रही, शंका कांक्षा रहित नाटक करे. कदापि स्त्रियोनो योग न बने तो, समान अवस्था वाला पुरुष मली, नाटक करता थका मुखथकी शोलमी पूजानो पाठ भणे. ते भणीने, शोलमी पूजा करे.

१७ पछी मद्दल, कंसाल, तबल, ताल, झांज, वीणा, सतार, तूरी, भेरी, फेरी, डुंडुभि, शरणाइ, चंग, नफेरी प्रमुख सर्व जातिनां वाजित्र वजावता थका मुखथकी सत्तरमी पूजानो पाठ भणे, ते भणीने, सत्तरमी पूजा करे.

पछी आरति करे तेनो विधि कहे छे. पूजा भणी रह्या पछी सर्व वस्त्रप्रमुख पहेरी, उत्तरासंग करे, पछी प्रभुथी अंतर्पट करी पोताने ललाटे कुंकुमनुं तिलक करे. पछी अंतर्पट दूर करी, रकेबीमां स्वस्तिक करी मांहे रूपानाणुं, तंडुल, सोपारी धरे, पछी आरति, दीपक साथे संयोजीने प्रभुनी सन्मुख दक्षिणावर्त्तथी सर्व वाजित्र वाजतां आरति करे, तेनो पाठ लखीये छैये ॥ इति सत्तरभेदी पूजा विधिः ॥

॥ अथ शांतिजिन आरतिः ॥

॥ जय जय आरति शांति तुमारी, चरणकमल की मे जाउं बलिहारी ॥ जय० ॥ १ ॥ विश्वसेन अ चिराजिके नंदा, शांतिनाथमुख पूनमचंदा ॥ जय० ॥ ॥२॥ चालीश धनुष सोवनमय काया,मृग लंछन प्रभु चरण सुहाया ॥ जय० ॥३॥ चक्रवर्त्ति प्रभु पांचमा सो हे, सोलमा जिनवर सुर नर मोहे ॥ जय० ॥४॥ मंग ल आरति भोरहिं कीजे, जन्म जन्मनो लाहो लीजे ॥ जय० ॥ ५ ॥ कर जोडी सेवक गुण गावे, सो नर नारी अमरपद पावे ॥ जय० ॥ ६ ॥ इति आरतिः ॥

॥ अथ विश स्थानकपूजाऽध्यापन विधिः ॥

॥ विश स्थानकनुं तप मांडतां अथवा एक एक उली संपूर्ण थाय तेवारे, अथवा तप न कर्युं होय अने स्वाभाविक भाव भक्तिये पूजा भणाववी होय, तो तेनो विधि आ प्रमाणे छेः-

॥ दिनशुद्धियें शुभ उत्सवे आसन उपर एक पं क्तिये विश प्रतिमा अलंकारसहित स्थापिये. तेनी आगल वली उपरा उपर त्रण बाजोठ मांडिने, तेनी उपर पंचतीर्थी प्रतिमा स्थापन करीने, प्रथम लघु स्नात्र भणाविये. पछी तीर्थकूपादिकनां पवित्र जल

आरूंबरे सहित प्रथमथीज लावी मूकेलां होय. ते जलने सुवासित करी, ते जलमांथी थोडे थोडे ज ले करी विश कलश जरीने, पवित्र थयेला विश पुरुषना हाथमां आपी तेमने उजा राखवा.

॥ वली ते विश अजिषेक करवाने अर्थे एक पुरुष फूलनी माला एक पात्रमां राखे; एक पुरुष चंदन केशरनो प्यालो राखे; एक पुरुष दीवामां पुरवाने अर्थे घृतनुं पात्र राखे; एमज फल, अक्षत, नैवेद्य, धूप प्रमुख जे सामग्री मेलवेली होय, ते सर्वे चीज एक एक पुरुष पोत पोताना स्वाधीनमां राखे.

॥ तेवार पछी एक पंक्तिये राखेली विश प्रतिमा मांहेथी एक प्रतिमा लेइने, स्नात्र जणावेली पंचतीर्थी प्रतिमा पासे स्थापन करी सर्वेजनो विशस्थानकनी पूजा मांहेलुं प्रथम स्तवन, रुडी रीते जणीने प्रतिमाजी उपर विशे कलश नामे. तेवार पछी एक जण प्रतिमाजीने अंगलूहणुं करे; एक पुरुष प्रतिमानुं पूजन करे; एक पुरुष, फूलनी माला चढावे; एक पुरुष प्रतिमा आगल बार स्वस्तिक करीने तेनी उपर फूल मूके; ए जेम प्रथम श्रीअरिहंत पदना बार गुण छे, तो त्यां बार

स्वस्तिक करवा कह्या, तेमज जे जे पदना जेटला जेटला गुण होय, ते ते पदनी पूजामां तेटला तेटला स्वस्तिक करवा. एवी रीते नैवेद्यादिक सर्व वस्तु च ढावीने, जिन प्रतिमाने रूपानाणे पूजन करी फरी प्रथम स्थानके पधरावीने, पछी पूर्वोक्त विश प्रति मानी पंक्तिमांथी बीजी प्रतिमा लइने पंच तीर्थिक नी प्रतिमा पासे स्थापन करे. तेवार पछी फरी विश कलश थोके थोडे जले भरीने बीजुं स्तवन कही, प्रथमनी परे बीजो सर्व विधि करे. एम विशे पदने विषे विधि करवो. विधि पूर्ण थया पछी छेवट आर ति, मंगल दीवो करे. ए उत्कृष्ट विधि कह्यो. अंत मां "मिछामि डुक्कड" देवुं. पछी गुरुपूजा, प्रभावना, स्वामिवात्सल्य करवां.

॥ अने घणी शक्ति न होय तो एक पुरुष एक कलश लइ एक एक स्तवन कही पंचतीर्थिनीज पूजा करे. एम विश वखत विश स्तवन कहीने पूजे. एम एकज पंचतीर्थिक आगल यथाशक्ति क्रिया करे तोपण चाले. कारण के द्रव्यथकी अशक्तने, जो भा वनुं बाहुल्य छे, तो तेने तेटलुं पण अत्यंत फल दायक थाय छे. इति विशस्थानकसंक्षेपविधिः ॥

॥ अथ नवाणुंप्रकारीपूजाध्यापन विधिः ॥

॥ जघन्यथी तो, कलश ग्रहण करनारा नव श्रावक अने उत्कृष्ट पणे नवाणुं श्रावक जाणवा.

॥ तथा जघन्यथी नव जातिनां प्रत्येक अगीयार फल लेइने, प्रत्येक पूजा दीठ नव नव फल मूकवां. एम अगीयारने नव गुणा करीये तेवारे नवाणुं फल थाय; एमज सुखडी पण जघन्यथी नव जातिनी अगीयार अगीयार नंग लावीने, प्रत्येक पूजा दीठ नव नव नंग मूकवां. तथा नवाणुं दीपक, वंशमाले धरिये. तंडुलना साथीया नवाणुं करीये ॥ इति नवाणुं प्रकारी पूजा विधिः ॥

॥ अथ चोशठप्रकारीपूजाध्यापन विधिः ॥

॥ विशाल जिनभुवनने विषे शुभ मुहूर्त्ते जलयात्रा वरघोडो रचीने तीर्थोदक मेलववां. अष्ट कर्मनुं मांडलुं, अक्षत रंगी आठ पांखडीनुं उज्ज्वल तंडुले भरिये. रेखा पंचवर्णी करिये. पछी रक्त गुलाले सिद्धनां आठ गुणने स्थानके मंत्राक्षर लखीये. ते मंत्रनां पद कहे छे.

१ ॐ ह्रीँ अनंतज्ञानात्मकेभ्यो नमः ॥

२ ॐ ह्रीँ अनंतदर्शनात्मकेभ्यो नमः ॥

३ ॐ ह्रीँ अनंतसुखात्मकेभ्यो नमः ॥

४ ॐ ह्रीं अनंतचरणात्मकेभ्यो नमः ॥

पाठांतरे अनंतक्षायिकेभ्यो नमः ॥

५ ॐ ह्रीं अक्षयस्थितये नमः ॥

६ ॐ ह्रीं अमूर्त्तये नमः ॥

७ ॐ ह्रीं अगुरुलघवे नमः ॥

८ ॐ ह्रीं अनंतवीर्येभ्यो नमः ॥

ए रीते मंत्रपद लखिये ॥ मध्यमां वृक्ष तथा ज्ञान पधराविये. वृक्षने मूले कुहाडो मूकिये. अखंडदीपक राखीये. चोशठ मोदकनो एक थाल भरीने मूकीये. श्रीमहावीर देवनी प्रतिमाने अभिषेक करिये. चोसठ कुमार अने चोसठकुमारिकाउ उभां रहे, अने जघन्यपक्षे आठ कुमार अने कुमारिकाउ उभां रहे. ए रीते अष्टप्रकारी पूजा आठ दिवस पर्यंत नित्य भणावीये.तेमां प्रथम दिवसथी मांडीने आठमा दिवसपर्यंत जे जे वस्तु राखवी जोइये,तेनी नोंध नीचे प्रमाणेः--

॥ प्रथम दिवसे ज्ञानावरणीयकर्मनिवारणार्थ वस्तु ॥

॥ १ कूवानुं शुद्ध जल, २ केशर, ३ केतकी, जाइनां फूल, ४ अगरबत्ती धूप, ५ पंच दीवेटनो दीवो, ६ उज्ज्वल तंडुल, ७ उत्तम नैवेद्य, ८ उत्तम फल ॥

॥द्वितीय दिवसे दर्शनावरणीयकर्मनिवारणार्थ वस्तु॥

॥ १ नदीनां जल, २ चंदनकेशर, ३ मरुआ ड मरानां फूल, ४ अष्टांग धूप, ५ नव दीवेटनो दी वो तथा बीजो बे दीवेटनो दीवो, ६ कमोदना चोखा, ७ नैवेद्य, ८ फल ॥

॥ तृतीय दिवसे वेदनीयकर्मनिवारणार्थ वस्तु ॥

॥ १ कस्तूरी, बरासवालुं जल, २ केशर, बरा स, ३ फूलपगर नरिये, ४ पंचांग धूप, ५ बे दी वेटनो दीपक, ६ कमोदशालि अखंड, ७ नैवे द्य, ८ फल ॥

॥ चतुर्थ दिवसे मोहनीयकर्मनिवारणार्थ वस्तु ॥

॥ १ द्राखनां पाणी, २ बावना चंदन, ३ जाय, केवमो अने जासुलनां फूल, ४ दशांग धूप, ५ बे दीवेटनो दीपक, ६ व्रीहि अखंड, ७ नैवेद्य, ८ फल॥

॥ पंचम दिवसे आयुःकर्मनिवारणार्थ वस्तु ॥

॥ १ साकरनुं पाणी, २ केशर, ३ जाय अने चंबेली नां फूल, ४ कुंदरु दशांग धूप, ५ चार दीवेटनो दी पक, ६ अखंड चोखा, ७ नैवेद्य, ८ फल ॥

॥ षष्ठ दिवसे नामकर्मनिवारणार्थ वस्तु ॥

॥ १ दूध, अभिषेक, २ सुवर्ण साथे घशेलुं केशर, ३

पंचवर्णि फूलें जाली भरिये, ४ पंचांग धूप, ५ बे दीवेटना दीपक एवा एकशो नें त्रण दीपक करी वंशमाले धरीये, ६ अक्षत पंचवर्णा चोखा, ७ नैवेद्य, ८ फल ॥

॥ सप्तम दिवसे गोत्रकर्मनिवारणार्थ वस्तु ॥

॥ १ केशरनुं पाणी, २ चंदन केशर, ३ विविध फूल ४ अगरबत्ती धूप, ५ बे दीवेटनो दीपक, ६ गोधूम अक्षत, ७ नैवेद्य, ८ फल ॥

॥ अष्टम दिवसे अंतरायकर्मनिवारणार्थ वस्तु ॥

॥ १ पंचामृत जल, २ केशर, ३ मालती जायनां फूल ४ अष्टांग धूप, ५ पांच दीवेटनो दीवो, एम ज वली अहीं एकशोने अठावन दीपकनी श्रेणि, वंश माले धरीये, ६ तंडुलना नंदावर्त्तक, रकेबीमां करिये ७ नैवेद्य, ८ फल ॥

॥ एम आठ दिवस, नैवेद्यने फल नव नवां धरिये. ए रीते ए आठ दिवसमां चोशठ पूजा पूर्ण थाय, तथा नित्य संघनी वात्सल्यता, अने गुरुभक्ति करवी. ज्ञानोपकरणादि करवां, रात्रिजागरण करवां, प्रभावना करवी, याचकने दान आपवुं, इत्यादिक विधि पूर्वें वृक्षने महोत्सव सहित देरासरमां पधराववो॥

॥ अथ पंचकल्याणकपूजाध्यापन विधिः ॥

॥ प्रत्येक पूजा दीठ आठ पुंज एकेकी वस्तुना करवा, आठ स्नात्रीया उन्ना राखवा; आठ कलश पंचामृतना न्नरवा ॥ इति पंचकल्याणकपूजा विधिः ॥

॥ अथ द्वादशव्रतपूजाध्यापन विधिः ॥

॥विशाल जिनन्नुवनमां अथवा पीठिकानी रचना करीने त्यां महावीर प्रन्नुनी प्रतिमा स्थापन करवी. वाम दिशियें कल्पवृक्ष स्थापन करवो. पढी ते प्रतिमा आगल प्रत्येक पूजा दीठ जे जे वस्तु प्रन्नुने चढे ढे, ते चढाववी. बाकी दर्पण, अष्ट मंगल, अने ध्वजाउं, सर्व मूकवां, जघन्यथी तेर पुरुष, तेर इंद्राणी. शेषविधि अष्टप्रकारी पूजानी रीते जाणी लेवो अने एकशोने चोविश अतिचार टालवा निमित्ते एकशोने चोविश दीपक करवा॥इति द्वादशव्रतपूजा विधिः॥ए पूजानी सर्वगाथा ( १२४ ) श्लोक संख्या ( २०३ ) ढे.

॥ ए पूजामां श्रावकना शुद्ध सम्यक्त्वादि बारे व्रतनो विधि, ते समकितना पांच, बारव्रत तथा कर्मादानना पंचोतेर, संलेषणाना पांच, ज्ञानना आठ, दर्शनना आठ, चारित्रना आठ, वीर्यना त्रण, अने तपना बार, ए सर्व मली एकशो चोविश अतिचार सहित कह्यो ढे॥

॥ अथ महोत्सवसहित अष्टप्रकारी पूजा विधि ॥

॥ आठ वाटकी केशरनी, आठ थाल नैवेद्यना, आठ थाल अक्षतना, आठ रकेबी फूलनी, आठ कलश रूपाना पंचामृत सहित, आठ दीवी कोडियां सहित, आठ धूपधाणां, आठ थाल फलना ॥

जघन्यथी अक्षत, शालि, व्रीहि, गहु, जुगंधरी, मग, अरूद, मुक्ताफल, चोला तथा फल जे मले ते सर्व जातिनां लेइये. अने उंखर न करती होय एवी गायनुं घृत दीपक सारुं लाविये तथा सरस धूप भेलो करी राखिये, अने सुखडी पण सर्व जातिनी लावीने जूदा जूदा भाजनमां राखीये, ए सर्व वस्तु देरासरथकी एकशो अथवा दोढशो हाथ दूर घर होय त्यां मूकीये. ते सर्व चीजनी पासे एक चतुर पुरुषने बेसाडीये. शक्तिप्रमाणे आगले दिवसे जलयात्रा करिये, विधिसहित जल लाविये. ते पण तेहिज घरमां राखिये. पछी इंद्राणी आठ कल्पिये. अने आठ स्त्रात्रिया न्हवराविये. पछी पंच शब्द वाजित्र वाजते पूर्वोक्त वस्तुउ लइ आवीने पूजा भणाविये. पूर्वे स्नात्र भणाव्युं न होय तो ते वखत भणावीये. पछी वाजते गाजते आठ स्त्रियो, जे घरमां

पाणीना कलश मूक्या होय, त्यां लेवा जाय. अने त्यां जे पुरुष वेसाड्यो ठे, ते तेने आपे. ते लेइ आवीने उनी रहे. पठी तेमनी पासेथी श्रावक, कलशो लेइने उना उना पूजा नणावे ॥

॥ अथ अष्टप्रकारीपूजाध्यापन विधिः ॥

१ प्रथम स्नात्र करी, उज्ज्वल धोयेलां वस्त्र पहेरी, एक पटे वस्त्रनुं उत्तरासंग करी, मुखकोश बांधी, केशर चंदन बरास घसी अने जूदा केशरथी पोताने ललाटे तिलक करिये. ते करी निर्माल्य उतारी मोरपीठीथी अथवा निर्मल सुकोमल वस्त्रथी जयणाये करी प्रणामपूर्वक जिनबिंब प्रमार्जी, बन्ने हाथने धूप आपी, पवित्र रकेबीमां केशरनो स्वस्तिक करी निर्मल जले नरेलो कलश रकेबीमां राखी, रकेबी हाथमां लेइ प्रनु आगल उना रहीये. पठी पहेली पूजानो पाठ नणी, ठेल्लो मंत्र कही, जलपूजा करे.

२ पठी पखाल करी, अंगलुहणाथी लुहीने केशरनी कचोली रकेबीमां राखी, रकेबी हाथमां लइ बीजी पूजानो पाठ नणी मंत्र कही, चंदनपूजा करे.

३ एमज त्रीजी पूजामां फूल चढावे.

४ पठी चोथी पूजामां धूपधाणुं रकेबीमां राखी

हाथमां लेइ पूजानो पाठ कही, ठेह्लो मंत्र भणी प्र भुने डावी बाजु धूप उखेवे.

५पठी पांचमी पूजामां मौलीसूत्र प्रमुखनी वाट करी, निर्मल सुगंधित घृतथी दीपक भरी रकेबीमां राखी, र केबी हाथमां लेइ पूजानो पाठ कही, ठेह्लो मंत्र भणी, प्रभुजीनी जमणी बाजुये दीपक राखी उपर टीको करे.

६ पठी ठही पूजामां उज्ज्वल अखंड अक्षत र केबीमां नाखी, रकेबी हाथमां धरी पूजानो पाठ क ही, ठेह्लो मंत्र भणी, प्रभुजी आगल स्वस्तिक तथा तंडुलना त्रण पुंज करे.

७ पठी सातमी पूजामां मोदक, मिश्री, खाजां, पतासां प्रमुख अनेक उत्तम पक्वान्न रकेबीमां ना खी, रकेबी हाथमां धरी पूजानो पाठ कही, ठेह्लो मंत्र भणी प्रभु आगल नैवेद्य धरे.

८ पठी आठमी पूजामां लविंग, एलची, सो पारी, नालियेर, बदाम, द्राख, बीजोरां, दाडिम, नारंगी, आंबा, केलां प्रमुख सरस सुगंधित रमणीय फल, रकेबीमां राखी रकेबी हाथमां धरी, पूजानो पाठ कही ठेह्लो मंत्र भणीने प्रभु आगल फल धरे.

पठी पूजानो कलश कही, विधिसंयुक्त स्नात्रीआउ

प्रभुजीथी अंतरपट करी, हाथमां आरति लीये अ ने वीजा स्नात्रीयापासे प्रभुने नव अंगे तिलक करावी, अंतरपट दूर करी "नमो अरिहंताणं०" कही, आरति करे. पछी निर्धूमवर्त्ति० ॥ तथा तुभ्यं नमस्त्रिभुवन० ॥ ए बे काव्य, नक्तामरनां प्रभाते कहे. पछी जय जय शब्द करे, गुणगीत करे, चैत्यवंदन करे, स्वामिवात्सल्य करे. यथाशक्ति दान आपे ॥ इत्यष्टप्रकारीपूजा विधिः ॥

॥ अथ नवपदादिक पूजाउंमां जे अवश्य चीज जोइये ते सारु केटली एक चीजोनां नाम लखीये छैये.

॥ दुध, दधि, घृत, शर्करा, शुद्धजल, ए पंचामृत. तथा केशर, सुगंधी चंदन, कर्पूर, कस्तूरी, अमर, रोली, मोली, बुटां फूल, फूलोनी माला, फूलोना चंद्रुवा, धूप, तंडुल प्रमुख नव जातिनां धान्य, नव प्रकारनां नैवेद्य, नव प्रकारनां फल, नव प्रकारनी पक्क वस्तु, मिश्री, पतासां, उंला प्रमुख तथा अंगलूहणांने वास्ते सपेत वस्त्र, अने पहेराववाने वास्ते उत्तम रेशमी वस्त्र, वासक्षेप, गुलाबजल, अत्तर इत्यादिक बीजा पण नव नव नालीना कलश, नव रकेबी, परात, (त्रास) तसला, आरती, मंगलदीपक, भगवाननी

आंगी, समवसरण, इत्यादिक सर्व वस्तु प्रथमथी ठीक करीने राखवी. ए थकी पूजामां विघ्न न होय॥ ए संक्षेप विधि कह्यो. विशेष विधि गुरुथकी जाणवो॥

॥ अथ श्रीनवपदपूजाध्यापन विधिः ॥

॥ तत्र प्रथम कलशढालनविधिः ॥ चैत्र तथा आश्विन मासमां ए पूजाउ भणाये. तेवारे नव स्नात्रिया करिये. महोटा कलश प्रमुखमां पंचामृत भरिये. स्थापनामां श्रीफल तथा रोकड नाणुं धरिये. तेने गुरुनी पासेथी मंत्रावी केशरथी तिलक करे, कंकणदोरो हाथमां बांधे. डाबा हाथमां स्वस्तिक करीने विधिसंयुक्त स्नात्र भणावे. पछी श्रीअरिहंत पदमां तांडूल, धूप, दीप, नैवेद्य प्रमुख अष्ट द्रव्य, वासक्षेप, नागरवेल प्रमुखनां पान, रकेबीमां धरीने, ते रकेबी हाथमां राखे. नव कलशने मौलीसूत्र बांधी, कुंकुमना स्वस्तिक करी, पंचामृतथी भरीने ते कलशो हाथमां लेइ, प्रथम श्रीअरिहंत पदनी पूजा भणे. ते संपूर्ण भणी रह्या पछी महोटी परातमां (थालमां) प्रतिमाजीने पधरावे. "ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं" ए प्रमाणे कहेतो थको, श्रीअरिहंत पदनी पूजा करे. अष्ट द्रव्य अनुक्रमे चढावे ॥ इति प्रथमपदपूजा विधिः॥

२ बीजुं सिद्धपद रक्तवर्णे छे. माटे गहुं रकेबीमां धरी, श्रीफल तथा अष्ट द्रव्य लेइने नव कलश पंचामृतथी जरीने बीजी पूजा जणे. ते संपूर्ण थयाथी "ॐ ह्रीं णमो सिद्धस्स" एम कही कलश ढोले, अष्ट द्रव्य चढावे. इति द्वितीयपदपूजा विधिः ॥

३ त्रीजुं आचार्यपद पीले वर्णे छे. माटे चणानी दाल, अष्ट द्रव्य, श्रीफल प्रमुख लइ, नव कलश पंचामृतथी जरीने त्रीजी पूजानो पाठ जणे. ते संपूर्ण थयाथी "ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं" एम कही कलश ढोले, अष्ट द्रव्य चढावे. इति तृतीयपदपूजाविधिः ॥

४ चोथुं उपाध्यायपद नील वर्णे छे, माटे मग प्रमुख तथा अष्टद्रव्य लइने पूर्वोक्त विधिये पूजा जणी संपूर्ण थवाथी "ॐ ह्रीं णमो उपाध्यायेभ्यः" एम कही कलश ढोले. अष्ट द्रव्य चढावे. इति विधिः ॥

५ पांचमुं श्रीसाधुपद श्यामवर्णे छे, माटे अडद प्रमुख लेइ बीजो सर्व पूर्वोक्त विधि करी पूजा जणे. ते संपूर्ण थयाथी "ॐ ह्रीं णमो सर्वसाधुभ्यः" कहे. इति पंचम पदपूजा विधिः ॥

६ तेमज छठुं दर्शनपद श्वेत वर्णेछे, माटे तांडुल

प्रमुख लइ "ॐ ह्रीं णमो दंसणस्स" कही, बीजो सर्व पूर्वोक्तविधि करवो. इति षष्टपदपूजा विधि ॥

७ सातमुं ज्ञानपद श्वेतवर्ण छे. माटे चावल प्रमुख लेइ "ॐ ह्रीं णमो णाणस्स" कहेवुं. बीजो सर्व पूर्वोक्त विधि करवो. इति सप्तमपदपूजा विधिः ॥

८ आठमुं चारित्रपद पण श्वेतवर्ण छे. माटे चोखा प्रमुख लेइ "ॐ ह्रीं णमो चारित्तस्स" कहेवुं. बीजो सर्व पूर्वोक्त विधि करवो. इति अष्टमपद पूजा विधिः ॥

९ नवमुं तपपद श्वेतवर्ण छे; माटे चोखा प्रमुख लेइ पूर्वोक्त विधि करीने "ॐ ह्रीं णमो तवस्स" कही कलशढोले. अष्टद्रव्य चढावे. पछी अष्ट प्रकारी पूजा करे; आरति करे. इति श्रीनवपदपूजाविधिःसंपूर्णः ॥

॥ अथ श्रीमहावीरजन्माभिषेक प्रारंभः ॥

॥ श्लोकः॥श्रेयः पल्लवयंतु वः प्रतिदिनं संसारदावानल, द्राग्निर्वापणकेलिलंपटतया ते पुष्करावर्त्तकाः ॥ वाचां वीरजिनेश्वरस्य निचयाःसद्धर्म्मकल्पद्रुमो, ल्लासप्रीणितमुक्तियौवनभराः प्रौढस्पृहप्राणिनाम् ॥१॥ दाने कल्पतरुर्गभीरमगुणैरत्नाकरश्चंद्रमाः, सौम्यत्वे प्रतिपन्ननिश्चलतया चिंतामणिर्निर्मलः ॥ लावण्यै र्मदनः सएषजयताच्चित्रं पवित्रं पुन, र्योजैनेश्वरशासनस्य कु

रूते नित्योत्सवामुन्नतिं ॥ २ ॥ अहो जव्याः ! शृणुत तावत्सकलकलाकलापकौतूहलचित्तवृत्तयः ! कंचनापि सहृदयहृदयवशीकरणलालसं प्राप्तावसरमेघश्रीमन्महावीरजन्माभिषेककलशम् ॥ ३ ॥

॥ छंद ॥ आराम मंदिर वावि सुंदर तुंग तोरण रम्म, पायार जिणहर कूव सरवर सग्ग जिणवाखम्म ॥ तिहिं कुंमल जलकति नेजर खलकति हार लह्कति नार, तिहिं दिसति गजगति बोरियावरि रयण कंचण फार ॥ ४ ॥ तिहिं तुरय मयगल रथहि मंडित, इसिउ अछे ते ठाम ॥ तिहिं अतिमणोहर सतूय कारिहिं, खित्तिय कुंडह गाम ॥ तिहिं राउअ छति गुणिहिं रंजित, तिसल देविहिं कंत॥सिद्धछ नामिहिं नयरगामिहिं, समृद्धसुंदर संत ॥ ५ ॥ ता आसाढ मासह नविअ आसह, सुकिल छगिहिं वीर॥अवइन्न सामिउ तिसल देविहिं, उयर अति गंजीर ॥ ता चित्तमासह सुकिल तेरसि, जनम हूउ देव॥ ता देव दाणव राय राणा, जास करसे सेव ॥६॥ छंद ॥ ताथिर थिरर कंपइ आसणं सुरींदे, करे कोवजरी जरी, करिहिं कुलिसं इगंदे॥ तउ उहिनाणेण जाणेइ जम्मं, परं हरिस जरि जरिअरिरी अरिइरम्मं॥ ७ ॥ तउ घं

ट वाजंति सोहम्म लोए, त्रिघंटं त्रिघंटंत्रिघंटंति होए ॥ दस देव लोआ दोइ चंद सूरा, वाणवंतरा इं दबत्तीस पूरा ॥ ७ ॥ तहा वीस आवंति किर नवण वासी, इम जगमिगंताति चलसहि आसी ॥ सुहम्माहिवो पंचरूवो जिणंदं, निय उहंगि धारीतु पत्तो गिरिंदं ॥ए॥ वस्तु ॥ तहतिहह तहतिहह नीर आणेवी, देवासुर मलियसवि कणय रयणमय कलस नरहुणि कुसुमंजलि परिठविअ इंद होइ सासंक निय मण, किम सहिसिंइ लहु वीर जिण जलहि प्रमाणे नीर ॥ तउ कंपाविउं मेरुगिरि चरणंगुलि नरधीर ॥ १० ॥ अर्द्धपाहाडी छंद ॥ ता रड रडड रूक्कइं शृंग ढलक्कइं फुटइं त्रुटइं ढोल ॥ ता त्राटक त्रटकइ रणण जणक्कइ रुणणइं जणणइं जोल ॥ ता गज्जइं अंबर वज्जइं जलनिहि मुझइं निज्जरणाइं, ता कायर तंपइं, कामिणि जंपइं तुटइं आनरणाइं ॥ ११ ॥ ता घण कम्म कडक्कीउं सेस सलक्कीउं थरहरिउं वाराह ॥ ता सायर जलजलिया गिरि,ढल ढलिया नह नहउ नर नाह ॥ ता दिग्गय गम्गडीया गिरि खडहम्मिया नह नहउ मत्तंड ॥ सहसक्क चम्मकीउं सुरगण संकिउं न हु फुटउं वंजंम ॥१२॥ ता किन्नरी कंपे नाम सवि सं

के खलभलिउ पायाल ॥ विषहर घणुं डोले नागिणी बोले कवण एह अकाल ॥ चलणंगुलि चालिहिं मज्ज ण कलिहिं सुरगिरि कंपिय पेखि ॥ नमुणीउ मइ मं दिहिं पभणीउ इंदहिं वीरजिणेसर रक्खि ॥ १३ ॥ आर्या ॥ आकंपियं तिहुअणं, इंदो नाऊण उहिना णेण ॥ खामेइ महावीरं, जाणीतु परक्कमं तस्स ॥ ॥१४॥ ता धोंधों धुधुमि धुमि डुंगि डुंगटि जयढक्क वजियला ॥ कटदोंगि दोंदों त्रिघुनि त्रिघुनिय घुघुमि घुघुमि रमहला ॥ ता फर फरर फरकति वजति आ उज जागड दिगि जागरूदिगि जल्लरी ॥ ता दगडदिति कि दोंदों तिविलि वाजति डुंडुभि दिगिनिदिगिमिरी ॥१५॥ ता ॐ ॐ संख वाजति ताल रिमजिम चम कता, ता किरिरि किरिरि करमति करडी सुमतकाह ल रमिजिमि रमकता ॥ ता जिजिमिरुग्मां जिजिमिरु ग्मां जिजिमिजिमि कंसालए ॥ ता दांगी दागरूदिगि दांदा वीण लीलहिं लालए ॥ १६ ॥ इंम इंद मिलि हुणि कलश भरिहुणि सुरभि निरह भरियला ॥ सिरि वीरनाह ह मेरुमब्भइं जिजिमि रिमि जिम न्हवणु ला ॥ ता अनेक मंगल तब करहुणि वीरजीणणिहिं अप्पीउं, ता सयल सुरवर गमि चहुतली रंग ज

ग थिर थप्पिउं ॥ १७॥ ता वादीय देवसूरि पाय प णमयि अनइ पुन देवसूरिं ॥ ता वंदि आगमि तक्कि सुंदर सुगुरुरामचंद सूरिं ॥ ता जयउ मंगलसूरि वुद्व इ महावीर अनिसेउ, ता कणय कलसेहिं न्हवउ जविया एहज पुजाउ देउ ॥ १८ ॥ इति श्रीमहावीर जन्माभिषेककलशः संपूर्णः ॥

॥ इति श्रीविविध पूजा संग्रह जाग

प्रथम समाप्त ॥

कोशल मुनिये कीधो रे ॥हो०॥ भाखी तंडुल विया
ली रे ॥ हो० ॥ तुमे गर्भनी वेदना टाली रे ॥ हो०
॥४॥ अमने पण दुःख ए मोहोटुं रे ॥हो०॥ सन्मु
ख न जुओ ते खोटुं रे ॥ हो० ॥ कांइ मेहेर नजरथी
देखो रे ॥ हो० ॥ शुं रागीने उवेखो रे ॥ हो०॥५॥
रंग लागो चोल मजीठें रे हो० ॥ नवि जाये भाक
ण दीठे रे ॥ हो० ॥ अमे रागी थइने कहीशुं रे ॥
हो० ॥ शुभवीरने चरणे रहीशुं रे ॥ हो० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रभुचरणे रहेतां भजे, ज्ञान सुधारस कंद ॥
जिनवाणी रसियामुनि, पामे परमानंद ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥ राग मालवी ॥ वंदो वीर
जिनेश्वर राया ॥ ए देशी

॥ त्रिशलानंदन वंदन कीजे, ज्ञान अमृत रस
पीजे रे ॥ कह्यो चंदाविजय पयन्नो, विनये वन्यो
मुनि धन्नो रे ॥ त्रिश० ॥ १ ॥ गुरुविनये सुकला
ये वाधे, राधावेध ते साधे रे ॥ देविंद थुई पयन्ने
रसिया, संथारे मुनि वसिया रे ॥ त्रिश० ॥ २ ॥ म
रण समाधि पयन्ने भावे, प्रभुसाथे लय लावे रे ॥
महापच्चरकाण पयन्नो गावे, पाप सकल वोसिरा

वे रे ॥ त्रिश० ॥ ३ ॥ गणिविज्जायें नाव घणेरा, जाणे मुनि गंनीरा रे ॥ साधे कार्य लगननी होरा, श्रीशुनवीर चकोरा रे त्रिश० ॥ ४ ॥ इतिचतुर्थधूपपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥

## ॥ अथ पंचमदीपकमालपूजा प्रारंनः ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ ज्ञानावरणी तिमिरने, हरवा दीपक माल ॥
ज्योतिसे ज्योति मिलाइये, ज्ञानविशेष विशाल ॥१॥

॥ ढाल ॥ चंद्रप्रनु जिनचंद्रमा रे ॥ ए देशी ॥

॥ जगदीपकनी आगले रे, दीपकनो उद्योत ॥ करतां पूजा पांचमी रे,नाव दीपकनी ज्योत हो जिनजी ॥ तेजे तरणीथी वधो रे, दोय शिखानो दीवडो रे, फलके केवल ज्योत ॥ १ ॥ बेदसूत्र जिन नाखियां रे, निशीथ धुरसिद्धांत ॥ आलोयण मुनिराजने रे, धारे गंनीरवंत हो जिनजी ॥ ते० ॥ ॥ दो० ॥ ऊ० ॥ २ ॥ जितकल्पमां सेवतां रे, चरणकरण अणगार ॥ पंचकल्प बेदे नएयां रे, पंचनला व्यवहार हो जिनजी ॥ ते० ॥ दो० ॥ ऊ० ॥ ॥३॥ व्यवहारबेदे दाखिया रे, उत्सर्गने अपवाद ॥

वे रे ॥ त्रिश० ॥ ३ ॥ गणिविज्जायें न्नाव घणेरा, जाणे मुनि गंन्नीरा रे ॥ साधे कार्य लगननी होरा, श्रीशुन्नवीर चकोरा रे त्रिश० ॥ ४ ॥ इतिचतुर्थधूपपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥

## ॥ अथ पंचमदीपकमालपूजा प्रारंन्नः ॥

॥ दोहा ॥

॥ ज्ञानावरणी तिमिरने, हरवा दीपक माल ॥
ज्योतिसे ज्योति मिलाइये, ज्ञानविशेष विशाल ॥१॥

॥ ढाल ॥ चंद्रप्रन्नु जिनचंद्रमा रे ॥ ए देशी ॥

॥ जगदीपकनी आगले रे, दीपकनो उद्योत ॥ करतां पूजा पांचमी रे,न्नाव दीपकनी ज्योत हो जिनजी ॥ तेजे तरणीथी वमो रे, दोय शिखानो दीवमो रे, झलके केवल ज्योत ॥ १ ॥ छेदसूत्र जिन न्नाखियां रे, निशीथ धुरसिद्धांत ॥ आलोयण मुनिराजने रे, धारे गंन्नीरवंत हो जिनजी ॥ ते० ॥ ॥ दो० ॥ झ० ॥ २ ॥ जितकल्पमां सेवतां रे, चरणकरण अणगार ॥ पंचकल्प छेदे न्नएयां रे, पंचन्नला व्यवहार हो जिनजी ॥ ते० ॥ दो० ॥ झ० ॥ ॥३॥ व्यवहारछेदे दाखिया रे, उत्सर्गने अपवाद ॥

दशाकल्पमां दश दशा रे, उपदेश्यो अप्रमाद हो जिनजी ॥ ते० ॥ दो० ॥ ऊ० ॥४॥ छेद महानिशीथ मां रे, भाखे जगनो नाथ ॥ उपधानादि आचा रनी रे, वात गीतारथ हाथ हो जिनजी ॥ ते० ॥ दो० ॥ ऊ० ॥ ५ ॥ धर्मतीर्थ मुनि वंदना रे, वरते श्रुतआधार ॥ शासन श्रीशुभवीरनुं रे, एकवीश वर स हजार हो जिनजी ॥ ते० ॥ दो० ॥ ऊ० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रुतज्ञानावरणी तणो, तुं प्रभु टालणहार ॥ क्षणमे श्रुत केवली कस्या, देइ त्रिपदी गणधार ॥१॥

॥ अथ गीतं ॥ तोरण आइ क्युं चले रे॥ए देशी ॥

॥ धन धन श्रीअरिहंतने रे, जेणेउलखाव्यो लो क ॥ सलूणा ॥ ते प्रभुनी पूजा विना रे,जनम गमा व्यो फोक ॥ सलूणा ॥ १ ॥ जेम जेम अरिहा सेवि ये रे, तेम तेम प्रगटे ज्ञान ॥ स० ॥ ज्ञानीना बहु मानथी रे, ज्ञान तणां बहुमान ॥ स० ॥ जेम० ॥ ॥ २ ॥ ज्ञान विना आमंबरी रे, पामे जग अपमान ॥ स० ॥ कपटक्रिया जनरंजनें रे, मौनवृत्ति बगध्या न ॥ स० ॥ जेम० ॥ ३ ॥ मत्सरी बरमुख उजावे रे, करता उग्र विहार ॥ स० ॥ पाप श्रमण करि दा

खिया रे, उत्तराध्ययन मझार ॥ स० ॥ जेम ॥ ४ ॥ ज्ञान विना मुक्ति नहीं रे, किरिया ज्ञानीने पास ॥ स० ॥ श्रीशुभवीरनी वाणीये रे, शिवकमला घरवास ॥ स० ॥ जेम०॥५॥ इति पंचमदीपकमालपूजास० ॥

## ॥ अथ षष्टाक्षतपूजा प्रारंभः ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ चरम समय दुप्पसह लगे, वरते श्रुत अविछेद॥ मूलसूत्र तेणे भांखियां, ते कहेशुं चउ भेद ॥ १ ॥

### ॥ ढाल ॥ राग सारंग ॥ हम मगन भए प्रभु ज्ञानमां ॥ ए देशी ॥

॥ जिनराजनी पूजा कीजीये ॥ जिनपडिमा आगे प्रभुरागे, अक्षतपूजा कीजीये ॥ अक्षतपद अभिलाष धरीने, आगमनो रस पीजीयें॥ जिन० ॥१ ॥ प्रभुपडिमा देखी प्रभु बुझ्या, पूरवथी उद्धरिजीये ॥ दशवैकालिक दश अध्ययने, मनक मुनि हितकीजीये ॥ जिन०॥ २ ॥ उत्तराध्ययन ते बीजुं आगम, मूल सूतरमां गणीजीये ॥ अध्ययनो छत्रीशरसालां, सद्गुरुसंगे सुणीजीये ॥ जिन० ॥ ३ ॥ शोल प्रहरनी देशना देतां, चतुर चकोरा रीझीये ॥ श्रीशुभवीर जिनेश्वर आगम, अमृतनो रस पीजीये ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ज्ञानउदय करवा जणी, तप करता जिनदेव ॥
ज्ञाननिधि प्रगटे तदा, समवसरण सुर सेव ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥ राग काफी ॥ अखिय
नमें गुलजारा ॥ ए देशी ॥

॥ आगम छे अविकारा, जिणंदा तेरो आगम छे अविकारा ॥ ज्ञान ज्योति प्रगटे घटमां, जेम रवि किरण हजारा ॥जि०॥ मिथ्यात्वी डुर्नय सविकारा, तगतगता नहिं तारा ॥ जि० ॥ १ ॥ त्रीजुं उंघनिर्युक्ति वखाणुं, मुनिवरना आचारा ॥ जि० ॥ चोथुं आवश्यक अनुसरतां, केवलीचंदनबाला ॥ जि० ॥ ॥ २ ॥ अल्पागम तप क्लेश ते जाणो, बोले उपदेश माला ॥ जि० ॥ ज्ञानजक्ति जिनपद निपजावे, नामे जयंत जूपाला ॥ जि० ॥ ३ ॥ सायरमां मीठी मेहेरावल, श्रृंगीमत्स्य आहारा ॥ जि० ॥ शरण विहीना दीना मीना, उर ते सायर खारा ॥ जि० ॥ ॥ ४ ॥ पंचम काल फणीविषज्वाला, मंत्रम विषणी हारा ॥ जि० ॥ श्रीशुजवीर जिनेश्वर आगम, जिन पडिमा जयकारा ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति षष्ठाकृत पूजा समाप्ता ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नैवेद्यपूजा सातमी ॥सात गति अपहार ॥ सात राज्य ऊरध जइ, वरिये पद अणाहार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ विमलाचल वेगे वधावो ॥ ए देशी ॥

॥ नित्य जिनवर मंदिर जइये, मेवा मिठाई थालमें लहिये ॥ नैवेद्यनी पूजा करिये, तेम ज्ञाननी आगल धरिये रे ॥ श्रुत आगम सुंदर सेवो॥ मनमंदिर आगम दीवो रे ॥ श्रुत० ॥ १ ॥ पहेलुं अनुयोगडुवारे, साते नय जंगप्रकारे ॥ निक्षेपानी रचना सारी, गीतारथवचने धारी रे ॥ श्रुत० ॥ मन० ॥२॥ बीजुं श्रुत नंदी वंदी, सुणतां दिल होय आनंदी ॥ सवि सूत्रतणो सरवायो, जहपे त्रिशलानो जायो रें ॥ श्रुत० ॥ मन० ॥ ३ ॥ मतिआदि पंच प्रकार, जाख्या छे ज्ञान अधिकार ॥ बहुला दृष्टांत देखावी, शुजवीरे रीत उलखावी रें ॥ श्रुत० ॥ मन० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ए पिस्तालीश वर्णव्या, आगम जिनमत मांहि॥मणुअजन्म पामी करी, जक्ति करो उत्साहि ॥१॥

॥ अथ गीतं ॥ राग वसंत फाग ॥ वीरकुमर
नी वातडी, केने कहिये ॥ ए देशी ॥

॥ आगमनी आशातना, नवि करिये ॥ नवि क
रिये रे नवि करिये ॥ श्रुतभक्ति सदाअनुसरिये, श
क्ति अनुसार ॥ आग० ॥ १ ॥ ज्ञानविराधक प्राणी
या, मतिहीना ॥ तेतो परभव दुःखिया दीना, भरे
पेट ते परआधीना, नीचकुल अवतार ॥ आ० ॥
॥ २ ॥ अंधा लूला पांगुला, पिंडरोगी ॥ जनम्याने
मातवियोगी, संताप घणोने शोगी ॥ योगी अवतार
॥ आ० ॥ ३ ॥ मूंगाने वली बोबडा, धनहीना ॥
प्रिया पुत्रवियोगे लीना, मूरख अविवेके भीना ॥
जाणे रणनुं रोझ ॥ आ० ॥ ४ ॥ ज्ञान तणी आशा
तना, करी दूरे ॥ जिनभक्ति करो भरपूरे, रहो
श्रीशुभवीर हजूरे, सुखमांहे मगन्न ॥ आ० ॥ ५ ॥
इति सप्तम नैवेद्यपूजा समाप्ता ॥ ७ ॥

## ॥ अथाष्टमफलपूजा प्रारंभः ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ ज्ञानाचारे वरततां, ज्ञान लहे नर नार ॥ जिन
आगमने पूजतां, फलथी फल निरधार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सुणगोवालणी ॥ ए देशी ॥

॥ हो साहिबजी, परमातम पूजानुं फल मुज आपो ॥ हो साहिबजी, लाखिणी पूजा रे शे फल नापो ॥ उत्तम उत्तम फल हुं लावुं, अरिहानी आगल मूकावुं ॥ आगमविधि पूजा विरचावुं, उत्तो रहिने जावना जावुं ॥ हो० ॥ १ ॥ जिनवर जिनआगम एक रूपे, सेवंतां न पडो जवकूपे ॥ आराधन फल एहनां कहिये, आ जवमांहे सुखिया थइये ॥ हो० ॥ २ ॥ परजव सुरलोके ते जावे, इंड्रादिक अपछर सुख पावे ॥ तिहां पण जिनपूजा विरचावे, उत्तम कुलमां जई उपजावे ॥ हो० ॥ ३ ॥ तिहां राज्य रुद्धि परिकर रंगे, आगम सुणतां सजुरुसंगें ॥ आगमशुं राग वली धरता, जिनआगम जिनपूजा करता ॥ हो० ॥ ४ ॥ सिद्धांत लखावीने पूजे, तेथी कर्म सकल दूरे ध्रुजे ॥ लहे केवल चरण धर्म पामी, शुजवीर मले जो विश्रामी ॥ हो० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केवल नाण लही करी, पामी अंतर जाण । शैलेशी करणे करी, पामो अविचल ठाण ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥ राग पूर्वी ॥ घमी घमी सांभरो सांइं सलूणा ॥ ए देशी ॥

॥ नित नित सिद्ध भजो भवि ! भावे, रूपातीत जे सहज स्वभावे ॥ नित० ॥ ज्ञानने दर्शन दोय विलासी, साकार उपयोगे शिव जावे ॥ नि० ॥ १ ॥कर्म वियोगी अयोगीकेरे, चरम समय एक समय सिधावे ॥ नि० ॥ निश्चय नयवादी एम बोले, व्यवहारे समयांतर लावे ॥ नि० ॥ २ ॥ अगुरु लघु अवगाहन रूपे, एक अवगाह अनंत वसावे ॥ नि० ॥ फरसित देश प्रदेश असंखा, सुंदर ज्योतसे ज्योत मिलावे ॥ नि० ॥३॥ आधि व्याधि विघट्या भव केरा, गर्भावास तणां दुःख नावे ॥नि०॥ एक प्रदेशमां सुख अनंतुं, ते पण लोकाकाशे न मावे ॥ नि० ॥४॥ परमातम रमणीनो भोगी, योगीश्वर पण जेहने ध्यावे ॥ नि० ॥ फलपूजाथी ए फल पावे, श्रीशुभवीर वचन रस गावे ॥नि०॥५॥ इत्यष्टम फल पूजा समाप्ता ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ गायो गायो रे, महावीर जिनेश्वर गायो ॥ आगम वाणी अमिय सरोवर, झीलत रोग घटायो ॥

मिथ्यात मेल उतारी शिर पर, आणामुकुट धरायो रे ॥ महा० ॥ १ ॥ तपागच्छ श्रीसिंहसूरिना, सत्य विजय बुध गायो ॥ कपूरविजय शिष्य खिमाविजय तस, जस विजयो मुनिरायो रे ॥ महा० ॥ २ ॥ तास शिष्य संवेगी गीतारथ, श्रीशुभविजय सवायो ॥ तास शिष्य श्रीवीरविजय कवि, ए अधिकार बनायो रे ॥ महा० ॥ ३ ॥ राजनगरमें रहिय चोमासुं, अज्ञानहीम हरायो ॥ सूत्रअर्थ पिस्तालीश आगम, संघ सुणी हरखायो रे ॥ महा० ॥ ४ ॥ अढारशे एकाशी मागशिर, मौन एकादशी ध्यायो॥श्रीशुभवीर जिनेश्वर आगम, संघने तिलक करायो रे ॥ महा० ॥ ५ ॥ इति कलशः समाप्तः ॥

॥इति श्रीपंडितवीरविजयजीकृत पिस्तालीश आगमनी पूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ ॥

## ॥ पंमित श्रीवीरविजयजीकृत श्रीशत्रुंजय महिमागर्जित नवाणुंप्रकारी पूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीशंखेश्वर पासजी, प्रणमी शुनगुरु पाय ॥ विमलाचल गुण गाईशुं, समरी शारद माय ॥ १ ॥ प्राये ए गिरि शाश्वतो, महिमानो नहिं पार, प्रथम जिणंद समोसस्या, पूर्व नवाणुं वार ॥ २ ॥ अढीय द्वीपमां ए समो, तीर्थ नहीं फलदाय॥ कलियुगकल्प तरु वमो, मुक्ताफलशुं वधाय ॥ ३ ॥ यात्रा नवाणुं जे करे, उत्कृष्ट परिणाम ॥ पूजा नवाणुं प्रकारनी, रचतां अविचल धाम ॥ ४ ॥ नव कलशे अनिषेक नव, एम एकादश वार ॥ पूजादीठ श्रीफल प्रमुख, एम नवाणुं प्रकार ॥ ५ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ वकुंखडानी देशी ॥

॥ यात्रा नवाणुं करीये सलूणा, करिये पंच स नात ॥ सुनंदाको कांत नमो ॥ गणणुं लख नवकार गणी जे, दोय अठम छठ सात ॥ सु० ॥ १ ॥ रथ यात्रा प्रदक्षिणा दीजे, पूजा नवाणुं प्रकार ॥ सु० ॥

धूप दीप फल नैवेद्य मूकी, नमिये नाम हजार ॥ सु० ॥ २ ॥ आठ अधिक शत टुंक जलेरां, महोटां तिहां एकवीश ॥ सु० ॥ शत्रुंजयगिरि टुंक ए पहेलु, नाम नमो निशदीश ॥ सु० ॥ ॥ ३ ॥ सहस अधिक अठ मुनिवर साथे, बाहुबली शिवठाम ॥ सु० ॥ बाहुबली टुंक नाम ए बीजुं, त्रीजुं मरुदेवी नाम ॥ सु० ॥ ४ ॥ पुंमरीकगिरि नाम ए चोथुं, पांच कोमी मुनि सिद्ध ॥सु०॥ पांचमुं टुंक रेवत गिरि कहियेे, तणे ए नाम प्रसिद्ध सु० ॥ ५ ॥ विमलाचल सिद्धराज जगीरथ, प्रणमीजे सिद्ध क्षेत्र ॥ सु० ॥ ठहरीपाली एणे गिरि आवी, करिये जन्म पवित्र ॥ सु० ॥६॥ पूजाये प्रजु रीकवुं रे, साधुं कार्य अनेक ॥ सु० ॥ श्रीशुजवीर हृदयमां वसजो, अलबेला घडी एक ॥ सु० ॥ ७ ॥

॥ अथ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितवृत्तम् ॥

॥ गिरिवरं विमलाचलनामकं, रुषजमुख्यजिनांघ्रिपवित्रितं ॥ हृदि निवेश्य जलैर्जिनपूजनं, विमलमाप्य करोमि निजात्मकं ॥ १ ॥ ए काव्य प्रत्येक पूजा दीठ कहेवुं ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय, परमेश्वराय, जन्म जरामृत्युनिवारणाय, श्रीमते, जिनेंद्राय, जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ए मंत्र पण, प्रत्येक पूजा दिठ कहेवो ॥ इति प्रथमपूजाभिषेके उत्तरपूजा समाप्ता ॥

## ॥ अथ द्वितीयपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ एकेकुं डगलुं भरे, गिरिसन्मुख उजमाल ॥
कोमि सहस भवनां कस्यां, पाप खपे ततकाल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग पूर्वी ॥ घडी घडी सांभरो ॥
शांति सलूणा ॥ ए देशी ॥

॥ गिरिवर दरिसण विरला पावे, पूरवसंचित कर्म खपावे ॥ गिरि० ॥ रुषभ जिनेश्वरपूजा रचावे, नवनवे नामे गिरिगुण गावे ॥ गिरि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सहस्र कमलने मुक्तिनिलय गिरि, सिद्धाचल शतकूट कहावे ॥ गिरि० ॥ ढंक कदंबने कोडि निवासो ॥ लोहित तालध्वज सुर गावे ॥ गिरि० ॥ २ ॥ ढंकादिकपंच कूट सजीवन, सुर नर मुनि मली नाम थपावे ॥ गिरि० ॥ रयणखाण जडी बूटी गुफाउं

...यः ॥

नावी चोवीशी आवशे, पद्मनान्नादि जि... य, परमेश्वराय, ...जिनेंद्राय, जल

॥ ढाल ॥ मनमोहन मेरे ॥ ए दे...

॥ धन धन ते जग प्राणिया, मनमोहन ... करता नक्ति पवित्र ॥ म० ॥ पुण्यराशि महावल गिरिजा ॥ म० ॥ दृढशक्ति शतपत्र ॥ म० ॥ १ ॥ विजयानंद आर वखाणिये ॥ म० ॥ नइंकर महापीठ ॥ म० ॥ सुर गिरि महागिरि पुण्यथी ॥ म० ॥ आज में नजरे ... ठ ॥ म० ॥ २ ॥ एंशी योजन प्रथमारके ॥ म० ... माल सित्तेर साठ पचास ॥ म० ॥ बार योजन सात ... काल ॥ १ ... लो ॥ म० ॥ ठहे पोहोलो प्रकाश ॥ म० ॥ ... नरो ॥ ... स काले पामवो ॥ म० ॥ डुलहो प्रजुदेदा ... एकेंद्रिय विकलेंद्रिमां ॥ म० ॥ काढ्यो अनंतो का... ॥ म० ॥ ४ ॥ पचेंद्रिय तिर्यंचूमां ॥ म० ॥ नहीं ... क... गु... रचा ... नो लवलेश ॥ म० ॥ घुणाक्षर न्याये लह्यो ॥ ... म० ॥ नरजव गुरु उपदेश ॥ म० ॥५॥ वहुश्रुत चरा... ए श्र... नी से वना ॥ म० ॥ वस्तुधर्म उलखाण ॥ म० ॥ ... डि आत्मस्व रूप रमणे रमे ॥ म० ॥ न करे जूठ डफाण ... ॥ म० ॥ ॥ ६ ॥ कारणे कारज नीपजे ॥ म० ॥ ड्रव्य ... २ ने नाव निमित्त ॥ म० ॥ निमित्तवासी आतमा ॥ म० ... ॥ वा चना चंदनशीत ॥ म० ॥ ७ ॥ अन्वयव्यतिरेके ... नी

जनमुख दर्शनरंग ॥ म० ॥ श्रीशुभवीर
रा ॥ म० ॥ साधक किरिया असंग ॥ म० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ गिरिवरं० ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ इतितृतीयाभिषेके
उत्तरपूजा समाप्ता ॥ सर्वगाथा ॥ ३० ॥

## ॥ अथ चतुर्थपूजा प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

शेत्रुंजी नदी न्हाइने, मुखबांधी मुखकोश ॥
गादि पूजीये, आणी मन संतोष ॥ १ ॥

ढाल ॥ अने हां रे वाहालोजी वाये छे
वांसली रे॥ ए देशी ॥

॥ अने हां रे वाहालो वसे विमलाचले रे, जिहां
हुआ उद्धार अनंत ॥ वा० ॥ अ० ॥ वाहालाथी नहिं
वेगला रे, मुनें वाहालो सुनंदानो कंत ॥ वा० ॥ १ ॥
॥ अ० ॥ आ अवसर्पिणी कालमां रे, करे भरत प्र
थम उद्धार ॥ वा० ॥ अ० ॥ बीजो उद्धार पाट आठ
मे रे, करे ॥ वा० ॥ २ ॥ अ० ॥ सी
रे, करे ईशानेंद्र ॥ वा० ॥

रसकूपिका

जनमुख दर्शनरंग ॥ म० ॥ श्रीशुभवीर

पुण्यवंता प्रा

श ॥ म० ॥ साधक किरिया असंग ॥ म० ॥ ७ ॥

॥ गिरि० ॥

॥ काव्यं ॥ गिरिवरं० ॥

या

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ इतितृतीयाभिषेके

उत्तरपूजा समाप्ता ॥ सर्वगाथा ॥ ३० ॥

ज

## ॥ अथ चतुर्थपूजा प्रारंभ ॥

गुरु

॥ दोहा ॥

म य

शेत्रुंजी नदी न्हाइने, मुखबांधी मुखकोश ॥

॥ ६

गादि पूजीये, आणी मन संतोष ॥ १ ॥

मुनि

ढाल ॥ अने हां रे वाहालोजी वाये छे वांसली रे ॥ ए देशी ॥

॥ अने हां रे वाहालो वसे विमलाचले रे, जिहां हुआ उद्धार अनंत ॥ वा० ॥ अ० ॥ वाहालाथी नहिं वेगला रे, मुने वाहालो सुनंदानो कंत ॥ वा० ॥ १ ॥ ॥ अ० ॥ आ अवसर्पिणी कालमां रे, करे भरत प्रथम उद्धार ॥ वा० ॥ आ० ॥ बीजो उद्धार पाट आठमे रे, करे दंडवीरज भूपाल ॥ वा० ॥ २ ॥ अ० ॥ सीमंधर वयणां सुणी रे, त्रीजो करे ईशानेंद्र ॥ वा० ॥

॥ अ० ॥ सागर एक कोमी अंतरे रे, चोथो उद्धार माहेंद्र ॥ वा० ॥ ३ ॥ अ० ॥ दश कोडी वली सागरे रे, करे पंचम पंचम इंद्र ॥ वा० ॥ अ० ॥ एक लाख कोमि सागरे रे, उद्धार करे चमरेंद्र ॥ वा० ॥ ४ ॥ अ० ॥ चक्रीसगर उद्धार ते सातमो रे, आठमो व्यंतरेंद्रनो सार ॥ वा० ॥ अ० ॥ ते अभिनंदन चंद्रप्रभुसमे रे, करे चंद्रजसा उद्धार ॥ वा० ॥ ५ ॥ अ० ॥ नंदनशांति जिणंदना रे, चक्रायुध दशम उद्धार ॥ वा० ॥ अ० ॥ अगीयारमो रामचंद्रनो रे, बारमो पांडवनो उद्धार ॥ वा० ॥ ६ ॥ अ० ॥ विश कोमि मुनिसाथे पांमवा रे, इहां वरिया पद महानंद ॥ वा० ॥ अ० ॥ महानंद कर्मसूडण कैलास छे रे, पुष्पदंत जयंत आनंद ॥ वा० ॥ ७ ॥ अ० ॥ श्रीपद हस्तगिरि शाश्वतो रे, ए नाम ते परम निधान ॥ वा० ॥ अ० ॥ श्री शुभवीरनी वाणीये रे, धरी कान करो बहु मान ॥ वा० ॥ ८ ॥

॥ काव्यं ॥ गिरिवरं० ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ इतीचतुर्थाभिषेके उत्तमपूजा समाप्ता सर्वगाथा ॥ ३९ ॥

## ॥ अथ पंचमपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ चोथे आरे ए थया, सवि महोटा उद्धार ॥
सूक्ष्म उद्धार वचे थया, कहेतां नावे पार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ तेजे तरणीथी वडो रे ॥ ए देशी ॥

॥ संवत् एक अठलंतरे रे, जावडशानो उद्धार॥ उद्धरजो मुजसाहिबा रे, नावे फरी संसार हो जिनजी ॥ भक्ति हृदयमां धारजो रे, अंतर वैरी वार जो रे, तारजो दीनदयाल ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ वाहडमंत्रीये चौदमो रे, तीर्थे कर्यो उद्धार ॥ बार तेरोत्तर वर्षमां रे, वंश श्रीमाली सार हो जिनजी ॥ भक्ति० ॥ २ ॥ संवत् तेर एकोत्तरें रे, समरो शा उसवाल ॥ न्यायद्रव्यविधि शुद्धता रे, पन्नरमो उद्धार हो जिनजी ॥ भक्ति० ॥ ३ ॥ पन्नरशे सत्याशीये रे, शोलमो ए उद्धार ॥ कर्माशायें करावियो रे, वरते छे जयकार हो जिनजी ॥ भक्ति० ॥ ४ ॥ सूरि दुप्पसह उपदेशथी रे, विमलवाहन भूपाल ॥ छेलो उद्धार करावशे रे, सासयगिरि उजमाल हो जिनजी ॥ भक्ति० ॥५॥ भव्यगिरि सिद्धशेखरो रे महाजस ने माल्यवंत ॥ पृथ्वीपीठ दुःखहर गिरि रे, मुक्तिरा

ज मणिकंत हो जिनजी ॥ भक्ति० ॥६॥ मेरु महीधर ए गिरि रे, नामे सदा सुख थाय ॥ श्रीशुभवीरने चित्त थी रे, घमीयनमें महेलण जाय हो जिनजी॥भक्ति०॥७॥

॥ काव्यं ॥ गिरिवरं० ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ इतिपंचमाभिषेके उत्तर पूजा समाप्ता ॥ सर्वगाथा ॥ ४७ ॥

## ॥ अथ षष्ठपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिद्धाचल सिद्धि वस्या, गृहि- मुनिलिंगें अनंत ॥ आगे अनंता सीजशे, पूजो भवि भगवंत ॥१॥

॥ ढाल ॥ चतुरेमे चतुरी कोण, जगत्की मोहनी ॥ ए देशी ॥

॥ सखरेमें सखरी कोण, जगत्की मोहनी ॥ रुषभ जिनंदकी पमिमा, जगत्की मोहनी ॥ रयण मय मूर्ति भराई ॥ जगत्की मोहनी॥ हां हां रे ॥जग०॥ प्यारे लाल, जगत्की मोहनी ॥ ए आंकणी ॥ भरते भराई सोय, प्रमाना ले करी ॥ कंचनगिरिये बेठाई, देखत ड हां देखत०॥प्या०॥देख०॥

॥१॥ सखरे० ॥ सातमोद्धारमे चक्रीसगर, सुर चिंतवी ॥ दुःखम कालविचार, गुंफामें जा ठवी ॥ हां हां रे गुफा ॥ प्या० ॥ गु० ॥ देव देवी हर रोज, पूजनकुं जावते ॥ पूजाको ठाठ बनाय, सांयुं गुण गावते ॥ हां हां रे सांयुं० ॥ प्या० ॥सांयुं०॥२॥सखरे० ॥ अप्सरा घूंघट खोलके, आगे नाचते ॥ गीत गान उर तान, खडा हरि देखते ॥ हां हां रे खडा० ॥ प्या० ॥ ख० ॥ जिनगुण अमृतपानसें, मगन जई घडी ॥ ठम ठम ठमके पाउं, वलैयां ले खडी ॥ हां हांरे वलै० ॥ प्या० ॥ व० ॥३॥ सखरे० ॥ या रीत नक्तिमगन्नसे, सुर सेवा करे ॥ सुरसान्निध्य नर दर्शन, नव त्रीजे तरे ॥ हां हां रे नव० ॥ प्या०॥न० ॥ पश्चिम दिश सोवन्न, गुफामें माल्हते ॥ तीनें कंचनगिरि नाम के, डुनियां बोलते ॥ हां हां रे डुनि०॥ प्या० ॥ डु० ॥ ४ ॥ सखरे० ॥ आनंद घर पुण्य कंद, जयानंद जानीये ॥ पातालमूल विन्नास, विशाल बखानीयें ॥ हां हां रे विशा०॥प्यारे०॥वि०॥जगतारण अकलंक,ए तीरथ मानीये ॥ श्रीशुन्नवीरविवेके, प्रज्जुकुं पीठानीये॥ हां हां रे प्रज्जु० ॥ प्या० ॥प्र०॥५॥सख०॥

॥ काव्यं ॥ गिरिवरं० ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ इति षष्ठाभिषेके उत्तर पूजा समाप्ता ॥ सर्व गाथा ॥ ५४ ॥

## ॥ अथ सप्तमपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ नमि विनमि विद्याधरा, दोय कोडि मुनिराय॥
साथे सिद्धिवधू वर्या, शत्रुंजय सुपसाय ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सहसा वनमां एक दिन
स्वामी ॥ ए देशी ॥

॥ आव्यां छुं आश भर्यां रे वालाजी अमे आव्यां रे आश भर्यां ॥ए आंकणी॥ नमि पुत्री चोशठ मलीने, ऋषभ पाउं पर्यां ॥ करजोडी विनये प्रभु आगे, एम वयणां उच्चर्यां रे ॥ वा० ॥ १ ॥ नमि विनमी जे पुत्र तुमारा, राज्यभाग विसर्यां ॥ दीनदया ळे दीधो पामी, आज लगे विचर्यां रे ॥ वा० ॥२॥ बाह्यराज्य उभगी प्रभु पासे, आवे काज सर्यां ॥ अमे पण तातजी कारज साधुं, सान्निध्य आप कर्यां रे वा० ॥ ३ ॥ एम वदंती पागे चढंती, अण सण ध्यान धर्यां ॥ केवल पामी कर्मने वामी, ज्यो

तसें ज्योति मल्यां रे ॥वा०॥४॥ एक अवगाहने सिद्ध अनंता,जुग उपयोग वस्या ॥ फरसित देश प्रदेश अ संखित, गुणाकार कस्या रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ अकर्मक महातीरथ हेमगिरि, अनंतशक्ति नस्या ॥ पुरुषोत्तम ने पर्वत राजा, ज्योतीरूप धस्यां रे ॥वा०॥६॥ विला सनन्द सुनन्द ए नामे,सुणतां चित्त ठस्यां ॥ श्रीशुन वीर प्रनुअनिषेके, पातक दूर हस्यां रे ॥ वा० ॥७॥

॥ काव्यं ॥ गिरिवरं० ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ इति सप्तमानिषेके उत्तरपूजा समाप्ता ॥ सर्व गाथा ॥ ६२ ॥

## ॥ अथाष्टमपूजा प्रारंन ॥

॥ दोहा ॥

॥ डाविडने वालखिल्लजी, दश कोडी अणगार ॥ साथे सिद्धिवधू वस्या, वंदू वारं वार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ तोरण आई क्युं चले रे॥ देशी ॥

॥ नरतने पाटे नूपति रे, सिद्धि वस्या एणे ठाय ॥ सलूणा ॥ असंख्याता तिहां लगे रे, हुआ अजित जिनराय ॥ सलूणा ॥१॥ जेम जेम ए गिरि नेटि

ये रे, तेम तेम पाप पलाय ॥ स० ॥ अजित जिनेश्वर साहिबो रे, चोमासुं रहि जाय ॥ स० ॥ जे० ॥ २ ॥ सागरमुनि एक कोडिशुं रे, तोड्या कर्मना पास ॥ स० ॥ पांच कोडि मुनिराजशुं रे, नरत लह्या शिववास ॥ स० ॥ जे० ॥ ३ ॥ आदीश्वर उपकारथी रे, सत्तर कोडी साथ ॥ स० ॥ अजितसेन सिद्धाचले रे, झाल्यो शिववहू हाथ ॥ स० ॥ जे० ॥ ॥ ४ ॥ अजितनाथ मुनि चैत्रनी रे, पूनमे दश हजार ॥ स० ॥ आदित्ययशा मुक्ति वस्या रे, एक लाख अणगार ॥ स० ॥ जे० ॥ ५ ॥ अजरामर क्षेमंकरु रे, अमरकेतु गुणकंद ॥ स०॥ सहस्रपत्र शिवंकरु रे, कर्मक्षय तमःकंद ॥ स० ॥ जे० ॥ ६ ॥ राजराजेश्वर ए गिरि रे, नाम छे मंगलरूप ॥ स० ॥ गिरिवर रज तरुमंजरी रे, शीश चढावे नूप ॥स०॥ जे० ॥ ७ ॥ देवयुगादि पूजतां रे,कर्म होये चकचूर ॥स०॥ श्रीशुनवीरने साहिबा रे, रहेजो हश्डा हजूर॥स०॥जे०॥

॥ काव्यं ॥ गिरिवरं ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ इति अष्टमानिषेके उत्तरपूजा समाप्ता सर्व गाथा ॥ ७१ ॥

## अथ नवमपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ रामभरत त्रण कोडिशुं, कोडि मुनि श्रीसार ॥
कोडि साडि अठ शिव वर्या,सांब प्रद्युम्न कुमार ॥१॥

॥ ढाल ॥ उंचोने अलबेलो रे । कामण
गारो कानुडो ॥ ए देशी ॥

॥ सिद्धाचलशिखरे दीवो रे॥आदीश्वर अलबेलो छे ॥ जाणे दर्शन अमृत पीवो रे ॥आ०॥ शिव सोम जसानी लारे रे ॥आ०॥ तेर कोडि मुनि परिवारे रे ॥आ०॥सि०॥१॥ करे शिवसुंदरीनुं आणुं रे ॥आ०॥ नारदजी लाख एकाणुं रे ॥ आ० ॥ वसुदेवनी नारी प्रसिद्ध रे ॥आ०॥ पांत्रीश हजार ते सिद्धि रे ॥ आ० ॥ सि० ॥ २ ॥ लख बावनने एक कोडी रे ॥ आ० ॥ पंचावन सहसने जोडी रे॥ आ० ॥ सात शे सत्योतेर साधु रे ॥ आ० ॥ प्रभुशांति चोमासुं कीधुं रे ॥ आ० ॥ सि० ॥ ३ ॥ तव ए वरिया शी वनारी रे ॥ आ० ॥ चौद सहस मुनि दमितारि रे ॥ आ० ॥ प्रद्युम्नप्रिया अचंभी रे ॥ आ० ॥ चौआ लीशशे वैदर्भी रे ॥ आ० ॥ सि० ॥ ४ ॥ थावच्चापुत्र हजारे रे ॥ आ० ॥ शुक परिव्राजक ए धारे रे

॥ आ० ॥ सेलग पणसय विख्याते रे ॥ आ० ॥ सु भद्रमुनि सयसातेरे ॥ आ० ॥ सि० ॥ ५ ॥ भव त रिया तेणे भवतारण रे ॥ आ० ॥ गजचंद्र महोदय कारण रे ॥ आ० ॥ सुरकांत अचल अभिनंदो रे ॥ आ० ॥ सुमति श्रेष्ठ भयकंदो रे ॥ आ० ॥ सि० ॥ ६ ॥ इहां मोक्ष गया केई कोटी रे. आ० ॥ अम ने पण आशा मोटी रे ॥आ०॥ श्रद्धासंवेगे भरियो रे ॥ आ०॥ में मोटो दरियो तरियो रे ॥आ०॥ सि० ॥ ७ ॥ श्रद्धाविण कुण इहां आवे रे ॥ आ० ॥ लघु जलमां केम ते नावे रे ॥आ०॥ तेणे हाथ हवे प्रभु झालो रे ॥आ०॥ शुभवीरने हइडे वाहालो रे ॥८॥

॥ काव्यं ॥ गिरिवरं० ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ इति नवमाभिषेके उत्तरपूजा समाप्ता ॥ सर्व गाथा ॥ ८० ॥

॥ अथ दशमपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ कदंब गणधर कोडिशुं,वलि संप्रति जिनराज॥
थावच्चा तस गणधरु, सहसशुं सिद्धां काज ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ धन्य धन्य जिनवाणी ॥ ए देशी ॥

॥ एम केई सिद्धि वस्या मुनिराया, नामथी नि र्मलकाया रे ॥ ए तीरथ तारु ॥ जाली मयालीने उ वयाली, सिद्धा अनशन पाली रे ॥ ए० ॥ १ ॥ दे वकी षट् नंदन इहां सिद्धा, आतम उज्ज्वल कीधा रे ॥ ए० ॥ उज्ज्वलगिरि महापद्म प्रमाणो, विश्वा नंद वखाणो रे ॥ ए० ॥ २ ॥ विजयजद्र ने इंद्र प्र काशो, कहिये कपर्दी वासो रे ॥ ए० ॥ मुक्ति निके तन केवल दायक, चर्चगिरि गुणलायक रे ॥ ए० ॥३॥ ए नामे जय सघला नासे, जयकमला घरवासे रे ॥ ए० ॥ शुकराजा निज राज्यविलासी, ध्यान धरे षट् मासी रे ॥ ए० ॥ ४ ॥ द्रव्यसेवनथी साजा ता जा, जेम कूकडो चंद राजा रे ॥ ए० ॥ ध्याता ध्ये य ध्यानपद एके, जावथी शिवफल टेके रे ॥ ए० ॥ ॥ ५ ॥ डालने बंभी ब्रह्मने वलगो, जाण न थाये अलगो रे ॥ ए० ॥ मूल ऊर्ध्व अध शाखा चारे, बंदपुराणे विचारे रे ॥ ए० ॥ ६ ॥ इंद्रिय झालां वि षय प्रवालां, जाणंता पण बाला रे ॥ ए० ॥ अनु जव अमृत ज्ञाननी धारा, जिनशासन जयकारा रे ॥ ए० ॥ ७ ॥ चार दोष किरिया बंडाणी, योगावं

चक प्राणी रे ॥ ए० ॥ गिरिवरदर्शनफरसन योगे, संवेदनने वियोगे रे ॥ ए० ॥ ८ ॥ निर्जरतो गुण श्रेणे चमतो, ध्यानांतर जश् अमतो रे ॥ ए० ॥ श्रीशुजवीर वसे सुख मोजे, शिवसुंदरीनी सेजे रे ॥ए०॥ए॥

॥ काव्यं ॥ गिरिवरं० ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ इति दशमाजिषेके उत्तरपूजा समाप्ता ॥ सर्व गाथा ॥ ए० ॥

## ॥ एकादशपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ शत्रुंजय गिरिमंमणो, मरुदेवानो नंद ॥ युगला धर्म निवारको, नमो युगादि जिणंद ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ वीरकुंवरनी वातडी केने कहिये ॥ ए देशी ॥

॥ तीरथनी आशातना, नवि करिये ॥ नवि करिये रे नवि करिये, धूप ध्यान घटा अनुसरिये, तरिये संसार ॥ तीरथ० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ आशातना करतां थकां धनहाणी ॥ जुख्यां न मले अन्न पाणी, काया वली रोगे जराणी, आ जवमां एम

॥ ती० ॥ २ ॥ परभव परमाधामीने, वश पडशे ॥ वैतरणी नदीमां जलशे, अग्निने कुंडे बलशे, नहीं शरणुं कोइ ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूरव नवाणुं नाथजी, इहां आव्या ॥ साधु केइ मोक्ष सधाव्या, श्रावकपण सिद्धि सुहाव्या, जपतां गिरिनाम ॥ ती० ॥४॥ अष्टोत्तरशतकूट ए, गिरिठामे ॥ सौंदर्य यशोधर नामे, प्रीतिमंमण कामुक कामे, वली सहजानंद ॥ ॥ ती० ॥ ५ ॥ महेंद्रध्वज सरवारथ, सिद्ध कहिये ॥प्रियंकर नाम ए लहिये, गिरि शीतल छांये रहिये, नित्य करीये ध्यान ॥ ती०॥ ६ ॥ पूजा नवाणुं प्रकारनी, एम कीजे, ॥ नरभवनो लाहो लीजे, वली दान सुपात्रे दीजे, चढते परिणाम ॥ ती० ॥ ७ ॥ सेवन फल संसारमां, करे लीला ॥ रमणीधन सुंदर बाला, शुभवीर विनोद विशाला, मंगल शिवमाला ॥ ॥ती०॥७॥ इति एकादशाभिषेके उत्तरपूजा समाप्ता॥

॥ अथ कलश ॥ धन्याश्रीरागेण गीयते ॥

॥ गायो गायो रे विमलाचल तीरथ गायो, पर्वतमां जेम मेरु महीधर, मुनिमंडल जिनरायो ॥ तरुगणमां जेम कल्पतरुवर, तेम ए तीर्थ सवायो रे ॥ वि० ॥ १ ॥ यात्रा नवाणुं इहां अमे कीधी, रंग

तरंग भरायो ॥ तीरथगुण मुक्ताफल माला, संघने कंठे ठवायो रे ॥ वि० ॥ २ ॥ शेठ हेमाभाई हुकम लहिने, पालीताणा शिर गायो ॥ मोतीचंद मल्लुक चंदराज्ये ॥ संघ सकल हरखायो रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ तपगछ सिंहसूरीसर केरा, सत्यविजय सत्य पायो ॥ कपूरविजयगुरु खिमा विजय तस, जसविजयो मुनिरायो रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ श्रीशुभविजय सुगुरु सुपसाये, श्रुतचिंतामणि पायो ॥ विजयदेवेंद्र सूरीश्वर राज्ये, पूजा अधिकार रचायो रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ पूजा नवाणुं प्रकारी रचावो, गावो ए गिरिरायो॥विधियोगे फल पूरण प्रगटे, तव हठवाद हठायो रे ॥ वि०॥ ॥६॥ वेद ४ वसु ८ गज ८ चंद्र १ संवत्सर (१८८४) चैत्रीपूनम दिन ध्यायो ॥ पंडित वीरविजय प्रभुध्याने, आतम आप ठरायो रे ॥वि०॥७॥ इति कलशः ॥

॥ काव्यं ॥ गिरिवरं० ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥

॥इति पंडित श्रीवीरविजयजीकृत श्रीशत्रुंजयमहिमा गर्भित नवाणुंप्रकारीपूजा संपूर्णा ॥ सर्वगाथा ॥१०६॥

## ॥ अथश्रीविजयलक्ष्मीसूरिकृत विंश तिस्थानक तपःपूजा प्रारंभः ॥

### ॥ तत्र प्रथम श्री अरिहंतपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्री शंखेश्वर पासजी, सकलजंतु हितकार ॥ प्रणमी पदयुग तेहनां, स्तवनपूजा रचुं सार ॥ १ ॥ बहुविध तप जप दाखिया, लोक लोकोत्तर सब ॥ विशस्थानक सम को नहिं, सद्गुरु वदे पसब ॥ २ ॥ अरिहंतादिक पद तणुं, कारण ए तप सत्य ॥ त्रिकयोगे प्रभु पूजीये, भावशुं जेहवी शक्त ॥३॥ निर्मल पीठ त्रिकोपरि, स्थापी जिनवर विश ॥ पूजोपकरण मेलवी, पूजिये विश्वावीश ॥ ४ ॥ एक एक पद वर्णव करी, पूजा पंच प्रकार ॥ अडविध एकवीश जाणिये, सेवो सत्तर उदार ॥ ५ ॥ सजल कलश अरूजाति ना, जिनआणा शिर धार ॥ पूजे स्थानक विशने, तस नाहिं दुरित प्रचार ॥ ६ ॥ परम पंच परमेष्टिमां, परमेश्वर भगवान ॥ चार निखेपे ध्याइये, नमो नमो जिनभाण ॥ ७ ॥

चरम त्रिभाग विशेषथी रे, अवगाहन घन कीध रे॥ शिव० ॥६॥ सिद्धशिलानी उपरे रे, ज्योतिमां ज्यो, ति निवास रे ॥ शिव० ॥ हस्तिपालपरे सेवतां रे, सौभाग्यलक्ष्मी प्रकाश रे ॥ शिव० ॥ ७ ॥ इति श्री सिद्ध पदपूजा द्वितीया ॥ २ ॥

## ॥ अथ तृतीय प्रवचनपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ भावामय उंषधसमी, प्रवचन अमृतवृष्टि ॥ त्रिभु वनजीवने सुख करि, जयजय प्रवचनदृष्टि ॥ १ ॥

॥ढाल॥ मे कीनो नहिं प्रभुविन उरशुं राग ॥ ए देशी ॥

॥प्रवचनपदने सेवियें रे, जैनदर्शन संघरूप ॥ अरिहा पण नमे तीर्थने रे, समवसरणना भूप ॥ में कीनो सहि प्रवचन पदशुं राग ॥ प्रवचनपदशुं राग, में कीनो सहि ॥प्र०॥१॥ ए आंकणी ॥ प्रवचन भक्तिरागथी रे, थया संभवजिनराय ॥ सघला धर्म कारज तणा रे, एहमां पुण्य समाय ॥ में० ॥२॥ पाप क्षेत्र सात वारियें रे,पुण्य क्षेत्र सात ठाम ॥ सवा लाख जिनमंदिरां रे, जिन मंडित पुर ग्राम ॥में०॥३॥ सवा कोडी जिनबिंबने रे, भरावे संप्रतिराय ॥ ज्ञानभंडार एकविश कस्या रे, कु

मर नरिंद थुणाय ॥ मं० ॥४॥ यथोचित चउविह संघनी रे, नरतादिक परे नक्ति ॥ द्रव्यनावथी आ दरो रे, योग अवंचक शक्ति ॥ मं० ॥५॥ पदस्थध्या ने करि आतमने रे, तन्मय करण प्रकार ॥ सहजा नंद विलासतां रे, सौनाग्यलक्ष्मी पद धार ॥ मं० ॥ ॥ ६ ॥ इति प्रवचनपद पूजा तृतीया ॥ ३ ॥

## ॥ अथ चतुर्थ आचार्यपदपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ बत्रीश बत्रीशी गुणे, युगप्रधान मुणींद ॥ जिनम त परमत जाणता, नमो तेह सूरींद ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ आवो आवो रे सयण, नगवती सूत्रने सुणिये ॥ ए देशी ॥

॥ सरसती त्रिनुवनस्वामिनी देवी, सिरिदेवी यक्षरा या ॥ मंत्रराज ए पंच प्रस्थाने, सेवे नित्य सुखदाया॥ नवि तुमे वंदो रे, सूरीश्वर गछराया ॥१॥ ए आंकणी॥ त्रण कालना जिनवंदन होये, मंत्रराज समरणथी॥ युग प्रधान सम नावाचारज, पंचाचार चरणथी ॥न०॥२॥ पडिरूवादिक चौद गुण धारी, क्षांति प्रमुख दश धर्म॥बार नावना नावित निज आतम, ए बत्रीश गुण

॥ ढाल ॥ आदिजिणंद मया करो ए देशी ॥

॥ श्री अरिहंत पद ध्याईयें, चोत्रीश अतीशयवंता रे ॥ पांत्रीश वाणी गुणे भर्या, वार गुणे गुणवंता रे ॥श्री० ॥१॥ अरुहिय सहस लक्षण देहे, इंद्र असंख्य करे सेवा रे ॥ त्रिहुं कालना जिन वांदवा, देव पंचम महादेवा रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ पंच कल्याणक वासरे, त्रिभुवन थाय उद्योत रे ॥ दोष अढार रहित प्रभु, तरण तारण जग पोत रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ षट्काय गोकुल पालवा, महागोप कहेवाय रे ॥ दया पमह वजडाववा, महा माहण जगताय रे ॥ श्री० ॥४॥ भवोदधि पार पमाडता, चोथो वर्ग देखावे रे ॥ भाव निर्यामक भावियो, महासब्रवाह सोहावे रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ असंख्य प्रदेश निर्मल थया, ऊतिपर्याय अनंता रे ॥ नवनवा ज्ञेयनी वर्त्तना, अनंत अनंती जाणंता रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ पिंड पदस्थ रूपस्थमां, द्रव्य गुण पर्याये ध्याया रे ॥ देवपालादि सुखी थया, सौभाग्यलक्ष्मीपद पाया रे ॥ श्री० ॥ ७ ॥

इति श्री अरिहंतपद पूजा प्रथमा ॥ १ ॥

## ॥ अथ द्वितीय सिद्धपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुण अनंत निर्मल थया, सहज स्वरूप उजास॥
अष्ट कर्ममलक्षय करी, नये सिद्ध नमो तास ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ गुणरसिया ॥ ए देशी ॥

॥ श्री सिद्ध पद आराधिये रे, क्षय कीधां अड कर्म रे ॥ शिव वसिया ॥ अरिहंते पण मानिया रे, सादि अनंतस्थिति शर्म रे ॥ शिव ॥ १ ॥ गुण एकत्रीश परमातमा रे, तुरियदशा आस्वाद रे ॥ शिव०॥ एवंभूतनये सिद्ध थया रे, गुणगणनो आल्हाद रे ॥ शिव० ॥ २ ॥ सुरगण सुख त्रिहुं कालनां रे, अनंत गुणां ते कीध रे ॥ शिव० ॥ अनंत वर्गे वर्गित कस्या रे, तोपण सुख समीध रे॥ शिव० ॥ ३ ॥ बंध उदय उदीरणा रे, सत्ताकर्म अभाव रे ॥ शिव० ॥ ऊर्ध्वगति करे सिद्धजी रे, पूर्व प्रयोग सद्भाव रे ॥ शिव० ॥ ॥ ४ ॥ गति पारिणामिक भावथी रे, बंधन छेदन योग रे ॥ शिव० ॥ असंग क्रिया बले निर्मलो रे, सिद्धगतिनो उद्योग रे ॥ शिव० ॥ ५ ॥ पणसंतर अण फरसता रे, एक समयमां सिद्ध रे ॥ शिव० ॥

वर्म ॥ न० ॥३॥ आठ प्रमाद तजी उपदेशे, विकथा सात निवारे॥ चार शिक्षा करी जिन पडिबोहे, चउ अनुयोग संनारे ॥ न० ॥ ४ ॥ बारशे बन्नु गुणे गुण वंता, सोहम जंबू महंता ॥ आयरिया दीठे ते दीठा, स्वरूपसमाधि उल्लसंता ॥ न० ॥५॥ युगप्रधान सूरि त्रेवीश उदये, दोय हजारने चार॥समयागम अनुन्न व अन्यासी, थाशे जग जन मनोहार ॥ न० ॥६॥ ए पद सेवतो पुरुषोत्तम नृप, जिनवर पदवी लहिया ॥ सौनाग्यलक्ष्मी सूरि नावे नजतां, नविक जीव गह गहिया ॥ न० ॥७॥ इति आचार्यपदपूजा चतुर्थी ॥

## ॥ अथ पंचम थविरपदपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ तजि परपरिणति रमणता, लहे निजनाव स्वरूप॥
थिर करता नवि लोकने, जय जय थविर अनूप॥१॥

॥ ढाल ॥ तपशुं रंग लाग्यो ॥ ए देशी ॥

॥पंचम पदने ध्याइये रे,नाव थविर अधिकार रे ॥ लौकिक मात पिता कह्यां रे, लोकोत्तर व्रत धार॥ गुणि जन वंदो रे॥ वंदो वंदो रे थविर महाराज, डुरित निकंदो रे ॥१॥ए आंकणी॥संयमयोगे सीदतारे, बालगिलानादि

साधु रे ॥ यथोचित सहाय देवे करि रे, टाले सर्व उपाधि॥गु०॥२॥विश वर्ष पर्यायथी रे, शाठ वर्ष वय हुंत रे॥ चोथा अंग उपर जण्या रे, श्रुत थविरा ए जाणं त॥गु०॥३॥ मेघ अप्रमत्ता थिर कर्या रे, त्रिशलानंदन देव रे॥ पचाश सहस साधु साधवी रे, संबंध कही कामदेव॥गु०॥४॥ ठाणांगे दश थविरा कह्या रे, रत्नत्रय ना निधान रे॥ते इहां प्रशस्तजावे ग्रह्या रे, द्रव्यादिक अनुमान ॥ गु० ॥ ५ ॥ तप श्रुतधीरज ध्यानथी रे, द्रव्य गुणपर्याय ज्ञाता रे ॥ स्वरूपरमण थविरा जला रे, नहिं पलितांकुर त्राता ॥ गु० ॥ ६ ॥ ए पद साधतो जावथी रे, पद्मोत्तर महाराय रे ॥ तीर्थंकर पदवी लही रे, सौजाग्यलक्ष्मी सुखदाय ॥ गु० ॥ ७ ॥ इति थविरपदपूजा पंचमी ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ उपाध्यायपदपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ बोध सूक्ष्म विणु जीवने, न होय तत्त्वप्रतीत॥
जणे जणावे सूत्रने, जयजय पाठक गीत ॥ १ ॥

॥ ढाल॥ ॥ण पुरनी देशी ॥

॥ श्री उवद्याय बहुश्रुत नमो जावशुं, अंग उपांगना

जाण मुणींदा॥ भणे भणावे शिष्यने हित करी, करे नवपल्लव पहाण विनीता ॥ श्री० ॥१॥ अर्थसूत्र कहे वाना विभागथी, सूरिश्वर पाठक सार सोहतां॥भव त्रीजे अविनाशी सुख लहे, युवराजपरे अणगार म हंता ॥श्री०॥२॥ चौद दोष भर्या अविनीत शिष्यने, करे पन्नर गुणवंत विदीता॥ग्रहण आसेवन शिक्षादा नथी, समय जाणे अनेकांत सुज्ञानी ॥श्री०॥३॥आव श्यक पचवीश शीखवे वांदणे, पचवीश क्रियानो त्याग विचारी ॥ पचवीश भावना भावे महाव्रती, शुभ पचवीशी गुणराग सुधारी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पय भर्यो दक्षिणावर्त्त शंख शोभिये, तेम नय भाव प्रमाण प्र वीणा ॥ हय गय वृषभ पंचानन सारिखा, टाले पर वादी अभिमान अदीना ॥श्री०॥५॥ वासुदेव नरदेव सुरपति उपमा, रवि शशि भंमारी रूप दीपंता ॥ जं बू सीतनदी मेरु महीधरो, स्वयंभू उदधि रयण भूप भणंता ॥श्री० ॥६॥ ए शोल उपमा बहुश्रुतने कही, उत्तराध्ययने रसाल जिणंदा ॥ महींद्रपाल वाचक पद सेवतो, सौभाग्यलक्ष्मि स्तुविशाल सूरिंदा ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति उपाध्यायपदपूजा षष्ठी ॥ ६ ॥

## ॥ अथ सप्तम साधुपद पूजा प्रारंभः ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ स्याद्वाद गुण परिणम्यो, रमता समता संग ॥ साधे शुद्धानंदता, नमो साधु शुभरंग ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ कर्मपरीक्षा करण कुमर चल्यो रे॥ए देशी॥ ॥ मुनिवर तपसी ऋषि अणगारजी रे, वाचंयम व्रती साध ॥ गुण सत्तावीशें जेह अलंकर्या रे, विरमी सकल उपाध ॥ भवियण वंदो रे ॥ सातमुं पद भलुं रे॥१॥ ए आंकणी॥नवविध भावलोच करे संयमी रे, दशमो केशनो लोच॥ओगणत्रीश पासछा भेद छे रे, वारे तस नहिं जग शोच॥भ० ॥२॥ दोष सडतालीश आहार ना वारतारे, अतिक्रम न करे चार ॥ मुनिने अर्थे स मारे मंदिरां रे, परिहरे एह आचार ॥ भ० ॥३॥ न रना दोष अढार निवारिने रे, दीक्षा शिक्षा दिये सा र ॥ पुण्य पाप पुद्गल हेयरूपता रे, समभावे सुगति संसार ॥ भ० ॥ ४ ॥ सत्यहेतु भव अटवी मूकवा रे, फरश्युं छहुं गुणठाण ॥ योग अध्यातम ग्रंथनी चिंतनारे, किरिया नाण पहाण ॥ भ० ॥५॥ पूरवव्रत विराधक योगथी रे, कूटलिंगी पणुं थाय ॥ दंभजाल

जंजाल सवि परिहरे रे, चरण रसिक कहेवाय ॥ भ० ॥ ६ ॥ कोडी सहस नव साधु संयमी रे, भवि ये गीतारथ जेह ॥ वीरभद्र परे तीर्थपति हुवे रे, सौभाग्यलक्ष्मी गुणगेह ॥ भ० ॥ ७ ॥ इति साधुपद पूजा सप्तमी ॥

## ॥ अथ अष्टम ज्ञानपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अध्यातम ज्ञाने करी, विघटे भवभ्रमभीति ॥ सत्य धर्म ते ज्ञान छे, नमो ज्ञाननी रीति ॥ १ ॥

॥ढाल॥ श्रणीक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥

॥ज्ञानपद भजिये रे,जगत सुहंकरु, पांच एकावन्नभेदे रे॥सम्यगज्ञान जे जिनवर भाषियुं, जडता जननी उछेदे रे ॥ज्ञा०॥१॥ए आंकणी ॥ भक्षाभक्ष विवेचन परगडो, खीर नीर जेम हंसो रे ॥ भाग अनंतमो रे अक्षरनो सदा, अप्रतिपाति प्रकाश्यो रे ॥ज्ञा० ॥२॥ मनथी न जाणे रे कुंभकरणविधि, तेहथी कुंभ केम थाशे रे ॥ ज्ञानदयाथी रे प्रथम छे नियमा, सदसभाव विकासे रे ॥ज्ञा०॥३॥ कंचननाणु रे लोचनवंत लहे, अंधो अंध पलाय रे ॥ एकांतवादी रे तत्त्व पामे

नहीं, स्याद्वाद रस समुदाय रे ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ ज्ञान भण्या भरतादिक भव तर्या, ज्ञान सकल गुण मूल रे॥ ज्ञानी ज्ञानतणी परिणतिथकी, पामे भवजल कूल रे ॥ज्ञा०॥५॥ अल्पागम जइ उग्रविहार करे, विहरे उद्यमवंत रे ॥ उपदेशमालामां किरिया तेहनी, काय कलेश तस हुंत रे ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ जयंत भूपो रे ज्ञान आराधतो, तीर्थंकर पद पामे रे ॥ रवि शशि मेह परे ज्ञान अनंतगुणी, सौभाग्यलक्ष्मी हित कामे रे ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ इति ज्ञानपद पूंजाऽष्टमी ॥ ८ ॥

## ॥ अथ नवम सम्यक्त्वदर्शनपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ लोकालोकना भाव जे, केवलिभाषित जेह ॥ सत्य करी अवधारतो, नमो नमो दर्शन तेह ॥ १ ॥

॥ढाल॥ नमो रे नमो श्री शत्रुंजय गिरिवर ॥ए देशी॥

॥ श्रीदर्शन पद पामे प्राणी, दर्शनमोहनी दूर रे ॥ केवली दीठुं ते मीठुं माने, श्रद्धा सकल गुण भूर रे॥ प्रभुजी सुखकर समकित दीजे ॥द०॥१॥ए आंकणी॥ विघटे मिथ्या पुद्गल आतमथी, तेहज समकित वस्त रे ॥ जिनप्रतिमादर्शन तसहोवे, पामीने समकित

तद्रूप कहिये रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ द्रव्य भाव दोय नय विशुद्धो, धन्नो ए पद सेवंतो रे ॥ श्रद्धा भासन तत्त्व रमण लहि, सौभाग्यलक्ष्मी दीपंतो रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ विनयपदपूजा दशमी ॥ १० ॥

## ॥ अथ एकादश चारित्रपदपूजा प्रारंभः ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ रत्नत्रय विणु साधना, निष्फल कही सदीव ॥ भावरयणनुं निधान छे, जय जय संयम जीव ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ अजित जिणंदशुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥

॥चारित्रपद शुभ चित्त वश्युं, जेह सघला हो नयनो उद्धार ॥ आठ करम चय रिक्त करे, निरुत्तें हो चारित्र उदार॥चा० ॥१॥ ए आंकणी ॥ चारित्रमोह अभावथी, देश संयम हो सर्व संयम थाय ॥ आठ कषाय मटा वीने, देशविरति हो मनमां ठहराय ॥ चा०॥२॥ बार कषाय मनथी मटे, सर्व विरति हो प्रगटे गुणराशि॥ देशथी सर्वसंयम विषे, अनंतगुणी हो विशुद्धि समास ॥चा० ॥ ३ ॥ संयमगुणठाण फरश्या विना, तत्त्वरम णता हो केम नाम कहेवाय ॥ गजपाखर खर नवि वहे, एहनी गुरुता हो आतममां समाय ॥ च० ॥४॥

वर्षे संयमना पर्यायमां, अनुत्तरनां हो सुख अतिक्रम होय ॥ शुक्ल शुक्ल परिणामथी, संयमथी हो क्षणमां सिद्धि जोय ॥ चा० ॥ ५ ॥ सर्व संवर चारित्र लही, पामे अरिहा हो सहि मुक्तिनुं राज ॥ अनंतर कारण चरण छे, शिवपदनुं हो निश्चय मुनिराज॥चा० ॥६॥ सत्तर भेद संयमतणा, चरणसित्तरी हो कही आगममांहि ॥ वरुणदेव जिनवर थयो, विजयलक्ष्मी हो प्रगटे उत्साहि ॥ चा० ॥ ७ ॥ इति चारित्र पदपूजा एकादशी ॥ ११ ॥

## ॥ द्वादशब्रह्मचर्यपदपूजा प्रारंभः ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ जिनप्रतिमा जिनमंदिरां, कंचननां करे जेह ॥ ब्रह्मव्रतथी बहु फल लहे, नमो नमो शीयल सुदेह ॥ ढाल ॥ क्युं जाणुं क्युं बनि आवही ॥ ए देशी ॥

॥ब्रह्मचर्य पदपूजीये, व्रतमां मुकुटसमान होविनीत ॥ शीयल सुरतरु राखवा, कही नव वारु भगवान हो विनीत ॥ नमोनमोबंभवयधारिणं ॥१॥ एआंकणी

॥ कृतकारित अनुमति तजे, दिव्य औदारिककामहो विनीत॥त्रिकरण योगे ए परिहरे, भेद अढार गुणधाम हो विनीत ॥न०॥२॥ दश अवस्था कामनी,त्रेवीशवि षय हरंतहो विनीत॥अढार सहसशीलांगरथे, बेठामु नि विचरंत हो विनीत ॥न०॥३॥ द्रव्यथी चार दारा तजे, भावे परपरिणति त्याग हो विनीत ॥ दश स माहि ठाण सेवतां, त्रीश अबंभनां मयाग हो विनी त॥न०॥४॥ दीये दान सोवन कोडिनुं, कंचनचैत्य क राय हो विनीत ॥ तेहथी ब्रह्मव्रत धरतां, अगणित पुण्य समुदाय हो विनीत ॥ नमों० ॥५॥ चोराशी स हस मुनिदाननुं, गृहस्थभक्ति फल जोय हो विनीत॥ क्रियागुणठाणे मुनि वरूा, भावतुल्य नहिं कोय हो वि नीत ॥ न० ॥ ६ ॥ दशमे अंगे वखाणियो, चंद्रवर्मा नरिंद हो विनीत ॥ तेम आराधि प्रभुता वरयो, सौ भाग्यलक्ष्मी सूरींद हो विनीत ॥ न० ॥७॥ इति ब्र ह्मचर्यपदपूजा द्वादशी ॥

## ॥ अथ त्रयोदश क्रियापदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ आत्मबोध विण जे क्रिया, तेतो बालकचाल॥
तत्वारथथी धारिये, नमो क्रिया सुविशाल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सुण वहेनी पियुमो परदेशी ॥ ए देशी ॥

॥ध्यानक्रिया मनमां आणीजे, धर्म शुकल ध्यायीजे रे॥ आर्त्त रौद्रनां कारण किरिया, पंचविशने वारीजे रे॥ ध्यान क्रिया ज्जजो निशि दिन प्राणी॥१॥ए आंकणी ॥ कंचनकांति परमेष्टिरूपे, लोकालोक प्रमाण रे ॥ सर्व शांतिकर जाल ठेकाणे, ध्यावो प्रणव गुणखाण रे ॥ ध्या० ॥२॥ तेर क्रिया ठाण तेर काठिया तजी, करण सित्तरी जजीये रे॥योग अडदिठि सम्यक्त्वकिरिया, आतम सुखकर जजीये रे ॥ ध्या० ॥३॥ पहेली चउ दिठी ज्ञानाधारे, रत्नत्रयाधारे चार रे॥अरु कर्मक्षये उपशमे विचित्रा, ओघदृष्टि बहुप्रकार रे ॥ ध्या०॥४॥ विष गरल हीनादिक वारो, तद्धेतु अमृत धारो रे॥ प्रीति ज्ञक्ति वचन असंगे, शुज्जपरिणति सुधारो रे॥ ध्या०॥५॥ अंतरतत्त्व विषय प्रतीते, ए ज्ञानकिरिया साची रे ॥ अक्रियावादी कृष्णपक्षियो, शुक्लपक्षियो किरिया वाची रे ॥ ध्या० ॥ ६ ॥ अशुज्ज ध्यानठाण त्रेशठ वारी, ध्यान शतक मन धारीरे ॥ हरिवाहन तीर्थंकर हूउं, सौज्ञाग्यलक्ष्मी दिल धारी रे ॥ ध्या०॥ ॥ ७ ॥ इति क्रियापदपूजा त्रयोदशी ॥ १३ ॥

## ॥ अथ चतुर्दश तपःपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर्म तपावे चीकणां, भाव मंगल तप जाण ॥
पच्चाश लब्धि ऊपजे, जय जय तप गुणखाण ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ अलगी रहेने, रहेने, रहेने रहेने,
अलगी रहेने ॥ ए देशी ॥

॥ तपपदने पूजीजे हो प्राणी, तपपदने पूजीजे॥ ॥ ए आंकणी ॥ सर्वमंगलमां पहेलुं मंगल, कर्मनि काचित टाले ॥ क्षमासहित जे आहार निरीहता, आतमऋद्धि निहाले हो प्राणी ॥ तप० ॥ १ ॥ ते भवमुक्ति जाणे जिनवर, त्रण चउ ज्ञाने नियमा ॥ तोये तप आचरण न मूके, अनंत गुणो तपमहिमा हो प्राणी ॥ तप० ॥ २ ॥ पीठ अने महापीठ मुनीश्वर, पूरवभव मल्लि जिननो ॥ साधवी लखमणा तप नवि फलियुं, दंभ गयो नहिं मननो हो प्राणी ॥ तप० ॥ ३ ॥ अग्यार लाखने एंशी हजार, पांचशे पांच दिन ऊणा ॥ नंदन ऋषिये मास खमण करी, कीधां काम संपुन्नां हो प्राणी ॥ तप० ॥ ४ ॥ तप तपिया गुणरत्न संवत्सर, खंधक क्षमाना दरि

या ॥ चौद हजार साधुमां अधिका, धन्ना तपगुण भरिया हो प्राणी ॥ तप० ॥ ५ ॥ षड् भेद बाहेर तपना प्रकाश्या, अभ्यंतर षड् भेद ॥ बार भेदे तप तपतां निर्मल, सफल अनेक उमेद हो प्राणी ॥ तप० ॥ ६ ॥ कनककेतु एह पदने आराधि, साधी आतम काज ॥ तीर्थंकर पद अनुभव उत्तम, सौभाग्यलक्ष्मी महाराज हो प्राणी ॥ तप० ॥ ७ ॥ इति तपःपदपूजा चतुर्दशी ॥ १४ ॥

## ॥ अथ पंचदश गोयमपदपूजा प्रारंभः ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ छठ छठ तप करे पारणु, चउ नाणी गुणधाम ॥ ए सम शुभ पात्र को नाहिं, नमो नमो गोयम स्वाम ॥१॥

॥ढाल॥ दादाजी मोहे दर्शन दीजे हो ॥ ए देशी ॥

॥दान सुपात्रे दीजे हो भविया, दान सुपात्रे दीजे॥ए आंकणी॥लब्धि अठ्ठावीश ज्ञानी गोयम, उत्तमपात्र कहीजे हो ॥भ०॥१॥ मुहूर्त्तमां चौदपूरव रचियां, त्रिपदी वीरथी पामी॥चौदशे बावन गणधर वांद्या, ए पद अंतरजामी हो ॥ भ० ॥ २ ॥ गणेश गणपति महामंगल पद, गोयमविण नवि दूजो ॥ सहस्र कमलदल